विषय-सूंची

विपय | पृष्ठ

डेनमार्क की कहानियाँ

उसने अपने दोनो मासल गोरे हाथ ऊपर उठाकर आसन पर फैला दिये। उसने लम्बी साँस लेते हुए मधुर पतले कंठ से पुकारा :

"खिखिला ''

और तुरत लंका देश से व्यापारियो द्वारा लाई गई वह सुन्दरी श्वेतवर्णा दासी सामने उपस्थित हो गई। उसके इंगित करने पर बाकी सब दासियाँ बाहर चली गईं। एकान्त पाकर वह दासी से बोली :

"खिखिला यदि तुझे अभिसार का कार्य दिया जाय तो तू क्या करे?"

दासी समझी नहीं। भला वह जो दासी थी और स्वामी की इच्छा मात्र से उसकी भोग्या थी क्या अभिसार कर सकती थी। वह चुपचाप बैठी रही, बोली कुछ नहीं। परन्तु जब उसने उसकी ओर घूर कर अपने प्रश्न का उत्तर चाहा तो वह डर से काँप गई। स्वामिनी का कोप उस पर मृत्यु बनकर उतर सकता था, यह वह जानती थी, वह सहमी हुई बोली :

"महास्वामिनी! मैं समझी नहीं। भला मैं किससे अभिसार करने योग्य हूँ?"

"तू नहीं पगली," प्यार से स्वामिनी ने कहा, "यदि तुझे मैं अपने अभिसार का कार्य गुप्त रूप से करने को कहूँ तो?"

दासी तुरन्त सारी बात समझ गई। अब उसे साहस हो रहा था और उसने मधुर मुस्कान के साथ उत्तर दिया :

"इसमे 'तो' का स्थान ही कहाँ है स्वामिनी। प्राणों के रहते हुए खिखिल रहस्य का उद्घाटन नहीं होने देगी आप निश्चिंत रहें ''' '' उस छाती पर हाथ रखते हुए उसे विश्वास दिलाया।

पुजारी की स्त्री को उसका उत्तर अच्छा लगा। उसने उसकी ओर कृप दृष्टि से देखा। दासी ने सिर नवाया। तत्पश्चात् उसने उसको बहुत अमूल्य वस्तुएँ देते हुए उससे कहा कि वह उन्हें ले जाकर उसके प्रेमी भेंट मे दे आवे तथा उससे कहे कि उसके बिना उसे चैन नहीं मिलता और सब कुछ बतला देने के बाद उससे मिलने के लिये भी उसने क रात्रि के समय गुप्त द्वार से उस प्रेमी को बुलाया भी गया।

सिंखिला

सहस्रों वर्ष पूर्व नील नदी के किनारे बने हुये सुन्दर देश मिश्र मे 'फराओ' उपाधिधारी राजा राज्य करते थे। जिस समय की यह बात है उस समय जो फराओ राजा था, वह अपने पूर्वजो की भॉति अत्यत कठोर, साहसी और पराक्रमी था। उसके क्रोध का पात्र बनना या उसकी आज्ञा का उल्लघन करना साधारण काम नहीं था, क्योंकि तब मृत्यु निश्चित होती थी। वह कठोर शासक दड भी भयानक दिया करता था। जीवित मनुष्य की खाल खिचवा लेना, उसको आग मे जला डालना अथवा जमीन मे गडवाकर जगली कुत्तो से शरीर की बोटी-बोटी अलग करवा देना, यह सब उसके लिये मामूली बाते थीं। मिश्र के प्राचीन निवासी उसे खास देवताओं द्वारा भेजा हुआ समझते थे। वह 'ओसिरिस' और 'ताह' का प्रियपात्र माना जाता था और जो कुछ वह करता सब उन्हीं के आदेशों से करता था। वह गभीर रहता था और साधारण मनुष्यो की भॉति हॅसता-बोलता न था। मिश्र में किसी स्त्री अथवा पुरुप का साहस न होता था कि उससे ऑख मिला कर बात कर सके।

उसका महल बहुत बडा और अमूल्य वस्तुओ से भरा हुआ था। सोना, चॉदी और जवाहिरातो के ढेर के ढेरा पर तो वह निगाह भी नही डालता और भारतवर्ष से व्यापार में लाये हुये बडे-बडे मोतियो और हीरों को बडे चाव से माला बनाकर अपने गले मे पहिनता था। उसके महल मे असख्य दास और दासियॉ थीं। वह हमेशा जवान दास और दासियो को ही अपने पास रखता, और जब वह बूढे हो जाते या स्त्री दासी की उमर ढल जाती, उसका यौवन और उसकी सुन्दरता कम हो जाती तो वह उन्हें हाटो मे बिकवा देता और उनके स्थानो पर नये दास-दासी रख लिये जाते। सरकारी करो को देने मे

वहीं आ गई थी, आकर उसे उससे बचा लिया। उस समय प्रधान क्षोभ से कॉपने लग गया था परन्तु जब महास्वामिनी ने दीवाल से कोड़ा उतारकर प्रधान को ही मारना शुरू किया था तब उसने चाहा कि वह उसी समय मर जाय क्योंकि एक साधारण दासी का हाथ पकड़ने का यह दंड स्वतन्त्र नागरिक को इस प्रकार मिले तो फिर जीना ही व्यर्थ था, पर वह कर भी क्या सकता था, वह तो स्वयं स्वामिनी थी और वह भी महास्वामी की सर्वप्रिया स्त्री। तभी से वह खिखिला के प्रति स्पर्धा रखता था, पर अब उससे बोलते हुए वह झिझकता था और लज्जा से उसका उन्नत शीश नीचा हो जाता था। खिखिला उसके पश्चात् जब भी उससे मिलती तो मुस्कराती और ऐसे देखती जैसे वह बिल्कुल ही नगण्य था।

असमर्थ लोगो को दास बना लिया जाता था। युद्ध-क्षेत्र मे हारे हुए दल सैनिको को और उनके साथ की स्त्रियो को जबरदस्ती दास और दासी बनाकर रखा जाता था। फराओ उन सब का एकछत्र सम्राट् था और उसकी किसी भी इच्छा को पूरा करने को वह सब लोग हाथ बॉधे, निगाह झुकाये खड़े रहते थे।

फराओ अपने महल से बहुत कम बाहर जाता। अधिकतर वह व रहा करता और वही रह कर उसकी कठोर आज्ञाये साक्षात्कार होकर पूरे मि देश मे माननीय होती थीं। कौन था जिसके कधो पर उसका सिर भारी था उसकी अवज्ञा करने का साहस करता?

एक दिन यही फराओ परम देवता प्ताह के दर्शनार्थ उसके प्राचीन और विशाल मन्दिर को गया। जब वह चला तो उसके साथ अनेक मन्त्रिगण और अगणित दास और दासियाँ भी चले। मदिर मे जब वह पहुँचा तब व काफी भीड़ हो गई पर विशालकाय, कठोर मासपेशियो वाले गुलामो ने मोटे मोटे डडे लेकर भीड को ठेल दिया और तब सिह की भॉति चाल चलता हुआ फराओ मदिर के अदर पहुँचा।

प्ताह की विशाल और भयानक मूर्ति के सामने जाकर फराओ ने झुककर और तब उसकी आज्ञा से पचास मोटे-मोटे बैलो को काटकर उस की भेंट चढाई गई। लम्बी सफेद दाढी वाले पुजारी जो उस जमाने मे राज वश के लोगो की ही भॉति इज्जत पाते थे, खुश होकर फराओ से बोले—

जिसकी हुकारो से समुद्र थर्राते हैं, जिसकी कठोर मुद्रा देखकर सारी पृथ्वी नतमस्तक हो जाती है ऐसे महान् फराओ पर प्ताह देवता प्रसन्न है।

फराओ ने पुजारी को भी सिर झुकाया और तब वह वहाँ से वा चला। अपने सुवर्णरथ पर धारीदार घोड़ो (जैबरा) द्वारा, वह वायु वेग चला जा रहा था। जब दूर नदी तीर पर बने हुए ओसिरिस के मदिर के पुजारी के महल पर उसकी दृष्टि पड़ी, उसने उँगली उठाकर उसकी ओर इशारा किया और फौरन उसका रथ उस ओर मुड़ गया। उसने चाहा कि मार्ग मे उस पुजारी से भी जाय मिल लिया जिससे परम देवता ओसिरिस से वह उसकी

"इसमे कितना बोझ होगा ?" बाटा ने सहज उत्तर दिया "दो मन जौ और तीन मन गेहूँ, कुल ५ मन बीज ले चला हूँ। इस बोझ को मै अपने कधो पर रखकर अभी खेत मे जा पहुँचूँगा। तुम मुझे इस तरह क्यो देख रही हो ? यह तो मेरा नित्य का कार्य है और इसमे आश्चर्य की कौन सी बात है ?" यह सुनकर उस हृष्ट-पुष्ट स्त्री ने अपने अग फैला दिये और लेटने का उपक्रम करती हुई नेत्रों को चलाकर गहरी साँस लेकर बोली :

"तुम सचमुच में ही बहुत बलिष्ठ और पराक्रमी पुरुष हो। नित्य रात और दिन मै तुम्हारे ही बारे में सोचा करती हूँ।"

इतना कहते-कहते उसके हृदय मे वासना की ज्वाला भडक उठी और वह लपककर उठी और बाटा के शरीर से जाकर लिपट गई। इस समय इसने अपनी कंचुकी खोलकर फेंक दी थी। बाटा उसके ऐसे व्यवहार से घबडा गया पर अपने कधे पर बोझ होने के कारण वह गिर न जाय इसलिये मजबूरन उसे चुपचाप खड़ा रहना पडा। तब उस अर्द्धनग्न, यौवन की ज्वालाओ से पीडित स्त्री ने उससे उच्छ्वसित स्वर से कहा :

"इस बोझे को नीचे फेंक दो और आओ मेरे साथ खेलो।"

बाटा अब उसके उद्देश्य को समझ गया। उसके हृदय मे ऐसी बातें सुनकर उस स्त्री के प्रति एक तीव्र घृणा उत्पन्न हो गई। वह कुपित होकर बोला :

"मै तुझे माता के समान समझता हूँ क्योंकि मेरा भाई मेरे पिता के समान है। मुझसे ऐसी बातें तुझे नहीं कहनी चाहिये, क्योंकि पापपूर्ण बाते आपस में माता और पुत्र नहीं करते। अब तो जो तूने कहा सो कहा, आयन्दा ऐसे शब्द मुझसे कभी मत कहना। मै भी आज की घटना को अपने भाई या किसी अन्य व्यक्ति से नहीं कहूँगा। हमारी भलाई इसी में है कि इसी समय से सँभल जायँ और अपना-अपना कर्त्तव्य निश्चित करें।"

इतना कहकर उस बीज की बडी गठरी को लिये वह तेजी के साथ घर से निकल गया।

वासना से दग्ध अपने चहेते पुरुष द्वारा फटकारी गई वह स्त्री अध-कुचली साँपनी की भाँति फुंकार उठी। उसके हृदय में भयानक प्रतिहिंसा का

ने के लिये सिफारिश कर दे। उस समय सन्ध्या का सुहावना समय था
र वृद्ध पुजारी अपने विशाल महल के बाहर नील नदी के जल द्वारा सिंचित
नि सुन्दर और विशाल उद्यान में बैठा हुआ अपनी सबसे जवान और नई
ोटी सुन्दरी दासी के शरीर की बनावट और यौवन की परीक्षा कर रहा था।
ी एलाम देश से यहाँ बिकने आई थी और वास्तव मे वह बहुत सुन्दरी थी;
तु वह अभी बाला ही थी! अतएव भयभीत हरिणी की भाँति चकित नेत्रों
अपने स्वामी के व्यवहार को देख रही थी। वह उस समय नितांत नग्न
क्योंकि उन दिनों नई और सुन्दरी दासियों को इसी प्रकार अपने स्वामियों
यहाँ रहना पडता था।

उसी समय दास ने भागे-भागे आकर सूचना दी कि महान् फराओ सिंह-
र उपस्थित हैं। शीघ्रता से वृद्ध पुजारी उठा और उसने इस दासी को
मे ही घास से ढँकी हुई एक झाडी में छिपा दिया, क्योंकि उसे डर था
द कहीं फराओ ने इसे देख लिया तो निश्चय ही उसकी सुन्दरता को देख
से अपने साथ ले जायगा। इसके बाद अपने सुवर्ण मुकुट को ठीक करता
यह वृद्ध द्वार की ओर चला। उसने देखा कि कठोर फराओ चपल
से जुते हुए रथ मे अधीर होकर खडा है। वह मन ही मन सकपका
क्योंकि महान् फराओ कभी किसी के लिये प्रतीक्षा करना तो जानता ही
। जब फराओ ने उसे आते देखा तो वह रथ से उतर पडा और तब
द्ध द्वारा स्वागत किया जाकर अपने मन्त्रिगण और दास-दासियों सहित
महल मे घुसा। उसी समय पुजारी बोला :

'परम देवता 'ओसिरिस' ने मुझसे कल ही कहा था कि वह फराओ के
ान से प्रसन्न है। केवल एक ही कमी है जिसे यदि शीघ्र पूरा न किया
तो सभव है वह कुपित"

बीच मे ही गभीर वाणी से फराओ बोल उठा :

'हम देवता की पवित्र सतान हैं। देवता की हर आज्ञा हमारे लिये शिरो
है"

'धन्य हो! धन्य हो!" पुजारी ने दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया,
ात् वह बोला :

"बहुत।" उर्वशी ने कहा— 'बहुत ही अधिक! मेरी तीन शर्तें यदि स्वीकार हो तो मै यही रह कर आपकी पत्नी बन जाऊँगी।"

राजा ने कहा : "बताओ तो वे तीनो क्या-क्या हैं? मै अवश्य उन्हें पूरा करने की प्रतिज्ञा करूँगा।"

'राजन्!" उर्वशी ने कहा—"एक शर्त तो यह है कि मै केवल घी खाऊँगी।"

"स्वीकार है", राजा ने कहा, "और कहो।"

"दूसरी यह है कि आप इन प्राणों से प्रिय मेमनो की सदैव रक्षा करेंगे।"

"यह क्या बड़ी बात है," राजा ने कहा— "मै इनकी निश्चय ही रक्षा करूँगा। अब तीसरी भी कहो।"

"वह यह है कि मै मर्यादा चाहती हूँ। मै कभी आपको बिना वस्त्रों के न देखूँ।"

"अवश्य! मुझे स्वीकार है," राजा ने कहा।

उर्वशी यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुई और तब वे दोनो आनद से पति-पत्नी बन कर रहने लगे लगे। कभी वे देवताओं की विहारस्थली चैत्ररथ में जाते, कभी नन्दन भवन मे आनन्द करते घूमते। इस प्रकार काफी समय निकल गया।

जब कई दिन से इन्द्र को स्वर्ग मे उर्वशी दिखाई नहीं दी तो इन्द्र ने कहा . "उर्वशी कहाँ गई?"

गन्धर्वो ने कहा : "देवराज! वह तो पुरुरवा राजा की स्त्री बन गई है।"

इन्द्र ने कहा . "तो क्या अब वह नही आयेगी? स्वर्ग मे तो कोई आनन्द ही नहीं रहा। मुझे तो उर्वशी चाहिये। जैसे भी हो उर्वशी को ले आओ।"

गन्धर्वो ने कहा . "जो आज्ञा।"

आखिर उन्होने एक योजना बनाई।

एक आधी रात के घोर अंधकार मे गन्धर्व चुपचाप पुरुरवा के महल मे घुस गये। राजा अपने पलग पर सोया हुआ था। कुछ दूर एक पलग पर

"परम देवता को ग्रर्भ रात्रि के परागार के लिये एक परम सुन्दरी दासी की आवश्यकता है जिसका रक्त उच्च वंश का हो। साधारण नारियाँ ओसिरिस स्वीकार नही करता। अरब देश के पश्चिमी किनारे पर मिदल नाम का शासक राज्य करता है। वह मिश्र के अधीन तो है, परन्तु ओसिरिस के प्रति पूरी श्रद्धा नही रखता है। उसकी सुन्दरी पुत्री नवयुवती 'प्याला' को परम देवता ओसिरिस ने पसद किया है। वह उच्च वंश की स्त्री है ... अभोग्य है और ... रहा करता और वही रह कर उसकी ... उसका पिता राजा है। वह देश मे ... शरीर पर अभी तक किसी पुरुप की आँखे नहीं पड सकी हैं। फराओ महान्, उसे एक मास के अदर अदर ओसिरिस के शरण म उपस्थित करे ।"

फराओ ने सुना और उसी कठोर और गभीर वाणी मे कहा

"ऐसा ही होगा ।"

वृद्ध पुजारी यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वास्तविकता यह थी कि अरब देश से आये हुए व्यापारियो की जुबानी पुजारी के प्रधान सेवक ने उस राजकुमारी की सुन्दरता का वर्णन सुनकर उसके विपय मे कहा था और जब से उसने उसके लावण्य और यौवन की गाथा सुनी थी तभी से वह उसे पाने को लालायित हो उठा था। इस प्रकार इतने सहज मे अपने अभीष्ट सिद्ध होने की आशा से वह फूला नहीं समाया। अपनी लम्बी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उसने कहा :

"...कल मैने जब परम देवता से सम्राट के बारे मे बाते की थीं तो उन्होंने मुझे सतोपपूर्वक उत्तर दिया था कि ससार मे आदि से अन्त तक फराओ का ही राज्य रहेगा। जिस प्रकार महान् देवता 'रा' आकाश मे चढ़कर युग-युगों तक चमकता रहेगा उसी प्रकार प्रचड योद्धा और महान् दार्शनिक फराओ का यश अक्षुण्ण रहेगा ।"

फराओ ने इज्जत से सिर झुकाया।

× × ×

इधर जब ओसिरिस का पुजारी फराओ से मिदल की पुत्री प्याला को माँग रहा था उसी समय उसकी युवती स्त्री विशाल उद्यान के पश्चिमी कि...

ब्राह्मण रूपी इन्द्र व्यंग से हँसा। उसने कहा : "कैसी बात करते हो तुम? देवता और दानव दोनों ही महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, परन्तु वे ही आपस में राज्य के लिये कितने घोर युद्ध करते रहे थे। फिर तुम सौ तो एक पिता के पुत्र हो, और सौ तपस्वी के पुत्र हैं। तुम सौ एक रहो यही आश्चर्य है फिर वे तो तुम्हारे भाई हैं ही नहीं। यह तो एक निंदा की बात है कि किसी तपस्वी के पुत्रों को तुम अपने राज्य का हिस्सेदार बनाओ।"

ब्राह्मण यह कहकर चला गया परन्तु उनके मन मे गाँठ पड गई। उन्होंने तपस्वी के पुत्रों को बुलाकर कहा · "सुनो! तुम लोग हमारे भाई नहीं हो।"

उन्होंने सुनकर कहा · "तुम हमारे ही भाई हो।"

"वह कैसे?"

"जो तुम्हारे पिता हैं, वही हमारी माता हैं।"

"हुआ करे! तुम्हारा पिता और है, हमारा पिता दूसरा है। तुम यहाँ नहीं रह सकते।"

उन्होंने कहा · "हम अवश्य यहीं रहेंगे।"

बात का बतगड हुआ। ईर्ष्या ने उनका क्रोध बढाया। आपस में युद्ध होने लगा और उसका नतीजा यह हुआ कि वे सब लडलडा कर मर गये। कोई भी बाकी नहीं बचा, न भङ्गास्वन के पुरुष रूप में प्राप्त बच्चे बचे, न स्त्री रूप में प्राप्त पुत्र ही जीवित रहे।

इस दारुण समाचार को जब लोगों से भङ्गास्वन ने सुना तो उसे बडा शोक हुआ। वह दुख के मारे रोने लगा। उसका कलेजा मुँह को आने लगा।

उसकी यह अवस्था देखकर इन्द्र बडा प्रसन्न हुआ। इन्द्र ने फिर अपने को ब्राह्मण बना लिया और राजा के पास जाकर कहा : "हे सुन्दरी! तुम्हें क्या कष्ट है जो तुम इस प्रकार हाहाकार कर रही हो? मुझेभी बताओ। यदि मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सका तो प्रयत्न करूँगा।"

राजा ने रोते हुए कहा : "हे ब्राह्मण! काल के प्रभाव से मेरे २०० पुत्र मारे गये।"

में बनी और स्वच्छ जल से भरी पक्की विस्तृत झील के किनारे सोपानों पर बैठी जल में अपनी सुन्दरता को देखकर आनन्द से विभोर हो रही थी। वह आलस्य की खुमारी में बैठी हुई, अपने बहुमूल्य आभूषणों को कभी कभी जान-बूझकर, बजाकर उस प्रशात नीरवता को भग करने का प्रयत्न कर रही थी तथा कभी कभी सफेद चमेली के फूलों को जल की विस्तृत छाती पर फेंक कर उनका लहरों के साथ नाचना देखकर मन बहला रही थी। मद-मद समीरण बह रहा था जो उसके मासल शरीर से स्पर्श कर उसे मादकता से भर रहा था। ओसिरिस के वयोवृद्ध पुजारी की वह इक्कीसवीं पत्नी थी। अभी उसे यहाँ आये एक वर्ष भी नहीं बीता था। पुजारी धनकुबेर था और उसके विशाल भवन में शृगार और ऐश्वर्य्य के सभी प्रसाधन मौजूद थे। इस स्त्री पर उसकी विशेष कृपा होने के कारण उसकी सभी इच्छाएँ तत्काल पूरी की जाती थीं। उसके पास असख्य दासियाँ थीं जिनसे वह सदा घिरी रहती थी, परन्तु इधर बीस दिन से पुजारी की आसक्ति उस पर कम होती जा रही थी। वह कारण तो नहीं जानती थी, परन्तु उसने उडते हुए सुना था कि ओसिरिस की आज्ञा से अरब देश के पश्चिमी भाग की किसी राजकन्या को प्राप्त करने के लिये वह चिंतित था। उसे तनिक भी ईर्ष्या नहीं थी। वह ईर्ष्या करती क्यों? वह स्त्री तो परम देवता की आज्ञा से बुलाई जा रही थी और फिर परम देवता की आज्ञा का उल्लघन तो हो ही नहीं सकता था। दूसरी बात एक और थी जो प्रारम्भ से ही उसके उत्कृष्ट यौवन को अपने तेज पंजों से कुरेदा करती थी। न जाने क्यों वह अपने हृदय में अपने पति के प्रति सदा उदास रहती थी। जब कि सारा मिश्र देश और स्वय फराओ महान भी उसकी इतनी इज्जत करते, वह उसके प्रति कभी अपने हृदय से आदर प्रकट नहीं कर सकी थी। वैसे वह प्रत्यक्ष में उसकी आज्ञाकारिणी सहगामिनी थी; परन्तु उसे उसका सहवास असह्य था। उसे स्वय ही मालूम नहीं था कि वह क्या चाहती थी; क्योंकि एक अजीब सूनेपन ने उसके अतस्तल को घेर रखा था।

आज इस समय जब कि उसका पति सम्राट के स्वागत में लगा हुआ था वह जानकर भी उस निर्जन झील के किनारे को छोड़कर नहीं आई थी। फिर उसका वहाँ काम भी क्या था? उसके पति की तो यह कभी इच्छा भी

इन्द्र ने फिर कहा : "बताओ राजा ?"

राजा ने कहा : "देवराज ! यदि आप सचमुच मुझ पर प्रसन्न हैं तो उन पुत्रों को जिला दीजिये जिनकी मैं माता हूँ।"

यह सुनकर तो इन्द्र को परमाश्चर्य हुआ।

इन्द्र ने कहा : "भद्रे ! तुम जिनकी पिता हो क्या वे पुत्र अब तुम्हें अच्छे नहीं लगते ? क्या तुम्हें उनसे घृणा है ? तुमको उन पुत्रों पर ही अधिक स्नेह क्यों है जिनकी तुम माता हो ?"

भङ्गास्वन ने कहा : "देवराज ! माता जन्म देती है, पालती है, पुत्र के लिये कष्ट उठाती है। उसे दूध पिलाती है, इसलिये उस पर उसका बड़ा स्नेह होता है। पिता खर्चा चलाता है, पर उसके हृदय मे पुत्र के लिये माँ की सी ममता नही होती। इस समय मै स्त्री हूँ। मै उन्ही पुत्रों से अधिक प्रेम करती हूँ जिनको मैने जन्म दिया है। जब मै राजा था तब मेरे पुत्रों की माता मेरी रानी थी। अवश्य ही उसे उन पुत्रों से अधिक प्रेम होगा।"

इन्द्र ने साफ बात सुनी तो बहुत प्रसन्न हो गया। उसने कहा : मै तुम्हें वर देता हूँ कि तुम्हारे सभी पुत्र जीवित हो जायँ।

राजा के सभी पुत्र जी उठे। राजा ने इन्द्र को प्रणाम किया।

तब इन्द्र ने कहा : "बताओ तुम अब क्या चाहते हो ? तुम्हें फिर पुरुष बना दूँ या स्त्री ही बना रहने दूँ ?"

राजा ने कहा : "नहीं देवराज। अब मैं पुरुष नहीं बनना चाहती !"

"तो क्या स्त्री रूप ही तुम्हे प्रिय है ?"

"हाँ देवराज !"

"क्यों ?" इन्द्र ने फिर आश्चर्य से पूछा : "क्या तुम फिर राजा नहीं होना चाहते हो ?"

"नहीं, देवराज !" भङ्गास्वन ने कहा : "वह अधिकार, वह शक्ति अब मुझे नहीं जँचती। पुरुष सहारक है। माता सृजन करती है। वह पालती है, और मनुष्यो को ज्ञान देती है। मेरे भीतर जो ममता है, वह पुरुष रूप मे नहीं थी। पुरुष होने के कारण ही आपने क्रोध से मेरे पुत्रों को मार डाला

नही होती थी कि अतिथियो के सम्मुख उसकी स्त्रियाँ जाया करे। ऐसे अवसरा पर वह अपनी पट्टमहिषी को ही अपने साथ रखा करता था जो इस समय वृद्धा हो चुकी थी।

वह तन्द्रा मे वही सोपानो पर लेट गई और स्वच्छ नीले आकाश प देखने लगी। यकायक वह उठी और उसने अपने वस्त्र उतार दिये। केवल ए महीन अधोवस्त्र पहिनकर वह झील मे कूद पड़ी और तैरने लग गई। झील के शीतल जल के स्पर्श से वह पुलकित हो उठी और तब जल मे कमल क भाँति तैरती हुई अपने गोरे शरीर को उस पर उठाकर आनन्द से विभो होकर अग-चालन करने लगी।

जब वह देर तक जल मे क्रीडा करने के उपरान्त सोपानो पर आक वैसे ही बैठ गई और जल के बिन्दुओ को अपने सुन्दर शरीर से झाडने लगी तभी पत्तो की चरमराहट से एक ओर शब्द हुआ। उसने घबडाकर उसी ओ देखा। एक सुन्दर युवक एक घनी झाडी के पास खडा हुआ उसकी ओ ललचाई हुई निगाहो से देख रहा था। युवक बलिष्ट था और योद्धा प्रतीत होता था। उसके तूणीर मे बाण खुसे हुये थे और प्रचड धनुष उसके बाँ कधे पर चढा हुआ था। वह देखने से ही पराक्रमी और वीर लगता था। स्त्री ने उसे देखा और फिर उसे अपनी नग्नावस्था का ध्यान आया। उसके कपोलों से कानों तक ललाई छा गई और वह लजाकर अपने शरीर को वस्त्रो से छिपाने का उपक्रम करने लगी। उसी समय मुस्कराता हुआ वह युवक उसकी ओर बढा। वह मत्त सिंह की भाँति चल रहा था और उस समय उस स्त्री ने देखा कि बैल के कन्धो वाला वह योद्धा अजेय पौरुष वाला था। उसके पग कठोर थे और वह निर्भय चाल से अपनी स्वर्ण से मढी हुई तलवार का मूठ को बाँये हाथ से पकड़े हुये उसकी ओर आ रहा था। उसके बडे और काले नेत्रो मे एक विचित्र चमक थी जो उसे बहुत ही अच्छी लग रही थी। स्त्री भयभीत नही हुई न अपरिचित पुरुष को उस एकात मे देखकर घबराई ही। उस समय एक विचित्र तन्द्रा ने उसे शिथिल कर दिया था। पुरुष शीघ्र उसके पास आ गया और इससे पहिले कि स्त्री वस्त्रो से अपने शरीर को ढँक ले उसने निस्सकोच भाव से आकर उसके कन्धो पर अपने बलिष्ठ हाथ रख

विष्णु शर्मा को सौंप दिया। विष्णु शर्मा ने उन्हें ले जाकर पचतत्र पढ़ाया। पचतत्र मे पॉच भाग हैं—मित्रभेद, मित्रसम्प्राति, काकोलूकीय, लब्ध-प्रकाश और अपरीक्षितकारक।

राजकुमार छ महीनो मे ही इसको सुनकर असाधारण विद्वान हो गये। तभी से ससार भर के बच्चों को अच्छा लगाने वाला यह पचतत्र ज्ञान देने वाला प्रसिद्ध हो गया। जो मनुष्य इस नीतिशास्त्र को पढ़ता और सुनता है, वह कभी इद्र से भी नही हार सकता।

———

दिये। स्त्री को उसका वह स्पर्श सुखकर लगा और तब वह चुपचाप सब कुछ भूलकर उसकी ओर उन अलसाये नेत्रों से देखने लगी।

× × ×

फराओ चला गया और वह युवक, जो उसी के साथ आया था, चला गया। पुजारी अपने शासन के प्रबन्धों में बाहरी प्रकोष्ठ में जाकर उलझ गया और वह स्त्री वहीं सोपानों पर बैठी आत्मतृप्ति से वस्त्रों को पहिनने लगी। अब उसे सारा संसार सूना नहीं लग रहा था। वह उस समय बहुत प्रसन्न थी। वह अभी-अभी चले गये उस पुरुष के बारे में सोच रही थी जिसका मुख अब भी उसकी आँखों के सम्मुख दिख रहा था। उसके कठोर आलिंगन में उसने उसके अजेय पौरुष का अनुभव किया था। उसी के सहवास में आज पहिली बार उसने अनुभव किया था कि वह एक स्त्री है जिसकी अतः की लालसा पुरुष की सहगामिनी बनने की है।

शीघ्र ही वह उसकी चाहना करने लग गई और सोचने लगी कि किस प्रकार भविष्य में भी उससे मिला जाय।

देर तक बैठे रहने के उपरान्त वह वहाँ से उठी और हंस की सी चाल चलती हुई अपने महल में वापस आ गई। उसके लम्बे, पीले चमकते केश अभी गीले थे जो उसने अपनी पीठ पर फैला रखे थे। वह मंथर गति से चलती हुई महल के तीसरे खंड में बने अपने एकान्त भाग की ओर पहुँची और उसकी पगध्वनि से समताल देती हुई उसके पैरों की सुन्दर सुवर्ण किंकिणियाँ मानो संगीत के तार छेड़ रही थीं। बेबल के कुशल कारीगरों द्वारा बनाई हुई सुन्दर कामदार चंदन की लकड़ी की चौकी पर जब वह जाकर बैठी उस समय उसने अनुभव किया कि नित्य से आज वह कितनी परिपूर्ण थी। उसे अपने पति वृद्ध पुजारी से आतंरिक घृणा होने लगी और अपने नये प्रेमी का सहवास सुखकर लगने लगा। उसी समय दासियों ने आकर उसे घेर लिया। उसको ऐसी हालत में देखकर वे नित्य की भाँति उससे बोलने का साहस न कर सकीं। चुपचाप खड़ी हुई उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करती रहीं। थोड़ी देर बाद उसे वास्तविकता का ज्ञान हुआ और तब उसने उन्हें अपना शृंगार करने की आज्ञा दी।

विष्णु शर्मा को सौंप दिया। विष्णु शर्मा ने उन्हें ले जाकर पचतत्र पढाया। पचतत्र मे पॉच भाग हैं—मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्ध-प्रकाश और अपरीक्षितकारक।

राजकुमार छ महीनो मे ही इसको सुनकर असाधारण विद्वान हो गये। तभी से ससार भर के बच्चों को अच्छा लगाने वाला यह पचतत्र ज्ञान देने वाला प्रसिद्ध हो गया। जो मनुष्य इस नीतिशास्त्र को पढ़ता और सुनता है, वह कभी इद्र से भी नही हार सकता।

———

मिश्री दासी 'त्रिस' ने उसके केशो को खोल दिया और मोटे नर्म कपड़े मे उन्हे पोछा। वेबल देश की दासी इनूनू ने भारतवर्ष से आये हुये अगरुधूप को जलाकर उसके बालो को सुवासित किया। अगरुधूप की महक से सारा प्रकोष्ठ सुवासित हो गया। कुछ मिश्री दासियाँ यूनान से आये हुये तारो के बड़े वाद्य 'हार्प' को बजाती हुई मधुर स्वरो से गाने लगी। उन्होंने अपने रसभरे कठो से विलास के गीत गाये और तब वह नृत्य भी करने लगी। जब केश सूख गये तब मोअन्जोदड़ो की श्यामला कामिनी दासी ने सुगधित तेल उनमे लगाया और वह उसके केशो को गूँथने लगी। उसने बड़ी तत्परता से उसका जूड़ा बाँधा और बाँई ओर सिर के सामने उसे बाँध दिया। मणिमय माला से उसे घिराकर सुवर्ण का हल्का मुकुट उसके जूड़े के पिछले भाग मे पहिना दिया। मुकुट मे जड़े मानिक और वज्र उज्वल दीप्ति से चमचमाने लग गए। केश विन्यास हो गया। लका देश की सुन्दरी श्वेतवर्णा दासी खिखिला ने उसके पैरो में आलक्तक लगाया और तब वह उसके उन वस्त्रो को उतार कर नये वस्त्र पहिनाने लगी। रगीन सूत से बना अधोवस्त्र उसकी पतली कटि मे बाँधकर ऊपर से सुवर्ण मेखला बाँध दी गई, जिसमे स्थान-स्थान पर नीलम जड़े हुये थे। पूरी मेखला के नीचे भाग मे सुवर्ण किंकिणियाँ उसके थोड़े से अगचालन से ही हिल उठती थीं। वक्षस्थल पर चौड़ा कण्ठा और भुजाओ मे सुवर्ण के ही कड़े पहिनाये और हाथो मे चूड़ियाँ, उँगलियो में अँगूठियाँ पहनाई और पैरो मे सुवर्ण वलय। सारे शरीर मे सोना जगमगाने लगा। उनमे जड़े बहुमूल्य हीरे, पन्ने और मानिक इत्यादि उसकी सुन्दरता को द्विगुणित कर रहे थे। सोने के तारो से बुनी गई चोली उसके वक्षस्थल पर पहिनाई गई और जब शृगार पूरा हो गया तब सुगधित पुष्पो से उस पर वर्षा की गई। ओसिरिस के पुजारी की इक्कीसवी स्त्री ने तब दर्पण के सम्मुख खड़े होकर अँगड़ाई ली और अगचालन किया। वह स्वय ही अपनी सुन्दरता पर रीझ गई। उसके शुभ्र गोरे कपोल कानो तक लाल हो गए। जब खिखिला ने जस्ते की सलाई लेकर उसके नेत्रो मे काजल लगा कर उन्हे और भी अधिक काला और आकर्षित कर दिया, तब वह दर्पण के सामने से हटी और अपने ऊँचे मखमल के आसन पर जाकर अपने आप बैठ गई।

उसे बेचना कीमत पाना
इससे बढ़कर क्या कर लेना ?

वाणिज्य सात तरह का होता है जैसे गन्धद्रव्य जैसे इत्र-तेल का यवसाय, दूसरे का रुपया जमा करके ब्याज पर चलाना, गाय-बैल का यवसाय, पहचाने हुए ग्राहकों को खींचना, कम दामों में खरीदी चीज को मँहगा बेचना, डंडी मारकर तौल में बेईमानी करके पैसा बचाना और देशान्तर से बर्तन इत्यादि चीजें लाना और दूसरी जगह बेचना।

गन्धद्रव्य का व्यवसाय अच्छा है जिसमें बहुत लाभ है—

जिसे एक में लेकर सौ का
बेच सको वह यही माल है,
सोना वोना लेकर चलना
खतरे का ही बड़ा जाल है।

दूसरे का धन जमा करके ब्याज पर चलाने वाला अपने देवता को खूब भेंट चढ़ाने की बात कह कर प्रार्थना करता है कि—

किसी तरह मर जाय शीघ्र ही
जो है यह रख गया धरोहर,
हे भगवान करूँगा पूजा
मन चाही मैं भेंट चढ़ा कर।

गाय-बैल का व्यापार करने वाला सेठ यही सोचता है कि मेरे पास धन धान्य है, मैंने तो पृथ्वी के सारे सुख प्राप्त कर लिये।

लोभ के कारण जैसे घर में अभी लड़का पैदा होने की खबर सुनी हो—

धन का लोभी व्यापारी
होता प्रसन्न है अपने मन में,
पहचाने गाहक को आता
हुआ देखकर अपने पथ में।

दिया कि स्वामी! सजीवक तो मर गया। हमने आपके प्यारे बैल को चिता पर धर कर जला भी दिया।

यह सुनकर वर्द्धमान को दुख हुआ, परन्तु वह करता भी क्या? उसने वृषोत्सर्ग और्ध्वदैहिक आदि क्रिया कर्म करके बैल के प्रति अपनी कृतज्ञता का पालन किया।

लेकिन संजीवन मरा नहीं।

सजीवक की आयु बची थी। जमुना की ठडी हवा लगने से वह स्वस्थ हो चला। किसी तरह वह उठ कर जमुना तीर पर पहुँच गया और वहाँ पन्ने जैसी चमकती हुई हरी घास को चरने लगा। कुछ दिन में ही वह शिव के नदी की तरह स्थूल हो गया। उसके कधे पर अब जूआ तो रखा ही नहीं जाता था, इसलिये मोटा ककुभ निकल आया। वह अत्यंत बलवान हो गया। अपने सींगो से वह दीमकों के बनाये मिट्टी के छोटे-छोटे टीलों को तोडने लगा। और तब वह मस्त होकर यमुना तट पर गरजने लगा। कहा भी है—

जिसकी कोई करे न रक्षा
किंतु देव हो जिसके साथ,
उसका कुछ भी नहीं बिगडता
भले न देवे कोई साथ!
बडे यत्न से रक्षा करके
भी रखी हो कोई चीज,
मिट कर ही रहती है वह भी
जब कि दैव कर लेता पीठ!
बच जाता है अगर भाग्य हो
वन में छोडा हुआ अनाथ,
बिना भाग्य के करो सौ जतन
घर बैठे मर जाय सनाथ!

एक दिन ऐसा हुआ कि पिंगलक नामक सिंह जो जंगल का राजा था, जंगल के जानवरो को साथ लेकर प्यास से बेचैन होकर यमुना के किनारे पानी

दासी उन सभी वस्तुओं को लेकर उसके बताये हुये व्यक्ति के पास गई जो राज्य का एक उच्च सामन्त था। जब वह उसके महल म पहुँची तो द्वारपाल ने उसे रोका, वह बोला·

"तू कोन है और किससे मिलना चाहती हे ?" खिखिला बोली· "महास्वामी से मुझे सर्वशक्तिमान ओसिरिस के परम पवित्र पुजारी ने "

द्वारपाल नतमस्तक होकर हट गया। तब वह सीधी उस गृह के स्वामी के सम्मुख पहुँची जो उसे देखकर चकित नेत्रो से उसकी ओर देखने लगा, क्योंकि आज तक उसने उसे कभी पहिले नही देखा था।

खिखिला ने उसे अपने आने का कारण बतलाया और अपनी स्वामिनी द्वारा दिये गए उपहारो को उसे दिया और तब मिलने का समय निश्चित करके वह लौट आई।

अब उधर जब ओसिरिस का वृद्ध पुजारी देवता के लिये नई सुन्दरियो को लाने का उपक्रम कर रहा था इधर उसकी स्त्री अपने प्रेमी के आलिगन मे समय बिताने लगी। वह उससे छिपकर प्रायः नित्य ही मिलता था। इसी तरह बहुत दिन बीत गए। खिखिला की चतुरता से भेद किसी पर नहीं खुला।

एक दिन जब पुजारी की स्त्री अपने प्रेमी के साथ झील पर फिर मिली तो अकस्मात महल की पाकशाला के प्रधान ने उन्हे देख लिया। पहिले तो उसे विश्वास नही हुआ परन्तु जब उसने छिपकर गौर से देखा तब वह सारी परिस्थिति समझ गया। उसने देखा पास ही पहरे पर दासी खिखिला तत्पर बैठी है। वह इस दासी को बहुत समय से चाहता था परन्तु यह उसे कभी मुँह न लगाती थी। इधर जब से वह स्वामिनी के अभिसार का प्रबन्ध करने लगी थी उसने अपने आपको महत्वपूर्ण स्त्री समझना शुरू कर दिया था। इन्हीं दिनो जब एक सन्ध्या समय उसका हाथ प्रधान ने पकडा था तब वह चीखकर उस पर प्रहार करने की धृष्टता भी कर चुकी थी। प्रधान क्रोध से तिलमिला उठा था और दासी की हत्या उसी समय करने के लिये उसने उस पर खड्ग उठाया था, पर उसी समय महास्वामिनी ने जो उसकी पुकार सुनकर

अरे जन्म तो वह है जिसमें
गौरव दिन-दिन बढ़ता है।
जल मे डूब रहे मानव को
जब सहायता देता है,
नदी किनारे का तिनका निज
जन्म सफल कर लेता है।

ऊँच-नीच सहकर जो चलते
लोगों का दुख हैं हरते,
ऐसे मेघों के से सज्जन
जग में विरले ही मिलते।

सभी प्रशसा करते जग में
ऐसी ही माता की मीत,
जिसका पुत्र सदा औरों के
करता काम, निभाता प्रीत।

अपनी शक्ति नहीं करता जो
प्रगट भले हो सबल समर्थ,
तिरस्कार करता जग उसका
समझ उसे कायर असमर्थ।

छिपी काठ में जलती है वह
आग न जाता कौन उलाँघ ?
धधक ज्वाल-सी जो जलती है
उसे कौन सकता है लाँघ ?"

यह सुनकर करटक शृगाल ने कहा : "भाई दमनक! हम तो अधिकार-हीन, मामूली लोग हैं। हमें इन बातों से क्या मतलब है? कहा भी है कि बिना राय पूछे ही जो साधारण आदमी, साधारण बुद्धिवाला होकर भी राजा के सामने बोल पड़ता है, उसका अपमान ही नहीं होता, वरन् मुसीबत आ जाती है। सब उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। क्योंकि—

सिंह ने अपने लंबे नाखूनों वाले हाथ को उठा कर उसके कंधे पर रखा और रोब से कहा : "आप अच्छे तो हैं ? बहुत दिनों बाद दिखाई दिये ?"

दमनक ने कहा "श्रीमान ने हमे अपने श्रीचरणों की सेवा से दूर कर दिया है, परंतु अब समय ऐसा है कि मुझे कुछ कहना ही होगा, क्योंकि राजाओं को तो बड़े, मध्यम और नीच, सभी तरह के लोगों से काम पड़ता है। कहा भी है कि दाँत कुरेदने और कान खुजाने के लिये राजा को भी तिनके से काम पड़ता है, फिर हाथ, पैर, वाणी वाले आदमी से काम पड़े तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या है ? हम तो कई पीढ़ियों से आपके सेवक रहे हैं। हमारा कुल तो आपकी सेवा मे सदा ही काम करता रहा है। खैर ? आप हमारे अधिकार ले लिये हैं, फिर भी यह ठीक नहीं है। क्योंकि—

आभूषण औ सेवक इनको
उचित स्थान देना है ठीक,
अपनी जगह सुहाते सब हैं
आगे पीछे या हो बीच।

कहा भी है—

मैं स्वामी हूँ यह मन में धर
अपने पाँवों का आभूषण,
यदि कोई धर ले निज सिर पर
तो क्या कहलायेगा शोभन ?
जो गुण की परख न करता है
सेवक उसको देते त्याग,
हो धनवान, कुलीन कि राजा
नहीं रोकती कोई बात।

यदि नौकर अपने से नीचे दरजे के नौकरों के साथ बिठाया जाता है, या उसे बराबर वालों से अलग रखा जाता है, या उसे जिम्मेदारी के काम नहीं दिये जाते, तो वह इन्हीं तीन कारणों से नौकरी छोड़ देता है। जो राजा अज्ञान के कारण उत्तम पद के योग्य सेवकों को अधम पद पर लगा देता है तो वे वहाँ नहीं रहते। इसमें न राजा का दोष है, न उनका ही। क्योंकि

खूफ़ू का विनोद

ऊँचे सोने के सिहासन पर बैठे हुये फराओ खूफ़ू ने अपने पुत्र खफरा को प्राचीन समय के फराओ बादशाहो के किस्से सुनाने की आज्ञा दी। शाहजादा खफरा उठा और उसने अदब के साथ बादशाह को सलाम किया। तत्पश्चात् उसके सामने खडे होकर उसने कहना शुरू किया ·

बहुत समय पहिले की बात है कि एक दिन मिश्र का एक पुराना फराओ साह देवता के मन्दिर मे दर्शन करने गया। उसके साथ उसके मन्त्रि-गण तथा अन्य दर्बारी लोग भी काफी तादाद मे गए। मन्दिर मे जाकर उसने साह को खुश करने के लिए कुर्बानियाँ की और बहुत सा धन भेंट किया। साह का पुजारी उन्हे पाकर बहुत खुश हुआ और उसने उसे विश्वास दिलाया कि वह निश्चय ही देवता से उसकी सिफारिश करके उसे स्वर्ग मे अच्छा स्थान दिलायेगा। बादशाह उसकी बातें सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने पुजारी की सेवा के लिए एक तरुणी सुन्दरी दासी भेंट की जो सुदूर माई-नोन देश से लाई गई थी।

जब फराओ वहाँ से लौटा तो मार्ग मे उसे ओसिरिस के वृद्ध पुजारी का महल नील नदी के किनारे दिखाई दिया। उसने सोचा उससे भी मिल लिया जाय। तब वह अपने सब साथियो सहित उसके यहाँ गया। पुजारी ने उसका भव्य स्वागत किया और अनेकानेक आशीर्वाद देकर उसके जीवन मे आने वाले तमाम खतरो से उसकी रक्षा की। इधर जब वृद्ध पुजारी फराओ के स्वागत मे लगा हुआ था उसी समय उसकी युवती स्त्री ने फराओ के साथ आये हुये एक सुन्दर युवक को देखकर उससे प्रेम करने को सोचा। उसने इशारे से उसे एक निर्जन स्थान मे बुलाया और उस पर अपना प्रेम दर्शाया। युवक उस सुन्दरी से बहुत खुश हुआ और उसने भी उसके प्रेम का उत्तर दिया।

"देव !" दमनक ने कहा : "सजीवक मन ही मन आपसे द्रोह रखता है। उसने मुझे अपना समझकार अकेले मे कहा है कि दमनक ! मैने इस राजा पिंगलक का बल देख लिया। मैं इसे मारकर राजा बनूँगा और तुझे मन्त्री पद दूँगा।"

पिङ्गलक पर तो बिजली सी गिर पड़ी। उसने कहा . "वह मेरे प्राणों सा प्रिय सेवक है। यह कैसे हो सकता है ?"

दमनक ने कहा : "देव, सुने—

राजा के तो सब ही सेवक
मन में होते हैं ऐसे,
सदा सोचते राज लक्ष्मी
कर लेवें अपनी कैसे ?
सेवा तो वे ही करते हैं
जो अशक्त होते जग मे,
अपनी निर्बलता हरने का
यत्न सोचते पग-पग मे।"

पिङ्गलक ने कहा : "नही मुझे विश्वास नहीं होता। कहा भी है—

बहुत दोष वाला शरीर निज
किसे नहीं प्रिय होता है,
बुरा करे पर बुरा न व्यापे
ऐसा ही प्रिय होता है।"

दमनक ने कहा : "हे राजा, यही तो दोष है क्योंकि—

हो कुलीन अकुलीन अरे जो
रहता है राजा के पास,
वही एक दिन स्वामी बनता
पाकर राजकृपा सविलास ।

जब फराओ वापस गया तो वह युवक भी चुपचाप उसके साथ भीड में आ मिला और चला गया, पर पुजारी की स्त्री अब उसके बिना बेचैन रहने लगी। उसने अपनी विश्वस्त दासियों द्वारा उसके पास बहुमूल्य भेंटे भेजी और उसे चुपचाप मिलने के लिये बुलाया। उन चीजो को पाकर वह प्रेमी बहुत खुश हुआ और जब वह बुलाती तभी उससे मिलने जाने लगा। इसी तरह एक लम्बे समय तक उनका प्रेम चलता रहा। पर एक दिन जब वह स्त्री अपने प्रेमी के साथ एक निर्जन झील में नहा रही थी और क्रीड़ा कर रही थी उसी समय वृद्ध पुजारी के महल की पाकशाला के प्रधान ने उन्हे देख लिया और जाकर अपने स्वामी से शिकायत की। पुजारी ने यह सुनकर उसे चुप रहने की आज्ञा दी और उससे एक जादू का बक्स लाने को कहा। जब वह उसे ले आया तो उसने उसमे से मोम निकाल कर एक छोटा सा मगर बनाया और उस पर जादू के मन्त्र पढे। उसके बाद उस मगर को उस नौकर के हाथ मे देकर कहा—

'अब की बार जब वह पुरुष उस झील मे नहाने आए और तुम्हारी स्वामिनी के साथ जल मे घुसे तब इस मगर को चुपचाप उसके पीछे पानी मे छोड देना।"

इसके बाद वह अपने काम में लग गया। नौकर ने उस छोटे से मोम के बने मगर को अपने पास हिफाजत से रख लिया और मौका देखने लगा कि कब वह प्रेमी झील मे नहाता है।

रात्रि के समय वृद्ध पुजारी ने अपनी सुन्दरी स्त्री से उसके बारे मे कुछ नहीं कहा। स्त्री भी निश्चिन्त भाव से उससे बाते करती रही और उसे तनिक भी किसी बात का शक नहीं हुआ। इसी तरह कई और दिन निकल गए। वह स्त्री और उसका प्रेमी बराबर मिलते रहे। उन्हे कभी इस बात का ध्यान भी नहीं हुआ कि पाकशाला का प्रधान उन्हे छिप छिप कर उनकी हर बात को देखा करता है।

एक दिन पुजारी दिन के समय फराओ से मिलने उसके महल को गया। प्रेमी से मिलने का सुनहरा अवसर व्यर्थ जाते देख उसकी स्त्री ने फौरन दासियो द्वारा अपने प्रेमी को बुलवाया। सदेश मिलते ही वह आया और वह लोग

चित्त सदा रहता अशात है
जीवन में विश्वास विहीन।
सेवा करके धन का पाना
क्या-क्या दुख देता न यहाँ
इस शरीर की स्वतत्रता ही
खो दी तब हैं चैन कहाँ?
अरे जन्म ही से दुख होता
फिर दरिद्रता, फिर सेवा,
यह तो है दुख की परपरा
इसमें कहाँ मिले मेवा?
मूर्ख, गरीब, प्रवासी, रोगी
और नित्य सेवक यह पाँच,
जीवित भी मुर्दे होते हैं,
नहीं साँच को है कुछ आँच।
जो कहता सेवक औ, कुत्ते
दोनो की है दशा समान,
वह है गलत क्योंकि कुत्ता तो
होता है स्वतत्र बलवान।
सेवक साधू सो धरती पर,
कम भोजन पा, स्त्री से दूर,
दुबले होकर एक सदृश ही
हो जाते कष्टों से चूर।
उस बेहद मीठे लड्डू से
भला लाभ है कौन कहो?
जिसके लिये चाकरी करके
पहले 'झिड़की डाँट सहो।"

जीवक ने कहा "हे मित्र! तुम फूट की बात कहते हो। यह तो उचित है।"

साजाओं से प्रेम बाता करने लगे। दासियाँ तो सब मिली ही हुई थीं और यह भी निश्चित बात था कि फराओ के महल जाकर कम से कम छः घंटे पहिले पुजारी तो क्या कोई भी नहीं लौट सकता था। इसी तरह जब काफी देर हो गई तब गर्मी के कारण और अकेले होने से मौज उड़ाने के लिये झील के किनारे पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने वस्त्र उतारे, फिर झील के भीतर जल में कूद पड़े और जल एक दूसरे पर उछाल कर क्रीडा करने लगे। उन्हें मालूम ही नहीं था कि पाकशाला का प्रधान उन्हें छिपकर देख रहा था। जब वह झील के बीच में जा पहुँचे उसी समय उसने चुपचाप वह मोम का मगर जल में छोड़ दिया। वह अचम्भे से देखता ही रह गया क्योंकि वह मोम का मगर जिस पर जादू हो रहा था जल में गिरते ही एक बहुत बड़ा और भयानक सचमुच का मगर बन गया। फिर तीर की तरह वह उस प्रेमी को पकड़ने पानी में चला। शीघ्र ही वह भयानक ग्राह उस प्रेमी के पास पहुँचा जो उसे देखते ही डर कर चिल्लाया। स्त्री भी भय से चीखी पर तब तक वह मगर उस युवक को मुँह में पकड़ कर जल में गायब हो चुका था। घबरा कर वह स्त्री तब किनारे की ओर भागी और कपड़े पहिनकर अपने महल को वापस चली गई। प्रधान ने जो कुछ देखा सब जाकर अपने स्वामी से कह सुनाया जिसे सुनकर वह बहुत खुश हुआ और उसने उसे बहुत सोना इनाम में दिया।

रात्रि के समय पुजारी ने अपनी स्त्री को घबराई देखकर कारण पूछा तो वह बोली :

"आज मेरी तबियत खराब है। सिर में दर्द है।"

पुजारी सुनकर चुप रहा और उसने उससे उसके प्रेमी के बारे में कुछ भी नहीं कहा।

जब सात दिन बीत गए तब पुजारी एक दिन फिर फराओ के महल गया और उससे कहा—

"हे फराओ! मैंने अभी सात दिन पहिले एक कमाल का काम किया है मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे साथ मेरे घर को अभी चल कर उस कमाल को अपनी आँखों से देख।"

संजीवक ने कहा : "स्वामी के क्रुद्ध होने पर हम चले क्यों जायें ? युद्ध के लिये कोई उपाय नहीं है । क्योंकि—

तीर्थ, दान, तप, पुण्य कर्म से
नहीं स्वर्ग मिलता कर यत्न,
वीरों को रण करके वह है
मिलता शीघ्र, यही सत्रत्न !"

दमनक ने कहा : "स्वामी-सेवक का युद्ध कैसा ?"

"लेकिन वह तो मुझे मारेगा !"

"तुम मिलो तो सही !"

"मिल लूँगा परंतु वह मुझ पर क्रुद्ध है तो मुझे कैसे पता चलेगा ? वह तो मुझसे बड़े प्रेम से मिलता है !"

'तुम देखना कि अगर वह लाल आँखें करके टेढ़ी भौंहें करके तुम्हारी ओर यदि जीभ को होंठों पर चलाता दिखाई दे तो तुम समझना कि वह मारना चाहता है । पर मेरी बात किसी से कहना नही !"

दमनक यह कह कर लौट आया उसने करटक को सारी भेद-नीति सुनाई । संजीवक उस ओर डरता हुआ पिंगलक के पास चला । वह बिना प्रणाम किये दूर ही उसके सामने जाकर बैठ गया । पिंगलक ने दमनक की बात को ठीक समझ कर उस पर हमला किया । दोनों के युद्ध का नतीजा यह निकला कि संजीवक मारा गया ।

संजीवक के मरने के बाद पिंगलक खेद से बैठ गया और दुख मनाने लगा ।

दमनक ने उसके पास प्रसन्नता से जाकर कहा : "आप क्यों खेद करते हैं देव ? आपने ठीक किया है । पिता, भाई, पुत्र, स्त्री या मित्र इनमें से जो विद्रोह करे उसे अवश्य मारना चाहिये । जो राजा बहुत दयालु है, जो ब्राह्मण सब कुछ खाते हैं, जो स्त्री लज्जा नहीं करती, जो सहायक दुष्ट होता है, जो सेवक विरोध करता है, जो अधिकारी सावधान नहीं होता और जो आदमी किये हुए उपकार को नहीं मानता, उसे अवश्य छोड़ देना चाहिये । क्योंकि —

फराओ, जो नई व जादू की बातें सुनने और देखने का बड़ा शौकीन था फौरन उसके साथ उसके घर चल दिया। जब वह बाग के पिछले हिस्से में स्थित उस झील के किनारे पहुँचे तब पुजारी ने खड़े होकर कुछ जादू के मन्त्र पढ़े। शीघ्र ही जल में बड़े जोर से खलबलाहट होने लगी। फराओ ने आश्चर्य से देखा कि एक बहुत ही बड़ा और भयकर मगर किनारे पर आ गया था। उसके मुँह में वह प्रेमी दबा हुआ था। फराओ ने घबराकर पुजारी की ओर देखा तो वह बोला—

"हे राजा! यही वह कमाल है जिसके बारे में मैंने कहा था। यह वही काम करता है जो मैं इसे करने को कहता हूँ।"

फराओ यह सुनकर बोला

"अच्छा तो इसे आज्ञा दो कि यह अभी झील के अन्दर वापस चला जाय।" पुजारी ने यह सुनकर झुककर उस मगर को छू दिया। छूते ही वह फौरन फिर वही मोम का छोटा-सा मगर बन गया जिसे उसने हाथ से उठा कर अपने कपड़ों के अदर रख लिया। राजा यह देखकर बहुत ही अधिक आश्चर्य से भर गया। तब पुजारी ने अपनी युवती स्त्री के पाप की पूरी कथा उससे कह सुनाई और उससे प्रार्थना की कि वह उस स्त्री और उसके प्रेमी का न्याय करे।

फराओ ने तब पुजारी से कहा :

"उस मगर को फिर पानी में छोड़ दो और उसे जीवित कर दो।"

जब पुजारी ने उसे फिर जल में डालकर जीवित कर दिया तब फराओ ने उस विकराल मगर से कहा :

"अब तू इस दोषी युवक को पकड़ कर पानी में फिर चला जा और फिर कभी वापस मत आ"।

फौरन् मगर ने ऐसा ही किया। पुजारी बादशाह को लेकर अपने महल के अन्दर गया जहाँ उसकी स्त्री बैठी थी। यकायक बादशाह को आता देखकर वह घबराई। उसी समय फराओ की आज्ञा से वह पकड़ भी गई और जब शाम हुई तब उसे महल के उत्तर की ओर बाँधकर जीवित जला दिया

ओडेन सेकर

डेनमार्क के परम उत्साही सुन्दर और बलिष्ट शहजादे एरिक ने एक बार एक बुड्ढे फकीर को कहते सुना :

"यातनाओं की सीमा से परे बहुत दूर अन्धकार के उस पार अमर ज्योति से प्रकाशित एक स्वर्ण भूमि है जहाँ पृथ्वी पर मरने वाले अच्छे स्त्री और पुरुषों की आत्माएँ जाकर आनन्द भोगती है। वह स्थान सुन्दरता में अद्वितीय और अमर यौवन की मादक सुगन्ध से हमेशा महका करता है। यह संसार का वह दूसरा भाग है जिसे 'ओडेन सेकर' कहते हैं। आत्माएँ वहाँ उन मनुष्यों को एक बार फिर जीवन प्रदान करके परम आनन्द देती हैं। वहाँ कोई नही मरता। वह पवित्र भूमि जोर्ड-लिफन्डा-मन्ना भी कहलाती है।"

एरिक उस फकीर की अद्भुत वाणी सुन कर चकित रह गया। अपने अदम्य साहस को एकत्रित करते हुए उसने तब यह निश्चय किया कि वह इस देश को अवश्य जाकर देखेगा। तुरन्त उसने अपने आदमी इकट्ठे किये और एक बड़ी सेना लेकर वह पूर्व दिशा की ओर चल दिया।

नौर्वे के शहजादे का नाम भी एरिक था। वह भी अपने सौन्दर्य, बल और वीरता के लिए डेनमार्क के एरिक की भाँति ही प्रसिद्ध था। बुड्ढे फकीर द्वारा कही गई उन अद्भुत बातों को उसने भी जब सुना तो वहाँ जाने का उसने भी निश्चय कर लिया। शीघ्र ही वह भी पूर्व दिशा की ओर अपने आदमियो को लेकर चल दिया। थोड़ी दूर जाने पर उसे डेनमार्क का एरिक मिला। प्रेमपूर्वक एक दूसरे से मिलने के उपरान्त जब बातचीत करने से उन्हे पता चला कि दोनों का उद्देश्य एक ही है तो वह बहुत खुश हुए। तत्पश्चात् वह लोग साथ ही साथ उस अज्ञात स्थान की ओर यात्रा करने लगे। बीहड़ वनों और भयंकर पहाड़ों को पार करते हुए वह लोग बहुत दूर जा पहुँचे। न जाने कितना समय व्यतीत हो गया परन्तु उनकी यात्रा का अन्त नहीं आया।

गया। जब वह जलकर खाक हो गई तो उसका अवशेष नील नदी मे फेंक दिया गया।

इस तरह जादू के जोर से बुरा काम करने वालो को पुजारी ने तो पकड़ा और न्याय प्रिय सम्राट ने दड दिया

इतना कहकर खफरा चुप हो गया। फराओ खूफू के इस क़िस्से को सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने आज्ञा दी कि उस बुद्धिमान फराओ की कब्र पर अच्छे-अच्छे पकवान भेंट चढाये जायें, साथ ही उस चतुर और स्वामि-भक्त सेवक की कब्र पर भी कीमती भेंटे चढाई गई।

दूसरे दिन जब दर्बार जुटा और सभी दर्बारियो सहित फराओ अपने ऊँचे सिंहासन पर बैठ गया तब उसने कहा :

"हे खफरा! कल के तुम्हारे किस्से को सुनकर हमे बहुत खुशी हुई। आज भी कोई नई बात कहो" और उसने उत्सुक दृष्टि से शाहजादे की ओर देखा। शाहजादा उठा और उसने बादशाह को झुक कर सलाम किया और फिर खड़े होकर कहने लगा :

हे फराओ! अब मै एक विचित्र जादू का किस्सा कहूँगा, जो तुम्हारे पिता अर्थात् मेरे बाबा के समय मे हुआ था, यह एक पन्ने की कथा है

तुम्हारे पिता का नाम स्नैफ्रू था। एक दिन वह बहुत ही उदास हो गया। उसने हर तरह से अपना जी बहलाने का प्रयत्न किया पर किसी भी भाँति वह बहलता ही न था। वह सारे महल मे घूम आया और उसने सुन्दरी स्त्रियो से भी बातें की पर उन सबसे उसकी तबियत नहीं सुधरी। वह झुँझला उठा और उसने आज्ञा दी कि उसकी आज्ञाओ को लिखने वाले मुख्य लेखक को फौरन बुलाया जाय। जब वह आया और उसने उसे अदब के साथ सलाम किया तो वह बोला :

"आज हमारी तबियत बहुत उदास है। कई तरह से प्रयत्न करने के बाद भी मन को सतोप नहीं मिल रहा है। क्या तुम कुछ कमाल की बात कह कर हमारी उदासी दूर कर सकते हो?"

यह सुनते ही मुख्य लेखक ने उत्तर दिया :

भीत नेत्रों से देखा कि पलक मारते ही नार्वे का एरिक और उसका साथी जदहे के मुँह मे जाकर गायब हो गये। भय से इसका हाल बुरा था। अब क पग भी आगे रखने का किसी को साहस न हुआ। डेनमार्क का एरिक य भय से थर-थर कॉप रहा था। तत्पश्चात् अपने सब साथियों को लेकर वह वहाँ से लौट पड़ा। नार्वे के एरिक और उसके साथी की मृत्यु पर बहुत दुख और मातम मनाया गया। जिस रास्ते से गये थे उसी रास्ते से होकर खतरनाक जगलो और पहाड़ी दर्रों को पार करते हुए ओडेन-सेकर पहुँचने इरादा पूरी तरह से छोड़ कर यह लोग अपने देश वापस आ गये।

डेनमार्क का एरिक लौट कर पुन भोग-विलास मे लिप्त हो गया और उस कल्पित स्वर्ग के बारे मे कही गयी बातो को एकदम भूल गया।

परन्तु बहुत दिनों तक उसकी आज्ञा से डेनमार्क में नार्वे के एरिक के लिये मातम मनाया जाता रहा। इन लोगों ने लौट कर नार्वे देश मे भी उनके शहजादे की मृत्यु का समाचार भेज दिया जिसे सुन कर वहाँ भी अपार दुख फैल गया।

कई वर्ष बीत गये। एक दिन प्रभात काल मे एक सुन्दर अजनबी अपने एक साथी को लेकर नार्वे के राजा के यहाँ पहुँचा। वह एरिक था। लोगों ने उसे देखा और भय से भागे। एरिक जो कि अजदेह के मुँह मे मर चुका था, अब निश्चय ही भूत बन कर आया है यही उनकी धारणा थी। चारों ओर भगदड मच गई परन्तु उसी समय ऐरिक ने एक ऊँचे टीले पर चढ कर चिल्ला कर कहा :

"मित्रो मै मरा नहीं हूँ, मैं भूत नहीं हूँ, देखो मै तुम्हारी ही भाँति हाड और मास का बना हुआ जीवित मनुष्य हूँ। मुझे अजदहे ने खाया नहीं था बल्कि अजदहे के मुख में होकर ही मै ओडेन सेकर के अमर-ज्योति से प्रकाशित देश में जा पहुँचा था।"

उसकी वाणी मे ऐसा प्रभाव था कि भागते हुए लोग उसे सुन कर ठहर गये और लौट कर उसकी ओर देखने लगे। एरिक के चारों ओर भीड़ लग गई और तब उन्होंने बहुत खुशी के साथ उसका स्वागत किया। वह

"हे फराओ! तुम्हारी आज्ञा से भला कौन-सा काम नहीं हो सकता। जी अगर किसी कारण से अथवा अकेलेपन से उकता गया है तो वह फौरन ठीक हो सकता है। तुम्हें इस प्रकार यहाँ नहीं बैठे रहना चाहिये, झील पर जाकर नाव में सैर करनी चाहिये। नाव खेने के लिये हरम की अनेक नई और सुन्दर दासियाँ चलें और जब जल में विहार करते हुए किनारे पर खिले फूलों और हरे-भरे बागों को देख-देखकर ही तबियत खुश हो जायगी—आज्ञा हो तो मैं भी साथ चलूँ?"

'बादशाह को यह सलाह बहुत पसन्द आई। उसने तुरन्त आज्ञा दी और नई खरीदी युवती दासियों को सामने बुलाया और उनमें से बीस कुमारियाँ छाँट लीं जो अत्यत सुन्दर और कमनीय लगती थीं। उन्हें साथ लेकर लेखक के साथ वह झील पर पहुँचा। तत्पश्चात् वह नाव पर जा बैठा और उन बीस स्त्रियों ने आबनूस की लकड़ी से बने चमकते पतवारों से नाव खेना शुरू किया। वह पतवार बड़े चिकने और साफ थे जिनके काले रंग पर सोना मढ़ा होने के कारण वह बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। नाव झील में आगे बढ़ने लगी और राजा की तबियत अब सचमुच ही बहुत सुधर गई। सुन्दरियाँ साथ-साथ पतले सुरीले कंठों से गाना भी गा रही थीं। फराओ उसे सुन-कर बहुत खुश हुआ और उसने प्रशसाभरी दृष्टि से मुख्य लेखक की ओर देखा।

जब दूर जाकर एक मोड़ आया और आगे वाली स्त्री ने नाव घुमाई तो उसके पतवार की मूँठ अचानक उसके बालों से छू गई जिससे उसके बालों में पिरोए हुए जवाहिरातों के गुच्छे में से एक चमकीला पन्ना निकल गया और पानी में गिर गया। उस स्त्री ने उस पन्ने को जब गिरता देखा तो वह दुखी हो गई और तुरन्त वह नाव चलाना छोड़कर पतवार ऊपर उठाकर बैठ गई और उसने गाना भी हठात् बन्द कर दिया। उसको रुकते देखकर पीछे की सभी सुन्दरियों ने भी गाना रोक दिया और अपने-अपने डाँड़ जल से बाहर निकाल लिये। हठात् गाना बन्द हो गया और नाव भी वहीं रुक गई। फराओ को यह अच्छा नहीं लगा। वह बोला:

"रुको मत, रुको मत—चलती चलो, गाती चलो"

हत्या कर ओडिन से बदला लेने के लिए वीलेन्ड भी उनके साथ गया परन्तु उसकी विश्वविजयी तलवार उसके पास न होने के कारण, जिसे निथुड ने अपने कब्जे मे कर लिया था और जो अब वौडविल्ड के पास थी, वह इस युद्ध मे मारा गया। युद्ध में जाते समय अपने खजाने से अत्यधिक मोह होने के कारण वह उसकी रक्षा के लिए उसको शाप ग्रस्त कर गया। जिससे जो भी उसे उसके बाद मे लेता, उस शाप द्वारा नाश को प्राप्त हो जाता। वीलेन्ड के मरने के बाद एक बौना अग्नि के समान चमकते हुए नेत्रों वाले अजदहे का रूप धारण करके उस खजाने की रक्षा करने ागा। खजाने के अन्दर वह छल्ले अपने आप बढते चले जा रहे थे। यहाँ ाक कि वर्षों बाद वह बढ-बढ कर इतनी बडी जजीर बन गई जिससे देश-देशान्तर, पवन, और जल सभी बाँधे जा सकते थे।

वर्षों बीत गये और वीलेन्ड और वौडविल्ड के प्रेम की चर्चा गाथा बन कर गाई जाने लगी। धधकती आग की लपटों से चमकते हुए आईस लैंड के प्रचड योद्धा जब रात्रियो में अपने भवनों में बैठ कर भुने हुए मास व लाकर मदिरा से मदमस्त हो उठते थे तब तारों के वाद्यों पर चपल उँगलि को फेरती हुई अर्धनग्न नर्त्तकियो के नृत्य की ताल से समवेत स्वर मिल हुए कविगण वीलेंड और बौडविल्ड की प्रेम गाथा को उन्मुक्त कंठ से र थे। मदहोश सैनिक उस समय विभोर हो उठते और मुक्तहस्तों से उन्हे लुटाते, बहुमूल्य मुक्ताहारों और सुवर्ण से पृथ्वी ढॅक जाती थी। वील और वौडविल्ड की प्रेमगाथा अमर बन चुकी थी।

"पर आगे वाली ने तो अपने पतवार ही ऊपर उठा लिये हैं", पीछे की सब स्त्रियों ने उत्तर दिया

बादशाह ने तब उस स्त्री से पूछा

"तूने क्यो अपनी पतवार उठायी है ?"

"हाय ! मेरा पन्ना जो जल मे गिर गया है," आह भरते हुए उस स्त्री ने उत्तर दिया ।

"कोई बात नही" फराओ बोला "म तुझे दूसरा दे दूँगा, पर अब तू चल और आनन्द का स्रोत पहिले की भाँति बहने दे "

वह स्त्री यह सुनकर हठ के साथ बोली :

"मुझे तो मेरा वही पन्ना चाहिये जो जल मे गिर गया है । मुझे दूसरा नही चाहिये । फराओ की आज्ञा से क्या जल मे से मेरा पन्ना नहीं निकल सकता ?" उसने कटाक्ष किया ।

बादशाह ने तब लेखक से कहा :

"इस स्त्री का पन्ना भला कैसे इस अथाह जल मे से निकले ? तुम्हारी सलाह से मेरी तबियत तो जरूर बहल गई पर अब फिर एक विकट समस्या आ पडी है है कोई तरकीब तुम्हारे पास ?"

"है" लेखक ने उत्तर दिया, "अभी वही पन्ना मिल जायगा" और तब उसने जादू के मत्र पढे और फिर पानी को अपनी बीच की उँगली से छू दिया । तुरत पानी दो हिस्सो मे बँट गया और उनके बीच मे जमीन दिखाई देने लग गई । न इधर का पानी उधर जाता था और न उधर का इधर । नाव भी पानी के एक ओर निश्चल खडी हो गई । अब लेखक उतरा और पानी के बीच की सूखी जमीन पर जाकर उसने वह पन्ना ढूँढा और फिर ऊपर आकर उसे उस स्त्री को दे दिया । स्त्री उसे पाकर बहुत खुश हुई । फिर लेखक ने जादू ढीला कर दिया जिससे जल की रोक हट गई और वह मिल गया । फराओ आश्चर्य से भर उठा और उसने महल मे लौट आने पर उस लेखक को बहुत इनाम दिया । अब उसकी उदासी भी पूरी तरह से जा चुकी थी ।

जब एक हजार वर्ष बीत जाते हैं तब मैं उस पहाड की चोटी पर अपनी चोंच घिसने जाती हूँ। इसी प्रकार प्रत्येक हजारवे वर्ष मे एक दिन के लिए वहाँ जाती रहती हूँ। एक दिन जब इसी तरह मेरी चोंच की रगड से वह सारा पहाड घिस कर खत्म हो जायगा तब अनन्त का एक दिन समाप्त होगा।"

रेगिस ने सुना और उस अपार समय की वह कल्पना भी नहीं कर सका। उसका गर्व खड खड होकर बिखर गया। चिड़िया के सामने वह सिर झुका कर बैठ गया।

यह कहकर खफरा चुप हो गया। खुफू सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने शाहजादे की भरे दरबार में बुद्धिमत्ता और ज्ञान की प्रशसा की। तत्पश्चात् अपने पिता स्नैफ्रू और उसके लेखक की कब्रों पर बहुमूल्य भेंटें चढाने की आज्ञा दी।

खफरा अपने आसन पर बैठ चुका था और दरबार में सन्नाटा छा गया था। सभी लोग उस लेखक के किये हुए कमाल को सोच रहे थे। उसी समय दूसरा शाहजादा 'हौदी देफ' अपने आसन से उठा और उसने फराओ को झुककर सलाम किया। वह बोला :

'हे फराओ! अब यदि आज्ञा हो तो मैं भी एक बात कहूँ।" फराओ ने आज्ञा दे दी, तब वह बोला :

"पुराने जमाने की जादू की बातें तो आपने सुनीं जो सचमुच ही कमाल की हैं, पर मैं आजकल जीवित एक विचित्र जादूगर को यहाँ ला सकता हूँ जिसके करतबो को देखकर सभी दङ्ग रह जायँगे "

बीच में ही फराओ बोल उठा, "मेरे बेटे! वह कौन है और कहाँ है?"

शाहजादा बोला :

"वह एक बहुत ही वृद्ध मनुष्य है। उसकी आयु एक सौ दस वर्ष की है; परन्तु उसके जादू कमाल के हैं। उसका नाम देदी है और उसकी खूराक गजब की है। वह नित्य गाय का एक पुट्ठा और पॉच सो रोटियाँ खाता है और फिर इनके ऊपर एक सौ मटके भर कर शराब पीता है। उसकी शक्ति अद्भुत है क्योंकि वह जीवित प्राणी का सिर काटकर अपने जादू से उसे फिर जोड सकता है। बडे-बडे शेर उसके पीछे बिल्ली की तरह चलते हैं। पर वह उनकी तरफ मुडकर भी नहीं देखता। इन सबसे बढकर तो यह है कि वह थौथ देवता के रहने के स्थान के अनेक रहस्य जानता है जिन्हें जान-कर अपनी कब्र का नक्शा जानने के तुम इच्छुक भी हो " 'यदि आज्ञा हो तो ऐसे कमाल के आदमी को पेश करूँ।"

उसकी बातों से दरबारियो पर गहरा असर पडा। सभी लोग उसे देखना चाहते थे। फराओ बोला :

रहती थी, असख्य धन राशि भी थी परन्तु गौर्म का लक्ष्य खास तौर से उसे प्राप्त करना न था। वह तो यह दिखा देना चाहता था कि जिस काम को कोई भी जीवित मनुष्य नहीं कर सकता है उसे उसने अपनी जान की परवा न करते हुए पूरा कर दिया है। इसके अतिरिक्त वहाँ जाकर उन अमार आत्माओं से ज्ञान प्राप्त करने की भी इसकी तीव्र इच्छा थी।

राजा गौर्म ने आखिर एक दिन डौंडी पिटवा दी। उस घोषणा में उसने कहा कि वह सुदूर उत्तर मे गिरौड के देश की ओर शीघ्र कूँच करने वाला है। जो उसके साथ चलना चाहे खुशी-खुशी चले। डेनमार्क से तीन सौ बहादुर उसके साथ जाने को छटे और उन्होंने उससे कहा कि वह उस खतरों से भरे रास्ते मे उसके साथ चलने को तैयार हैं चाहे जान निकल जाय पर वे हट कर वापस न जायगे। उनमे से एक वोर पुरुष का नाम थौरकिल था जिसकी बुद्धि और साहस सारे डेनमार्क में प्रसिद्ध थी। वह पहले भी सुदूर उत्तर की ओर समुद्र में यात्रा कर चुका था और उन खतरों से भरे रास्तों का उसे अनुभव था। गौर्म को जब यह मालूम हुआ तब वह बहुत खुश हुआ और उसने उसे ही उस यात्रा का मुखिया बना दिया। उसी की सलाह से तीन बडे-बडे जहाज बनवाये गये जिन्हें अन्दर से पुष्ट बैलो की मोटी खालों से मॅढा गया जिससे मार्ग मे भयंकर ठडे तूफानो से प्राणो की रक्षा हो सके। विचित्र अस्त्रायुधों से तथा बहुत काफी खाने की वस्तुओं से जहाज भर दिया गया। तत्पश्चात् हर एक जहाज पर सौ-सौ आदमी चढ गये और अनुकूल हवा देख कर लगर उठा लिये गये और किनारो से छूट कर जहाज समुद्रों की लहरों को चीरते आगे बढे। यात्रा का प्रारम्भ हो गया था। हैलोगैलैन्ड नामक टापू तक उनकी यात्रा अनुकूल पवन द्वारा हॅसी-खुशी मे बीती परन्तु उसके आगे लहरों में ज्वार-भाटे आने लगे और हवा भी उलटी चलने लगी। एक ओर से भीम लहरे उठतीं थी तो दूसरी ओर से पवन का थपेडा लगता था और तब लहरे आकाश मे बहुत ऊपर तक जहाजों को डावॉडोल कर देती थीं। अब जहाज में सवार उन लोगों को घोर कष्ट का सामना करना पडा। धीरे-धीरे सूर्य का प्रकाश भी कम होता चला गया। इतनी जोरों से तूफान चलने लगे कि दिशा ज्ञान भी जाता रहा और तब मृत्यु की

"हौदी देफ ! तूने जो अद्भुत बातें कही है। उनमे हमारी बडी इच्छा हो रही है कि शीघ्रातिशीघ्र हम उसे देखें। तू फौरन जा उसे साथ लेकर वापस आ। यदि उस तक पहुँचना कठिन है तो अपने साथ सेना ले जा जो तेरी रक्षा करती चले। अब तू शीघ्र चल दे।"

शाहजादा उस जादूगर को लाने चल दिया। वह नाव पर सवार होकर दक्षिण दिशा की ओर नील नदी के पार गया। वहाँ सोने की पालकी मे बैठकर 'देद स्नैफ्रू' नामक नगर मे पहुँच कर वह सीधे देदी के घर पहुँचा। उस समय बुड्ढा जादूगर देदी द्वार के सामने ही पृथ्वी पर पडा सो रहा था। राजकुमार की आज्ञा से वह जगाया गया। जब वह जागा और उठने का प्रयत्न करने लगा तो राजकुमार ने उसे सलाम किया और कहा :

"तुम वृद्ध हो, इसलिये मेरे सत्कार मे मत उठो। मै तुम्हारी इज्जत करता हूँ।"

वृद्ध यह सुनकर खुश हुआ। तब राजकुमार बोला :

"मेरे पिता फराओ महान ने तुम्हे इज्जत देने के लिये बुलाया है। वह तुम्हें सब कुछ देने को तैयार हैं जिससे तुम्हारी कब्र का भी तुम्हारे बाद अच्छी तरह स प्रबन्ध हो सके। मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्र तुम मेरे साथ चलो क्योकि मेरे साथ जाने मे तुम्हे तनिक भी कष्ट न होगा।"

देदी यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने उसे और फराओ दोनो को बहुत बहुत धन्यवाद दिया, तत्पश्चात् वह बोला :

"तुम्हारी नेकी के लिये भगवान् तुम्हे महान् बनाये, तुम बुराइयो को अपने यश द्वारा दूर करो और स्वर्ग के आलोकित पथ पर ही सदा अग्रसर होओ"

होदीदेफ ने तब हाथ का सहारा देकर देदी को उठाया और उसे बड़ी इज्जत के साथ पालकी पर चढाया। देदी उसके इस सत्कार से गदगद् हो उठा और उसने उसे बहुत आशीर्वाद दिये। जब उसने जहाज पर सवार होकर अच्छे और भर पेट भोजन किये तब वह इतना खुश हुआ कि उसने शाहजादे की तारीफों के पुल बाँध दिये। एक पिछले जहाज पर देदी के

नहीं रोका और किनारे किनारे ही आगे बढ़ता चला गया और अन्त मे उस स्थान पर जा पहुँचा जिसकी उसे तलाश थी। जहाज किनारे से बाँध दिये गये और योद्धा किनारे पर उतर पडे। देखते ही देखते समुद्र तट तने हुए तम्बूओं से भर गया। भयानक जाडा पड़ रहा था और आँधी साँय-साँय कर रही थी। थौरकिल ने कहा :

"अब वह स्थान आ गया है जहाँ से गिरोड का निवास पास ही है।' अब शीघ्र ही हम लोग उस तरफ जायेंगे। मै तुम लोगों को समय से ही आगाह कर देना चाहता हूँ कि यहाँ से आगे जाकर कोई भी आदमी अपना मुँह न खोले न किसी अजनबी आदमी से बोले ही। यदि कोई कुछ पूछे भी तो भी उत्तर न दो यदि ऐसा न किया और मुँह खोल दिया अथवा बोल पडे तो निश्चय समझो कि आने वाले दानव अवश्य तुम्हारा अहित करेंगे।"

थोडी दूर जाने पर उनकी ओर एक बहुत ऊँचा और बलवान दानवो आया। उसने आकर इनमे से प्रत्येक यात्री का नाम लेकर उन्हे पुकारा और वह उनसे खुल कर बात करते हुए सवाल करने लगा। उसको देख कर वह लोग डर से थर-थर काँपने लगे परन्तु किसी ने उसके सवालों का उत्तर न दिया। थौरकिल ने तब अपने लोगो को बताया कि वह दानव गिरौड का भाई गुडमन्ड था। उसने यह भी कहा कि वह उस देश का रखवाला था जो वहाँ के रहने वाले निवासियों की हर तरह की मुसीबतो से रक्षा किया करता था। किसी को उत्तर न देता देख कर गुडमन्ड ने थौरकिल से पूछा :

"हे थौरकिल! तेरे साथी लोग मेरे प्रश्नो का उत्तर क्यो नहीं देते क्या यह लोग गूँगे हैं?"

थौरकिल जानता था कि इस समय झूँठ बोल कर उन्हे गूँगे बताने से गुडमन्ड उन्हे सचमुच ही गूँगा बना देगा। इसलिये उसने सच बोलना ही मुनासिब समझा, वह बोला :

"मेरे साथी तुम्हारी बोली न समझते हैं न बोल ही सकते हैं, इसी कारण वह तुमसे तुम्हारी जबान बोलते हिचकते हैं।"

सहायक जादूगर और जादू की किताबें लादी गई। राजकुमार ने मार्ग में देदी को तनिक भी कष्ट नहीं होने दिया।

जब होदीदेफ देदी को लेकर फराओ के पास पहुँचा उस समय वह अपने हृदय में बहुत प्रसन्न हो रहा था।

वह सीधा फराओ के सिंहासन के सामने जाकर खड़ा हुआ और उसने उसे सलाम किया। बेटे को यात्रा से लौटे देखकर फराओ खुश हुआ। तभी होदीदेफ बोला :

"शाहशाह जिंदाबाद! मैं देदी जादूगर को नील की दक्षिणी धाराओं को चीरता हुआ ले आया हूँ ."

शाहशाह यह सुनकर खुश हुआ और बोला :

"उस आदमी को हमारे हुजूर में पेश किया जाय ...."

देदी आया और उसने फराओ को अदब के साथ सलाम किया और आज्ञा पाने के लिये चुपचाप खड़ा रहा, फराओ ने उसे देखकर उससे पूछा :

"अभी तक तुम हमारे सामने क्यों नहीं आये थे ?"

देदी ने गम्भीर वाणी से उत्तर दिया :

"हे बादशाह! आ तो वही सकता है जो बुलाया जाता है। अब मुझे याद किया गया है तो हाजिर हूँ"

तब बादशाह ने फिर पूछा :

"हमने सुना है कि तुम अपने जादू से प्राणी के कटे सिर को जोड़ देते हो ?"

"शाहंशाह ने ठीक ही सुना है", देदी ने इतमीनान के साथ जवाब दिया।

"फौरन एक कैदी की गर्दन काट दी जाय और यहाँ लाया जाय," बादशाह ने हुक्म दिया।

"ठहरिये हजूर", देदी ने बीच मे ही बात काट कर कहा, "इस प्रकार का व्यवहार मै मनुष्यों से तो क्या पशुओं से भी नहीं करता। आप को तो प्राणी से मतलब है, कोई परिन्दा ही लाने का हुक्म फरमाये।"

अकेला बुची जाल मे फॅस गया और जब गुडमन्ड की एक सुन्दरी लडकी से विवाह करने के लिये प्रस्तुत होकर वह उसकी ओर बढा और उसने उसका स्पर्श किया वैसे ही वह पागल हो गया। वह महावीर जो गिरोड की भयकर सेना से नहीं हारा अब एक स्त्री के सौन्दर्य का शिकार हो गया। बेचारा कभी अपने देश वापस न लौट सका। जब गोर्म और थौरकिल लौटे तो वह उन्हे छोडने समुद्र तट तक गया। वहाँ समुद्र की लहरों मे वह कूद पडा। पागल तो वह था ही, बहुत ज्यादा नमक का पानी पी गया और मर गया।

राजा गौर्म और थौरकिल अपने मरे हुऐ साथियो और खास कर बुची के लिऐ दुख मे डूब गये। तत्पश्चात उन्होंने उस भयानक स्थान को छोड़ कर घर की ओर शीघ्र प्रस्थान कर देने मे ही अपना कल्याण समझा और तब वह चल दिये परन्तु यह यात्रा भी पहली से कम खतरनाक साबित नहीं हुई। भयकर तूफानों और समुद्र की बडी-बडी लहरो से उनके जहाज इस कदर हिल उठते थे और उनमे पानी भर आता था कि कभी-कभी तो उनकी आँखो के सामने मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देती थी और थोडे दिनों बाद जब खाना खत्म हो गया तब लोग भूख से तडप-तडप् कर मरने लगे। उस कठिन समय मे लोग देवताओं की मनौती करने लगे। राजा गोर्म प्राचीन समय के जौटन हीम में रहने वाले जादू की नगरी के राजा दानव उटगार्ड-लोक का बडा भक्त था। उसने उसकी याद की, और मनौती माँगी। उसने कहा •

'हे दानवो के राजा! तू हमारी रक्षा कर! मै शपथपूर्वक कहता हूँ कि डेनमार्क पहुँच कर तेरे नाम के लिये बीस दिन तक रोज बीस बैल काट कर कुरबानियाँ दूँगा और यदि जीवित रहा तो तेरे पास जहाँ भी तू रहता है बहुमूल्य भेटें पहुँचाऊँगा। इस वक्त तू हमारी इस गरजते हुऐ तूफान और भयकर समुद्र से रक्षा कर।''

रात्रि के उस भयकर वातावरण में एक दम चाँद क्षितिज के उस पार डूब गया। एक दम सारे तूफान और ज्वार-भाटे बन्द हो गये, जहाजों का हिलना बन्द हो गया, चारो ओर भयकर अन्धकार फैल गया, परन्तु अब वातावरण गम्भीर, नीरव और प्रशान्त हो गया। राजा गौर्म ने श्रद्धा से उटगार्ड-लोक के

फराओ ने तब परिन्दा काटकर लाने की ही आज्ञा दे दी—फौरन एक बतक लाई गई और सब के बीच उसका सिर काट दिया गया। उसका सिर बाँई ओर और धड दाँई ओर गिरा। देदी आगे आया और उसने अपना मंत्र पढा कटा धड़ सरकने लगा। देदी ने आखिरी मंत्र पढा और सिर धड़ से जुड़ गया। बतक उठ बैठी और उसने बीच दरबार मे आवाज लगाई। सब लोग इस आश्चर्यजनक जादू से बहुत प्रभावित हुए। तत्पश्चात् एक मुर्गा और एक गाय का सिर काटा गया और उन्हे भी पूर्ववत् देदी ने जादू से जोड दिया। अबकी इसके अलावा देदी ने एक कमाल और किया। जब वह चला तो गाय उसके पीछे-पीछे चलने भी लग गई। फराओ यह देख कर बहुत खुश हुआ। वह बोला :

"हमने सुना है कि तुम थौथ देवता के निवास-स्थान के रहस्यो को भी अपने काबू मे रखते हो। क्या यह सच है ?"

वृद्ध ने उत्तर दिया :

"काबू मे तो उन्हें मै नहीं रखता हूँ पर यह जरूर जानता हूँ कि वह रहस्यमय कही जाने वाली चीजे कहाँ छिपी रखी रहती हैं।"

"कहाँ हैं वह ?" फराओ ने उत्सुकता से पूछा।

वृद्ध यह सुनकर थोड़ी देर चुप रहा। उसका मौन देखकर फराओ की जिज्ञासा बहुत बढ गई। वह अधीर होकर उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा, तत्पश्चात् वृद्ध ने कहा :

"बादशाह की इजाजत हो तो मै बैठ जाऊँ क्योंकि वृद्धावस्था के कारण मुझसे अधिक खड़ा नही रहा जाता। श्रीमान् को शायद मालूम नही है कि मेरी आयु एक सौ दस साल की हो चुकी है।"

फराओ की आज्ञा से तुरन्त एक जाड़ाऊ चौकी पर वह बिठाया गया। तत्पश्चात् वह बोला

"हैलिओपालिस के मंदिर के भीतरी कमरे मे एक सन्दूक के अन्दर उस सब रहस्य के नकशे व सामान छिपाकर रखे हुए हैं, परन्तु जो पुरुष उन्हें लाकर आपको देगा वह सामान्य नहीं होगा। क्या श्रीमान् को मालूम है कि उन्हें वहाँ जाकर आपको कौन देगा ?"

पर शक्ति न होने के कारण फिर गिर पडे। शत्रुओ ने उन पर हमला किया। और उन्हें विवश और असहाय पाकर फाड़कर खा लिया।

अब भागते-भागते थौरकिल और उसके साथी अमरों की उस नगरी से दूर जा चुके थे। भय उनके हृदय मे अब भी सजीव होकर उन्हें डरा रहा था। जब वह नदी के किनारे आये तो उन्होंने देखा कि अपने वचन के अनुसार गुडमन्ड बैठा हुआ उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। इन्होंने इशारा किया जिसे देख कर गुडमन्ड ने अपने जहाज द्वारा इन्हे नदी के इस पार उतार लिया और तब उनको अपने घर ले गया। उसी प्रकार फिर इन्हें दावत दी गई और सुन्दरी स्त्रियाँ दिखाई गई और इन्होंने भी वैसे ही न तो वह दावत ही खाई न उन स्त्रियों को ही अपनाया।

डेनमार्क मे स्वागत के नगाड़े बजने लगे। सेना ने आकर राजा गौर्म, थौरकिल और उनके साथियों पर पुष्प वर्षा की। सुन्दरियों ने उनके आगमन के स्वागत मे नृत्य किये और मधुर सगीत से डेनमार्क स्वर लहरियों मे कॉपने लगा। राजा गौर्म का यश दूर दूर तक फैल गया, उसने थौरकिल को अपना मत्री बना लिया और वह सुखपूर्वक अपना राज्य करने लगा।

"नहीं ." फराओ ने अधीरतापूर्वक उत्तर दिया।

तब देदी ने कहा :

'राहर्मांचिस के बड़े पुजारी की सबसे छोटी स्त्री के तीन पुत्र उत्पन्न होंगे। इस समय वह स्त्री, जिसका नाम रद्-देदित है, बिना संतान के है, परन्तु आज के पैंतीस दिन बाद वह गर्भवती होगी। इसी प्रकार पाँच वर्ष के अंदर ही उसके तीन पुत्र हो जायेंगे, बड़े होकर वह यशस्वी बनेंगे। सबसे बड़ा लड़का हेलिओपोलिस के मंदिर का मुख्य पुजारी बनेगा और तब वही उन अद्भुत रहस्यों को प्राप्त करेगा, तत्पश्चात् वह और उसका भाई राजा बनेंगे और सारी पृथ्वी पर राज्य करेंगे।"

यह सुनकर फराओ खूफू चिंता में डूब गया और उदासी से उसका सिर झुक गया। उसको एकदम उदास देखकर देदी सात्वना के स्वर से एकदम बोल उठा :

"हे बादशाह! किस सोच में पड़ गये हो! यकीन रखो तुम्हारे बाद तुम्हारा पुत्र और उसके बाद उसका पुत्र अखण्ड राज्य करेगा। तुम्हारे पोते के बाद इन भाइयों में से जरूर एक राजा बनेगा, तुम्हें इस बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है ......"

राजा यह सुनकर चुप रहा। सारे दर्बार में निस्तब्धता छा गई। बड़ी देर बाद फराओ ने देदी से पूछा :

"रद्-देदित के यह पुत्र कब राजा होंगे?"

"इस समय मैं 'रा' के मंदिर में स्वयं जाऊँगा" देदी ने योगावस्था से उत्तर दिया "क्योंकि मेरी आयु ५०० साल की है। अभी मुझे बहुत जीना है "

तत्पश्चात् फराओ की आज्ञा से देदी को शाहजादे हॉर्टीदेफ के महल में ठहराया गया। वहाँ उसका आदर-सत्कार पूर्ण रूप में होता था। वह नित्य एक बैल, एक हजार रोटियाँ, एक सौ प्याज के गुच्छे ... था और एक सौ बड़ी केतलियाँ भरकर शराब पीता था।

राजा खूफू अपने दोनों बेटों की बातें सुनकर उनसे बहुत खुश रहता था। देदी की खूराक के लिये उसने उसे एक बहुत बड़ा भूमि-भाग इनाम में दे दिया।

चढ़ कर हमेशा उसके साथ रहती और युद्धों मे उसका साथ देती थी। वाल्डर का ऐश्वर्य, उसकी सुन्दरता और उसका प्रभाव नौ दुनियाओं पर अखड था।

एक बार अपने पिता ओडिन के साथ वाल्डर एक लम्बी यात्रा पर गया। ओडिन अपने प्रसिद्ध स्लीपनर पर चढा हुआ था और वाल्डर अपने चाँदी के घोडे पर। जहाँ-जहाँ वाल्डर के घोडे की पूरी टाप पृथ्वी पर पडती वही मीठे जल के कुये निकल आते। उस दिन जब चले तो एक भारी अपशकुन हुआ जिसने भविष्य में आने वाली दुर्घटना की सूचना दी। वाल्डर का घोडा स्लीपनर से जैसे ही आगे निकला उसके पैर मे मोच आ गई। यात्रा तो वहीं रोक दी गई पर वाल्डर उस दिन से उदास रहने लगा। उसको उदास देखकर असगार्ड मे भारी चिन्ता फैल गई। मन्त्रों द्वारा उसकी उदासी दूर करने की कोशिश की जाने लगी। उसकी स्त्री नाना जो कि चन्द्रमा की कुमारी थी विशेष जादुओं द्वारा उसे ठीक करने लगी। नाना की सुन्दरी बहिन सुन्ना जोकि सूर्य की कुमारी थी उसने उस पर अपना जादू चलाया। वाल्डर की माँ फ्रिग और फ्रिग की बहिन फुल्ला उन्होंने भी उसके सामने मन्त्रों भरे गाने गाये। ओडिन ने उसके चारो ओर मन्त्र पढ-पढ कर फेके और बुराइयों से उसकी रक्षा की पर इन सब के होते हुये वाल्डर की हालत बिगडती गई और वह सदा उदास रहने लगा। उसके आँखो की चमक गायब हो गई। माथे पर चिन्ता और होठों पर दु ख छा गया। उसकी पहली खुशी उसके मुख पर फिर दिखाई नहीं दी। जब देवताओं को यह बात मालूम हुई तो वह लोग उसके पास आये और उन्होंने उसके दुख का कारण पूछा। वाल्डर ने कहा कि रातों को उसे भयानक स्वप्न उसे दिखाई देते थे और न टलने वाले शकुन उसे साफ बतलाते थे कि अब उसके जीवन का अन्त आ गया था। सभी देवता यह सुनकर बहुत चिन्तित हो उठे। उसकी माता फ्रिग जिसको भविष्य का काफी ज्ञान था अपनी बुद्धि के लिये मशहूर थी। सिवा वाल्डर के भविष्य के वह आगे आने वाली सभी बातो को जानती थी। उसने अपने पुत्र की रक्षा का एक विचित्र उपाय सोचा। नौओं दुनियाओं मे उसने अपनी दासियाँ भेजीं और उनसे कहा •

मकबरा

मिश्र देश मे नील नदी के किनारे बहुत पुराने समय मे दो भाई रहते थे। बडे का नाम अनपू और छोटे का नाम बाटा था। अनपू विवाहित था और उसकी स्त्री जवान और सुन्दरी थी। वह बाटा के समान उम्र की थी जो अपने बडे भाई से बहुत छोटा था। बाटा अपने बडे भाई को पिता की भाँति इज्जत करता था और उसकी स्त्री को माता मानता था। वह उनके घर मे उनके सभी काम खुशी-खुशी किया करता था। उनके वस्त्र धोने से लेकर उनके खेत बोने, फसल काटने, बैलो और मवेशियो को जगल ले जाने, दूध दुहने इत्यादि सभी काम करता था। सारे मिश्र देश मे उस जैसा मेहनती और कोई नहीं था। लोग कहा करते थे कि उसमे परमात्मा का कोई खास अश मौजूद था, तभी वह इतनी मेहनत किया करता था। इसी प्रकार रहते हुए उन्हे बहुत दिन हो गए। नित्य प्रात काल बाटा बैलो इत्यादि को लेकर जगल की ओर निकल जाता और उन्हे वहाँ चराया करता। दिन भर खेत पर काम करने के बाद सध्या समय जगल की लकड़ियों और मवेशियो का दूध लेकर वह घर लौटता था। घर पर जब उसका भाई और भाभी बैठकर खाते-पीते उस समय वह बैलो के पास घास बिछा कर सो जाता था क्योंकि वह तो जगल मे ही खा पी लेता था। फिर जब रात्रि बीत जाती और भोर का प्रकाश चारो ओर फैलता और पवित्र भूमि उस प्रकाश से जगमगा उठती तो बाटा ही पहिले सोकर उठ जाता और जब तक अनपू और उसकी स्त्री सोकर उठते तब तक वह उनके लिए लाल गेहूँ को पीसकर उसके आटे से रोटी बना लेता था। उनके लिए भोजन रखकर वह अपना हिस्सा कपडे मे बाँध कर बैलो और मवेशियों को लेकर जगल मे चला जाता था और फिर वहाँ से शाम को ही लौटता। इस प्रकार अनपू की स्त्री को कोई काम नही करना पड़ता, वह आराम से पडी-पड़ी खाया करती और अधिकतर सिगार करने मे ही समय बिताती थी। अनपू उससे आयु मे बहुत बड़ा था। इसलिये वह उससे

असगार्ड मे बाल्डर

हरी घास से जडी हुई समतल धरती पर जब स्लीपनर चला तो उसकी ाप की आवाज दूर-दूर तक सुनाई पडती थी। ओडिन ने उसे इतना भगाया कि सारा जगल उसकी टापो से गूँज उठा और तब देर तक घोडा भगाने के बाद ओडिन एक विचित्र जगह पर पहुँचा, जिसे हैलीजार-रैन कहते थे। उष्ण काल का लाल बौना हैडिग यहाँ का रखवाला था और इसके अन्दर सुन्दर ऐस-मेगिरलिफ लिफथरेजर और उनके वशज रहते थे। यह हैलीजार-रैन हैला का घर था और इसमे रहने वाले ये सभी लोग आगे चलकर जब असगार्ड के देवता रैगनैरोक मे मारे गये तो इन्होंने जाकर असगार्ड को दुबारा आबाद किया था।

ओडिन हैलीजार-रैन के पूर्वी द्वार की तरफ गया जहाँ एक कब्र थी। इस कब्र के अन्दर पुराने समय की एक जादूगरनी मरी पड़ी थी। ओडिन इस बात को जानता था कि उस जादूगरनी की आत्मा भविष्य के बारे मे सब कुछ बतला सकती थी। वह घोडे से उतरा और कब्र के सिरे की तरफ जाकर बैठ गया और उसने विचित्र मन्त्रो द्वारा उसकी आत्मा को जगाया ओडिन उत्तर की तरफ मुख करके बैठ गया और जादू का एक चॉटा उस कब्र पर मारा और कहा :

"हे बावा जो कुछ मै पूछूँ उसका सही-सही उत्तर दे और याद रख कि मेरे सवालो का सही उत्तर दिये बिना और मेरी आज्ञा के बिना तू जा नहीं सकेगी।'

इसके बाद ओडिन ने कब्र की बॉई तरफ लोहे का घटा बजाया और साथ ही कब्र के अन्दर से आवाज आई और बावा की आत्मा प्रेतो की भयावनी आवाज से बोली :

"हाय मै तो मर चुकी हूँ। युगों बीत गये और मैं मरी पड़ी हूँ। बरफ ने कब्र के अन्दर घुस कर गड्ढों को भर लिया है ठडे मेहो ने और गीली ओस ने मुझे भिगो रक्खा है। मै ठिठुर चुकी हूँ और मर चकी हूँ। यह कौन नया आदमी है जिसने आकर मेरी शान्ति को भंग किया है ?"

भी घुलमिल कर नहीं रह पाती थी। स्वभाव की वह चचल थी जबकि उसका पति गम्भीर रहा करता था।

जब बाटा बैलों को लेकर खेतों पर जाता तो बैल उससे कहते, "उस पेड़ के पास बहुत अच्छी घास है। हमें वहीं ले चल। हम उसे चरेंगे।" वह तो उनकी बोली समझता था, उन्हें वहीं ले जाता जहाँ वह अच्छी-अच्छी हरी घास खाकर खुश होते थे। इसी तरह बैल उससे अच्छी घासों के बारे में कहते थे और वह उन्हें उन स्थानो मे जाकर चराया करता था। अनपू का मवेशियों का गल्ला बहुत बडा था जिनसे वह बड़ा धनवान और प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता था।

जब बरसात खत्म हो गई और नील नदी की बाढ़ उतर गई और खेत जोत में आ गये तब एक दिन अनपू ने बाटा से कहा:

"बैलों को तैयार कर ले। हल की फाल नई लगवा ले, क्योंकि कल से हम खेत जोतने चलेंगे। हम जोतते जायँगे और साथ ही साथ बोते भी जायँगे। इसके लिए बीज भी काफी मात्रा में घर के अन्दर कोठियों मे से निकाल कर तैयार कर ले जिससे कल काम के बीच मे कोई रुकावट न पड़े।"

"बहुत अच्छा", कह कर बाटा अपने काम मे जुट गया। दूसरे दिन जब भोर हुई और सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैल गया जिससे पवित्र भूमि चमकने लगी तो दोनों भाई बैलों और बीज को लेकर खेत की ओर चल दिये। वह जोतते गये और बोते गये। कठोर परिश्रम से जमीन को फाड़ते हुए वह काम करते रहे। उनका पसीना पृथ्वी पर गिरता रहा और जितना भी वह काम करते जाते थे उतना ही सतोष का अनुभव उन्हें होता था। जब शाम हुई तो अनपू पहिले लौटा और बाटा नित्य की भाँति बैलो को आगे हाँकता हुआ सिर पर घास का बडा गट्ठा रक्खे हुए और हाथ में दूध का बर्तन लटकाये सूरज छिपने के बाद घर आया। अनपू की स्त्री, जो दिन भर पड़ी-पडी खाती-खाती उकता जाती थी, इन लोगों के इस तरह जाने और आने में कोई दिलचस्पी नहीं लेती थी। आज भी जब यह लौटे तो उसने खेतों के बारे मे कुछ नहीं पूछा और अपने सिगार मे लगी रही।

रोनी आवाज में वाला बोली :

"जाडो के भवन मे ओडिन की नई रानी रून्ड के एक पुत्र होगा और उसका नाम वेल होगा और वह पैदा होते ही युद्ध को चल देगा। वह हाथ भी नहीं धोयेगा और अपने सिर के बाल भी नहीं काढेगा। उसका पहला काम वाल्डर की मृत्यु का बदला लेना होगा और वही होडुर को चिता पर चढ़ायेगा। तूने मुझे बोलने को मजबूर किया .. अब मुझे चुप रहना चाहिये . ..।"

"नहीं तू चुप नहीं रह सकती", ओडिन झट से बोल उठा, "अभी तू मुझे यह बतला कि वह कौन सी कन्यायें हैं जो दुःख की काली चादर ऊपर उछाला करती हैं और उदासी दूर नहीं होने देती ? मुझ से बार-बार, मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना, जाने की धमकी न दे।" और, तब ओडिन ने गुस्से के साथ लोहे का घटा कब्र पर दे मारा। दर्द से कराहती दुर्द वाला की प्रेत आत्मा तब कब्र मे से बोली :

"तू वेगटम नहीं है जैसा कि तूने पहिले कहा और मैंने माना तू तो ओडिन है जो सारे विश्व का राजा है।"

"तू ही कौन सी असली वाला है", ओडिन बोल उठा, "असल में तू भी तो तीन भयकर दानवों की माँ है।"

तब वाला ने लम्बी साँस ली और बोली :

"हे विश्व के राजा ओडिन तेरे समान पृथ्वी पर और कोई नही है। तू सब कुछ जानता है। तेरी बुद्धि और वीरता प्रसिद्ध है। अब मैं तुझ से प्रार्थना करती हूँ कि असगार्ड वापस चला जा। यह तेरा ही बल था जो हैला से युगो पहले मरी हुई आत्मा को तूने जगा लिया परन्तु अब मै ज्यादा नहीं ठहर सकती क्योंकि यह उर्द की आज्ञा का उल्लघन होगा और हैला की रानी उर्द इसको बिल्कुल पसद नहीं करती। अब मैं जाती हूँ और जब रैगनेरौक का दिन आयेगा और देवता, दानव और मनुष्य सभी मारे जायँगे और जब भयानक अधकार और दुःख से भरे हुए टापू मे बँधे हुए दुष्ट लोक और उसका पुत्र फनरर भेडिया अपनी जंजीरे तोड कर स्वतत्र हो जायँगे तभी एक बार फिर मुझे बोलने की आज्ञा मिलेगी और मैं तब तुझे अतीत काल की कथाये सुनाऊँगी। वह बाते केवल मुझे ही मालूम हैं और उन्हें गायमर जो सब से पुराना दानव

इसी तरह खेत बोते और जोतते कई दिन हो गये। एक दिन दोपहर के समय तेज धूप मे कठोर परिश्रम से अनपू ने जब एक खेत जोत कर तैयार किया और देखा कि बीज उसे बोने के लिए कम पडेगा तो वह बाटा से बोला :

"भागकर घर जा और कोठी मे से जल्दी से बीज ले आ। जल्दी आना नही तो धरती सूख जायगी।"

भागा भागा बाटा घर गया और भिड़के हुए दरवाजे को धक्के से खोलता धडधडाकर अन्दर घुस गया। सामने ही दरपन के सामने बैठी हुई उसकी भाभी अपने सिर के बाल काढ रही थी। इस समय नहा कर आने के कारण वह बहुत स्वच्छ और शुद्ध दिखाई दे रही थी। घर मे अकेली होने से उसने वस्त्र भी बहुत थोडे पहिन रक्खे थे जिनसे उसका यौवन फूट फूट कर निखरता हुआ प्रतीत हो रहा था। पर बाटा का उस ओर कोई ध्यान न था। उसने तब भी कोई खास गौर नहीं किया। तब जान बूझकर उसे देखकर उस युवती स्त्री ने अपनी कचुकी ढीली कर दी। वह हड़बड़ा कर बोला.

"जल्दी से उठो और कोठी मे से मुझे बीज नाप कर दे दो। मुझे इसी समय उसे लेकर खेत को वापिस जाना है। अगर देर हो जायगी तो धरती सूख जायगी।"

अपनी ओर तनिक भी उसे आकर्षित न देखकर वह चिढ गई और अपने लम्बे काले केशो मे कघी फेरती हुई लापरवाही के साथ बोली.

"तू खुद ही कोठी के अन्दर चला जा और बीज निकाल ले। तुझे जो बीज जितना चाहिये उतना ले जा। मै इस समय नही उठूँगी क्योंकि मेरे बाल बिगड़ जायँगे।"

बाटा लपक कर कोठी की ओर गया और उसने नाप कर कपडे मे बीज बॉध लिया। उसने इतनी बडी गठरी बॉधी थी कि उसे बॉधने के लिये बाहर आकर उसे एक बड़ा कपड़ा तलाश करना पड़ा। जब वह उस बडे गट्ठर को लेकर बाहर आया तो उसे देखकर चकित नेत्रो से उसकी भाभी बोली

अयंगर-वोडा गुलवीग-होडर खिलखिला कर हँसी और उसके मुँह मे से आग निकली। उस आग को उसने पकड लिया और पास ही खडे एक लोहे के ेड को उससे जलाया। वह पेड जब लाल हो गया तो चुडैल ने मन्त्र पढ़ कर उस पर जादू के पानी के छींटे दिये। छींटे पडते ही पेड प्यासा हूँ-प्यासा हूँ चिल्लाने लगा। लोक खडे-खडे तमाशा देख रहा था। अयगर-वोडा ने कहा :

"मै तुझे पीने को पानी तब दूँगी जब पहले तू वाल्डर की मृत्यु का कारण बतलायेगा।"

पेड रोने लगा और बोला, "दुनिया के सभी पदार्थों ने वाल्डर को न मारने की सौगन्ध खाई है हम लोगों ने फ्रिग को वचन दिया है कि हमसे बना कोई हथियार या औजार उस सुन्दर देवता के शरीर में न घुसेगा।"

"मेरे विचार मे वाल्डर का मारा जाना असम्भव है फिर भी अगर तुम लोग उसकी मृत्यु का कारण जानना ही चाहते हो तो जाकर उसकी माता फ्रिग से पूछो और इसके लिए लोक स्वय स्त्री का भेष धारण करके फ्रिग के पास जाय······हाय मैं प्यासा हूँ।"

"प्यासा है तो मर जा," वोडा ने घृणा से उत्तर दिया और पानी की एक बूँद भी उस पर नहीं डाली। जब वह पेड जल कर राख हो गया और मर गया तो लोक और उस चुडैल ने उसकी मौत पर नाच-नाच कर खुशी मनाई।

इसके बाद लोक औरत का भेष धारण कर एक दिन फ्रिग के पास उस समय पहुँचा जब कि सामने ही मैदान में देवता लोग वाल्डर को बीच मे बिठा कर चारो ओर से उस पर भालों की वर्षा कर रहे थे और इस तरह खेल रहे थे। उनसे वाल्डर के लग तो बिल्कुल नहीं रही थी फिर भी फ्रिग जो उसकी माँ थी उसको ऐसा खेल पसन्द नहीं आया और वह चिढ़ कर बोली :

हैं, तू अपनी कारीगरी से इस मिसलन्टो की टहनो से मेरे लिए एक हथियार बना दे।"

हेलीन्बार्ड जिसकी बुद्धि पर लोक ने जादू द्वारा अपना असर डाल दिया था। उस टहनी को लेकर अपनी कारीगरी और जादू द्वारा फौरन हथियार बनाने लगा। लाक देर तक खडे-खडे देखता रहा और जब हैलीन्बार्ड ने भट्ठी मे से जादू का एक खतरनाक और पेना तीर निकाला तो लोक की खुशी का ठिकाना न रहा। उससे तीर लेकर लोक ने उसको अब बिल्कुल पागल बना दिया और तेजी-तेजी खुद असगार्ड को लौट आया। सूर्य आसमान में उज्ज्वल प्रकाश से चमक रहा था। ठडी-ठडी हवा बह रही थी। असगार्ड के सभी देवता आशा-देवता और बाना-देवता उसी प्रकार बाल्डर के साथ खेल खेलने में मग्न थे। मैदान में जहाँ-तहाँ हँसी के फव्वारे छूट रहे थे। पुरानी शराब पी-पी कर देवता लोग आनन्द मना रहे थे। उनके द्वारा फेंके हुए लोहे के भयानक अस्त्र बाल्डर के शरीर के पास तक तो आते पर फिर मुड कर इधर-उधर निकल जाते थे। यही हाल पत्थर की चट्टानो का था जो उछल कर अन्य दिशाओं को निकल जाती थी, कहकहे निकल रहे थे, मौजे उड रही थीं। लोक उसी समय वहाँ पहुँचा और भीतर ही भीतर जल गया मैदान के एक ओर बाल्डर का अन्धा भाई होडुर चुपचाप खडा हुआ था, वह भी प्रसन्नता से झूम रहा था। पर क्योंकि वह अन्धा था और देख नहीं सकता था इसलिए उस खेल में शामिल नही हो रहा था। लोक ने जो उसको देखा तो बिजली की तरह उसके दुष्ट दिमाग मे एक चाल सूझी, उसने होडुर द्वारा ही बाल्डर को मरवाने की''सोची। घूमता हुआ वह होडुर के पास जा पहुँचा और उससे हँस-हँस कर बाते करने लगा, थाडी देर बाद जब खेल मे फिर शोर उठा तो लोक ने होडुर से पूछा

"हे होडुर तू बड़ा मनहूस है जो इतने अच्छे खेल में भाग नहीं लेता। सुन्दर बाल्डर से सभी खेल रहे हैं और तू उसका खास भाई होकर भी उस पर तीर चलाने का खेल नहीं खेलता। सचमुच तू बडा मनहूस है। या शायद अपने मन में तू बाल्डर से रंजिश रखता है।"

बीज गड गया। वह पृथ्वी पर गिरकर अपमान और क्रोध मे रोने लगी। उसने अपने सुन्दर वस्त्रो को जगह-जगह से फाड डाला और अपने केश विन्यास को खोलकर बिगाड दिया। अपने मासल कधो, मुख, कपोलो और शरीर पर जगह जगह जोर से नोच कर लाल लाल निशान बना लिये और तब वह अनपू के आने की प्रतीक्षा करती हुई उसी स्थान पर पडी रही।

जब शाम हुई और नित्य की भाँति अनपू पहिले घर आया। जब वह घर आता था तो सदा उसकी स्त्री उसको हाथ-पैर धोने के लिए पानी लाकर देती थी, परन्तु आज जब वह न आई तो उसने उत्सुक होकर सायकाल के उस अँधेरे मे उसे इधर-उधर ढूँढा। शीघ्र ही वहाँ उसे सामने पृथ्वी पर पड़ी हुई अपनी स्त्री दिखाई पडी। वह झपटकर उसके पास पहुँचा। उसे इस प्रकार अधकार मे पृथ्वी पर औधी पडी देखकर उसका हृदय आशका से भर उठा। उसके फटे हुए वस्त्र और खुले हुए बाल देखकर वह हैरान हो गया और उसने उसे प्रेम से उठाकर शैय्या पर सुलाया और फिर दीपक जलाया। वह अब उसे देख कर कराहने लगी और अपनी सुगठित देह को अधिक से अधिक वस्त्रो के बाहर प्रदर्शित करती हुई मक्कारी से रोने लगी। दीपक के प्रकाश मे अनपू ने देखा वह अनिद्य सुन्दरी थी। वह उसके पास गया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसने उसकी ऐसी हालत होने का कारण पूछा। वह बोला :

"वह कौन दुष्ट था जिसने तेरी यह गति बनाई। मुझे तू उसका नाम बतला जिससे मै उसे मार कर बदला ले सकूँ।"

वह स्त्री यह सुनकर बोली तो कुछ नहीं पर उसने अपने अंगचालन से शरीर पर बनाये हुए वह सभी लाल निशान अपने पति को दिखाये जिन्हे देखकर वह क्रोध से काँपने लगा। वह गरजकर बोला :

"शीघ्र बताओ वह दुष्ट कौन था क्योकि मै उसकी हत्या करने को उत्सुक हूँ।"

तब स्त्री ने कराहते हुए धीरे से कहा : "मै पुरुषो मे आपस मे लडाई कराना नहीं चाहती हूँ। इसलिए अच्छा हो कि तुम मुझसे इसके बारे मे कुछ न पूछो।"

पर दूसरी ओर फ्रिग की सुन्दरता और बाल्डर का प्रेम यह भी रह-रह कर उन्हें जाने को प्रेरित कर रहा था और तब फ्रिग को बहुत तसल्ली मिली जब बिजली की तरह चमकने वाले और हमेशा जवान रहने वाले सुन्दर हीमडल ने आगे बढकर फ्रिग का हाथ चूम लिया और इस तरह उसके सदेश को लेकर हैला जाने का वायदा किया। वह बोला, "हे असगार्ड की सुन्दरी रानी तेरी आज्ञा के अनुसार मै हैला जाऊँगा और मृत्यु की रानी उर्द को जो मूल्य वह माँगेगी, दूँगा। तेरे पुत्र बाल्डर को जैसे भी होगा एक बार फिर लादूँगा।"

फ्रिग खुशी से रोने लग गई और जब उसके आँसू उसकी आँख से निकले तो उनको उठाकर उसने हीमडल के ऊपर पटक दिया और फिर उसने उस पर जादू के मन्त्र पढे जिससे उस पर आने वाले खतरों से उसकी रक्षा हो। ओडिन का घोडा स्लीपनर जो ससार मे सबसे तेज भागने वाला घोडा था हीमडल की सवारी के लिये मँगाया गया। जब हीमडल उस पर चढकर चला तो वह आकाश में तैरता वायु वेग से उत्तर दिशा की ओर नीफल दीम की ओर उतरता चला।

इधर जब मातम मना लिया गया तो देवता लोगों ने बाल्डर के सुन्दर शरीर को उसके बडे जहाज हैरिंगघोर्ण मे ले जाकर लिटा दिया। हैरिंगघोर्ण उस समय समुद्र तीर पर ऊँचे कगारे के सहारे खडा हुआ था। उस विशाल जहाज के मध्य भाग में बाल्डर के लिये एक ऊँची चिता बनाई गई और उसके चारों ओर बेशुमार दौलत का ढेर लगा दिया गया। अब उन्होंने यह चाहा कि जहाज का लगर उठाकर समुद्र मे बहने के लिये छोड दिया जाय परन्तु वह ऐसा न कर सके क्योंकि जहाज का एक किनारा रेत में इतना गड गया था कि समुद्र की ओर जहाज हिलता भी न था। जब सब कोशिश करके हार गये तो दूतों को भेजकर जोटन-हीम से बहुत पुरानी पर पराक्रमी भयकर तूफानी दानवी हाईरोकीन को बुलाया गया। यह दानवी और कोई नहीं बल्कि वही चुडैल अयगर-बोडा थी जो पूर्व दिशा से भयकर और ठडे तूफान छोडकर समुद्र के बीच तैर जहाजो को तूफानो के राजा ऐईगर के मृत्यु के जबडे मे फँसाकर आनन्द लेती थी। ऐईगर की स्त्री रैग की यह बह [illegible] जिस

इतना कहकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी। उसका पति उसको रोते देखकर और भी क्रोध से भडक उठा और उसे बार-बार उस व्यक्ति का नाम बताने को कहने लगा। तब वह बोली :

"कोई बाहर का आदमी यहाँ नहीं आया। दोपहर के समय जब मैं लेटी थी उस समय तुम्हारा छोटा भाई बाटा चुपके से अन्दर आया। उसने आकर मुझसे बीज के लिए कहा। जब मैंने उठकर उसे बीज दे दिया तो वह बजाय उसे ले जाने के मेरे पास आकर बैठ गया। तुम तो जानते ही हो कि उसके साथ मै पुत्रवत व्यवहार सदा से करती रही हूँ। मैंने उसे पास बैठा देखकर उसे प्यार से थपथपाया और उसकी प्रशसा की कि सचमुच ही वह बड़ा मेह-नती है। यह सुनकर उसने जो कुछ किया उसके लिए मैं बिल्कुल तैयार नही थी। उसने झपटकर मुझे अपने आलिंगन मे बाँध लिया और नीचे पटक दिया। मैंने छूटने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु भला स्त्री होकर उस कामान्ध और इतने बली पुरुष से मै कैसे छूट सकती थी। उसने मुझे जगह-जगह मारा और मेरे शरीर को नोच लिया। मै पीडा से कराह उठी पर उसको मेरी उस दशा पर तनिक भी दया नही आई। मै तब भी प्राण-पण से उससे छूटने का निष्फल प्रयत्न करने लगी तो उसने मेरे वस्त्र फाड डाले। मैं रोने लगी पर उसने उस पर कोई ध्यान नही दिया। इस छीना-झपटी मे मेरे शिर के बाल भी खुल गये। उसे मौका लग गया तब उसने मेरे केशों को पकडकर मुझे अपने नीचे दबा लिया और मुझ चिल्लाती हुई स्त्री के साथ बलात्कार किया " मै तो अब मर चुकी हूँ परन्तु मुझे दु'ख इस बात का है कि जिस व्यक्ति से मैं पुत्रवत प्रेम करती थी उसी ने मेरे साथ ऐसा दुर-व्यवहार किया और मुझे कलकित कर दिया।"

इतना कहकर बडे-बडे आँसू डालकर वह रोने लगी। अनपू क्रोध से काँपता हुआ उठ खडा हुआ। छेडे हुए चीते की भाँति क्रोधित होकर दीवाल पर टँगी लम्बी तलवार को उसने झपटकर उतार लिया। तेजी के साथ वह उठा और बैलों के बाँधने के स्थान में दरवाजे के पीछे छिपकर खड़ा होकर बाटा के आने की प्रतीक्षा करने लगा। दिन ढल चुका था जब बाटा बैलों को आगे हाँकता हुआ सिर पर घास का बडा गट्ठर और हाथ मे दूध की

बाल्डर का शरीर मृत्यु को प्राप्त करके भी अत्यन्त सुन्दर था। बर्फ की तरह सफेद कपडो से उसे लपेटे देवताओ ने उसे लेजाकर ऊँची चिता पर रख दिया। उसके सिर के पास इन्द्र धनुषी रग-बिरगे फूलो से बने बडे-बडे गुलदस्ते रख दिये गये। उस समय बाल्डर दिव्य ज्योति को प्राप्त हुआ। उसका रूप और तेज विलक्षण था और उस सन्नाटे की घडी मे वह स्वर्गीय दिख रहा था। समुद्र तीर पर असगार्ड के सभी देवी-देवता उस समय मौजूद थे। सबसे आगे गम्भीर मुद्रा मे असगार्ड का राजा ओडिन खडा था। उसके पालतू गिद्ध जहाज के ऊपर मँडरा रहे थे। उसके भेडिये की नश्ल के भयानक कुत्ते इस समय रो रहे थे। उसके बगल मे उसकी सुन्दरी और बुद्धिमती रानी फ्रिग खडी थी इस समय वह बहुत दुखी थी और अपने जवाहिरातों से जडे चर्खे को चला कर बादलो में सोने के तार नही खींच रही थी और समयों मे जो बादलों के फेन की भाँति सफेद वस्त्र पहनती इस समय वह काले वस्त्रों मे लिपटी थी। इस समय वह शान्त और गम्भीर थी। उसकी पतली कमर में स्वर्ण की पेटी चमचमा रही थी। पैरो में सोने के जूते पहने ऊँचे कद की वह सुन्दर नारी समुद्र तीर पर खडी अपनी शान मे बेजोड थी।

ओडिन के दूसरी ओर घनी काली भौं वाला उग्र स्वभाव का थौर खड़ा था। ब्रेगे टायर बाना देवता नजौर्ड और फ्रे सभी दुखित मन से फ्रिग को देख रहे थे जिनसे उसका दुख देखा नही जाता था। नजार्ड अपनी घनी काली डडी को सूते हरे वस्त्र पहने हुए अलौकिक प्रतीत हो रहा था। सुन्दर फ्रे सोने के चमचमाते सूअर पर और हीमन्डल गुलटौप घोडे पर बैठे हुऐ चमक रहे थे। बडी बिल्लियों से जुते रथ में बैठी हुई परम सुन्दरी फ्रयैयीजा इतना अधिक रो रही थी कि उसके सारे वस्त्र गीले हो गये थे। इवैल्डे के पुत्र और थजासे के भाई ईगिल-ओरवेंडिल जो कि मर कर आकाश में तारा बन कर चमकता था उसकी दूसरी पत्नी सिथ जो ससार में पकी हुई फसलों की रक्षा करती थी, इस समय समुद्र तीर के बालू मे पडी दुख से सिसक रही थी। ओडिन की आज्ञा से पवित्र आत्माओं को बालहाल मे ले जाने वाली अगणित सुन्दरी कन्यायें वैलेकरियाँ बाल्डर की चिता के चारों ओर भाले टेककर खड़ी

बाल्टी लिये आया जैसे कि वह रोज आया करता था। जब पहला बैल बाड़े के अन्दर घुसा और उसने दरवाजे के पीछे छिपे अनपू को हाथ मे नगी तलवार लेकर खडे देखा तो वह अपनी बोली मे बाटा से बोला

"होशियार हो जा क्योंकि तेरा बडा भाई तेरे मारने को द्वार के पीछे छिपा खड़ा है। उसके हाथ मे नगी तेज तलवार है। तू उसके पास मत जा।"

बाटा ने उसको सुनकर कान खडे किये। उसने सोचा जरूर दाल मे कुछ काला है और वह वही ठिठक कर खडा हो गया। तब दूसरा बैल बाडे मे घुसा वह भी पहिले ही की तरह बोला बल्कि उसने उसे जल्दी से भाग जाने की सलाह भी दी। बाटा ने झुककर चुपचाप दरवाजे के नीचे से देखा तो अन्दर खडे हुये अपने भाई के पैर उसे नजर आये। तुरन्त घास के गट्ठर को नीचे फेंक कर और दूध की बाल्टी को वहीं पटक कर वह भागा। अनपू ने उसके भागने का शब्द जो सुना तो क्रोध से भन्नाते हुये नगी तलवार फिराते हुये उसने उसका पीछा किया। आगे आगे बाटा था और पीछे पीछे रक्त का प्यासा अनपू भागा जा रहा था। बाटा ने देखा कि वह उससे बच न सकेगा। उसका हृदय दुख से भर गया क्योंकि वह इस तरह व्यर्थ ही नही मर जाना चाहता था। अपने को पूर्णयता निर्दोष रखते हुये भी अपनी भलाइयो का बदला जब वह तलवार से पाने वाला था तो उसका हृदय द्रवित हो गया और वह विरक्ति से भर गया। उसने भागते भागते रा हरमाचिस जो कि सूर्य देवता था, उसका स्मरण किया फिर वह बोला.—"हे पवित्र देवता तू जो सर्वशक्तिमान है, कम से कम तुझे तो यह मालूम ही होना चाहिए कि कौन बुरा है और कौन अच्छा है। झूठ और सच का अन्तर तुझसे बढ कर भला और कौन जान सकता है?" रा हरमाचिस ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसका हृदय दया से भर उठा। उसने अपना रथ रोका और उसकी ओर मुडकर देखा, फिर अपनी इच्छा मात्र से उन दोनो भाइयो के बीच मे नील नदी की एक चौड़ी धारा बहा दी और कमाल यह किया कि इस जल की धारा को भयकर मगरो से भर दिया। अनपू ने जो अपने सामने जल की धारा देखी तो एक बार तो उसने उसे तैर कर पार कर जाना चाहा, परन्तु दूसरे ही क्षण जब भयानक घड़ियाल और मगर अपने जबडे को उलटे हुए उसकी

इकट्ठे आने पर भी यहाँ इतना शोर नहीं हुआ जितना अकेले तू ने मचाया है। तू किसको पूछता है?"

अधीर होकर हरमोड बोला, "ओडिन और फ्रिग के पुत्र और मेरे भाई सुन्दर वाल्डर को मैं पूछता हूँ यदि तुमने उसको देखा है तो फौरन मुझे उसका पता बता दो।"

अब बोनी चुप हो गई और गम्भीरता से उसने उत्तर की ओर बिना कुछ कहे हाथ उठा दिया। हरमोड ने फौरन स्लीपनर के ऐड लगाई और टापों को बजाता स्लीपनर पलक मारते उस पुल के ऊपर आगे निकल गया। दूसरे क्षण विशाल पत्थरों से बने हुए हैला के मजबूत और ऊँचे दरवाजे के सामने हरमोड खड़ा था। फाटक बन्द था। और मोटी-मोटी शलाकों से उसमें जगह-जगह आड़ लग रही थी। वह द्वार हैला के विश्वस्त और महाबली चौकीदार द्वारा रक्षित था। केवल आत्माएँ उसके अन्दर होकर जातीं जिन्हें मृत्यु की रानी दं उन्हें उनके किये के अनुसार दण्ड देती, बिना मरे हुए कोई भी उसके अन्दर नहीं जा सकता था।

एक ओर वाल्डर से मिलने की जल्दी थी तो दूसरी ओर वह विचित्र रुकावट उसे परेशान कर रही थी। थोड़ी देर हरमोड ने खड़े-खड़े सोचा फिर तुरन्त ही वह स्लीपनर से नीचे कूद पड़ा और उसने उसकी पेटी कसी। पेटी कसते स्लीपनर की सारी थकान दूर हो गई और वह पहले से चौगुना ताकतवर और फुर्तीला बन गया। उसकी यह पेटी भी महाबली थौर की पेटी की तरह थी जितनी ज्यादा कसी जाती उतनी ही शक्ति प्रदान करती। हरमोड स्लीपनर पर उछल कर चढ गया और उसने जो उसकी लगाम खींची कि स्लीपनर एक छलाँग मे उस ऊँचे दरवाजे के ऊपर से निकल गया और हैला के अन्दर आ गया। नीचे उतरते समय वायु मे तैरता हुआ वह बिजली की तरह तेज और शीघ्र ही उसने हरमोड को उस सुवर्णमय महल मे पहुँचा दिया जहाँ मरे हुये वाल्डर की आत्मा इस समय ऐशमगिर के साथ रहती थी। हरमोड कूद कर घोडे पर से उतरा और सोने के जगमगाते उस महल के अन्दर गया।

ओर लपके तो वह घबड़ा कर पीछे भाग आया और तब उसने न केवल उस नदी की धारा को पार करने का इरादा ही छोड दिया बल्कि उसे यह भी निश्चय हो गया कि अब वह बाटा को न पा सकेगा। नदी के दॉयें-बॉयें तीरों पर दोनो भाई एक दूसरे के सम्मुख खडे हो गये। अनपू ने अपने हाथो को क्रोध मे भर कर काट खाया क्योंकि वह बाटा को मारने मे असफल रहा। उसके हाथो से रक्त टपकने लगा और जहॉ वह गिरा वहीं रेत लाल हो गई, तभी दूसरी ओर से बाटा चिल्लाया और उसने कहा :

"हे अनपू तू मेरे पिता के समान है। तू जहॉ है रात भर वहीं सो जा और जब रात डूबेगी और भोर होगी तब उज्वल प्रकाश से एक बार फिर पवित्र भूमि चमकने लगेगी। तब रा-हरमाचिस आकाश मे अपने न्याय के सिंहासन पर आकर बैठेगा। उस समय उसके सामने मैं तुझसे वह सब बातें कहूँगा जो कुछ भी मैं जानता हूँ। तब मेरा-तेरा न्याय होगा झूठ-सच परखा जायगा और पापी और नेक इन दोनों का भेद खोला जायगा'''अनपू अब तू समझ ले कि मैं तेरे साथ नहीं रह सकता। मेरी-तेरी बिछुडने की घडी आ गई है। मुझे जाना होगा क्योंकि पवित्र चमेलियों के देश में मेरी प्रतीक्षा हो रही है।" अनपू ने सुना, उधर वह विचारमग्न होकर वहीं बैठ गया। रात बीती और भोर हुई, उज्ज्वल प्रकाश मे पवित्र भूमि चमकने लगी। दिव्य-ज्योति से दमकता हुआ सोने के रथ पर सवार होकर रा आकाश मे आ गया। उस समय नदी के दोनों किनारो पर दोनों भाई एक दूसरे को घूरते हुए खडे थे। बीच में अथाह जल था और जल में घडियाल और मगर भयानक जबड़ों को खोले पडे थे। बाटा ने 'रा' की ओर सिर उठा कर देखा फिर अनपू से कहा :

"मुझे धोखे से मारने के लिए तू तलवार लेकर क्यो छिपा खडा था। जब मे भागा तो उस समय भी मेरे खून का प्यासा होकर मेरे पीछे तू क्यो पडा था? तूने मुझे अपने बारे मे बोलने का मौका भी नहीं दिया। क्या मै तेरा छोटा भाई नहीं हूँ? क्या मैने आज तक तुझको पिता की जगह और तेरी स्त्री को माता के समान नहीं माना? क्या मेरे उपकारो का बदला इसी प्रकार तुझे देना था? हे अनपू साफ-साफ सुन ले, क्योंकि अब तेरे व्यवहार से मेरा

से देखा तो अबकी बार बाल्डर ने अपनी स्त्री नाना की ओर इशारा कर दिया पर मुँह से कुछ नही बोला। नाना उसकी ओर झुकी और उसने उससे फुस-फुसा कर कहा, "मृत्यु के दुख से प्रेम का उन्माद सदा बडा होता है। बाल्डर मै तुझे छोड कर किसी भी अवस्था मे कही नहीं जा सकती।" प्रेम के उस भावावेश मे वह लोग रो दिये होते पर वह रोये नहीं क्योकि हैला मे आत्मा के साथ आँसू नही घुसते थे। हरमोड ने सारी रात बाल्डर और नाना को नहीं छोडा और उनसे बारम्बार प्रार्थना करता रहा कि वह उसकी बात स्वीकार कर लें पर उन पर उसकी बातों का कोई असर नहीं हुआ।

जब सुबह हुई तो हरमोड थक चुका था उसने मत्यु की रानी उर्द से अब की बार याचना की कि वह बाल्डर को असगार्ड वापस भेज दे। उर्द अब भी पत्थर की मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ी थी। उसकी निगाहें पृथ्वी की ओर थीं। हरमोड ने उससे कहा :

"नौओ दुनियाओं में देवता, दानव, मनुष्य और बौने और सभी वस्तुएँ जिनमें प्राण हैं बाल्डर की मृत्यु से दुखी हैं। उसके लिए उनका रोना अभी तक बदस्तूर है उसके बिना ससार में जीवन नीरस हो गया है। ऐसी हालत में हे हैला की रानी तुझे यह उचित है कि तू इसे असगार्ड वापस भेज दे।"

धीमे पर कठोर स्वर से उर्द ने उत्तर दिया "यदि ससार मे सभी चीजे, सभी मनुष्य देवता और दानव बाल्डर के लिए रोते हैं तो निश्चित ही यह उचित है कि उसे असगार्ड वापस चला जाना चाहिए ऐसी सूरत में हैला मे उसका कोई काम नही है परन्तु हे चमकने वाले हीमडल जो तूने कहा है उसकी एक-एक बात सही होना आवश्यक होगा। तू असगार्ड वापस जा और देवताओं से मेरा यह संदेश कह कि यदि सारे विश्व मे बाल्डर के लिए दुख व्याप्त है और सभी उसके लिए रोते हैं तो निश्चय ही मै उर्द उसके वापस जाने मे रोड़ा नही अटकाऊँगी परन्तु हे हरमोड यदि एक भी आँख सूखी मिले तो बाल्डर वापस न जा सकेगा।"

इतना कह कर हैला की रानी खामोश हो गई। हरमोड का दिल आशा से भर गया और उसने अपने मन मे समझ लिया कि वह आनन्द का दिन दूर नहीं है जब असगार्ड मे बाल्डर के वापस जाने पर खुशियाँ मनाई जायँगी

हृदय दुखी हो गया है। जब म बीज लेने दोपहर के समय घर गया था उस समय तेरी स्त्री ने नगी होकर मुझसे काम वासना म लिप्त होने को कहा था। परन्तु मैंने उसे फटकार दिया, क्योंकि मने ऐसा करना पाप समझा था। खासकर जब कि मैं उसे तेरी स्त्री के नाते माता के समान समझता था। उसकी इस कमजोरी को मैंने तुझसे इसलिये नहीं कहा क्योंकि म उस व्यवहार को बढने नही देना चाहता था। मैंने समझा था कि वह अपने किये पर अवश्य ही पछतायेगी और भविष्य मे वह कभी ऐसा न करेगी। परन्तु उसने इस मामले को दूसरी तरह गढ कर तुझे समझाया और मेरे विरुद्ध भडकाया। वह तो स्त्री है, वासना मे डूब कर अच्छे बुरे का ज्ञान खो बैठी है, किसी कदर वह क्षम्य भी है क्योंकि वह मूर्ख है। परन्तु तूने बिना कुछ सोचे समझे और मुझसे भी बगैर पूछे मुझे मारने का निश्चय कर लिया, यह अपराध कभी क्षम्य नही हो सकता।"

अनपू ने सुना तो वह स्तभित रह गया। उसके हाथ से तलवार गिर पड़ी, क्योंकि जो कुछ वह सुन रहा था सब नया था। उसी समय बाटा फिर बोला और उसने आसमान मे स्थित रा की ओर हाथ उठाकर उच्च स्वर से कहा :

"हे अनपू तेरा अपराध क्षमा के योग्य नहीं है क्योंकि तू धोखे से मेरी हत्या करना चाहता था। मैं रा के पवित्र नाम को लेकर शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है वह सब सही है। आज तक मै कभी झूठ नहीं बोला हूँ। इस बात को भी रा भली प्रकार जानता है, जभी मेरी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर उसने तेरे और मेरे बीच मे नदी की यह मोटी धारा डाल दी।" तत्पश्चात् उसने अपनी तलवार निकाली और अपने शरीर से मास काट कर अपने पारुष को नष्ट कर दिया। वह भीष्म बन गया और उसने वह मास का टुकड़ा नदी के पार अनपू की ओर फेंक दिया। रक्त के निकल जाने से बाटा चक्कर खाकर बालू पर गिर पड़ा और इधर अनपू पश्चात्ताप मे चक्कर खाकर गिर पडा। नदी के दोनो तीरो पर दोनो भाइ बेहोश होकर गिर पड़े।

गये। उसको देखकर हरमोड दोनी आश्चर्यचकित रह गई पर उससे बोलने का उसको साहस नही हुआ क्योकि वह हैला से लौट रहा था। जब देर तक रोने के बाद हरमोड का जी कुछ हलका हुआ तो वह उठा और स्लीपनर पर सवार होकर तेजी के साथ भयानक रास्तो को पार करता हुआ असगार्ड की ओर चला।

जब वह असगार्ड मे पहुँचा तो नगर का फाटक उसके लिए अपने आप खुल गया। आग से भरी चौडी खाई का एक ही छलाग मे पार करता हुआ स्लीपनर असगार्ड मे घुस गया। चौडे पक्के मार्गो पर स्लीपनर की टापे बज रहीं थीं। हरमोड उतरा नहीं चलता चला गया। वायु वेग से स्लीपनर तैरता हुआ चला जा रहा था। वह सीधा देवताओं के ऊँचे थिंगस्टैड में पहुँचा और जब वह उसके अन्दर घुसा तो वहाँ उसकी प्रतीक्षा मे बैठे हुए सभी देवता उसको देख कर उछल पडे। समवेतस्वर से सभी ने वही घुमडती विकट प्रश्न उससे किया :

'बाल्डर कहाँ है? हमारा प्यारा बाल्डर कहाँ है?"

हरमोड कुछ नहीं बोला और गम्भीर मुद्रा लिये सीधा ओडिन के पास बैठ गया। ओडिन जो ससार मे होने वाली सभी बातों को जानता था उसको देख कर आने वाले भय की आशका से मन ही मन घबरा गया और उसने उसके कधे पर हाथ रखते हुए प्यार से पूछा :

"हे दिव्य ज्योति वाले हीमन्डल हमे शीघ्र बतला तुझ से हैला की रानी ने क्या कहा क्योकि बाल्डर यदि यहाँ वापस नहीं आया तो हम सभी हताश हो जॉयगे।"

हीमन्डल उठा और उसने उर्द का भेजा हुआ सदेश सबसे कह सुनाया। उस सदेश को सुन कर सभी देवता खुश हो गये और हीमन्डल को तब भी उदास देख कर वह आश्चर्य करने लगे कि ऐसा अच्छा सदेश पाकर भी वह उदास क्यों था? टायर ने उससे पूछा :

"माईमर के फव्वारे से तूने भी बुद्धि की शराब पी है और फिर भी जब तू इस समय रोने बैठा है तो तुझे देख कर हम सभी को आश्चर्य होता है।"

जब उन्हें होश आया तो वह फिर उठ कर बैठ गये। अनपू के हृदय में तीव्र इच्छा ने स्थान कर लिया। अब वह तुरन्त अपने भाई के पास पहुँच जाना चाहता था परन्तु बीच के घड़ियालों को देखकर वह व्याकुल हो उठा। तब बाटा दूसरे किनारे से चिल्ला कर बोला :

"तुमने बुरा काम करना चाहा था, परन्तु कर न सके। अब यदि तुम्हें अपने किये का अफसोस है तो अच्छाई को अपनाओ। अपने घर वापिस जाओ और अपनी खेती सँभालो। उन बैलों और मवेशियों को चराओ क्योंकि वह पवित्र हृदय वाले हैं। भविष्य में अब तुम्हीं अपना काम अपने आप करोगे क्योंकि मैं अब तुम्हारे पास नहीं रह सकता। मैं तुम से कह चुका हूँ कि मुझे चमेली से लदे फूलों के देश में शीघ्र चला जाना है। जब मुझे तुम्हारी आवश्यकता होगी मैं तुम्हारी याद करूँगा। वह याद तुम्हारे सामने सफेद फूल बन कर आयेगी, जिसकी महक से तुम मदहोश हो जाओगे। तब तुम मेरे पास आना और मुझे ढूँढ लेना। मेरा शरीर पृथ्वी पर पड़ा होगा और मेरी आत्मा चमेली की सबसे ऊँची डाल पर खिले हुये चमेली के फूल में होगी। दुष्ट लोग जब उस पेड़ को काट कर पटक देंगे तो मेरी आत्मा पृथ्वी पर गिर पड़ेगी। तुम मुझे ढूँढना और तब तक ढूँढते रहना जब तक कि तुम मुझे पा न लो। अगर ढूँढ़ते-ढूँढते सात वर्ष भी व्यतीत हो जाँय तब भी तुम निराश होकर ढूँढना बन्द न करना। जब वह तुम्हें मिल जाय तो उसे पानी से भरे एक बर्तन में रख देना। और तब मैं एक बार फिर जीवित हो उठूँगा। उस समय में तुम्हें जो कुछ गुजर गया और जो कुछ आने वाला है सभी बातें बताऊँगा। जब मैं तुम्हारी याद करूँगा तो यह भी सम्भव है कि तुम्हारी आँखों के सामने सफेद फूल न खिले और न कोई महक ही आये। उस हालत में याद रक्खो कि जो शराब तुम अपने घर में पीने बैठोगे खौलने लगेगी और उसमें से बदबू आयेगी। जब ऐसे इशारे हों, क्योंकि वह निश्चय ही होंगे, तुम मेरी मदद के लिये चल देना।"

अनपू बैठा हुआ ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनता रहा। उसने देखा कि उसका भाई बाटा उठ कर एक ओर चल दिया। वह खड़े-खड़े अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसे तब तक देखता रहा जब तक कि वह उसकी आँखों से ओझल न

सभी जीव चल और अचल रोने चाहिये यदि एक भी आँख सूख रह गई . . . ."

'नहीं नही ऐसा न कहो . " फ्रिग बीच मे ही बोल उठी "मेरे बेटे के लिये कोई आँख सूखी नही रहेगी क्योंकि वह जितना मुझको प्यारा था उतना ही सब को प्यारा था।"

इससे पश्चात फ्रिग ने अपने सखियो को सारे ससार मे भेजा। शीघ्र ही ससार की सभी चीजे रो उठी और तब हृदय मे घुमडता हुआ दुख फूट निकला।

ससार विलाप के स्वरो से गूज उठा। जगह-जगह रुदन सुनाई पडता था। देवता, दानव और आदमी सभी रो रहे थे। भयकर जानवर और पालतू जानवर करिन्दे और परिन्दे, दुष्ट और भले सभी दहाडे मार रो रहे थे। स्त्रियों के चीत्कार से वायुमडल कॉप रहा था। पत्थर रो रहे थे और धातुओं के आँसू लुढक-लुढक कर पृथ्वी को गीला कर रहे थे। प्रत्येक पेड यहाँ तक कि घास भी आँसुओं से भीग रही थी। पहाड और उनमे रहने वाले भयानक दानव नीचे की दुनियाँ के बौने कारीगर और जौटनहीम के खतरनाक बर्फीले दानव सभी जोर-जोर रो रहे थे। चतुर लोक जिसके हृदय मे बाल्डर के प्रति बिल्कुल प्रीत नहीं थी इस समय दिखावे के लिये वह भी रो रहा था और उसकी आँखे आँसुओं से भरी थीं। उसको देख कर ओडिन और हीमन्डल के मन का भय जाता रहा और उनको विश्वास हो गया कि अवश्य ही अब बाल्डर वापस आ जायगा। हैला मे बैठी हुई उर्द ने ससार का वह समवेत क्रन्दन सुना और एक बार वह भी अपने सुवर्ण के सिंहासन से कर उठ खड़ी हो गई।

जब फ्रिग के दूत कार्य सम्पूर्ण करके असगार्ड को लौट रहे थे तो मार्ग में एक अँधेरी गुफा के अन्दर उन्हे लोहे की जगल की चुडैल अयगर-बोडा गुलवीग-होडर बैठी मिली और बोडा ने उस समय अपना रूप अँधेरे की तरह ही बना रखा था और वह देखने में उस समय एक बडे काले धब्बे जैसी मालूम होती थी। दूत उसके पास चले गये उनको देख कर वह हँसी और बोली :

हो गया। फिर वह पृथ्वी पर गिरकर रोने लगा और पृथ्वी से धूल उठा कर सिर मे डाल ली। सारे दिन रोते रहने के बाद जब संध्या समय वह घर लौटा तो उसने अपनी उस युवती स्त्री को पुन शृगार मे रत पाया। वह क्रोध से थर थर काँपने लगा और नगी तलवार लेकर उसकी ओर झपटा। वह भय से चिल्लाई और भागी परन्तु अनपू ने उसे पकड़ लिया और तलवार से काट डाला। उसके गर्म लहू से उसका सारा शरीर भीग गया परन्तु फिर भी जब उसका जी हल्का न हुआ और प्रतिहिंसा की भावना निरन्तर बनी रही तो उसने उसकी लाश का तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इसके बाद वह अपने बाड़े मे गया और अपने कुत्तो को ले आया, फिर इस लाश के टुकड़ो को उन कुत्तो को खिला दिया।

प्रतिशोध तो हो गया परन्तु उसके हृदय मे भाई का दुख बना रहा। मातम मनाता वह जिन्दगी बिताने लगा।

निरन्तर यात्रा करता हुआ, ऊँचे पहाड़ो से घिरी हुई और चमेली के फूलो से लदी हुई सुन्दर घाटी मे बाटा पहुँच गया। वह वहाँ पहुँच कर बहुत खुश हुआ क्योंकि वह स्थान नीरव, शान्त और चमेली की सुगन्ध से महका करता था। वह उस घाटी मे अकेला ही था। शाम हो चुकी थी, थका मादा बाटा एक ऊँची चमेली की झाड़ी के नीचे सो गया। जब वह सो गया उसकी आत्मा उसके शरीर से निकली और वह इस झाड़ी के सब से ऊँचे फूल मे जाकर छिप गई। जब भोर हुई और पवित्र भूमि प्रकाश से जगमगा उठी तो उस फूल से वह आत्मा बाटा के शरीर मे वापस आई और वह जग उठा। उसे भूख लगी। वह भाला लेकर जगली जानवरो का शिकार करने लगा। जब उसके भोजन के लिए पर्याप्त मास इकट्ठा हो गया तो उसने शिकार बन्द कर दिया। मास को आग पर भून कर उसने खाया और फिर विश्राम के हेतु उसी चमेली की झाड़ी के नीचे सो गया। उसकी आत्मा फिर उसके शरीर से निकली और उसी फूल मे जा छिपी। इसी प्रकार जाग्रत अवस्था मे वह उसके शरीर मे रहती और सुप्तावस्था मे उस फूल मे दुबक जाती थी। रहते-रहते जब काफी दिन हो गये तो बाटा ने रहने के लिये एक घर बना

सभी जीव चल और अचल रोने चाहिये यदि एक भी आँख सूखी रह गई . . . ."

'नही नही ऐसा न कहो . . " फ्रिग बीच मे ही बोल उठी, "मेरे बेटे के लिये कोई आँख सूखी नही रहेगी क्योकि वह जितना मुझको प्यारा था उतना ही सब को प्यारा था।"

इससे पश्चात फ्रिग ने अपने सखियों को सारे ससार मे भेजा। शीघ्र ही ससार की सभी चीजें रो उठीं और तब हृदय मे घुमड़ता हुआ दुख फूट निकला।

ससार विलाप के स्वरों से गूज उठा। जगह-जगह रुदन सुनाई पडता था। देवता, दानव और आदमी सभी रो रहे थे। भयकर जानवर और पालतू जानवर करिन्दे और परिन्दे, दुष्ट और भले सभी दहाडे मार रो रहे थे। स्त्रियो के चीत्कार से वायुमडल कॉप रहा था। पत्थर रो रहे थे और धातुओ के ऑसू लुढक लुढक कर पृथ्वी को गीला कर रहे थे। प्रत्येक पेड यहाँ तक कि घास भी आँसुओं से भीग रही थी। पहाड और उनमे रहने वाले भयानक दानव नीचे की दुनियाँ के बौने कारीगर और जौटनहीम के खतरनाक बर्फीले दानव सभी जोर-जोर रो रहे थे। चतुर लोक जिसके हृदय मे बाल्डर के प्रति बिल्कुल प्रीत नहीं थी इस समय दिखावे के लिये वह भी रो रहा था और उसकी ऑखे ऑसुओ से भरी थीं। उसको देख कर ओडिन और हीमन्डल के मन का भय जाता रहा और उनको विश्वास हो गया कि अवश्य ही अब बाल्डर वापस आ जायगा। हैला मे बैठी हुई उर्द ने ससार का वह समवेत क्रन्दन सुना और एक बार वह अपने सुवर्ण के सिंहासन से कर उठ खड़ी हो गई।

जब फ्रिग के दूत कार्य सम्पूर्ण करके असगार्ड को लौट रहे थे तो मार्ग एक अँधेरी गुफा के अन्दर उन्हे लोहे की जगल की चुडैल अयगर-बोडा जवीग-होडर बैठी मिली और बोडा ने उस समय अपना रूप अँधेरे की ह ही बना रखा था और वह देखने मे उस समय एक बडे काले धब्बे ी मालूम होती थी। दूत उसके पास चले गये उनको देख कर वह हँसी बोली :

लिया और उसमें वह सब वस्तुएँ एकत्रित कर लीं, जिनकी उसे आव-श्यकता थी।

एक दिन जब बाटा उस घाटी में शिकार खेल रहा था तो उसे नौ देवता मार्ग में मिले। देवता उस समय पृथ्वी को नाप रहे थे। उसे देख कर देवताओं ने आपस में कुछ बातें कीं और फिर चुप हो गये। बाटा उनके पास गया और उनको उसने टेक कर सिजदा की। वे बोले :

"हे बाटा तू अपने भाई की स्त्री के कारण उसका घर छोड़ कर चला आया था यह हम जानते हैं, परन्तु अब वह है कहाँ क्योंकि उसको तो तेरे भाई ने हत्या कर दी है। अनपू को जब तूने सब बातें सच-सच बतलाई थीं, तो उन्हें सुनकर उसने तभी उसको मार डाला था। वृथा तू यहाँ अकेला क्यों रहता है। तू वापस जा क्योंकि तेरा भाई तेरे बिना बहुत दुखी है।"

बाटा बोला :

"उसकी याद मुझे दिन और रात सताती है परन्तु मैं वहाँ जी नहीं सकता क्योंकि मेरे प्राण यहाँ चमेली के फूलों में बस गये हैं।

"यहाँ मैं कभी नहीं बोलता क्योंकि यहाँ बोलने के लिए और कोई है ही नहीं। मेरा मन उदास है, क्योंकि मैं अकेला हूँ। काश मैं अनपू के पास जा सकता।" और यह कहकर उसने लम्बी आह भरी और वह फिर खामोश हो गया ता। उसके नेत्रों से दुख अश्रु बनकर बहने लगा और उसका हृदय उदासी के कारण भारी हो गया। देवताओं ने उसकी ऐसी हालत देखी और उन्हें उस पर दया आई। रा ने कहा :—

"बाटा के लिये एक सुन्दर स्त्री दो क्योंकि यह अकेला है।" तब खनमू ने एक स्त्री बनाई जिसका शरीर इतना सुन्दर था कि जो उसे देखता वही उस पर मोहित हो जाता था। पूरे मिश्र देश में उसके समान सुन्दर स्त्री नहीं थी। खनमू ने चमेली के फूल को मसला और उसकी सुगन्ध से उस स्त्री के शरीर को भर दिया। वह दैव स्त्री थी जिसकी सुन्दरता को देखकर उस घाटी की चमे-लियाँ शरमाने लगीं। उसका गुलाब की पखड़ियों जैसा कोमल और गुलाबी शरीर रा के प्रकाश से जगमगा उठा, उसी समय सातों हैथोर्स (**सातों भाग्य**

थजासे

उन दिनों लोक असगार्ड मे नहीं जाता था। अधिकाश समय उसका लोहे के जगलों मे अपनी स्त्री गुलवीग-होडर के पास ही बीतता। उसका मित्र वेफ्थड्नर भी अब मारा जा चुका था। उसकी चलती तो वह देवताओ और मनुष्यों के कट्टर शत्रु सुरथुर और सुन्तुग के पास मृत्यु की गहरी घाटियो मे जाकर देवताओं के विरुद्ध उनसे मिल कर षडयन्त्र करता। परन्तु वह जो स्वय आशा-देवता था नीचे की दुनियॉ नीफल-हीम और हैला से भी नीचे बसे हुए सुरथुर के राज्य मे न जा सकता था क्योंकि सुरथुर और उसका बेटा सुन्तुग देवता शब्द से ही चिढते थे, यदि वह वहॉ जाता तो निश्चय ही उनके हाथों मारा जाता।

असगार्ड मे वह इसलिए नहीं जाता था क्योंकि सुन्दर बाल्डर की मृत्यु पर शोक न मनाने के कारण देवता लोग उस पर शक करने लग गये थे। ऐसी हालत मे उसे वहॉ भी खतरा था। जौटन-हीम मे बर्फीले दानव उसे बर्फ मे जमा देने पर तुले हुए थे और नीफल-हीम मे हैला की रानी उर्द से वह डरता था। ऐल्फ-हीम जहॉ बौने रहते थे वह पहले ही कई बार धोखा ही कर चुका था। वाना-हीम का राजा होनर और सेनापति नजोर्ड उससे नाखुश थे इसलिए वह वहॉ भी नहीं जा सकता था परन्तु उसकी दुष्टता मे अभी तक कोई अन्तर नहीं आया था। अयगर बोडा के निकट सम्पर्क मे रहने से वह और भी दुष्ट हो गया था।

उसी जमाने मे एक दिन रैन के पति समुद्री तूफानो के राजा पेयीगर ने स्वर्ग मे अपने दूत भेजे और असगार्ड के सभी देवताओं को फसल कटने की खुशी में दावत पर बुलाया। पेयीगर की मीठी शराब ससार भर मे अपने स्वाद और नशे के लिये प्रसिद्ध थी। देवताओ ने उसका निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया। अपने दिव्य वस्त्रों को पहने विचित्र शस्त्रो से सुसज्जित होकर बिजली के समान तेज चलने वाले रथो पर सवार होकर आकाश मार्ग से वह पेयीगर

विधाता-जातक) वहाँ प्रकट हुए। उन्होने उसके सुन्दर शरीर को घूर-घूर कर चारो ओर से देखा। फिर वह सातों एक स्वर से चिल्लाये :

"यह निश्चय ही शीघ्र मरेगी।"

तत्पश्चात् जब देवता और हैथोर्स चले गये बाटा ने उस सुन्दरी का हाथ पकड़ा और उसे अपने घर मे ले आया। वह उससे बहुत अधिक प्रेम करने लगा और कभी उसे आँख से ओझल नही होने देता था। शिकार खेलकर ताजा मास लाकर वह उसके पैरो के पास रख देता था। जब वह खा चुकती बाद मे वह स्वय खाता। रात-दिन उसके प्रेम मे विभोर होकर वह उसी के बारे मे सोचा करता था। एक दिन जब शिकार से लौटा तो उसने देखा कि वह सुन्दरी घर से बाहर खडी है और समुद्र अपनी लहरो को आगे फेंक कर उसको पकडने को उसकी ओर बढा चला आ रहा है। उसने दौडकर उसे अपनी गोदी मे उठा लिया और घर के अन्दर ले आया। आश्चर्यचकित होकर उस स्त्री ने उसके ऐसे व्यवहार का कारण पूछा। वह बोला:—

"हे सुन्दरी घर से बाहर जाना तुम्हारे लिए खतरे से खाली नही है, क्योकि समुद्र की आत्मा, मै जानता हूँ, तुम्हे पाने के लिए बहुत दिन से लालायित है। यदि तुम असावधान न रहीं तो उसकी लहरें तुम्हे समेट कर ले जायँगी। उनसे मैं तुम्हे न छुडा सकूँगा क्योकि वास्तविकता मे मै भी उतना ही कमजोर हूँ जितनी कि तुम। मै कमजोर इसलिए हूँ क्योकि मेरी आत्मा तो सबसे ऊँची चमेली की झाडी के ऊपर खिले फूल मे निवास करती है। यदि किसी को उसका पता लग जाय और वह उसे ले जाय तब मेरे जीवन का ही अन्त हो जायगा।"

उसकी स्त्री ने उसकी ओर प्रेमभरी दृष्टि से देखा और उसके गले मे हाथ डाल दिया जिसमे बाटा का हृदय सतोष से भर गया और इस तरह उसने अपने जीवन का सबसे बड़ा रहस्य वासना के आवेश मे स्त्री को बतला दिया। वह निश्छल, निष्कपट और स्फटिक के समान हृदय वाला मनुष्य यह नहीं जानता था कि अपने रहस्य को कभी किसी को नही बताना चाहिये।

कारी समझता था। वह दरवाजे की ओर बढ़ा और अन्दर घुसना ही चाहता था कि उसी समय फनाफिंग जो द्वारपाल था, उसने उसे अन्दर जाने से रोक दिया, रोके जाने पर वह क्रोधित हो उठा। उसी समय फनाफिंग ने ऊँचे स्वर से चिल्लाकर कहा "हे लोक यहाँ तेरे लिये कोई जगह खाली नहीं है। बेहतर होगा यदि तू लोहे के जगलों को चला जाय क्योंकि वहाँ फनरर भेड़िये की माँ और तेरी स्त्री जो माइमर की भी स्त्री है, दावत पर तेरी प्रतीक्षा में बैठी होगी अंगर बोडा चुड़ैल का जूठा भोजन तुझे बहुत स्वादिष्ट लगेगा।"

यह कह कर आँखों में नफरत भरे हुये उसका उपहास करते हुये हँसने लगा। वह इतनी जोर से बोला था कि भवन के अन्दर दावत खाते सभी देवताओं ने उसका स्वर सुन लिया था। देवता लोग उसकी प्रशसा कर रहे थे और खुश हो रहे थे कि फनाफिंग ने लोक को अच्छी तरह आड़े हाथों लिया था। लोक यह देख कर क्रोध से थर थर काँपने लगा और जब फनाफिंग असावधान होकर भवन के अन्दर की ओर झाँक रहा था कि लोक ने तलवार निकाल कर धोखे से उसकी गरदन पर हाथ मारा और उसे मार डाला। जब फनाफिंग का शरीर गिरा तो देवताओं ने दरवाजे से सभ' वह दृष्य देखा। वह सभी अपने-अपने दिव्य अस्त्रों को लेकर झपट कर भवन के बाहर फनाफिंग की मौत का बदला लेने के लिये लोक को पकड़ने चले। लोक जो अत्यत सावधान था। खतरे को आता देख पहले ही भाग चुका था।

दावत फिर शुरू हो गई, पेयागर के अक्षय पात्रों से इतनी शराब बही कि जादू की नगरी के राजा उटगार्ड लोक का कभी खत्म न होने वाला सोने से मढ़ा शराब पीने का लम्बा सींग भी आज पेयीगर के अक्षय पात्रों से छोटा मालूम होने लगा। पेयीगर के यह पात्र विचित्र थे। खाली होने से पहले वह आप से आप ही उस मीठी शराब से भर जाते थे।

लोक चुपचाप फिर वापस आया। अब की बार द्वार की रक्षा ऐल्डर कर रहा था। वह उसके पास गया और उसने उससे पूछा: "हे द्वारपाल भवन के अन्दर बैठे हुये देवता शराब पीते हुये किसके बारे मे बात कर रहे हैं?"

इसी तरह बहुत दिन निकल गये। जब रात्रि बीती और भोर हुई तो प्रकाश से पवित्र भूमि जगमगाने लगी। भाला लेकर बाटा उठा और जंगल मे शिकार खेलने चला गया जैसा कि उसका नित्य का नियम था। उसकी स्त्री घूमती-घूमती उसी चमेली की झाडी के नीचे पहुँच गई जिसमे बाटा की आत्मा रहा करती थी। वह झाडी उसके घर के पास ही थी, इसलिए उसने वहाँ तक जाने में कोई हर्ज न समझा। उसी समय समुद्री दाने ने उसको जो देखा तो उसकी सुन्दरता को देखकर वह उसे पाने के लिए व्यग्र हो उठा। एक ही हाथ के झटके से उसने अपने ज्वार-भाटो को उसके पकड लाने की आज्ञा दी। तुरन्त सारा समुद्र खलबला उठा और उतग तरगें भीषण हिलोरें लेती हुई उसे पकडने आगे बढीं। भयानक शब्द से घाटी गूँजने लगी। चमेली का पेड़ मुस्कराया और उसने भी उस स्त्री के दमकते शरीर को देखकर वासना से उस पर अपनी महक छोडी और अपने डालियों से उसके अग स्पर्श करने लगा। समुद्र को बढता देख कर वह स्त्री डरी और भाग कर घर में घुस गई। परन्तु इसके पहिले ही उसको भागते देखकर समुद्री दाना चिल्लाया :

"आह काश यह सुन्दरी मेरी होती।"

उसकी यह पुकार चमेली के पेड़ ने सुनी और तुरन्त उस भागती हुई स्त्री के शिर से उसने एक बालों का गुच्छा तोड़ लिया और नीचे पटक दिया। समुद्र की लहरों ने शीघ्र उसे समेट लिया।

भयभीत होकर स्त्री घर के अन्दर भाग आई और उसने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। वह उत्सुक होकर बाटा के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

उधर समुद्र की लहरों ने उस बालों के गुच्छे को मिश्र देश के किनारे पहुँचा दिया। उस समय समुद्र के उस तीर पर मिश्र के राजा के धोबी उसके उत्तम और मूल्यवान वस्त्रों को धो रहे थे। उस बालों के गुच्छे में से सुगन्ध जल में मिलकर चारो ओर फैल रही थी। धोबी हैरान थे कि इतनी अच्छी गध आज वहाँ कहाँ से आ गई थी। राजा के वस्त्रों में वही सुगन्ध व्याप्त हो गई। परन्तु जब धोबी उन्हें लेकर राजा के पास पहुँचे तो वह गन्ध ताते फूलो की गन्ध न रहकर मलहम की सी गन्ध हो गई जिसे सूँघकर राजा बहुत नाखुश हुआ और उसने धोबियों को डाटा। सारे वस्त्रों को उसने पृथ्वी

"हे ओडिन पुराने समय में तूने और मैंने अपने खून मिलाकर शपथ ली थी कि जब कभी शराब पियेंगे तो मिल कर पीवेंगे। क्या तू उस वचन को भूल गया है या तेरा खून अब पानी हो गया है ?"

लोक की बात सुनकर ओडिन खामोश नहीं रह सका। उसने कहा :

"सचमुच ही लोक इस दावत में हिस्सा लेने का अधिकारी नहीं क्योंकि पुरानी शपथों के अनुसार उसकी माँग सही है।"

तब सारे देवता चुप हो गये। ऐईगर के दासों ने दौड़ कर उसके लिये आसन बिछा दिया और जब वह उसके ऊपर बैठ गया तो रैन के इशारे से एक दूसरे दास ने सोने का एक बड़ा कटोरा मीठी शराब से भरकर उसे दिया। प्रसन्नवदन लोक ने उस कटोरे को हाथ में लेकर हाथ ऊँचा किया और बोला :

"ऐईगर की जय, राजा ओडिन की जय, मैं सभी देवताओं की अनुमति से यह मीठी शराब पीता हूँ। ब्रेग का नाश हो क्योंकि उसने मेरे साथ अतिथि-सत्कार नहीं किया।"

और तब लम्बी यात्रा करने से थके हुए लोक ने एक ही घूँट में वह प्याला खत्म कर दिया। दासों ने मीठी शराब से उसे पुनः भर दिया। इसी तरह तीन-चार प्याले पीने के बाद अब वह आराम से बैठकर अपने चारों ओर देखने लगा। ब्रेग को देखकर वह घृणापूर्वक मुसकराया और सबसे छुपाकर आँख के इशारे से उसे चिढ़ाया। ब्रेग अब आपे से बाहर हो गया और उसने उसे द्वन्द युद्ध के लिये ललकारा, पर बेशरम लोक ने उसकी चुनौती की कोई परवा नहीं की। वह खामोशी से हिकारत की निगाहों से देखता हुआ ऐसा बन गया जैसे उसने उसकी बात ही न सुनी हो। तत्पश्चात वह नजौर्ड की ओर घूमा। उसने उससे कहा, "हे नजौर्ड तू व्यर्थ जीता है इस तरह बेन लोगों की गुलामी करके जीवित रहना मौत से भी बदतर है। तुझे देखकर मुझे तरस आता है।"

नजौर्ड अपनी काली दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ गम्भीर स्वर में बोला :
"हे लोक सचमुच ही तू बड़ा नीच है। एक विशाल राज्य के सेनापति को देखकर

विधाता-जातक) वहाँ प्रकट हुए। उन्होने उसके सुन्दर शरीर को घूर-घूर कर चारो ओर से देखा। फिर वह साता एक स्वर से चिल्लाये:

"यह निश्चय ही शीघ्र मरेगी।"

तत्पश्चात् जब देवता और हैथोर्स चले गये बाटा ने उस सुन्दरी का हाथ पकड़ा और उसे अपने घर मे ले आया। वह उससे बहुत अधिक प्रेम करने लगा और कभी उसे आँख से ओझल नही होने देता था। शिकार खेलकर ताजा मास लाकर वह उसके पैरो के पास रख देता था। जब वह खा चुकती बाद मे वह स्वय खाता। रात-दिन उसके प्रेम मे विभोर होकर वह उसी के बारे मे सोचा करता था। एक दिन जब शिकार से लौटा तो उसने देखा कि वह सुन्दरी घर से बाहर खडी है और समुद्र अपनी लहरो को आगे फेंक कर उसको पकडने को उसकी ओर बढा चला आ रहा है। उसने दौडकर उसे अपनी गोदी मे उठा लिया और घर के अन्दर ले आया। आश्चर्यचकित होकर उस स्त्री ने उसके ऐसे व्यवहार का कारण पूछा। वह बोलाः—

"हे सुन्दरी घर से बाहर जाना तुम्हारे लिए खतरे से खाली नही है, क्योकि समुद्र की आत्मा, मै जानता हूँ, तुम्हे पाने के लिए बहुत दिन से लालायित है। यदि तुम असावधान न रही तो उसकी लहरें तुम्हे समेट कर ले जायँगी। उनसे मै तुम्हे न छुडा सकूँगा क्योकि वास्तविकता मे मै भी उतना ही कमजोर हूँ जितनी कि तुम। मै कमजोर इसलिए हूँ क्योकि मेरी आत्मा तो सबसे ऊँची चमेली की झाडी के ऊपर खिले फूल मे निवास करती है। यदि किसी को उसका पता लग जाय और वह उसे ले जाय तब मेरे जीवन का ही अन्त हो जायगा।"

उसकी स्त्री ने उसकी ओर प्रेमभरी दृष्टि से देखा और उसके गले मे हाथ डाल दिया जिससे बाटा का हृदय सतोष से भर गया और इस तरह उसने अपने जीवन का सबसे बड़ा रहस्य वासना के आवेश मे स्त्री को बतला दिया। वह निश्छल, निष्कपट और स्फटिक के समान हृदय वाला मनुष्य यह नहीं जानता था कि अपने रहस्य को कभी किसी को नही बताना चाहिये।

लोक पर इसका भी कोई असर नहीं हुआ उल्टे वह उसी से बोला :

"अरे जा जा औरत के गुलाम तुझे देखकर मुझे हँसी आती है। गर्ड के पीछे ऐसा पागल हो गया कि उसके बाप गायमर को अपनी तलवार ही दे बैठा। भला कहाँ विश्वविजयी तलवार और कहाँ वह साधारण दानवो की बेटी अब मै देखूँगा कि जब सुरथुर और सुन्तुङ्ग अपनी गहरी घाटियो में से निकल कर विशाल वाहिनी सहित असगार्ड पर हमला करेंगे तब तुझ जैसे नीच कुत्ते किस प्रकार उनका मुकाबला करेंगे ।"

और फिर घृणा से अट्टहास करते हुये ऊँचे स्वर से लोक फ्रे की ओर आँख मारते बोला : "कोई परवाह नहीं। फ्रे घबराता क्यों है ? जब शत्रु सामने आ जाय तो तलवार न सही गर्ड को ही उनके सामने कर देना।"

ऐर्गिर की सभा मे सन्नाटा खिंच गया। फ्रे की आँखे नीची हो गई और वह शरम से गड गया। दुष्ट लोक ने उसकी कमजोरी सबके बीच मे उछाल दी थी। उसका चेहरा लाल हो गया और क्षोभ से उसका शरीर पसीने से भीग गया। सभी देवता इस अपमान से लज्जित हो उठे। उसी समय पतली आवाज मे क्रोध से थरथराती हुई फ्रिग चिल्लाकर लोक से बोली, 'अरे दुष्ट खैर मना कि मेरा पुत्र बाल्डर अब जीवित नहीं है यदि वह यहाँ होता तो तुझे यहाँ से कभी जीवित न जाने देता।"

"अच्छा अब ओडिन तो चुप हो गय है और उसकी रानियों की सेना आगे आ गई है। तो सुन अरी फ्रिग जो तू मुझे बुलवाना ही चाहती है तो मै भी तुझसे कह दूँ कि तेरे उस नालायक बेटे बाल्डर को मैने ही मरवाया था।' वह इतना नीच था कि उसके खून से अपना हाथ रङ्गना मैने उचित नहीं समझा। मिस्लटो की पतली टहनी से मैने ही बौने कारीगर हैलीन्वार्ड को मूर्ख बनाकर उसी से एक विषैला तीर बनवाया था। उस तीर को अबे होडुर को देकर मैने ही उस बदसूरत बाल्डर को मरवा कर सीधा हैला भेजा था यह सब मेरे बाएँ हाथ के खेल थे।"

फ्रिग यह सुन कर पछाड खाकर नीचे गिर पडी। सभी देवताओं ने क्रुद्ध होकर अब अपनी अपनी तलवारे म्यान से बाहर निकाली और उस

इसी तरह बहुत दिन निकल गये। जब रात्रि बीती और भोर हुई तो प्रकाश से पवित्र भूमि जगमगाने लगी। भाला लेकर बाटा उठा और जगल मे शिकार खेलने चला गया जैसा कि उसका नित्य का नियम था। उसकी स्त्री घूमती-घूमती उसी चमेली की झाडी के नीचे पहुँच गई जिसमे बाटा की आत्मा रहा करती थी। वह झाडी उसके घर के पास ही थी, इसलिए उसने वहाँ तक जाने मे कोई हर्ज न समझा। उसी समय समुद्री दाने ने उसको जो देखा तो उसकी सुन्दरता को देखकर वह उसे पाने के लिए व्यग्र हो उठा। एक ही हाथ के झटके से उसने अपने ज्वार-भाटों को उसके पकड लाने की आज्ञा दी। तुरन्त सारा समुद्र खलबला उठा और उतग तरगे भीषण हिलोरे लेती हुई उसे पकडने आगे बढीं। भयानक शब्द से घाटी गूँजने लगी। चमेली का पेड़ मुस्कराया और उसने भी उस स्त्री के दमकते शरीर को देखकर वासना से उस पर अपनी महक छोडी और अपने डालियों से उसके अंग स्पर्श करने लगा। समुद्र को बढता देख कर वह स्त्री डरी और भाग कर घर में घुस गई। परन्तु इसके पहिले ही उसको भागते देखकर समुद्री दाना चिल्लाया :

"आह काश यह सुन्दरी मेरी होती।"

उसकी यह पुकार चमेली के पेड़ ने सुनी और तुरन्त उस भागती हुई स्त्री के शिर से उसने एक बालों का गुच्छा तोड़ लिया और नीचे पटक दिया। समुद्र की लहरों ने शीघ्र उसे समेट लिया।

भयभीत होकर स्त्री घर के अन्दर भाग आई और उसने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। वह उत्सुक होकर बाटा के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

उधर समुद्र की लहरों ने उस बालों के गुच्छे को मिश्र देश के किनारे पहुँचा दिया। उस समय समुद्र के उस तीर पर मिश्र के राजा के धोबी उसके उत्तम और मूल्यवान वस्त्रों को धो रहे थे। उस बालों के गुच्छे मे से सुगन्ध जल में मिलकर चारों ओर फैल रही थी। धोबी हैरान थे कि इतनी अच्छी गध आज वहाँ कहाँ से आ गई थी। राजा के वस्त्रों मे वही सुगन्ध व्याप्त हो गई। परन्तु जब धोबी उन्हें लेकर राजा के पास पहुँचे तो वह गन्ध ताते फूलों की गन्ध न रहकर मलहम की सी गन्ध हो गई जिसे सूँघकर राजा बहुत नाखुश हुआ और उसने धोबियों को डाटा। सारे वस्त्रों को उसने पृथ्वी

वह समझ गया था कि और बोलने से थौर उसे अब न छोड़ेगा। आगे आने वाले खतरे को भी वह वहाँ बैठ कर व्यर्थ निमन्त्रण देना नहीं चाहता था। वह चुपचाप उठ कर कमरे से बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद भी देवताओं का क्रोध शान्त न हुआ। अपने विचित्र हथियारों को लेकर उसका मार डालने को वह फौरन उसके पीछे चले पर चतुर लोक इसके लिये भी पहले से ही होशियार था। वह शीघ्र एक छोटी मछली बन कर समुद्र के पार निकल गया। जब तक देवता लोग भवन से बाहर आये वह समुद्र में गोता लगा कर गायब हो चुका था।

इसके पश्चात् लोक असगार्ड में कभी नहीं जा सका। देवताओं ने असगार्ड वापस आकर एक दिन सभा में यह निश्चय किया कि लोक को पकड़ कर बाँध देना चाहिये क्योंकि उसकी दुष्टता अब बहुत बढ़ चुकी थी। खास कर अब जब वह जान गये थे कि सुन्दर बाल्डर को उसी ने मरवाया था। वह उससे बदला लेने के लिए रह-रह कर छटपटाते थे।

दल बाँध कर देवता लोग उसे ढूँढने निकल पड़े। उन्होंने उसे सारे मिडगार्ड और जौटन-हीम में ढूँढा पर वह उन्हें कहीं न मिला। चलाक लोक पहले से ही अपनी रक्षा का उपाय कर चुका था। एक ऊँचे पहाड़ के अन्दर एक तंग गुफा में वह छिप कर रहता था। इस गुफा के सामने पानी का एक बहुत बड़ा झरना पहाड़ की ऊँचाइयों से नीचे गहरे गड्ढे में गिरता था। इस गुफा के चार दरवाजे थे जिन्हें लोक हमेशा खुले रखता कि यदि किसी ओर से हमला हो और शत्रु आ जायें तो वह दूसरी ओर से निकल कर भाग जाय। इस अँधेरी गुफा में छिप कर आसा देवताओं के नाश करने का उपाय सोचा करता था परन्तु अकेले रहते-रहते वह उकता गया था। एक दिन उसने कच्चे सूत को मोम से लपेट कर एक जाल बनाया जिससे मछलियाँ पकड़ी जा सकती थीं। जाल बना कर वह बहुत खुश हुआ। उसने यह जाल क्यों बनाया इसका कारण कभी कोई न जान सका। ओडिन की बाल्डर के कान में कही गई बात की तरह इसको भी कोई कभी न जान सका।

उधर देवता लोग उसको ढूँढते फिरते थे और उसे पकड़ कर जल्दी से जल्दी दण्ड देने को उतावले हो रहे थे। ओडिन तब अपने ऊँचे और ठोस सोने

पर फेंक दिया और दुबारा धोने का हुक्म दिया। डरते हुये धोबियो ने वे वस्त्र उठा लिये और अब की बार वह जानते थे कि यदि वही गन्ध रही तो उनके कधो पर शिर नही रहेगा। धोबियो का सरदार गहरी चिन्ता से व्यथित हो गया और समुद्र तीर पर जाकर अपनी तेज निगाहो से वह समुद्र के जल का निरीक्षण करने लगा। अचानक ही उसकी निगाह पानी पर तैरते हुए उस बालो के गुच्छे पर पडी। उसने एक दूसरे धोबी को उसे दिखाया और लाने की आज्ञा दी। जब वह बालो का गुच्छा उसके पास आ गया तो वह उसे सूँघकर सारी परिस्थिति समझ गया और राजा के पास जाकर उसने वह गुच्छा उसे नजर किया। और सारी बातें बतलाई। राजा ने उसे सूँघा तो मदहोश होकर वासना से उद्दीप्त हो गया और मन मे उस स्त्री को पाने की प्रबल इच्छा करने लगा जिसके कि वह बाल थे। उसने शीघ्र अपने नजूमियो को बुलवाया और उनको बालो का गुच्छा दिखाकर उस स्त्री के बारे मे पूछा। नजूमी बोले :

"हे फराओ (मिश्र देश के प्राचीन राजा) रा की देवी पुत्री अनन्य सुन्दरी है और यह गुच्छा उसी के केशो का है। देवताओ ने अपनी कृपा से दूर देशो से लाकर तेरे लिए दिया है। शीघ्र देश देशान्तरों मे अपने दूत भेज और उस सुन्दरी को ढुँढवा। चमेली के फूलो से आच्छादित सुन्दर घाटी मे भी बहुत से दूतो को भेज, क्योंकि इसकी खुशबू उनसे मिलती-जुलती है। अपने दूतो को आदेश दे कि जहाँ भी वह सुन्दरी मिले उसको तेरे पास ले आये क्याकि ऐसी अनिन्द्य सुन्दरी तेरे सिवा और कौन प्राप्त कर सकता है।"

यह सुनकर राजा बोला '

"हे नजूमियों तुम बहुत ज्ञानी हो। तुम्हारे ज्ञान का भडार सदा भरा रहता है। तुमने जो कुछ कहा है अच्छा कहा है और उसे सुनकर मै बहुत खुश हूँ।"

यह कहकर फराओ ने उन्हे बहुमूल्य रत्न इनाम मे दिये। तत्पश्चात् सारे देशो मे सशस्त्र दूत भेजे गये। बहुत दिन हो गये पर कोई समाचार नहीं आया। फराओ उत्सुकता से उनके लौटने की बाट देखता रहा। धीरे-धीरे दूत

परन्तु समुद्र से बडे-बडे जीव-जन्तुओ के पास जाने से वह डरता था। जब जाल उसके पास आया तो वह कूदा। उसी समय थौर ने उसे पकड लिया। लोक ने झटके दे-दे कर अपने को छुडाना चाहा पर थौर का पजा उसकी पूँछ पर फसता ही गया यहाँ तक कि उसकी पूँछ मे गड्ढा हो गया और इसीलिये उसी समय से सालमन मछली जिसका कि उसने रूप धारण किया था, पूँछ पर से पतली हो गई है।

लोक ने अब जोर लगाना छोड दिया और जब उसको निश्चय हो गया कि अब वह न छूट सकेगा तो वह अपना असली रूप धारण करके सिर झुकाये देवताओं के सामने खडा हो गया।

फ्रे ने आगे बढकर उसके एक लात लगाई और टायर ने उस पर घृणा से थूक दिया। ऐईगर की दावत मे जैसा कि फ्रे ने कहा था वैसा ही दण्ड देना देवताओ ने अब उचित समझा। दुख भरे समुद्र के बीच स्थित अँधेरे टापू पर वह उसे पकड कर ले गये जहाँ कुछ समय पहले उन्होंने उसके पुत्र फनरर भेड़िये को बाँध कर पटक रक्खा था। लोक के साथ उसके दो पुत्र वाली और नार्वी भी गये। उसकी अच्छी स्त्री सिगैन जिसे वह जिन्दगी भर नफरत करता रहा था उसके साथ-साथ अपनी इच्छा से गई। वह इतनी अच्छी स्त्री थी कि उसके बुरे बरताव के प्रति भी उदारता दिखाते उसने उसके साथ उस दुखों से पूर्ण स्थान मे रहना ही उचित समझा।

जब वह लोग वहाँ पहुँच गये तो फनरर भेडिये को उहोने यथा स्थान बँधे पाया। वह उन्हे देख कर जोर से गुर्राया। टायर ने जिसका कि दाँया हाथ फनरर खा चुका था अब अपने बाँये हाथ से उस पर भाले से प्रहार किया। भाला उसके शरीर मे आधा घुस गया। दर्द से बेहाल होकर भेडिया चिल्लाने लगा और भाला उसके शरीर में गडा रहा जिसे टायर ने बाहर नही निकाला। ओडिन ने वाली को सामने बिठा कर उसको मन्त्रों द्वारा एक भयकर भेडिया बना दिया। भेड़िया बनते ही वह अपने बगल मे खडे हुए अपने भाई नार्वी पर टूट पड़ा। उसने उसके टुकडे-टुकडे कर दिये। उसी समय जब नार्वी मर चुका था नजौर्ड ने अपनी भारी कुल्हाड़ी उठा कर वाली भेड़िये के

लाट आये। परन्तु जो लोग चमेलियों से भरे देश मे गये थे उनमे से एक भी न लौटा। क्योंकि जब वह वहाँ पहुँचे थे और उस स्त्री को बाटा की गैर-हाजिरी मे पकडकर लाने का उपक्रम कर रहे थे उसी समय बाटा लौट आया और उसने अपनी तलवार से मौत के घाट उतार दिया था। उन्हे मार-कर उसने उनके शरीरो को समुद्र में फेंक दिया था जहाँ भयानक जल-जन्तुओ ने उन्हें फाडकर खा लिया था। न उनमे से कोई बचा था जो आकर खबर देता और न फराओ को उनके बारे में कुछ पता ही लगा। उसने चिन्तित होकर नजूमियो को फिर बुलाया और उस स्त्री के बारे में पूछा। वह बोले :

'वह सुन्दरी निश्चित ही चमेलियों से लदे हुए देश मे रहती है क्योंकि वहीं से दूत वापस नहीं आये हैं। सम्भव है कि उन पर कोई आपत्ति आ गई हो। हे फराओ! अबकी बार फिर दूतो को भेजो, परन्तु वैसे नही जैसे पहिले भेजा था। अबकी बार सशस्त्र सैन्यबल भी काफी सख्या में साथ जाय। *एक चतुर स्त्री को भी उनके साथ भेजो जो उस स्त्री को बेशकीमती जवाहरातों* को दिखाकर यहाँ आने के लिये आकर्षित करे।"

फराओ को यह युक्ति पसन्द आ गई। तुरन्त उसकी आज्ञा से एक विशाल सुगठित सेना, एक सुन्दर चतुर स्त्री रत्न पिटक मे बहुमूल्य आभूषणो को लेकर चमेली के देश को चल पड़ी। सैनिकों के अस्त्र-शस्त्रों से खडखडाहट होती जाती थी और उनके सुगठित शरीरो पर उनके कवच और ढाले सूर्य के प्रकाश मे कर उन्हें दिव्य रूप प्रदान करती थी। अरब देश के चपल तुरङ्गो पर वायु-वेग से रास्ते को चीरते हुये बहादुरी से वह बढे चले जाते थे। उस समय रात्रि हो चुकी थी, जब चमेली से आच्छादित उस घाटी के मुहाने पर वह पहुँचे। सेनापति की आज्ञा से उस समय उन्होंने वही पडाव डाल दिया।

रात बीती और भोर हुई। पवित्र भूमि उज्वल प्रकाश से जगमगा उठी। सैनिकों ने वर्षो उल्लास किया और आकाश की ओर शिर उठाकर सुवर्ण रथ पर चढे रा हरमाचिस को घुटने टेक कर सिजदा की और तत्पश्चात् वह उस घाटी मे घुसे। उस समय उस घाटी मे नीरवता छा रही थी। चमेली की झाड़ियाँ फूलो से लदी हुई थीं। समीरण मन्द-मन्द बह रहा था। उस स्वर्गीय

पड़ा। इस बीच में कि सिगैन उसे खाली करके फिर विष के गिरने को रोके लोक पर गिर कर उसने उसे बुरी तरह जला दिया। दर्द से वह इतना चीखा और अपने बन्धन छुड़ाने के लिए हाथ पैरों को इतना झटका कि सारा पहाड़ हिल गया।

इसी तरह जब जब प्याला भर जाता था और सिगैन उसे खाली करने को जाती तभी जहर की वह धार लोक पर गिर कर उसे जलाया करती। उस असह्य यातना से जब वह छूटने का प्रयत्न करता तभी पहाड़ हिल उठते, मिडगार्ड काँपने लग जाता और पृथ्वी पर भूकम्प आ जाते थे।

दृश्य को देखकर सैनिक बहुत प्रसन्न हुये और हर्ष मे फराओ की जय ध्वनि करने ही वाले थे कि उस चतुर स्त्री ने आगे बढ़कर उन्हे ऐसा करने मे रोका। उसने सेनापति से चुपचाप कुछ बाते की और तत्पश्चात् निशब्द पग धरते हुए वह आगे-आगे चली। सैनिको ने उसी भाँति उसका अनुसरण किया। शीघ्र ही वह लोग बाटा के घर के सामने जा पहुँचे। उस स्त्री की आज्ञा से सभी सैनिक चमली की झाड़ियो के नीचे जहाँ-तहाँ छिप गये। और उत्सुकतापूर्वक दूसरी आज्ञा की बाट जोहते हुए अस्त्र-शस्त्रो को सँभाले बैठे रहे। उस समय बाटा नित्य की भाँति घर से बाहर शिकार खेलने जा चुका था। वह चतुर स्त्री तब उस घर के द्वार पर पहुँची और उसने सुरीले कंठ से रा की दैवी पुत्री को पुकारा। जब वह आई तो इसने उसे अपने अक मे भरकर प्यार किया। तत्पश्चात् उससे सुन्दर देश मे रहने वाले पराक्रमी फराओ की प्रशसा करने लगी। उसके सामने उसने बहुमूल्य वस्त्र रक्खे और रत्न पिटक खोलकर प्रकाश से जगमगाते हुये जवाहिरात उसे दिये और कहा ·

"हे सुन्दरी! फराओ तेरे लिये बेचैन होकर राजमहलो मे घूम रहा है। उसके पास असख्य धन है, दास-दासियाँ हैं और उसकी आज्ञा से समुद्र थर्राते हैं। वह स्वय भगवान है क्योकि उसकी आँख से आँख कोई मानव नही मिला सकता। ओसिरिस और साह जैसे पराक्रमी देवता उसकी रक्षा करते हैं। तू जिस व्यक्ति के साथ यहाँ रहती है उसका तो पौरुष भी कभी का खण्डित हो चुका है। इन जवाहरातो को देखकर तेरी सुन्दर आँखे इनकी चमक से भर गई हैं परन्तु जब तू फराओ के महल मे इनसे भी बढकर ढेर के ढेर रत्नो की स्वामिनी बनेगी तब मेरे इन कहे शब्दो को याद करके मुझे धन्यवाद देगी। फराओ का पौरुष अजेय है और उसकी आज्ञा भी कठोर है। तू उसकी प्रिया बनकर सचमुच ही खुशी से फूली न समायेगी।

"हे सुन्दरी तेरा इतना सुन्दर शरीर और उत्कट यौवन इस तरह जगलो मे नष्ट करने को नहीं है। इस मूर्ख और कायर पुरुष को छोड़ दे क्योकि ससार का प्रबल शासक फराओ उत्सुकता से तेरी प्रबल इच्छा कर रहा है।"

ओडिन ने उसे पकड़ कर बर्फ की जञ्जीरों से बाँध दिया। बाँधने के उपरान्त ऋन्ड की बुद्धि उसने एक बार फिर स्वस्थ कर दी कि वह उसे देखे और पहचान सके परन्तु उसके रोग को बढ़ा दिया। सारा रोग अब ऋन्ड के पेड में इकट्ठा हो गया और वह दर्द से कराहने लगी। उस समय ओडिन ने अपना असली रूप धारण करके उससे कहा, "हे सुन्दरी मुझे देख और पहचान! मैं वही ओडिन हूँ जिसके प्रेम को तूने तीन बार ठुकरा दिया है। इस समय तेरा जीवन मेरी मुट्ठी मे है। यदि तू मुझसे विवाह करने को तैयार है तब तो ठीक है वर्ना तेरे जीवन का सुख मैं सदा के लिए नष्ट कर दूँगा। बोल क्या कहती है?"

ऋन्ड ने असहाय अवस्था में दर्द से कराहते हुए उसकी ओर देखा और धीमे स्वर से उत्तर दिया, "हे असगार्ड के राजा तेरी शक्ति से ससार मे कौन विमुख हो सकता है परन्तु मैं जाड़ों की रानी हूँ। मेरे हृदय में प्रेम करने के लिये अग्नि नहीं है इसलिए मैं मजबूर हूँ।"

ओडिन ने कुछ देर गौर से उसकी तरफ देखा। फिर उसने दो-चार बार अपना सिर हिलाया मानो वह सारी परिस्थिति समझ गया हो। अपने शरीर पर कसे हुए विचित्र अस्त्रो मे से उसने एक पुष्प बाण निकाला और शीघ्र ही प्रत्यचा पर चढा उसे खींचकर ऋन्ड के हृदय की ओर ताक कर मारा। वह पुष्प बाण उसके स्तनों को फाडता हुआ अन्दर हृदय में घुस गया और वहीं समा गया परन्तु आश्चर्य की बात थी कि न तो उससे ऋन्ड की छाती मे कोई घाव हुआ न ही रक्त बहा बल्कि उसके लगते ही ऋन्ड प्रेम से मतवाली होकर अपने वस्त्रों की शिथिलता और अस्त व्यस्त हालत अनुभव करती हुई ओडिन के सामने लजाने लगी। तब ओडिन ने प्रसन्न होकर उसके बन्धन काट डाले और उसे मुक्त कर दिया। स्वतन्त्र होकर वह स्त्री उसके पास चली गई और तब ओडिन ने उसे अपनी भुजाओं में बाँध लिया। ओडिन का स्पर्श पाते ही वह सारे रोगों से मुक्त हो गई। ओडिन ने उससे बड़ी धूमधाम से विवाह कर लिया और स्लीपनर पर बिठा कर उसे असगार्ड ले आया।

बाला की आत्मा ने जो भविष्यवाणी की थी वह सच हुई। यथा समय ऋन्ड के एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसकी दिव्य ज्योति से सारा संसार

तत्पश्चात् उसने उन सुन्दर वस्त्रों को दिया और मणियों को उसे पहिना दिया। रा की पुत्री उन्हें पाकर बहुत खुश हुई और फौरन उसके साथ जाने को तैयार हो गई। शीघ्र ही दोनों स्त्रियाँ उस घर से निकलीं और सेना सहित चमेलियों से आच्छादित उस घाटी को छोड़ कर प्रचंड राजा फराओ के देश की ओर चल पड़ीं। समुद्री दाना रा की पुत्री को देख कर एक बार उसे पकड़ने को आगे बढ़ा परन्तु फराओ के प्रचंड योद्धाओं ने अपने पराक्रम से उसे पीछे हटा दिया।

फराओ उस सुन्दरी को पाकर बहुत खुश हुआ। सारे देश में उसके आगमन की खुशियाँ मनाई गईं। अच्छा दिन देख कर फराओ ने उसके साथ विवाह किया। रा की पुत्री रानी बन कर उल्लसित हृदय से दिव्य मणियों और रत्नों के बीच बैठ कर असंख्य दासियों द्वारा अपना शृंगार कराने लगी। फराओ के साथ विलास और आनन्द में उसके दिन बीतने लगे। परन्तु रह-रह कर उसके दिल में बाटा की याद आती और वह भयभीत हो उठती थी।

उधर बाटा जब लौटा और उसने अपनी स्त्री को घर में न पाया तो वह घबड़ा कर समुद्र के तीर पर गया और उसे ढूँढने लगा। जब वह कहीं भी न मिली तो चमेली की झाड़ी के नीचे जाकर वह बैठ गया और रोने लगा। समुद्र की लहरों ने उसे रोते देख कर दयार्द्र हो कर उससे कहा :

"बाटा अब रोने से कुछ नहीं मिलेगा। तेरी स्त्री तुझे धोखा देकर फराओ के पास चली गई। तू प्रयत्न करके भी उसे वापस नहीं ला सकता। क्योंकि फराओ प्रचंड पराक्रमी और पृथ्वी का शासक है। उसके योद्धा भयानक हैं जिन्होंने जाते समय अपने भीषण प्रहार से हमें भी पीछे हटा दिया था। व्यर्थ उसकी याद में अपना जीवन नष्ट न कर।"

बाटा ने सुना और निराश होकर अपने घर में आकर वह बैठ गया। उसका जीवन उदासी से भर गया।

जब बाटा की याद ने रा की पुत्री को बहुत डराया तो एक दिन मौका देख कर उसने अपने नये पति महान् फराओ से कहा :

को आग पर चढा दिया। जब गोश्त पक गया तब उसने ओरवैंडिल-ईगिल को उसके बच्चों सहित खाने को आमन्त्रित किया। जब सब लोग खाने बैठ गये तो वह बोला :

"सब लोग जब गोश्त खा चुके तो अन्दर की हड्डियो को इन खालों मे डालते चलो। कोई भी हड्डी न तो टूटे और न बाहर फेंकी जाय।"

बस सब खाना खाने जुट गये और हँस हँसकर बातें करने लग गए। लोक ने देखा कि थौर और ओरवैंडिल की दोस्ती बडी पक्की है क्योंकि जब कभी थौर इस रास्ते जौटन-हीम जाता तो हमेशा इसी के यहाँ ठहरता था। थौर उससे यो भी खुश था क्योकि ओरवैंडिल एक मशहूर तीरदाज था। लोक ने सोचा कि किसी तरह इन दोनो मे लडाई करानी चाहिये।

तब उस दुष्ट ने ओरवैंडिल के लडके थजाल्फे को लड़ाई कराने का बहाना बनाया और उससे फुसफुसा कर कान मे कहा :

"थजाल्फे! तू तो ऊपर का गोश्त खा रहा है। भला इसमे क्या स्वाद है? या हो सकता है। अगर तू सचमुच स्वादिष्ट खाना खाना चाहता है तो बकरे की यह पीछे की टॉग की हड्डी तोड दे और उसके अन्दर का रस पी। तू भी याद करेगा कि वह कितने मजे की चीज है।"

थजाल्फे लडका तो था ही, लोक की बातो मे आ गया और उसने चुपचाप उसमें से उठाकर एक पीछे की हड्डी तोड ली और अन्दर का रस पी गया। फिर उसने चुपचाप ही वह टूटी हड्डी बकरे की उन खालो मे डाल दी। किसी को कुछ पता भी नहीं चला।

जब दावत खतम हुई तो सभी सोने चले गये। थौर जो ओढकर तानकर सोया तो बस दूसरे दिन सुबह जागा। तीरंदाज ओरवैंडिल रात भर पहरे पर रहा और लोक चुपचाप बिना सोये पडा रहा, क्योंकि उसे हर तरह के सोच विचार आ रहे थे कि जब सुबह थौर को मालूम होगा कि उसके बकरे की टॉग की हड्डी टूट गई है तो जरूर ही वह दोस्त से लड पडेगा और इस तरह उनकी दोस्ती खतम हो जावेगी।

"मैं तुम से कुछ कहना चाहती हूँ परन्तु पहिले वचन दो कि जो मैं कहूँगी उसे पूर्ण करोगे।"

फराओ उसकी सुन्दरता पर इतना रीझा हुआ था कि उसकी कोई भी बात नहीं टालता था। उसने शीघ्र वचन दिये। तब वह बोली

"नगेलिया से भरी घाटी में अपने सैनिकों को भेजो। वहाँ मेरे मकान के पास जो सब से ऊँचा नगली का पेड़ है उसे वह लोग जाकर चारों ओर से घेर लें। इसके बाद कुल्हाड़ियों से उस पेड़ को उखाड़ कर फेंक दें। और जब वह नीचे गिर पड़े तो उसके टुकड़े टुकड़े कर दें। उसके तमाम फलों को भाड़ दे कर फेंक दें। यही मेरा काम है जो तुम अपनी आज्ञा से शीघ्राति शीघ्र उसे पूरा करो।"

फराओ ने सुना। वह मुस्कुराया। तुरन्त अरब देश के चपल अश्वों पर आरूढ़ होकर उसके भयानक योद्धा आकाश को धूल से आच्छादित करते हुए विद्युत गति से नगेलियों की घाटी की ओर चल पड़े। राजा की पुत्री से एक दिन प्रेमवश बाटा ने अपने जीवन का रहस्य कहा था। आज उसी का प्रतिकार भागी हुई स्त्री ने छोड़े हुए पति का दिया था। शीघ्र ही फराओ के सैनिक नगेला की उस घाटी पर पहुँच गए। उन्होंने बड़ी निर्दयता से ऊँची नगली की भाड़ी को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया। उस समय बाटा अपने घर में अकेला चटाई पर बैठा अपनी कामनी स्त्री के बारे में सोच रहा था। दुख के कारण कई दिनों से वह घर के बाहर भी नहीं निकला था। जैसे ही नगेलों का पेड़ उखड़ कर गिरा झटके के साथ उसके तमाम फल टूट कर बिखर गए जिन्हें बराबर सैनिकों ने उठा कर नोच नोच कर फेंक दिया। जैसे ही सब से ऊपर का फल नोचा गया बाटा तड़फड़ा कर नीचे गिरा और मर गया। सैनिक विजय उल्लास करते हुए लौट आये।

बहुत दिन हो गये पर अनपू को बाटा का कोई संदेश नहीं मिला। वह दुखी था, परन्तु आशा के साथ उसके संदेश की प्रतीक्षा कर रहा था। अकेले रहते-रहते वह घबरा गया था। एक दिन जब दोपहर के समय वह खेत से लौटा और घर में भोजन करने गया। उस समय उसने देखा कि पड़ोस की

तुम्हारा रास्ता यहाँ से पूर्व दिशा की तरफ है। मैं तो अब उत्तर की तरफ जाऊँगा क्योंकि मुझे सामने के उन ऊँचे पहाड़ों से भी आगे जाना है।"

फिर वह भयंकर दानव दुआ-सलाम करके अपने रास्ते चला गया। उसने अपना गोश्त का थैला अपनी पीठ पर डाल लिया और लबे-लबे कदम बढाता हुआ थोड़ी ही देर बाद वह पहाड़ों की ओट में होकर गायब हो गया। थौर ने भी शायद उसके बाद उस दानव से मिलने की कभी इच्छा जाहिर नहीं की।

अब आसा-देवता, लोक, थजाल्फे और वह लड़की रोसक्वा अपने रास्ते पूर्व दिशा की ओर चले। दोपहर तक वह चलते चले गए।

उसके बाद उन्हें बहुत दूर एक शहर दिखाई देने लगा, वह कदम बढ़ाकर वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक बड़ा शहर कुछ दूरी पर बसा हुआ है। इस शहर के बीच में एक बर्फ का बना हुआ बहुत बड़ा किला खड़ा था जो सैकड़ों कोस के बीच में फैला हुआ था। वह इतना ऊँचा था कि चारों ओर उसके साथियों ने अपने सिर पीठ से मिला कर आँखे आसमान की तरफ उठा कर उसकी आकाश को छूने वाली मीनारों को देखा। इतना ऊँचा किला उन्होंने पहले कभी देखा ही नहीं था जो साथ ही साथ इतना विशाल था। वह अब नगर के पास जा पहुँचे और उनके ताज्जुब का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने देखा कि वहाँ कोई आदमी या दानव या कोई और ही प्राणी नाम को भी नहीं था। वह नगर के अन्दर चले गऐ और रास्ते भर उन्हें कोई भी नहीं मिला, सारे रास्ते खाली पड़े थे और जन-शून्य थे। फिर ऊँची चढाई शुरू हुई, रास्ता घूम-घूम कर ऊपर चढ़ने लगा। थौर और उसके साथी ऊपर चढ़ते चले गये। बहुत ऊँचाई पर वह बर्फ का कोसों के बीच मे फैला हुआ और सैकड़ों हाथ ऊँचा किला खड़ा था। यह दर्वाजे पर पहुँचे तो देखा कि वह बन्द था और उसमें ताला लगा हुआ था। थौर ने जोर लगाया कि किसी तरह दर्वाजा खुल जाय या ताला ही टूट जाय, पर उससे हुआ कुछ भी नहीं। हार कर अन्दर जाने के लालच से वह फाटक की मोटी तानो की बीच में होकर पार निकल गया। उसके साथी भी इसी तरह अन्दर घुस गये। अब वह

एक स्त्री वहाँ मौजूद है। यह स्त्री तरुणी थी परन्तु उसका पति मर चुका था। समाज के नियमो के अनुसार उसने अपने पति का शरीर मसालों से भरवा कर घर के अन्दर ही कब्र मे रख छोडा था जिसे वह नित्य दो बार निकाल कर उसके सम्मुख अपना प्रेम प्रकट किया करती थी। परन्तु उसकी तबियत अन्दर से ऐसा करने को न करती थी। मरे हुये लोगो से प्रेम करना उसके लिए असम्भव हो गया था। अनपू ने जब से अपनी स्त्री का वध कर दिया था तब से वह स्त्री चोरी-चोरी इस पर निगाह जमाये हुए थी। उस दिन अचानक मौका पाकर वह उसके घर मे घुस गई और उसके आने की उत्सुकता-पूर्वक प्रतीक्षा करने लगी। वह साधारणतया सुन्दरी भी थी और उसे पूर्ण विश्वास था कि उसको अकेली पाकर अनपू अवश्य ही उसके प्रणय-जाल मे फँस जायगा। जब अनपू आया और हाथ-पैर धोकर भोजन करने बैठा तो उसने उसे देखा। उस समय वह स्त्री उसे मास और शराब देने का उपक्रम कर रही थी।

अनपू का हृदय घृणा से भर गया परन्तु प्रत्यक्ष मे उसने कुछ भी न कहा। उस समय वह भूख से इतना व्याकुल था कि सब से पहिले खाना खा लेना चाहता था। उसने पूरी थाली भर कर मास खाया। तत्पश्चात् जब उसको शराब दी गई तो उसने देखा कि वह खौल रही है। उसने उसे नाक से लगाया और सूँघा। बदबू से उसका सिर चकरा गया। तत्पश्चात् शराब का पात्र नीचे रख कर वह एकदम उठ खडा हुआ। उसने अपने जूते पहिने, यात्रा के सामान को शीघ्र तैयार किया और अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित होकर घर से बाहर चला। उसने समझ लिया कि बाटा ने चमेली से घिरी हुई उस घाटी मे उसे बुलाया है। अब वह एक पल भी वृथा नष्ट करना न चाहता था। वह स्त्री जो अर्द्धनग्नावस्था मे उसे लुभाने का प्रयत्न करती हुई अब तक खडी थी, जब उसने देखा कि वह तो उससे बिना बोले ही बाहर जा रहा है तो तेजी से घूम कर उसके सामने अपने दोनो हाथो व शरीर से द्वार घेर कर खडी हो गई। अनपू ने उसे चलते हुये नेत्रों से देखा। पल भर मे उसके हाथ मे तेज कटार चमकी और दूसरे ही क्षण उस स्त्री की लोथ पृथ्वी पर आ गिरी। अनपू ने उसके नगे पेट मे वह कटार भोंक दी थी। खून से

तुम्हारा रास्ता यहाँ से पूर्व दिशा की तरफ है। मै तो अब उत्तर का तरफ जाऊँगा क्योंकि मुझे सामने के उन ऊँचे पहाड़ो से भी आगे जाना है।"

फिर वह भयकर दानव दुआ-सलाम करके अपने रास्ते चला गया। उसने अपना गोश्त का थैला अपनी पीठ पर डाल लिया और लवे-लवे कदम बढ़ाता हुआ थोड़ी ही देर बाद वह पहाडों की ओट मे होकर गायब हो गया। थौर ने भी शायद उसके बाद उस दानव से मिलने की कभी इच्छा जाहिर नहीं की।

अब आसा-देवता, लोक, थजाल्फे और वह लड़की रोसक्वा अपने रास्ते पूर्व दिशा की ओर चले। दोपहर तक वह चलते चले गए।

उसके बाद उन्हें बहुत दूर एक शहर दिखाई देने लगा, वह कदम बढ़ाकर वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक बड़ा शहर कुछ दूरी पर बसा हुआ है। इस शहर के बीच मे एक बर्फ का बना हुआ बहुत बडा किला खडा था जो सैकड़ों कोस के बीच मे फैला हुआ था। वह इतना ऊँचा था कि चारों ओर उसके साथियों ने अपने सिर पीठ से मिला कर आँखे आसमान की तरफ उठा कर उसकी आकाश को छूने वाली मीनारों को देखा। इतना ऊँचा किला उन्होंने पहले कभी देखा ही नहीं था जो साथ ही साथ इतना विशाल था। वह अब नगर के पास जा पहुँचे और उनके ताज्जुब का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने देखा कि वहाँ कोई आदमी या दानव या कोई और ही प्राणी नाम को भी नहीं था। वह नगर के अन्दर चले गऐ और रास्ते भर उन्हें कोई भी नहीं मिला, सारे रास्ते खाली पडे थे और जन-शून्य थे। फिर ऊँची चढाई शुरू हुई, रास्ता घूम-घूम कर ऊपर चढ़ने लगा। थौर और उसके साथी ऊपर चढ़ते चले गये। बहुत ऊँचाई पर वह बर्फ का कोसों के बीच मे फैला हुआ और सैकड़ों हाथ ऊँचा किला खड़ा था। यह दर्वाजे पर पहुँचे तो देखा कि वह बन्द था और उसमे ताला लगा हुआ था। थौर ने जोर लगाया कि किसी तरह दर्वाजा खुल जाय या ताला ही टूट जाय, पर उससे हुआ कुछ भी नहीं। हार कर अन्दर जाने के लालच से वह फाटक की मोटी तानों की बीच में होकर पार निकल गया। उसके साथी भी इसी तरह अन्दर घुस गये। अब वह

[illegible] तक भीग गया और वह धीरे धीरे [illegible] लगा। जब वह पूरा [illegible] गया तो [illegible] [illegible] और शीघ्र ही उसने आग [illegible] [illegible] [illegible] ।

परन्तु उसे [illegible] न [illegible], न [illegible] और न गाया, क्योंकि उसका हृदय अभी जाग्रत नहीं हुआ था। अनपू ने तब उस पात्र को उठाकर उसके मुह से लगा दिया। प्राणों से घुले हुए उस जल को बाटा गटगट पी गया। अब उसकी चेतना वापिस आ गई, वह ठीक पहिले जैसा हो गया। अनपू को सामने देखकर वह उससे लिपट गया और रोने लगा। अतीत की स्मृतियों ने इस मधुर मिलन के समय दोनों भाइयों को बहुत रुलाया। अनपू ने बाटा से अब तक की सारी बातें कह कर सुनाई। अपनी स्त्री की हत्या और चलते समय पड़ोस की एक व्यभिचारिणी स्त्री की हत्या का पूरा विवरण करके उसने कहा कि किसी भी प्रकार इतने वर्षों से उसके हृदय को शान्ति न मिल पाई थी। बाटा ने उसे अपना दुख बताया और कहा कि किस प्रकार उसकी सुन्दरी स्त्री उसे धोखा देकर फराओ के पास चली गई थी। इसी तरह दोनों भाई सारी रात बातें करते रहे। जब भोर हुई तो बाटा ने अनपू से कहा —

"अब हमें यहाँ से चल देना चाहिये। हम फराओ के देश चलें और वहाँ जाकर मैं अपनी स्त्री से मिलूँगा ताकि मुझे कोई न पहिचाने। मैं एक भारी और बलिष्ठ साँड़ का रूप धारण किये लेता हूँ। मेरे शरीर पर सभी पवित्र चिन्ह रहेंगे। तुम मेरी पीठ पर चढ कर मिश्र की ओर जाना। जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो लोग तुम्हें एक विचित्र बैल पर चढे देखकर चिल्लाकर तुम्हारा स्वागत करेंगे। तुम बिना रुके आगे बढते जाना और तब तक मुझे हाँकते चलना जब तक कि हम दोनों ही फराओ के सामने न पहुच जायँ। वह तुम्हें देखकर खुश होगा और तुम्हें बहुमूल्य इनाम देगा। उन्हें लेकर तुम शीघ्र अपने घर को लौट जाना। मैं वहीं रह जाऊँगा क्योंकि वहाँ मुझे अपनी स्त्री से मिलना है।"

अनपू ने सुना और इस बात का विरोध किया क्योंकि वह बाटा को और खतरों में नहीं जाने देना चाहता था। परन्तु बाटा की जिद्द अडिग थी। उसने

सींग को लेकर हाजिर हुआ और उसने वह सींग थौर को दे दिया। बादशाह ने कहा :

"जो हमारे देश में बिना बुलाये आकर डींग मारता है और अपने को बलवान समझता है उसे इसी सींग में भरकर पानी पीना पड़ता है। जो अच्छा पीने वाला होता है वह एक ही बार में इसे खाली कर देता है और वह बली माना जाता है। पर फिर भी कुछ लोग इसे दो घूँटों में खत्म करते हैं। पर जो बहुत ही ज्यादा कमजोर होते हैं वह इसे तीन बार में भी खत्म नहीं कर पाते।"

दानवों का बादशाह इतना कहकर चुप हो गया। थौर जो इतने लम्बे सफर से परेशान था और बुरी तरह प्यासा था, पानी देखकर खुश हो गया और उसने अपनी प्यास के मुकाबले में उस सींग में भरे पानी को बहुत थोड़ा समझा हालाकि सींग की लम्बाई बहुत ज्यादा थी। उसने उसे ऊपर उठाया और उसे मुँह में लगा कर गहरी घूँट लेकर पीने लगा। उसने खूब पिआ और जब उसकी प्यास बुझ गई तो भी वह पीता ही रहा और जब देर तक उसने काफी पानी पी लिया तो सींग को नीचा कर दिया। उसका दिल हिल गया जब उसने देखा कि इतना पीने के बाद भी उस सींग मे पानी कम नहीं हुआ था। वह मन ही मन लज्जित हुआ और साथ-ही-साथ हैरान भी बहुत हुआ और सकते की सी हालत में खड़ा रहा।

तब बादशाह बोला :

"तुमने खूब पिआ है पर इतना नहीं कि तुम शेखी मार सको। शायद तुमने अपने मन में यह सोचा हो कि दूसरी बार मे पहले से ज्यादा पिओगे, यकीन मानो कि अगर तुम्हारे यहाँ आने से पहले कोई मुझसे कहता कि प्यास होते हुये भी थौर इतना कम पानी पीता है तो मैं कभी उस बात को न मानता क्योंकि बिजलियों के देवता को मैं कभी इतना कमजोर नहीं समझता था। खैर अब तुम दूसरी बार पीकर दिखाओ।"

आसा-देवता ने फिर उस सींग को हाथ में लिया और तय किया कि अबकी बार वह तभी हटेगा जब सींग बिल्कुल ही खाली हो जायगा और

निश्चय कर लिया था कि जो कुछ वह कह चुका है उसे अवश्य पूरा करेगा। सारा दिन इसी वाद-विवाद मे निकल गया। फिर रात्रि आई और दोनो भाई चटाई पर सो गये।

जब रात बीती और भोर हुई और चारों ओर उज्वल प्रकाश से धरित्री चमकने लगी तो अनपू ने उठकर देखा कि उसके पास ही एक विकराल सॉड अपने भयानक नथनों से फुकारता हुआ और अपनी पूँछ को बल देता हुआ खडा है। वह समझ गया कि बाटा चलने को तैयार है। वह उस पर चढ़ गया और तब प्रबल वेग से भागता हुआ वह सॉड पलक मारते उस घाटी को पार करता हुआ फराओ के देश की ओर चला। फराओ के विशाल महल के पास पहुँच कर अनपू ने देखा कि बाटा का कथन कितना सत्य था।

एक विशाल जन-समूह ने उस बैल को देख कर हर्ष ध्वनि की और उसका स्वागत किया। स्वय फराओ महान् ने जब उस बैल पर सवार अनपू को देखा तो खुशी मे उसकी ऑखे चमक उठीं। वह बोलाः—

"यह तो सचमुच ही कमाल है" और तब पूरे मिश्र देश मे खुशियॉ मनाई गई। ऐसे पवित्र चिह्नों वाला बैल निश्चय ही परम देवता ओसिरिस द्वारा भेजा गया है ऐसा सब को निश्चय था। फराओ ने अनपू को अतुल सुवर्ण और चॉदी इनाम में दी जिन्हे वह गदहों पर लाद कर अपने घर ले गया और वहॉ जाकर बाटा के सदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

फराओ की आज्ञा से ऐपिस देवता के मदिर मे पवित्र स्थान मे वह बैल लेजाकर रक्खा गया जहॉ नित्य ही हजारों उपासक आकर उसकी पूजा करते थे। इसी तरह एक दिन जब उसकी स्त्री जो अब फराओ की प्रिय रानी थी, वहॉ आई तो उपयुक्त अवसर ढूँढ़ कर जब कि वह अकेली ही थी उस बैल ने उससे कहा.—

"हे सुन्दर नेत्रों वाली कामिनी मुझे देख, क्योंकि मै अभी तक जीवित हूँ।" आश्चर्यचकित हो कर विस्फारित नेत्रों से रानी ने उसे देखा। तत्पश्चात् उसने पूछाः—

बाहर तक चलकर आया। जब शहर के फाटक बंद हो गये और वह शहर से भी बहुत दूर पहुँच गये तब उटगार्ड-लोक ने उससे पूछा :

'क्या तुम अपनी यात्रा से खुश हुए हो? और जो कुछ भी नतीजा तुम्हें इतनी तकलीफों के बाद मिला क्या वह तुम्हें संतोष दे सकेगा? और हाँ एक बात और बतलाओ। तुम्हारे आसा-देवताओं में तुमसे बढ़कर भी बलवान कोई देवता है या तुम ही सब से अधिक बली माने जाते हो?"

थौर शर्म से लाल हो उठा और बोला

'मेरी हार की वजह से मुझसे आँख से आँख मिलाकर बोला भी नहीं जाता है। यह सच है कि मैं सभी बातों में हार गया था और मैं कभी इससे इन्कार भी नहीं कर सकता पर मुझे इस बात का बहुत दुख है कि तुम मुझे एक मामूली आदमी कहते हो। मैं ऐसा गिरा हुआ तो नहीं हूँ जो इतना नीचे गिना जाऊँ।"

तब बादशाह ने उसकी तरफ इज्जत से देखा और कहा :

"अपने आपको धोखा मत दो। थौर अपना दिल छोटा न करो क्योंकि तुम वास्तव में बड़े बली हो। हमारी निगाहों में तुम बहुत जबर्दस्त और महाबली हो। तुम शायद सोच भी नहीं पाते होगे कि हम लोग तुम से कितना डरते और इज्जत करते हैं क्योंकि हम तुम्हें तुम्हारे सोचने से भी कहीं ज्यादा ताकतवर मानते हैं। अब जब कि सब बातें खत्म हो चुकी हैं और तुम हमारे शहर से बाहर निकल आये हो तो सच सच बातें भी तुम्हें बतला देनी चाहिये क्योंकि अब कोई डर की बात नहीं है, क्योंकि जहाँ तक मेरी चलेगी और जहाँ तक वाजिब बात है अब तुम इस शहर के अन्दर कभी घुस भी नहीं सकोगे। हम तुमसे अब कुछ छिपाना नहीं चाहते हैं। मैं तुमसे सौगंध खाकर कहता हूँ कि अगर मुझे यह मालूम होता कि तुम इतने गजब के ताकतवर हो तो मैं तुम्हें किले के दरवाजे के अन्दर होकर कभी न आने देता। किसी न किसी तर्कीब से जरूर ही रोक देता। तुमने तो अन्दर घुसकर मेरे ऊपर एक भारी मुसीबत खड़ी कर दी थी।"

उसने लम्बी साँस ली। फिर वह देर तक चुप खड़ा रहा। तब थौर ने उसकी तरफ देखकर आश्चर्य से पूछा :

"तुम कोन हो ?"

बैल बोला'—

"हे सुन्दरी मे तुम्हारा पुराना प्रेमी बाटा हूँ, मने प्रेम के वश तुम्हे अपने प्राणो का रहस्य बताया था। उसे तुमने निर्मम फराओ को बता दिया और उस सुन्दर चमेली की झाड़ी को जड से उखडवा कर फिकवा दिया। तुमने मुझे धोखा दिया और चाहा कि मैं मर जाऊँ। अपनी तरफ से तो तुमने मुझे मरवा भी डाला, परन्तु अब ओ फराओ की रखैल ! देख म बैल बन कर तेरे सामने खडा हूँ और जीवित हूँ। तूने मुझे कापुरुप कह कर छोड दिया था और अब मै प्रचड सॉड बन कर सारी पृथ्वी के सुरजन की शक्ति एकत्रित करके आया हूँ। हे सुन्दरी ! मुझे देखो और अब भी अपने किये का पश्चात्ताप करके मेरे साथ चलो क्योंकि देवताओ ने तुम्हे मेरे ही लिए बनाया था।"

यह सुनकर वह स्त्री थर-थर कॉपने लगी और भय से उसका मुख सफेद हो गया। शीघ्रता से वह पीछे हटी और मन्दिर के बाहर भागी। अपनी सोने की पालकी मे बैठ कर उसने दासो को शीघ्र महल वापस चलने की आज्ञा दी।

रात्रि के समय अच्छा भोजन करने के उपरान्त जब फराओ और वह स्त्री बैठ कर सुवासित मदिरा पीने लगे तो थोड़ी ही देर बाद फराओ को नशे मे चूर देख कर उस स्त्री ने अपने सुन्दर शरीर को महान् फराओ की कठोर भुजाओ मे डाल दिया। उसके अनिंद्य सौंदर्य और अथक यौवन का पुजारी फराओ उस समय उसके रूप को देख कर बेहाल हो उठा। उपयुक्त अवसर देख कर उस स्त्री ने उस समय उससे चपल नेत्रो को चलाते हुए कहा —

"हे प्रियतम ! मे जानती हूँ कि जितना प्रेम तुम मुझसे करते हो उतन मछली भी पानी से नहो करती। आज तक कभी किसी वस्तु के लिये तुमने मुझे इन्कार नही किया है। इसीलिये आज भी मुझे कुछ मॉगने की इच्छा ह रही है। परम देवता प्ताह की शपथ खा कर कहो कि जो कुछ मै मॉगू वही दोगे।"

चुप था क्योंकि उटगार्ड-लोक की बातों ने उसे परम आश्चर्य्य में डाल दिया था।

उस दानव ने पुन: कहा :

"हे थौर! अब हम बिदाई लेते हैं और बिछुड़ते हैं। जाते वक्त मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि यह बहुत अच्छा होगा यदि हम आयदा कभी न मिलें और यदि तुम नहीं माने और फिर किसी समय मुझसे भिड़ने आओगे तो अभी से कहे देता हूँ कि मैं तुम्हें जादू से ढँक दूँगा और तुम्हें ऐसे भ्रम में डालूँगा कि तुम्हें अपनी असलियत का भी पता न लगेगा। अब विदा, मैं जाता हूँ।"

वह मुड़ा ही था कि थौर एकदम बोल उठा :

"तुमने मुझे और सब बातें तो बतला दीं पर एक बात मेरी समझ में अब भी नहीं आ रही है। मुझे वह बात भी समझा दो तब मैं समझूँगा कि तुम सचमुच पक्का जादू करना जानते हो। अगर ऐसी ही बात थी तो वह भूरी बिल्ली मुझसे क्यों नहीं उठ सकी? मेरी समझ में तो मैं पहाड़ को भी उठा सकता हूँ फिर भला बिल्ली क्यों न उठ सकी?"

उटगार्ड-लोक ने उत्तर दिया :

"हे बिजलियों के देवता थौर! वह बिल्ली नहीं थी, वह तो तुमको बिल्ली दिखाई दी थी। असलियत में वह मिडगार्ड का साँप था जो पूरी पृथ्वी को अपने शरीर से लपेटे रहता है और इतना भारी है कि जिससे भारी और दूसरा कोई नहीं है। पर तुमने उसको भी उठा लिया था और इतना ऊँचा उसे तान दिया था कि उसका सिर ऊपर आकाश में स्वर्ग तक जा पहुँचा था। बिल्ली का जो एक पंजा उठा हुआ दिखाई दिया था तो वह साँप का सारा बदन ही था। बाकी तो सब दिखावे के पैर थे, तुमको हमने पता नहीं चलने दिया था। मिडगार्ड के साँप ने उस धोखे में हमारा साथ दिया था और तुम्हें चकमा दे दिया था।"

अब थौर को गुस्से से आग लग गई। क्रोध में काँपता हुआ वह बदला लेने को तैयार होकर उठा, पर मुड़कर जो देखा तो उटगार्ड-लोक हवा में गायब हो गया। थौर चकराया और गुस्से में उसने निश्चय किया कि वह उस

नशे में झूमते हुए वासना से उन्मत्त नर-पशु ने अभिसार में निपुण उस अर्द्ध-नग्न युवती के मासल शरीर को देखा और तब बिना सोचे समझे उसे वचन दे दिया। सुन कर वह बोली :

"ईपिस के मन्दिर मे जो पवित्र बैल रहता है, मै उसके कलेजे को खाना चाहती हूँ। क्योंकि मुझे निश्चय है कि इतने पुष्ट और पवित्र बैल का कलेजा बहुत स्वादिष्ट होगा।"

फराओ यह सुन कर चमक उठा। हृदय मे वह बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह उस बैल को मरवाना नहीं चाहता था। परन्तु अब वह वचनबद्ध था। कर भी क्या सकता था? दुखी हृदय से उसने रानी से कहा :

"हे प्रिये परम देवता ओसिरिस और महान् ताह की कृपा से मैं फराओ सारे ससार का स्वामी हूँ। मेरा वैभव अक्षुण्य है। मेरी कीर्ति रा-हरमाचिस की किरणों की भाँति सारी पृथ्वी पर फैली हुई है। ससार मे ऐसा कुछ नहीं है जो मेरे लिये अप्राप्य हो। सुदूर पश्चिम मे बसे हुये वैभवो से पूर्ण भारत-वर्ष के मोती और हीरे भी मेरे पास मेरे रत्न पिटकों मे मौजूद हैं। तुम चाहो तो उन्हें ले सकती हो। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति के लिये इतनी नरहत्या की जा सकती है कि उनके रक्त से नील नदी का नीला जल लाल होकर बहने लगे। फराओ कभी किसी से प्रार्थना नहीं करता क्योंकि वह पृथ्वी का स्वामी है और देवताओ के अश से बना है परन्तु आज वही फराओ तुझसे याचना करता है कि तू और चाहे जो कुछ ले ले परन्तु उस बैल को मत मरवा।"

वह स्त्री महान् फराओ की याचना सुनकर एक बार डर गई परन्तु दूसरे ही क्षण जब उसके हृदय मे व्यास बाटा का भय जाग उठा तो वह मचल गई और उदास मुख मुद्रा बनाती हुई बोली :

"महान् फराओ कभी वचन देकर झूठे नहीं होते। यदि मिश्र के इतिहास में आज पहिला फराओ वचन हारना चाहता है तो मैं भी अपनी माँग वापस लेती हूँ।"

फराओ ने सुना और दुख से अपना सिर नीचा कर लिया।

तूफानों का देवता

ऐईगिर सब समुद्रों का और तूफानों का देवता था। वह बडा बली था, वह बहुत बडे शरीर वाला दानव था जिसकी लम्बी सफेद दाढी फेन जैसी सफेद चमकती और उसके बाल भी सफेद थे जिनके ऊपर वह काला लोहे का टोप पहनता था। जब वह समुद्र के बीच उठ खडा होता था तो बडे-बडे जहाजों को उलट कर गुस्से से डुबा देता था। अयगर ब डा जो कि लोहे के जगलों की जादूगरनी थी अपनी पूर्वी जंगली हवाओं से जहाजों को ढकेल कर ऐईगिर के लिये भोजन भेजती थी।

ऐईगिर का एक बडा कमरा था जो सारी दुनिया मे मशहूर था। वह बडा धनी भी था और उसकी रसोई में आग के बजाय सोना जलाया जाता जाता था और उसके बर्तनों में शराब जब उबलती तो समुद्र के फेनों जैसी उठती और गिरती।

"ऐईगिर की स्त्री का नाम रैन था जो लोगो को फँसाने में बडी होशयार थी। जब ऐईगिर अपने गुस्से मे जहाजो का डुबा देता था तब अपने बडे जाल में रैन डूबे हुओ को फॅसाकर खींच लेती और इस तरह लोग उसके जाल मे फॅस कर मारे जाते थे।

रैन का मकान समुद्र की तह मे था जो सोने का बना था और चमकता था। उसकी छत चाँदी की थी और सूरज की तरह चमकने वाले जवाहिरातो से जडी थी। उसके मकान के पास ही सोने का घर था जहाँ वह अकसर पकडे हुए आदमियो को लूट कर भेज देती थी।

रैन को लोगों को अपने जाल मे फॅसाने का शौक था और जब वह किसी से खुश भी होती थी तो तब जब कि वह उसे बहुत सा सोना भेंट में चढ़ाता था क्योंकि रैन को खजानों का भी बहुत शौक था। जिनसे वह खुश हो जाती उन्हें अपने बड़े मकान मे एक कुर्सी और पलग देती।

जब रात बीती और भोर हुई, उज्वल प्रकाश से पवित्र भूमि चमकने लगी। उसी समय काले जल्लादों ने कठोर भुजाओं में खड्ग लेकर ऐपिस के मंदिर में बैठे हुये उस बैल पर आक्रमण किया। दर्शक उस समय मन्दिर में आ चुके थे। बैल को बचाने के लिए हुकार भरते हुये वे आगे बढ़े। परन्तु उसी समय जब एक सैनिक ने फराओ महान की आज्ञा, जो मिट्टी की तख्ती पर खुदी हुई थी, पढ़ कर सुनाई तो वह भय से पीछे हट गये। जल्लादों के खड्ग उठे और बैल काट डाला गया। जब वह मर गया उसका कलेजा फाड़ कर निकाल लिया गया। सुवर्ण के बड़े थाल में भारतवर्ष से आये हुये बहुमूल्य मलमल नामक कपड़े से उसे ढक कर सम्राज्ञी को दे दिया गया। उसे पाकर वह बहुत खुश हुई और मुक्त हस्तों से लाने वालों को उसने स्वर्ण इनाम में दिया। अकेली उसे लेकर वह अपने प्रकोष्ठ में गई और वहाँ जाकर उसने उसे बिना पकाये ही कच्चा अपने दाँतों से फाड़कर कचर कचर चबा कर खा लिया। उसका मुँह रक्त से लाल हो गया था जिसे उसने जीभ फिरा कर साफ कर लिया। न अपने पति के कलेजे को अग्नि का स्पर्श कराया न उसे खा लेने के पश्चात् अपने मुँह में पानी छुआया। अब उसके हृदय से भय निकल चुका था। आनन्द विभोर होकर मदिरा पीती हुई वासना से उद्दीप्तावस्था में वह फराओ के पास चली गई।

अर्द्ध रात्रि के समय एकाएक उसकी नींद खुल गई। उसने देखा कि शैया पर फराओ गहरी निद्रा में सो रहा था। जब से उसने कच्चा कलेजा खाया था उसकी वास्तविक अवस्था में बहुत परिवर्तन हो गया था। वह कुछ खोई खोई सी हो गई थी। वह चुपचाप उठी और जूते पहन कर खामोश कदमों से कमरे के बाहर निकल गई। फराओ सोता रहा। उसे कुछ मालूम न पड़ा। दबे पावँ वह स्त्री विशाल पक्के प्रांगण के बाँई ओर बने चक्करदार सोपानों पर चढ़ने लगी। उसको ऐसा अनुभव हो रहा था मानो उसके सुगठित शरीर में रक्त विद्युत गति से बह रहा हो। सीढ़ियाँ अनेक थीं और वह उन्हें चढ़ते-चढ़ते हाँफ गई। परन्तु फिर भी चढ़ती ही रही। वह स्वेदश्लथ हो गई। जब वह महल के बिल्कुल ऊपर बनी नुकीली गुम्बज पर जाकर खड़ी

जब फसलें कटीं और मौसम सुहावना हो गया, बर्फ पिघल गई तब ओडिन सभी देवताओं को लेकर ऐईगिर के यहाँ समुद्र के बीच दावत खाने और खुशियाँ मनाने गया। जब वह वहाँ पहुँचे तो उसका स्वागत बहुत जोर से किया गया। ऐईगिर, उसकी पत्नी रैन और उनकी नौ तगडी लडकियों ने मिलकर सभी देवताओं को ऊँचे आसनो पर बिठाया और भडकीली पोशाकें पहन कर उन्हे अपने साथ लेकर सभी जगहों को दिखाया। उसके बाद दावत शुरू हुई। बढिया-बढिया बैल भून-भून कर उन्होंने खाये और शराब पीने लगे। उन्होंने खूब पी यहाँ तक कि सब शराब उन्होने खतम कर दी। तब जब देवताओं ने और माँगी तो दुखी होकर ऐईगिर बोला :

"शराब खींच कर बनाने का मेरा बर्तन इतना बडा नही है—और छोटे-छोटे बर्तनों मे कहाँ तक बनवाऊँ ? बार-बार बनानी पडती है। काश मेरे पास बड़ा बर्तन होता।" उसने गहरे सोच में लम्बी साँस खींची। फिर उसने मुड़कर अपने चारो तरफ देखा और देवता थौर को देख कर वह कह उठा :

"सारी कुदरत में नौ दुनिया हैं और उन सब मे एक बडा बर्तन है जो सबसे बड़ा है, क्या तुम उसे ला सकते हो ?"

थौर ने पूछा :

"पर वह है कहाँ ?"

इसका जवाब न ऐईगिर को मालूम था और न आसा-वश और वाना-वश के किसी भी देवता को मालूम था। सभी निराश हो गये।

तब ऐईगिर फिर बोला

"यदि वह बडा बर्तन आ जाय तब तो ठाट हो जायँ और हमारी शराब कभी न पीते।

तब टायर बोला :

"मै उस बर्तन के बारे मे जानता हूँ। वह मेरे सौतेले बाप हाईमर दैत्य के पास है जिसका सिर कुत्ते का-सा है। वह बर्तन बहुत मजबूत बना हुआ और एक मील गहरा है। मेरा सौतेला बाप एलिवैगर की नदियो से परे एल-हीम के तट पर रहता है।"

हुई तो देखा कि सामने बहुत दूर जहाँ महल का सिंहद्वार था क्षण भर को उज्वल प्रकाश हुआ। चकित नेत्रों से भयभीत होकर उस असमय में होने वाले आलोक को देखकर वह वापस भागी। परन्तु जब वह सोपाना के पास पहुँची तो पीछे से हाथ डाल कर किसी ने उसे कस कर पकड़ लिया। इससे पहिले कि वह छूटने का प्रयत्न करे अथवा चिल्लाये, पकड़ने वाले ने दो सुइयों जैसे किसी अस्त्र से उसके वक्षस्थल को चुभो कर दो रक्त बूँदें एक चमकती हुई कटार पर टपका लीं। दूसरे ही क्षण वह बन्धन से मुक्त हो गई। उसने देखा कि उसको बाँधने वाला गायब हो चुका था। खून की उन दो बूँदों के निकल जाने से ही उसके शरीर से वह तमतमाहट जाती रही। शरीर की नसों मे जो रक्त की तनावट पैदा हो गई थी अब न रही। प्रकृतिस्थ होकर धीरे-धीरे सीढियाँ उतरती हुई वह नीचे आ गई। आहट लेती हुई जब वह फराओ के शयनागार की ओर वापस पहुँची तो अन्दर की फुसफुसाहट सुन कर वह द्वार पर ही ठिठक गई। मोटे ऊनी परदे के छोटे छिद्र से उसने झाँक कर देखा। फराओ जाग चुका था। परन्तु इस समय केवल देश से व्यापारियों द्वारा लाई गई एक सुन्दर दासी के साथ वह बातें कर रहा था। उसने देखा फराओ उन्मत्त है। उस दासी के यौवन को देख कर वह विचलित हो गया है। वह चुपचाप वापस लौट गई और महल के तीसरे खण्ड में चन्दन से बने अपने विश्राम प्रकोष्ठ में जाकर सो गई।

बाटा की स्त्री को अर्द्ध रात्रि के अवसान मे पकड़ कर उसके वक्षस्थल से दो बूँद खून ले जाने वाला स्वयं देवता ऐपिस था। उन्हें लेकर वह महल के बाहर गया और सिंहद्वार के बाहर दोनो ओर एक-एक खून की बूँद टपका दी। तत्पश्चात् देवता गायब हो गया। उन बूँदों के पड़ते ही उन स्थानो में दो अति सुन्दर चम्पा के पौधे उग आये और रातो-रात वह मनुष्य से ऊँचे हो गये। जब भोर हुई और उज्वल प्रकाश से पवित्र भूमि चमकने लगी तो लोगों ने उन पेड़ों को देखकर आश्चर्य प्रकट किया। उडते-उडते जब यह खबर अन्दर फराओ तक पहुँची तो वह खुद उन्हें देखने बाहर आया। हाथी-दाँत की पालकी पर चढा हुआ फराओ उस समय साक्षात ओसिरिस का दूत

यही मौका उसे मिला है जब वह उससे अपनी बहिन गनलैड का बदला ले लेना चाहता है। ......

"वैन-लोगों का सेनापति अपने साथियों को लेकर असगार्ड छोडकर समुद्र तीर पर अपने राज्य को चला गया है क्योंकि सुतुङ्ग का बैर तो आसा-देवताओं से है फिर वह भला व्यर्थ ही उनके साथ क्यों मरे, परन्तु शायद उसे अपने ऊपर आने वाली मुसीबत का हाल अभी मालूम नहीं है, जभी वह इस समय स्वार्थी होकर अपने मित्रों को छोडकर भाग रहा है। शीघ्र ही उसे भी सबके साथ ही साथ मरना पडेगा... .....

"अंधकारपूर्ण लोहे के जगलों में वर्फ की भाँति ठडे दिल वाली चुडैल ऐंगरबोडा बहुत ही खुश हो नाच रही है। उसका पति दानव गायमर आज आनन्द से विभोर होकर तारों का वाद्य 'हार्प' बजा रहा है। बहुत समय से जिस दिन की वह आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था वह दिन अब आ गया है। . .. .

"बहुत समय पहले ३वैल्डे के पुत्र थजासे वोलेंड ने मत्रों से पूरित, देवताओं से बदला लेने के लिये, एक विश्वविजयी तलवार लोहा गलाकर बनाई थी, उसे माईमर चुरा लाया था और थजासे उसके बिना युद्ध में मारा गया था। उसकी आत्मा अतृप्त ही रह गई थी क्योंकि ऐसी अद्भुत तलवार बनाकर भी वह उससे समय पर लड न सका था। उसके बाद उसके भाई ईगिल-ओरवैंडिल की स्त्री ग्रोआ के एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। वह पुत्र स्विपगैड था जिसके शरीर की रक्षा जादू के मंत्रों द्वारा ग्रोआ ने की थी। वह भयानक मार्गो से होता हुआ और दुष्कर शत्रुओ से लडता हुआ माईमर की गुफा से उस तलवार को लेकर जब लौटा था तो उसने उससे देवताओं को युद्ध भूमि से मारकर भगा दिया। थोर उसके सामने से भाग गया था और उसका पुत्र हाफडान तो इतना घायल हो गया था कि बाद मे मर ही गया था। जब स्विपगैड ने फ्रे की बहिन फ्रेजा से विवाह कर लिया था तो फ्रे को वह अद्भुत तलवार भेंट में दे दी थी। गर्ड के प्रेम से जब फ्रे पागल हो उठा था तब गर्ड की माता ऐंगरबोडा और पिता गायमर को वह

मालूम होता था। लोगो ने उसे देखा और श्रद्धा से उनके सिर झुक गये। फराओ ने उन लहलहाते पेडो मे अपने हाथ से पानी दिया क्योकि उसे विश्वास था कि यह परम देवता ओसिरिस की ही कृपा थी कि उसने राजद्वार पर उसकी रक्षा के हेतु वह दोनो पेड़ उगाये थे। प्रजा ने जय जयकार किया। तत्पश्चात् उन पेड़ो की भक्तिपूर्वक पूजा की। जल और फलो से उनका अभिषेक किया गया। पूरे देश मे खुशियाँ मनाई गई क्योकि फराओ महान् खुश था। फराओ लौट आया और उसने बाटा की स्त्री से सारी बातें कहीं। सुनकर वह भी उन्हे देखने को इच्छुक हो उठी। दूसरे दिन सम्राट हीरे-जवाहरातो से जडे हुए कठे को गले मे पहन कर अपनी उस सुन्दरी रानी को साथ मे लेकर सोने के रथ पर सवार हुआ। अरब देश के चपल अश्व पिछले पैरो पर खडे होकर अपने अदम्य साहस का परिचय दे रहे थे। फराओ ने इगित किया। तुरन्त सारथी ने बाग ढीली की और घोड़े विद्युत् गति से भाग चले। रथ की गड़गडाहट से मेघ-गम्भीर ध्वनि होने लगी और आकाश धूल से आच्छादित हो गया।

सिंहद्वार के बाहर जाकर रथ रुका। फराओ नीचे न उतरा। उसकी नई रानी कूद कर नीचे उतर पड़ी और उन पेडो के पास चली गई। उनकी शीतल छाया, पवित्र महक और सुन्दर रूप देखकर वह मुग्ध हो गई। द्वार के दाहिनी ओर खड़े वृक्ष के तने पर हाथ फेरती हुई वह खड़ी रही। उस समय उसका मन शून्य से भरा था। वह कुछ भी सोच नहीं रही थी। उसी समय सामने की ओर से चाँदी की पालकी मे चढा हुआ ऐराम का पडा आया। उसकी पालकी के सामने सोलह अश्वारोही अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित ढाल और कवचो को चमकाते हुए चल रहे थे। उसकी पालकी के पीछे ८० दुर्धर्ष योद्धा काले अश्वो पर चढकर उसका अनुसरण कर रहे थे। उनकी भयकर भूरी दाढियाँ हवा से फरफरा रही थीं। दजला और फरात के बीच की उपत्यका के निवासी ये योद्धा प्रचड और दुस्साहसी थे जिनकी विकराल लम्बी तलवारें जाने कितनी बार मनुष्य के रक्त से नहा चुकी थीं। लम्बे चोडे डीलडौल वाले, देखने मे वह बरबर मालूम देते थे। सिंहद्वार के ऊपर आकाश को कँपा

व वह हमेशा बहने वाले मार्ग से नहीं बहतीं। उनका जल सभी तरफ फैल र जीव-जन्तुओं को डुबा रहा है।

"समुद्र उबल रहा है। उसके अन्दर पड़े हुए मिडगार्ड के साँप ने क्रोध से भर कर करवटें ली हैं और अब वह भयानक से फुफकार रहा है। उसकी फुफकार से समुद्र का जल उबल रहा रहा है। लहरें इतनी ऊँची उठ रही हैं कि आज पहाड भी उसके सामने छोटे मालूम होने लगे हैं।

"आह! कितना भयकर दृश्य है? वह देखो मिडगार्ड के उस विकराल सर्प ने समुद्र के ऊपर अपना घिनौना और भयावना मुख निकाल लिया है। उसके लड़ने का समय अब आ गया है। कितना बुरा और कुरूप वह लग रहा है। उसका सारा शरीर फिसलनी काई और हलाहल विष से पूर्ण है। कितनी जोर से उसके वीभत्स मुख से जहर की भाप निकल कर चारों ओर फैल रही है। जहाँ-जहाँ वह फैल रही है वहीं प्राणी मात्र मृत्यु को प्राप्त हो रहा है.... ।

"लोहे के जगलों में पहाड की चोटी पर बैठे बाज को ऐंगरगोडा बार-बार मार रही है और वह बचने के लिये जोरो से अपने परों को फड़फडा रहा है। उसकी उस फडफडाहट से ससार में तीव्र तूफान छूट पडे हैं। बडे-बडे वृक्ष जड से उखड से कर अर्रा कर नीचे गिर रहे हैं। बाज अब अपने विकराल चोंच पहाड की भारी चट्टान पर पैनी कर रहा है उसे मरे हुए आदमियो का मास खाने को चाहिये। वह भूख से पीडित है और बुरी तरह चिल्ला रहा है। आज वह लाशो से भरे मैदानो को साफ कर देगा। उसकी भूख रह-रह कर बढती जा रही है.. . . ।"

"वह दक्षिण की काली दिशा अब आलोकित हो उठी है क्योंकि प्रचण्ड सुरथुर अपने पुत्र मुतुङ्ग से विश्वविजयी-तलवार लेकर चटा चला आ रहा है। उसकी विशाल वाहिनी देवताओं से बदला लेने के लिये अधीर हो उठी है। उनकी क्रोध भरी हुँकारों से दिशाएँ कपित हो रही हैं। सुरथुर उस तलवार को घुमाता हुआ वायु वेग से बढ रहा है और उस तलवार की धार से अग्नि छूट-छूट कर बिखर रही है, वह काले घोड़े पर सवार है और वह घोडा मृत्यु का सदेश लाया है। इसके प्रशस्त और दृढ़ वक्ष पर हैला की

देने वाला तूर्य नाद हुआ। नगाडे बजने लगे। सुवर्ण के तारो से गुँथा हुआ फराओ का विश्वविजयी झडा ऊपर आकाश पर तेज हवा मे लहरा कर रा-हरमाचिस के दिव्य प्रकाश मे चमक उठा। तुरन्त चमकते भालों को लेकर कठोर सैनिक द्वार के ऊपर पक्ति बनाकर खडे हो गये। उनके दिव्य अस्त्र कवच और शिरस्त्राण रा के प्रकाश से झिलमिलाने लगे। यह ऐलाम के पडे के लिए सकेत था कि परम देवता ओसिरिस और साह द्वारा रक्षित स्वय फराओ महान उस समय द्वार पर मौजूद था। ऐलाम के पडे ने यह सब देखा और पालकी से नीचे उतर आया। उसके साथ ही उसके तमाम अग रक्षक और अग्रगामी सैनिक अश्वो से नीचे उतर पडे। ऐलाम का पडा दृढ चरणों से आगे बढा। फराओ अपने दिव्य सुवर्ण रथ पर अब भी खडा था। उसके रत्न-जडित कठे पर रा की किरणें फूट-फूट कर अनेक रङ्ग उत्पन्न कर रही थी। ऐलाम के पडे ने दूर से ही दोनों हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया। उसने कहा :

"हे नरव्याघ्र तेरी कीर्ति और तेरा यश संसार के कोने-कोने मे रा के प्रकाश के समान फैला हुआ है। मै ऐलोम से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुझे ससार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियाँ दे। क्योकि वही है जिसकी इच्छा से सुन्दर स्त्रियों की रचना होती है।"

फराओ खुश हुआ क्योकि उसे आत्मश्लाघा से सुख का अनुभव होता था। उसने मेघ-गम्भीर ध्वनि मे उत्तर दिया :

"ऐलाम के धुरन्धर विद्वान को सारा मिश्र देश श्रद्धा से सिर झुकाता है। फराओ विद्वान से खुश है क्योकि वह विद्या के महत्व को समझता है।"

"कृतार्थ-कृतार्थ हुआ," ऐलाम के पण्डे ने गद्-गद् स्वर से कहा और तब सेना ने फराओ का जय-जयकार किया। सिहद्वार पर नगाडे बजने लगे। भयकर शोर होने लगा। उत्सुक प्रजा चारो ओर भारी तादाद मे इकट्ठी हो गई। तमाम मार्ग रुके पडे थे। फराओ ने इगित किया और सैनिक गैंडे

"पर हैला के उज्जवल देश पर उसका कोई असर नहीं हुआ है। उस दिशा में कोई नहीं गया है। किसी में यह भावना ही नहीं उठी है कि उसे भी विजय किया जाय। माईमर के सातों पुत्र अपनी लम्बी तलवारो को लेकर द्वार पर अभी तक खडे हैं, वह अब न आराम करते हैं और न सोते हैं। पर उनकी तलवारे स्वच्छ हैं। वह रक्त से नही भीगीं हैं। हैला मे रक्तपात हुआ ही नहीं है। यहीं से ही एक बार फिर सृजन होना आरम्भ हुआ है।

"पृथ्वी के कल्पवृक्ष यागड्रैसिल की जडो मे माईमर के कुएँ से फिर सिचाई शुरू हो गई है और अब वह फिर हरा हो चला है। उस भयकर आग से वह नष्ट नहीं हुआ था केवल उसकी कुछ डालियाँ ही जल गई थीं। अब वह फिर सभल गया है ।

"नई दुनिया बस रही है सब ओर से प्रकाश फूट निकला है

"वह स्वर्ग मे सूर्य जगमगा उठा है और उसकी ज्योत से सारा विश्व नये जीवन से प्रकाशित हो गया है अब हैला से वापस आ रहा है— पृथ्वी अलग समुद्र मे से बाहर आ गई है। कितनी शस्य-श्यामला होकर वह ऊपर उठ आई है। हरी घास चारों तरफ उग आई है और फूल स्थान-स्थान पर खिल रहे है। ऊँचे पहाडो से गिरता हुआ झरना प्रभात के समीरण के साथ मिलकर कलकल शब्द करता हुआ बह रहा है। मनोरम बेला है। सृष्टि का प्रारम्भ हो गया है। पहाडो की ऊची चोटियों पर बाज अपने पर फडफडा कर उड़ रहा है और विनाश की मछली को पकड़ने को लालायित हो उठा है। यही वह मछली है जो पृथ्वी को खींचकर समुद्र के अन्दर ले गई थी। अब वह निश्चय ही उस बाज द्वारा पकड ली जायगी जो उसे उन ऊँची चोटियों पर रखकर खायगा ।

"असगार्ड की वीथियाँ और उपवीथियाँ अब फिर से स्वच्छ हो रही है। सारा नगर अब फिर से बस रहा है। जगह-जगह उपवनो मे महकते फूल खिल उठे हैं और भव्य अट्टालिकाएँ बन रही हैं। सोना और चाँदी मुक्त हाथो से बाँटा जा रहा है और आनन्द का स्रोत बह रहा है। वह देखो असगार्ड के मध्य भाग मे हजारो कमरों वाला विशाल महल तैयार हो गया है। यह असगार्ड के नये राजा का महल है और इसकी छत ठोस सोने से बनी है।

की खाल से बने काँटेदार चाबुकों को लेकर भीड़ पर टूट पड़े। भयानक कोलाहल होने लगा। कोहराम मच गया और भीड़ भागने लगी। पशु के चर्म से बना कोडा हवा मे उठता और मनुष्य के चर्म पर पड़ कर उसके रक्त और मास को भी बाहर निकाल लाता। ऐलाम के पण्डे ने फराओ के पास जाकर कहा :

"सम्राट चिन्तित न हो। ये पशु हैं जो सभ्यता नहीं जानते। शासन की चाबुक अभी इन्हे राह पर ले आयेगी।"

फराओ ने सुना परन्तु कुछ नहीं कहा। उसके कठोर हृदय पर ऐसी मामूली बातो का कभी कोई असर नही होता था।

बाटा की स्त्री अभी तक उस पेड के पास ही खड़ी थी। जब भयकर शोर हुई और सैनिक प्रजा को मारने लगे उस समय उसके कानो मे उस पेड़ ने धीमे-धीमे कहा '

"ओ दगाबाज सुन्दरी ! तू नागिन से भी अधिक विपैली है। एक दिन प्रेम-वश तेरे प्रेमी ने अपने जीवन का रहस्य तुझे बताया था। तूने उसे अपने दूसरे प्रेमी को बतला दिया और उसे मरवा डाला। वह पवित्र बैल बन कर फिर तेरे पास आया। परन्तु ओ चालबाज औरत ! तूने अपनी नकली मोहब्बत मे अपने नये प्रेमी को फँसा कर उस बैल को भी मरवा डाला। तू इतनी भयानक चुडैल है कि तूने उसका कलेजा चबाकर कच्चा ही खा लिया। परन्तु तू उसे हजम न कर सकी। शाह ने तेरे वक्षस्थल से दो बूँद रक्त निकाल कर तेरे प्रेमी के प्राणो को तेरे शरीर से बाहर निकाल लिया। ओ दगाबाज वेश्या ! वास्तव मे ही तू बहुत गिरी हुई स्त्री है।"

रानी घबरा उठी और उसने तुरन्त उस पेड से पूछा

"परन्तु तुम कौन हो जो यह सब कह कर मुझे डराना चाहते हो ?"

पेड़ फुसफुसाया और उसने उसके कानो मे कहा '

"और जहर से भरी नागिन तूने मुझे मारा और फिर मारा। परन्तु देख मैं फिर जीवित हो उठा हूँ। मैं बाटा हूँ।"

कुछ नहीं बतलाई। बड़ा भाई कुछ भी नहीं जान सकने के कारण भन्नाकर रह गया।

परन्तु वह बड़ा चतुर था। जब सब लोग शराब पीने लगे तब वह अपना बट चुपचाप इधर-उधर फेंक देता था। उन लोगों ने इतनी अधिक शराब पी ली कि सभी नशे मे झूमने लग गये। बड़े भाई ने ठीक मौका देखकर अपने छोटे भाई से जो उस समय नशे में चूर होकर बकने लग गया था, उस समय कहा :

"वह देखो द्वार के पीछे तो गजब हो गया" और इस तरह बात छेड़कर असलियत जानने के हेतु उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

वह यह सुनकर उठा और उसने मेज पर रखी हुई चक्की को उठा लिया और फिर कहा : "क्या गजब हो गया द्वार के पीछे? कुछ भी तो नहीं हुआ? द्वार के पीछे की करामात तो यह मेरे पास है।"

"भला इसमे क्या करामात हो सकती है" बड़े भाई ने फिर कुरेदा।

"अरे यही तो है जो कुछ है। इसी की बदौलत तो यह सब कुछ हो रहा है।" और इसी समय छोटे भाई ने चक्की को चलाकर चाँदी की कई कटोरियाँ पैदा की और हर एक अतिथि को एक-एक कटोरी भेंट मे दी। वह नशे मे सब बात कह गया था।

बड़े भाई ने अब उससे कहा :

"तो यह चक्की मुझे दे दो।"

"हर्गिज नहीं", छोटे ने उत्तर दिया।

"अच्छा बेच दो", बड़े भाई ने फिर कहा।

"नहीं बेचता", छोटा बोला, फिर उनमें बहस होने लगी।

बड़ा बोला : "ठोस सोना दूँगा।"

"कितना?"

"दो सौ सुवर्ण मुद्राएँ।"

"थोड़ी हैं।"

मिश्र की महासम्राज्ञी जिसकी भृकुटी के तनाव के साथ सहस्रों शीश कधों से अलग हो जाते थे तथा प्रलय से केलि करता हुआ फराओ महान जिसको खुश रखने का प्रयत्न किया करता था, यह सुनकर भय से कॉपने लगी। उसका मुख पीला पड गया। उसने अपना अभिवस्त्र सॅभाला। कचुकी पर हाथ फेरा और भागी। जब वह फराओं के रथ पर चढी उस समय वह भाग रही थी। ऐलाम के पडे ने उसके सुन्दर रूप को देखा और वह अन्दर ही अन्दर विचलित हो उठा।

मार्ग साफ हो चुके थे। भीड भगा दी गई थी। फराओ ने इगित किया और घोडे अब महल की ओर वापस भाग चले।

बहुत दिन बीत गये। अब सिहद्वार के दोनो ओर पेड काफी बडे ठूंडे हो गये थे। परम देवता ताह का वृद्ध पुजारी मर चुका था। चतुर वैज्ञानिकों द्वारा उसके शरीर में मसाले इत्यादि भर कर उसे कब्र मे लिटा दिया गया था।

असख्य धन-राशि, रथ और घोडे तथा कई दास-दासियॉ उसके साथ कब्र में बन्द कर दिये गये। वह सब भी मार डाले गये थे और उन के शरीरो पर भी मसालों का लेप किया गया था। सब का दृढ विश्वास था कि जब आत्माएँ लौटेंगी तो उन्हीं मृत शरीरो में वापस आ जायॅगी। इसीलिये मृत शरीरो की रक्षा परम आवश्यक थी। ताह का पुजारी सारे ससार मे प्रतिष्ठित था। स्वय फराओ महान उसके सामने सिर झुकाता था। वह कुबेर की भॉति धनी था। उसकी ५५ स्त्रियो से ६०० सताने थीं जो उसके अखड पौरुष को मिश्र के कोने कोने में प्रदीप्त करती थी। जितना वैभव उसका ससार में था निश्चय ही उससे दुगुना वैभव उसे स्वर्ग में प्राप्त था। और न्याय के दिवस के उपरान्त जब उसकी पुण्य आत्मा स्वर्ग से लौटेगी तब उसके इसी शरीर मे घुस कर वह उसे जीवित कर देगी। यही दृढ विश्वास था कि उस समय उसके प्रताप से उसके दास और दासियॉ और अश्व इत्यादि सभी जीवित हो उठेंगे। फराओ स्वयं उसकी अतिम क्रिया के समय मौजूद था।

ताह के पुजारी की कब्र से फराओ जब सध्या समय लौटा तो उदास था। पुजारी उससे अत्यन्त स्नेह रखता था। जब कभी मदिर मे कोई कुॅवारी कन्या

पुत्र थजासेवोलेएड की आँखें आसमान मे चमक रही थीं। उसने दूसरी ओर सिर घुमाया। उत्तर दिशा मे आकाश के किनारे इवैल्डे के दूसरे पुत्र इगिल-ओरवेन्डिल का पञ्जा तारा बन कर चमक रहा था। ओडिन को याद आया कि इसी ऐलिवेगर नदी को पार करते समय इगिल को जादू द्वारा बर्फीले दानवो ने बर्फ की तरह जमा दिया था। उसका एक पञ्जा न जम सका था। जिसे बिजलियो के देवता थौर ने पकड कर आकाश की ओर उछाल दिया था और वही तब से तारा बन कर चमका करता था। ओडिन का हृदय इगिल के प्रति स्नेह से भर गया। आज वह पुरानी बातों के जानने का इतना इच्छुक हो उठा था कि उसने अपना घोडा उसी समय जौटन-हीम की तरफ मोड दिया क्योंकि उसे मालूम था कि अनत काल से एक भयानक दानव वैफ्थडनर वहाँ रहता था जो पुरानी से पुरानी बातों का ज्ञाता था। यह दानव जौटनहीम के सभी दानवों से ज्यादा खतरनाक था। प्रचड पराक्रमी होने के अलावा वह उद्दण्ड और धूर्त भी था। उसकी चालाकी से सभी घबराते थे। वह पहेलियाँ बूझाता था और जो उसका उत्तर न दे पाते उनको मार डालता था। उसका यह भी ऐलान था कि यदि किसी के प्रश्न का उत्तर वह खुद न दे सके तो प्रश्नकर्ता उसका सिर काट ले। ओडिन मन ही मन मुस्कराया और शीघ्रता से बर्फ से ढके भयानक जगलो को पार करता हुआ जौटनहीम की तरफ चला और जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने दुनिया मे रहने वाले साधारण मनुष्यों की भाँति अपना रूप बना लिया। अपना नाम गगराड रख कर वह वैफ्थडनर की गुफा मे जा पहुँचा। दानव उस हिम्मत को देखकर पहले तो अचम्भे से देखता रह गया कि इस साधा-रण मनुष्य की इतनी हिम्मत कैसे जो वहाँ तक पहुँच गया परन्तु जब उसने देखा कि वह मनुष्य बेधडक अदर घुसा चला आ रहा है तो वह क्रोध से भर उठा। हाथ मे नंगी तलवार लेकर बैठे ही बैठे भयानक स्वर से बोला :

"तू कौन है जो इतना निडर होकर मेरी माँद में उपद्रव मचाता आगे बढा चला आ रहा है? मेरे सामने भयकर दानव और पराक्रमी देवता भी नहीं पडते। तू साधारण-सा मानव क्या अपनी जिन्दगी से उकता गया है?"

देश-देशान्तरो से लाई जाकर बलि की हेतु चढ़ाई जाती तो वह उसे न मरवा कर उसी को साह की 'भोग्या' कह कर दे दिया करता था। आज वह मर गया। उसे चिन्ता थी कि नये पुजारी का वह जाने कितने दिनो मे प्रसन्न कर सकेगा। उसकी प्रसन्नता उसको अपनी रक्षा के लिये परम आवश्यक थी क्योकि साह का क्रोध कोई भी मानव नही झेल सकता था। मृत्यु को इतने पास से देख कर फराओ डर गया था। शेर की खाल से मढे हुए ऊँचे स्वर्ण के पलँग पर बैठा हुआ वह गहरी चिन्ता मे आँखे मीचे बैठा था। सन्ध्या उतर चुकी थी और रात्रि के प्रथम चरण से ही चारो ओर अन्धकार फैलने लगा। आज फराओ दुखी था। जिसने कभी दुख नही जाना था आज एकाएक वह उसी पर सवार होकर उसे डरा रहा है। दासी आई और दीपाधारो मे सुगन्धित तेल डाल कर दीप जला गई।

सहस्र दीपो के आलोक से प्रकोष्ठ जगमगा उठा। स्वर्ण मडित छत और दिव्य रत्नो से जडे हुये बिल्लोर के समान स्वच्छ स्तम्भ उस प्रकाश से चमकने लगे। परन्तु आज फराओ ने आँख खोल कर भी उन्हे न देखा। मोहन जोदडो से खरीदी गई चपल नयना श्याम दासियो ने आकर अगर धूम जलाया। दजला फरात की बन्दी राजकुमारियाँ जो फराओ की दासियाँ थी, उन्होने आकर महकते हुए पुष्प प्रकोष्ठ मे स्थान-स्थान पर रख दिये। सुगन्ध से प्रकोष्ठ महक उठा परन्तु फराओ आज दुखी था। उसने तनिक भी इन सब बातो की ओर ध्यान नही दिया। परदे की ओट से बाटा की स्त्री ने उसकी वह दशा देखी और उसने अपने आप कहा :

"आज, फिर शायद कभी नही।"

मधुर किंकिणियाँ बजने लगी। नूपुर की ध्वनि के साथ मृदग पर थाप पड़ी। कारथेज देश के लम्बे तारो वाले वाद्य हार्प पर घुटनो से बैठ कर अर्द्ध नग्ना बेबल की सुन्दरी ने विभोर करने वाला स्वर छेडा। गौर वर्णा मिश्री सुन्दरियो नाच उठी। आनन्द का स्रोत बहने लगा। उन्माद और मादकता से वायु मडल थिरकने लगा। खिडकी के पास खडे हुए फराओ ने मुड कर देखा। उस उदासी मे वह दृश्य उसे विचित्र लगा। परन्तु जब अग चालन करती

बोला। यह प्रश्न उसने अत्यन्त सभ्यता से किया। उसने पूछा : "आखिरी युद्ध कहाँ होगा और उसमें लड़ने वाले कौन होंगे ?"

ओडिन हँसा और उसने उत्तर दिया : "वरग्रिड के मैदान में आखिरी युद्ध होगा। एक ओर ओडिन की सेना होगी और दूसरी ओर देवताओं के शत्रु सुरथुर और सुतुङ्ग की विशाल सेनाएँ होंगी।"

दानव उसके उत्तर को सुन कर आश्चर्यचकित रह गया। अब उसकी कठोरता और उद्दंडता एकदम लोप हो गई। एक साधारण से मानव का इतना ज्ञान देखकर वह हैरत मे रह गया। मीठी जबान में वह बोला, "हे गगराड तू सचमुच ही बड़ा ज्ञानी मालूम होता है। मै तुझ से बहुत खुश हूँ। आज से मैं तुझे विद्वान की उपाधि देता हूँ। इसलिए हे गगराड तू आ और मेरे बगल मे बैठ।"

ओडिन यह सुन कर बोला : "मै तो साधारण मानव हूँ। तूने जो मुझे विद्वान कहा है उसके लिये मेरा धन्यवाद स्वीकार कर और अब क्योंकि तेरे सवाल खत्म हो गये हैं अब मेरे सवालों का जवाब देने को तैयार हो जा।"

"पूछ," वेफथ्रडनर ने कहा।

ओडिन ने पूछा : "तुझे कितनी पुरानी बातें याद हैं।"

दानव ने उत्तर दिया, "रोमर के बेटे बलगरमर ने जब रक्त के प्रलय से बच कर भागने की कोशिश की थी तो समुद्री तूफानों के राजा ऐईगिर की नौ दानव कन्याओं ने उसको नौ जगहों से पकड़ लिया था और तब उसे दुनिया की चक्की मे रख कर पीस दिया था। उसका मास जब कट-कट कर चक्की से नीचे गिरा तभी सृष्टि रची गई थी। उसके पेट की लोथ से मनुष्यों की दुनियाँ बनी और उसके सिर से असगार्ड बना। उसकी पलकों मे ५४० बाल थे और इसी कारण बिजलियों के देवता थौर के महल मे ५४० बड़े-बड़े कमरे बनाये गये। क्योंकि पलके ऊपर से सफेद था, इसीलिये थोर के महल की छत चाँदी की बनी हुई थी। मै तभी से जितनी भी बाते अब तक हुई हैं सब जानता हूँ।"

तब ओडिन ने उससे सृष्टि के अन्त की बातें पूछीं और उसने सभी बातों का बड़ी बुद्धिमानी के साथ उत्तर दिया। इसके पश्चात् ओडिन ने उससे

हुई सुन्दरी कामिनियाँ उस पर वासना के तीर छोड़ने लगीं तो क्षण भर को वह विमुग्ध होकर उन्हें देखता रह गया। उसी समय उसकी आँखों में एक विचित्र चमक आ गई और वह व्याघ्र चर्म से मढ़ी हुई एक स्वर्ण की चौकी पर बैठ कर नृत्य देखने लगा। मोटे ऊनी परदे की ओट से बाटा की स्त्री ने उसे देखा। उपयुक्त अवसर समझ कर वह पीछे हटी, फिर तेज चाल चलती हुई परदे को हटा कर उसके पास आई। फराओ ने उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया। स्त्री ने इगित किया। तुरन्त सोने की कामदार झारी में दासी ने मीठी मदिरा उपस्थित की। बाटा की स्त्री ने सोने के प्याले में उसे ढाला और फराओ को दिया। नाच चलता रहा।

देर तक वह उसे मदिरा पिलाती रही। अब फराओ के हृदय से मृत्यु का भय जाता रहा था। प्ताह के पुजारी को भी वह भूल चुका था। तीव्र मदिरा ने उसके शरीर में रक्त का सचार तेज किया। उसकी धमनियों में रक्त बहने लगा। आत्मगौरव ने अभिमान से उसका सिर ऊँचा कर दिया। वह प्रचड पराक्रमी था जिसके सम्मुख सारा ससार सिर झुकाता था। जो सिर राजी से नहीं झुकता था वह कधे से अलग करके झुका दिया जाता था। उसका वक्षस्थल गर्व से फूल उठा। उसका प्रचड पौरुष जाग्रत हो उठा और उसकी कठोर भुजाएँ फड़कने लगीं। वह खड़ा हो गया और अपने सम्मुख अनिन्द्य सुन्दरी (बाटा की स्त्री) की मासल देह को देखकर उसने अपने दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ा दिये। सम्राज्ञी ने नर्तकियों की ओर भ्रूभग किया। हठात् सगीत रुका और पल भर में प्रकोष्ठ खाली हो गया। अब परदों के पीछे से नूपुरों की ध्वनि से ताल देती हुई मृदग की थाप और वाद्यों की झङ्कारें आने लगीं। स्वर्ण शैया पर बैठा हुआ फराओ मदिरा पी रहा था। सम्राज्ञी अर्द्ध-नग्न हो चुकी थी और उसे पिलाये चली जा रही थी। उस समय फराओ की आँख बचा कर रानी ने अपने केश बिखेर लिये। वह आपस में उलझ गये और इधर-उधर उड़ने लगे। तत्पश्चात् वह बोली :

"हे ससार के राजा मुझे बालों में फेरने के लिए कघी चाहिये। मैंने सुना है कि आजकल थीबीस नगर से कोई कघी बनाने वाला चतुर कलाकार आया

है। यदि आज्ञा हो तो मै अपने लिए कुछ कघियाँ बनवा लूँ।" फराओ ने सुना परन्तु वह नशे से इतना चूर था कि उसकी कुछ समझ मे नही आया। उसने केवल 'बनवा लो' कह दिया। परन्तु रानी बोली :

"परन्तु उसके लिए लकड़ी चम्पा के हरे वृक्ष की चाहिये।"

मिश्र देश मे चम्पा के पेड नही थे। जो थे वे वही दो पेड थे जो महल के सिंहद्वार के दोनो ओर खड़े थे और जिनमे बाटा के प्राण थे। चम्पा का नाम सुनते ही फराओ चौंका। उसने घूर कर रानी को देखा। उसे देखते ही वह पेडो को भूल गया। रानी ने उसके मन की बात पहचानी और अपने गले मे पडे चौडे सुवर्ण के कंठे की ओर इशारा करते हुए हँस कर कहा

"सोना गलाने से पहिले सुन्दर नही लगता। आभूषण बनकर वह चमकता है और तभी उसका मूल्य अधिक माना जाता है। पेड़ सुन्दर अवश्य हैं परन्तु उनकी लकडी से चतुर कलाकारो द्वारा जब कघिया बनेंगी तो वह और भी सुन्दर प्रतीत होगा।"

फराओ ने उत्तर दिया

"परन्तु कघिया तो दत की (हाथी-दाँत) ही अच्छी होती हैं। तुम्हे भला लकड़ी की कघी बनवाने की क्या सूझी है?"

क्षण भर को रानी यह सुनकर अवाक् रह गई। भला अब वह क्या उत्तर देती? उसे आशा तो नहीं थी कि इतनी शराब पी लेने के बाद भी वह पुरुष ठीक तरह से बात कर सकेगा। वह सोच मे पड़ गई। परन्तु वह बडी चतुर स्त्री थी। ऐसे मौको पर कभी घबडाना नही जानती थी। थोड़ी देर चुप रहने के उपरान्त उसने कहा :

"स्वप्न मे परम देवता ऐपिस ने मुझसे उन्ही दोनो वृक्षो की लकडी से बनी हुई कघी केश मे फेरने की आज्ञा दी है। ऐपिस ने कहा था कि ऐसा करने से फराओ का कल्याण होगा।"

यह कह कर वह उत्सुकतापूर्वक फराओ के मुख की ओर देखने लगी और प्रतीक्षा करने लगी कि देखे अब वह क्या कहता है।

नशे में झूमते हुये फराओ को अब यह व्यर्थ का विवाद बुरा लगने लगा। उसका अन्त करने के लिये उसने तुरन्त उन पेड़ों को काट डालने की आज्ञा दे दी। स्त्री प्रसन्न होकर शैया पर लेट गई।

प्रात.काल रा के प्रकाश से जब पवित्र भूमि चमक उठी तो सम्राज्ञी हाथीदाँत की पालकी में बैठकर स्वय सिहद्वार की ओर गई और अपने सामने ही उसने उन दोनों पेडो को जड से उखडवा कर गिरवा दिया। तत्पश्चात् कुल्हाडियों से उन्हे फडवा दिया। अब उसे निश्चय हो गया था कि बाटा तीसरी बार मारा जा चुका है। अलसाई हुई उस स्त्री ने अब दोनों बाहें उठाकर अग चटकाते हुये जॅभाई ली। उसी समय कुल्हाड़ी की चोट से उस लकडी मे से एक बहुत छोटा टुकडा उछलकर उसके मुँह के अन्दर चला गया जिसे अनजाने मे यह निगल गई। उसे इसका कुछ पता भी न चला। वह अपने महल को लौट आई और तब निश्चिन्त होकर मदिरा और शृङ्गार में रत रहने लगी।

इस घटना के कई महीने बाद जब फराओ को मालूम हुआ कि उसकी स्त्री गर्भवती है तो यह सुनकर बहुत खुश हुआ। ठीक समय पर रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसकी सुन्दरता को देखकर पूरा राज्य परिवार मोहित हो उठा। फराओ बहुत खुश हुआ। कई चतुर दाइयाँ शिशु को दूध पिलाने को रक्खी गई और दास-दासियों की भीड भी रानी के महल में बढ गई। उस प्रौढ अवस्था मे फराओ उस सतान को देखकर फूला नही समाता था।

अब वह अधिकाश समय बच्चे को खिलाने में ही बिताता था। सारे देश मे खुशी मनाई गई। फराओ ने उसे ऐथिओपिया का शाहजादा घोषित कर दिया। रानी की प्रतिष्ठा पहिले से अब बहुत बढ गई। फराओ ने उसे अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया था।

वर्षों बीत गये और फराओ वृद्ध हो गया। परन्तु बाटा की स्त्री अभी जवान थी। अब उसका पुत्र भी जो आयु मे तो कम था परन्तु देखने से बडे डीलडौल और पुष्ट शरीर वाला मालूम होता था।

है। यदि आज्ञा हो तो मैं अपने लिए कुछ कंघियाँ बनवा लूँ।" फराओ ने सुना परन्तु वह नशे से इतना चूर था कि उसकी कुछ समझ में नहीं आया। उसने केवल 'बनवा लो' कह दिया। परन्तु रानी बोली

"परन्तु उसके लिए लकड़ी चम्पा के हरे वृक्ष की चाहिये।"

मिश्र देश में चम्पा के पेड नहीं थे। जो थे वे वही दो पेड थे जो महल के सिंहद्वार के दोनों ओर खड़े थे और जिनमें बाटा के प्राण थे। चम्पा का नाम सुनते ही फराओ चौंका। उसने घूर कर रानी को देखा। उसे देखते ही वह पेडों को भूल गया। रानी ने उसके मन की बात पहचानी और अपने गले में पडे चौडे सुवर्ण के कंठे की ओर इशारा करते हुए हँस कर कहा

"सोना गलाने से पहिले सुन्दर नहीं लगता। आभूषण बनकर वह चमकता है और तभी उसका मूल्य अधिक माना जाता है। पेड़ सुन्दर अवश्य हैं परन्तु उनकी लकड़ी से चतुर कलाकारों द्वारा जब कंघियां बनेंगी तो वह और भी सुन्दर प्रतीत होगा।"

फराओ ने उत्तर दिया :

"परन्तु कंघिया तो दंत की (हाथी-दाँत) ही अच्छी होती हैं। तुम्हें भला लकड़ी की कंघी बनवाने की क्या सूझी है?"

क्षण भर को रानी यह सुनकर अवाक् रह गई। भला अब वह क्या उत्तर देती? उसे आशा तो नहीं थी कि इतनी शराब पी लेने के बाद भी वह पुरुष ठीक तरह से बात कर सकेगा। वह सोच में पड़ गई। परन्तु वह बड़ी चतुर स्त्री थी। ऐसे मौकों पर कभी घबड़ाना नहीं जानती थी। थोड़ी देर चुप रहने के उपरान्त उसने कहा :

"स्वप्न में परम देवता ऐपिस ने मुझसे उन्हीं दोनों वृक्षों की लकड़ी से बनी हुई कंघी केश में फेरने की आज्ञा दी है। ऐपिस ने कहा था कि ऐसा करने से फराओ का कल्याण होगा।"

यह कह कर वह उत्सुकतापूर्वक फराओ के मुख की ओर देखने लगी और प्रतीक्षा करने लगी कि देखें अब वह क्या कहता है।

नशे में झूमते हुये फराओ को अब यह व्यर्थ का विवाद बुरा लगने लगा। उसका अन्त करने के लिये उसने तुरन्त उन पेड़ों को काट डालने की आज्ञा दे दी। स्त्री प्रसन्न होकर शैया पर लेट गई।

प्रातःकाल रा के प्रकाश से जब पवित्र भूमि चमक उठी तो सम्राज्ञी हाथीदाँत की पालकी में बैठकर स्वयं सिंहद्वार की ओर गई और अपने सामने ही उसने उन दोनो पेडो को जड से उखडवा कर गिरवा दिया। तत्पश्चात् कुल्हाडियो से उन्हें फडवा दिया। अब उसे निश्चय हो गया था कि बाटा तीसरी बार मारा जा चुका है। अलसाई हुई उस स्त्री ने अब दोनो बाहें उठाकर अग चटकाते हुये जँभाई ली। उसी समय कुल्हाडी की चोट से उस लकडी मे से एक बहुत छोटा टुकडा उछलकर उसके मुँह के अन्दर चला गया जिसे अनजाने मे यह निगल गई। उसे इसका कुछ पता भी न चला। वह अपने महल को लौट आई और तब निश्चिन्त होकर मदिरा और शृङ्गार में रत रहने लगी।

इस घटना के कई महीने बाद जब फराओ को मालूम हुआ कि उसकी स्त्री गर्भवती है तो यह सुनकर बहुत खुश हुआ। ठीक समय पर रानी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसकी सुन्दरता को देखकर पूरा राज्य परिवार मोहित हो उठा। फराओ बहुत खुश हुआ। कई चतुर दाइयाँ शिशु को दूध पिलाने को रक्खी गई और दास-दासियों की भीड़ भी रानी के महल मे बढ गई। उस प्रौढ अवस्था मे फराओ उस सतान को देखकर फूला नही समाता था।

अब वह अधिकाश समय बच्चे को खिलाने मे ही बिताता था। सारे देश मे खुशी मनाई गई। फराओ ने उसे ऐथिओपिया का शाहजादा घोषित कर दिया। रानी की प्रतिष्ठा पहिले से अब बहुत बढ गई। फराओ ने उसे अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया था।

वर्षों बीत गये और फराओ वृद्ध हो गया। परन्तु बाटा की स्त्री अभी जवान थी। अब उसका पुत्र भी जो आयु मे तो कम था परन्तु देखने से बडे डीलडौल और पुष्ट शरीर वाला मालूम होता था।

नागराज का सन्देश

"बतला हरामखोर तू इतने दिनों तक कहाँ गया था ?" कहते हुए सेनूब्रर्ट मिश्री व्यापारी ने अपने दास कुफ्ती को कड़ककर मोटे गंडे की खाल की बनी चाबुक से मारा।

"ठहरिये ! ठहरिये !!" कुफ्ती ने आर्त्तनाद करते हुए उसको रोकने की निष्फल चेष्टा की, परन्तु सेनूब्रर्ट गुस्से से लाल-पीला होकर उस पर भयानक वार करता ही जा रहा था। लंबे कोडे को जब वह घुमा कर उसके शरीर पर मारता था तो वह उसके शरीर से चिपट कर घूम जाता और जब छुड़ाया जाता तो रक्त रंजित मास उलेचकर छूटता था। पृथ्वी दास के रक्त से भीग गई थी। दास चिल्लाता रहा पर कठोर स्वामी उसकी कोई बात सुनता ही न था ! हठात् कुफ्ती विद्युत वेग से उठा और दोनों हाथ उठाकर चिल्लाया "तुम मुझे इस तरह नहीं मार सकते क्योंकि सुन लो मैं फराओ द्वारा रक्षित हूँ। मुझे साँपों के राजा ने अपना दूत बनाकर फराओ के पास भेजा है—समझ लो यदि तुमने मुझे मार डाला तो तुम्हें फराओ के क्रोध का भागी बनना पडेगा "

सेनूब्रर्ट का उठा हुआ हाथ रुक गया। फराओ की दुहाई सुनकर वह अपना सारा क्रोध भूल गया। 'यह दास मेरा क्रीतदास आज जब मुझसे मेरे सामने ही इतना बलपूर्वक बोल रहा है तो निश्चय ही इसके पीछे कोई महान् शक्ति है··· · मैं इसे नहीं मार सकता !! निश्चय ही मैं इसे नहीं मारूँगा', उसने सोचा और तब वह एक ओर जाकर पत्थर की एक चौकी पर बैठ गया। वह थक गया था और अब उसने अपना वह कोडा फेंक दिया और जिज्ञासा भरी दृष्टि से कुफ्ती की ओर देखा। कुफ्ती जो अब थोडा बहुत प्रकृतिस्थ हो चुका था, उठ कर बैठ गया और फिर लंबी साँस लेकर बोला :

"तीन महीने पहले आपके जहाज में बैठ कर मैं सिनाई की खानों की ओर गया था ····उस समय मेरे साथ मिश्र देश के सबसे अच्छे डेढ सौ

नाविक थे और हमें पूर्ण निश्चय था कि शीघ्रातिशीघ्र ही हम सफर पूरा करके लाट आवेंगे। जब हम गए थे · ·· · ”

बीच मे ही सेनूबर्ट ने काट कर कहा :

“तब से आज इतने दिन क्यो लगा दिये ? और मेरे बाकी के आदमी भी नहीं आये, वह कहाँ गए····· निश्चय ही कोई बडा धोखा तुम लोगों ने मेरे साथ किया है ·· · ”

“देवताओं को कुपित न कर मेरे मालिक, क्योंकि झूठी बातो से वह बडी जल्दी रुष्ट हो जाते हैं ··· तेरे साथ किसी ने धोखा नहीं किया है जब हम गए थे तब निश्चय ही समुद्र में अनुकूल हवाएँ चल रही थी; हम लोग पालों को आकाश में चढ़ाये, रस्सों को मजबूती से पकडकर अपनी कठोर भुजाओं से समुद्र की लहरों को काटते डॉड चलाते चले जा रहे थे · ···उस समय हम लोग तेरे यश का गान कर रहे थे। हमारे वज्र गर्जन को सुनकर निश्चय ही उस समय समुद्र की विशाल छाती भी दहल उठी थी और दिगतों में तेरे यश की गाथा फैल रही थी ” इतना कह कर वह साँस लेने के लिये थोडा रुका और उसने निगाह उठा कर सेनूबर्ट की ओर देखा। सेनूबर्ट अपनी प्रशसा सुन कर आत्मश्लाघा से फूल उठा था। शीघ्र बोला :

“फिर ?”

“फिर मेरे मालिक”, कुफ्ती ने उत्तर दिया, “फिर पाँसा पलट गया, जहाज समुद्र के बीच पहुँच चुका था और अधकार छाने लगा। समुद्र की भीम लहरों पर जहाज अकिंचन की नाई ऊपर-नीचे उठता-झुकता ऐसे चलने लगा जैसे उस विराट् सर्वव्यापी जल मे अपना अस्तित्व ही खो बैठेगा · और एक भयानक धमाका सा हुआ जैसे समुद्र की छाती फाड कर पृथ्वी का लावा विस्फोट करके बाहर निकल आया हो और पूर्व दिशा से लाल तूफान छूट निकला। हमने दूर से देखा। वह अपनी खूनी आँखे फैलाये हमें निगल जाना चाहता था। प्रधान ने चिल्लाकर पाल उतार लेने की आज्ञा दी और बंदर की चपलता से भी तीव्र हमारे नाविक मस्तूल पर चढ़ गए। क्षण भर मे ही पाल उतार लिये गए। रस्से मजबूती के साथ बाँध दिये गए और हम सभी तब उस आने वाली

मृत्यु की विभीषिका की साँस बाँधे प्रतीक्षा करने लगे। मेरी आँखों के सामने एक बार मिश्र का यह हरा भरा देश, नील के शीतल किनारे ओर हे स्वामी तुम्हारा यह भुवन-विख्यात भवन तस्वीर की भाँति निकल गए। जब म होश म आया तब मैने अनुभव किया कि जहाज उद्दुद्ध लहरों पर बुरी तरह हिल रहा है— भयानक लहरों के थपेडे उसे चारो ओर से डुबाने का प्रयत्न कर रहे थे—भीम लहरें हरहराकर उससे टकराती ओर फैल जाती, जल का वेग अधिक होने लगा था। आकाश मे चद्रमा पूर्ण विकसित होकर उदय होने लगा था, उसके धूमिल प्रकाश मे हमने देखा कि जहाज ज्वार-भाटा पर ऐसे खेल रहा था जैसे मकडी के जाले मे फँसी हुई मक्खी प्राणपण छूटने का प्रयत्न करती है परन्तु छूट नही पाती। हमारे जहाज पर भयानक चीत्कारो मे कोलाहल फैला हुआ था। प्रधान आज्ञा पर आज्ञा दे रहा था परन्तु अब कोई व्यवस्था अथवा अनुशासन बाकी नही रह गया था, खूनी आँधी प्रति क्षण बढ रही थी, उसके थपेडे जहाज को औधा पटक देने का भीम प्रयास कर रहे थे, जैसे यह उन्हे चुनोती हो गई थी कि यदि वह ऐसा न कर सके तो उन्हे धिक्कार है। आखिर यह हालत हो गई कि सभी नाविक थक गये। प्राण बचाने का अब कोई रास्ता रहा ही नही था। चद्रमा के प्रकाश मे रक्त वर्ण आँधी ने मिलकर एक खतरनाक वातावरण पैदा कर दिया था जिसमे दिखाई तो देता था परन्तु सभी कुछ खूनी ही खूनी लगता था—अब धमाके और बढे और जहाज ऊँचे-ऊँचे ज्वारभाटो पर ऊपर उठ कर जब नीचे फेक दिया जाता तो हम सभी कभी इधर तो कभी उधर लुढकने लगे •।"

कुफ्ती अब चुप हो गया। शायद वह विकट परिस्थिति को याद करके अब भी भयभीत हो गया और बोलना भूलकर अतीत की स्मृति मे खो गया था। सेनूब्रर्ट अब विचलित हो उठा। उस भयानक परिस्थिति का चित्र उसकी आँखो के सामने चलचित्र की भाँति घूमने लगा। हठात् उसे ध्यान आया कि ऐसे समय से बचकर आनेवाले और उसे यह समाचार सुनाने वाले उस व्यक्ति के साथ उसने अच्छा व्यवहार नही किया। तनिक दयार्द्र स्वर से उसने पूछा

"हाँ कुफ्ती फिर? बोलो मेरे बहादुर बोलो!"

कुफ्ती ने लबी सॉस खींची और बोला :

"जाने कितनी देर हम लोग उस यातना मे रहे। लड कर गिरने से हम लोगों के चोटें काफी लगीं। किसी का सिर फटा किसी का हाथ, तो किसी का पैर टूट गया। शरीर से रक्त बहने लगा। पर तूफान को न कम होना थ और न हुआ। जहाज मे अब काफी पानी भर आया था और उन भीषण थपेडों में पडे हुए वह अब डूबा तब डूबा हो रहा था। मैंने रा-हर्माचिस से घुटनो के बल बैठकर प्रार्थना की, कि किसी प्रकार उस तूफान को रोक दो। मैंने एपिस से प्रार्थना की और उसे बैल भेंट चढाने का सकल्प किया। मैंने देवाधिदेव एमन-रा से उस सकट से मुक्ति के लिए सहायता मॉगी परन्तु किसी ने कुछ सुनवाई नहीं की और तभी एक भीम लहर उठी और धडाका हुआ। समुद्र का जल उफनने लगा। उसका खार झाग बन कर बिखर गया और दीवाल की तरह एक ज्वार हमारी ओर विद्युत वेग से बढा। हमारा जहाज मानो उसकी प्रतीक्षा मे भय से थर-थर कॉपता हुआ त्राण मॉग रहा था परन्तु वह उसे नहीं मिला। टक्कर हुई और नाविको की अतिम परन्तु प्रलय के समान गर्जन करती हुई चीत्कारो से आकाश मडल व्याप्त हो गया। उन जीवित मनुष्यों का अन्तः स्वर मरते समय समुद्र की भीषण गर्जन से भी ऊपर सुनाई दिया था . और .. और...जहाज एक ओर पलट गया। मैं उसके पलटने के साथ ही गिरा और मैंने देखा . मेरे स्वामी .मैंने देखा कि मै टूटे हुये मस्तूल के नीचे चला जा रहा था ।"

कुफ्ती फिर चुप हो गया। सेनूबर्ट, जो अब तक सॉस बॉधे उछलते हृदय से उन सब बातों को सुन रहा था अब तनिक हिला . उसने एक दीर्घ श्वास छोड़ा और चुप होकर बैठा रहा। थोडी देर तक दोनों ही चुप बैठे रहे। तत्पश्चात् कुफ्ती ने बोलना आरम्भ किया :

"जब मेरी ऑखें खुली तो मैंने देखा, मै समुद्र की छाती पर पडा हूँ। सर्वत्र शाति छाई हुई है। वातावरण निस्तब्ध था, केवल लहरो के हिलने का शब्द सुनाई पड़ रहा था। धीरे-धीरे मेरी स्मृति वापस आने लगी और तब मैंने अनुभव किया कि मेरे सिर मे तीव्र पीडा हो रही थी। मैंने हाथ से सिर छुआ, वहॉ एक बडा घाव हो गया था। परन्तु उससे अब रक्त का बहना

बन्द हो गया था। रक्त जम चुका था। मैंने उठने का प्रयास किया परन्तु शरीर मे जैसे शक्ति बाकी ही नही बची थी। मैने मुडकर देखा कि मै एक लकडी के बड़े तख्ते पर पडा था, जो पानी पर तैर रहा था। कदाचित् डूबते समय जहाज टूट गया था, जिसके तख्ते जल पर बिखर गए थे। मुझे याद आया कि अंतिम समय मे मस्तूल मेरे ऊपर आ गिरा था। मैने पीछे की ओर देखा . देखा एक व्यर्थ की आशा लेकर कि शायद मेरा जहाज व साथी उधर मौजूद है। परन्तु वहाँ कुछ भी नही था। उन सभी को समुद्र ने अपनी विशाल छाती मे समेट लिया था। मै अधिक सोच भी नहीं सका, क्योंकि मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा था। मैने आँखे मूँद ली। इस लकडी के इकहरे तख्ते पर पडा हुआ मै अब जाने कौन से और यातना भोगने के लिये बच रहा हूँ' मैने सोचा, इस अनन्त समुद्र मे जिसका ओर-छोर किसी को मालूम नही भला मै किस प्रकार एक तख्ते पर पड़ा हुआ बच सकूँगा...आह इससे कही अच्छा होता यदि मै भी अपने साथियो के साथ ही डूब जाता । और तब मुझे मेरे साथी याद आने लगे और स्वत. मेरे बन्द नेत्रो की बगल को चीर कर मेरे हृदय का दुख उमड पडा और मेरा मुँह गर्म गर्म आँसुओ से भीग गया। उसके बाद शायद मै सो गया या फिर बेहोश हो गया। क्योकि जब मेरी आँखे फिर खुली, तब दिन उग आया था और रा हर्मांचिस (सूर्य) की उष्ण किरणें मुझ पर पड रही थी। मेरा सारा शरीर स्वेदश्लथ हो गया था। परन्तु उन किरणो ने मुझे शक्ति प्रदान की थी क्योंकि मै अब प्रयत्न करके उठकर बैठ गया था। मैने चारो ओर दृष्टि फिराई और देखा कि समुद्र अनन्त था, जिसके जल पर रा हर्मांचिस की किरणें स्वर्ण की भाँति चमचमा रही थी।"

इतना कहकर वह चुप हो गया और अपने विचारो मे ही खो गया। सेनूबर्ट अब तन्द्रा से जागा और एक बार इधर उधर उसने फिर कर देखा। तत्पश्चात् वह बोला :

"बड़ा भयानक वर्णन किया है तुमने कुफ्ती .... मुझे सचमुच बहुत खेद है कि मैने तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया ..."

कुफ्ती ने सुना और उसकी नम्रता से वह प्रसन्न हो उठा, उसके मुख पर क्षमा की अक्षय झलक दिखने लगी। वह बोला .

"भूल जाओ मालिक! उन बातों को भूल जाओ। मेरे हृदय में अब तुम्हारे प्रति कोई शिकायत नहीं है। "

"अच्छा फिर ?" सेनूबर्ट ने वार्ता को आगे बढाने के लिये प्रश्न पूछा।

"फिर..." कुफ्ती बोला, "उस लकडी के मोटे तख्ते पर समुद्र की तरङ्गों के साथ ऊँचा-नीचा होता हुआ बहने लगा—भूख से मेरा कलेजा मुँह को आ रहा था। कहीं क्षुधा बुझाने का कोई साधन नहीं था। धूप बढ रही थी, और साथ साथ मेरी प्यास भी बढती जाती थी। चारों ओर जल था परन्तु मेरी प्यास बुझाने के लिये एक बिंदु भी नहीं था। जब अधिक प्यास से शरीर तडपने लगा तो मैंने झुककर चुल्लू में समुद्र का जल भरा और उसे गटगट पी गया..... कितना क्षार था उसमें कि मैं एक विचित्र और दम घोंटने वाली पीडा का अनुभव अपने अंदर करने लगा, मानो उस क्षार से पैने अस्त्रों की भाँति मेरा अंतर काटा जा रहा हो—मैं चिल्लाने लगा पर उससे भी पीडा कम न हुई। थोडी देर पश्चात् उस असह्य यातना से व्यथित होकर मैंने कै कर दी—ऐसा मालूम हुआ जैसे उस विष ने मेरा अंतस घोलकर बाहर फैला दिया था—परन्तु तब मुझे थोडा चैन मिला ...।"

"और जब मध्यान्ह का सूर्य प्रचण्ड किरणों से तपने लगा, समुद्र में ज्वार आने लगे, भीम लहरें विलोडित होकर भयंकर गर्जन करने लगीं, फेन दूर-दूर तक फैल जाता।...और मेरा तख्ता मुझे लिये-लिये कभी ऊँचा तो कभी नीचा होता हुआ और जल की थिरकती छाती के साथ चिपटा हुआ हिलने लगा।"

"इसी प्रकार जाने कितने दिन और कितनी रात्रियाँ बीत गईं। मैं जीवन से ऊब चुका था—अब क्षुधा और प्यास भी शायद मेरा साथ छोड़ गई थी। मुझमें अब इतनी शक्ति भी बाकी नहीं रह गई थी कि उठकर बैठ सकता या लेटे-लेटे करवट भी ले सकता मैं मृत्यु का आवाहन कर रहा था..... मैं शीघ्र उसकी गोद में सो जाना चाहता था क्योंकि अब मैं भय और दुःख की पराकाष्ठा को भी पार कर चुका था। कभी मुझे होश रहता,

कभी बेहोशी रहती ...परन्तु अधिकतर मेरी पलकें बद रहती थी। अब समुद्र के ज्वार, भीम लहरो का गर्जन, फेनो का जाल यह सब मुझे न तो डरा सकते थे और न मुझे ही उनमे कोई विशेषता प्रतीत होती थी, अब तो केवल मृत्यु के गभीर चरण की प्रतीक्षा थी . पर वह न आई ' '

"मेरी आँख खुली और मने देखा कि मुझे पकडे दो नग्न स्त्रियाँ जल पर खडी ह। मै इतना क्षीण था कि सीधा शरीर भी मुझसे नही किया जा रहा था, मे उन्ही के शरीरो पर झूल रहा था। आश्चर्य से मने उन्हे देखा देखा कि वह अनिद्य सुन्दरियाँ तरुण थी। उनके गोरे मासल शरीरो से महक निकलकर वातावरण को मधुमय बना रही थी। मैने उन्हे ऊपर से नीचे तक देखा परन्तु तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब मैने देखा कि वे स्त्रियाँ नीचे से सपा के से शरीर वाली थी। वे मृगलोचनी काली-काली आँखो से मुझे देख रही थी। तब मुझे उनमे से एक ने खाने को सुवासित मास दिया और दूसरी ने पीने को मीठा जल। अभी तक मुझे यह बात भी नही सूझी थी कि आखिर हम लोग जल के ऊपर बिना भूमि के आधार के किस प्रकार खडे थे। परन्तु उस मास को खाने के उपरात मुझे नशा चढने लगा। और तत्पश्चात् मुझे कुछ भी सुध न रही...

"जब मुझे होश आया तो मैने देखा—नील मणियो से घिरे हुये जल मे स्वच्छ मुक्ताहारो से अलकृत हजारो स्त्रियाँ मुझे घेरे खडी है। प्रत्येक के शरीर पर दिव्य आभूषण उनकी सुन्दरता को द्विगुणित कर रहे है। सुगधित पुष्प से उनके केश सजे हुए है और वह सभी अर्द्धनारी अर्द्धनागिनें विशाल नेत्रो वाली और घनी काली अलकावलियाँ वाली है जिनके केश उनके जाँघ से भी नीचे फैल रहे हैं। सूर्य की किरणें उन नील मणियो पर पडकर अपनी नीली झाँई से उन तप्त काँचन-वर्ण स्त्रियो के दिव्य शरीरो को अलौकिक बना रही है। मे ठगा से देखता रह गया अब मै बहुत कुछ प्रकृतिस्थ हो चुका था। और तभी एक विचित्र खलबली जल के गर्भ मे सुनाई दी। पानी उफनने लगा। जैसे अदर ही अन्दर कोई ज्वालामुखी विस्फोट कर रहा हो। स्त्रियों ने पलक मारते नील मणियो के अन्दर ही अपना एक गोल बना लिया और हाथ बाँधे सतरण करने लगी। . भयानक धमाका हुआ और

मैंने देखा ... ...मैंने देखा . ..शत-शत सूर्यों से भी उज्ज्वल आलोक से घिरा हुआ एक दिव्य सर्प जल पर खडा है।...एक बार उसे देखकर मेरी आँखें उस चकाचौंध से बन्द हो गईं। भय से मेरा शरीर थरथर काँपने लगा, मैंने साहस बटोर कर पुन: नेत्र खोले। देखा कि वह सर्पराज भीमकाय था जिसका आधा शरीर जल से बाहर दस हाथ ऊँचा खडा था। उसका शरीर दिव्य मणियों से अलंकृत था और वज्र खचित वैदूर्य मणियों का बना उसका मुकुट था जिस पर सूर्य रश्मियाँ पड रही थीं। चारों ओर अपनी डालियों पर पक्षी कलरव कर रहे थे और भ्रमरों का गुंजन उसके साथ मिलकर अत्यन्त मनोहारी लग रहा था ।"

"मैंने चारों ओर आश्चर्य से देखा। बाँईं ओर संगमर्मर के फव्वारों से रंगबिरंगी जल की धाराएँ ऊपर उठकर नीचे फैल रही थीं। उनके चौडे किनारों पर घने काले केशों से अलकृत सुन्दरी नागकन्याएँ अधलेटी सी उन्मीलित नेत्रों से उस सौन्दर्य को देख रही थीं, उनके गौर शरीर यौवन की आभा से दमक रहे थे। वह वज्र, वैदूर्य और मरकत के आभूषणों से लदी हुई नीलम के मुकुट पहिने अत्यधिक लुभावनी लग रही थीं, उनके गोरे मांसल हाथ हंसी की ग्रीवा के तुल्य थे और उनमें मुक्ता से जडे मरकत के वलय थे। पतली कटि पर सुवर्ण किंकिणियों से क्वणित मुक्ता जाल से पिरोई हुई रशना थी जो पीछे की ओर उनके विशाल नितंबों के उभार के साथ उठी हुई थी। वक्ष पर हीरक हार चमक रहे थे ...।

"सब कुछ अलौकिक था और मैंने देखा मेरी दाँईं ओर से वायु सन-सनाकर बहने लगी।.लगा जैसे ग्रीष्म काल की वायु हो और मैंने मुडकर देखा .. ..।"

"...माधवी कुञ्ज मे पुष्पों से लदी हुई डालियों के बीच एक दिव्य सिंहासन रखा है ...वह इतना बडा था कि जिसके विस्तार का वर्णन भी कठिन है और वह सूर्य की ज्योति की भाँति चमचमा रहा था। उसकी चमक से मेरी आँखें मिच गईं परन्तु फिर मैंने साहस किया और देखने लगा ..। देखा कि हीरों से जडा हुआ वह सिंहासन अद्भुत था। उसके अगणित सर्पाकार पैर थे और उसके ऊपर सुवर्ण मंडित रत्नों से जटित छत्र था। चारों

श्रोर सुन्दरी नाग कन्याएँ चमर लिये खडी थीं। वातावरण सुगधमय था। दिव्य ज्योति से आलोक फैल रहा था सिंहासन के बीच में वही नाग .. वही दीर्घाकाय नाग अपने विशाल शरीर की कुडली लगाये बैठा था। उसके शरीर पर हीरे जडे मालूम होते थे और कठ में नील मणि का हार था। उसके मनुष्यो जैसे मुख पर दीर्घ और विशाल मुकुट था जो नाना प्रकार के मणियो से जटित सुवर्ण का बना हुआ था ।"

"मैने उसे देखा और हतप्रभसा रह गया। तभी कही दूर नेपथ्य मे घटा बजा जिसका गभीर घोष महारव बनकर उस लोक मे फैल गया और साथ ही चारो ओर कोलाहल फैल गया। मैने देखा चारो ओर से दिव्य पुरुष और स्त्रियाँ हाथो मे पुष्प-फलादि लेकर माधवी कुञ्ज की ओर चली आ रही है। उसी समय कही से मधुर मधुर सगीत सुनाई देने लगा। वह सगीत धीरे-धीरे उठा और उसकी स्वर लहरियाँ वायुमडल मे फैलने लगी। अद्भुत सगीत था वह जिसे सुनकर ससार का कोई भी प्राणी तन्मय हुये बिना नही रह सकता था। मेरे नेत्र आपसे आप मुँद गये और मै उस मधुर सगीत को तन्मय होकर, विभोर होकर, झूम-झूमकर सुनने लगा और मेरे नेत्र अब खुले जब चपल चरणो से सुन्दरियो के नृत्य के पायल झकार उठे। स्त्रियाँ जल मे विचित्र वेशभूपा से सतरण कर रही थी। उनके नुपूर पैरो मे नही वरन् चित्र विचित्र रगीन आलोक फैला रही थी। उसका सिर मनुष्यो का सा था और उसकी भूरी दाढी मूछो मे मोती पिरोये हुए थे। उसके विशाल कानो मे मुक्ता जालो से गुँथे लाल तथा मरकत के अगूर लटक रहे थे। उसके नेत्र लाल अगारे जैसे विचित्र चमक लिये थे और मुझे घूर रहे थे। गोलाकार खडी हुई उन हजारों नग्न सुन्दरियो ने झुककर उसका अभिवादन किया और मुझे झुकने का इशारा किया। मैने उसका अभिवादन किया। आश्चर्य था कि मै जल मे डूबा ही नहीं बल्कि पानी पर पडा रहा। जब मै उठा और हाथ बाँध कर खडा हुआ तब वह सर्प मुस्कुरा रहा था, फिर मेघ गम्भीर ध्वनि से वह बोला "

"ओ दुनिया के रहने वाले ! तू हमारे राज्य मे क्योकर आया है ? क्या कारण है जो तूने आकर यहाँ मेरी प्रजा मे आश्चर्य पैदा कर दिया है ?"

"मैंने करबद्ध होकर कहा :

"हे सर्पराज ! मेरा जहाज समुद्र के गर्भ मे डूब गया है। मैं लकडी के एक तख्ते पर बहता-बहता यहॉ आ लगा हूॅ .....हे राजाओं के राजा...! मैं बहुत अकिञ्चन हूॅ.. .. मुझे क्षमा कर यदि मेरे कारण तेरे राज्य मे किसी को कष्ट हुआ है ।"

"वह बोला :

ओ अदने मानव ! तेरे कारण कष्ट हमें भला क्या हो सकता है ? परन्तु यह हमारा देश मनुष्यों के लिए वर्जित है . . डर मत और बोल क्योंकि निश्चय ही तू बुद्धिमान मालूम होता है . ।

"मुझे अब कुछ ढाढ़स हुआ और मैंने कहा :

'सारे ससार को अपनी दया से जीवित रखने वाले हे सॉपों के राजा ! मैं इतना अदना आदमी भला तेरे सामने बोलने के लायक हूॅ ही कहॉ ? पर जब तू मुझसे कहता है तो सुन कि मैं यह जानना चाहता हूॅ कि वह लोक कहॉ है जिसका तू अभी जिक्र कर रहा है क्योंकि अभी तक तो मै केवल जल ही जल चारों ओर देख रहा हूॅ और कुछ भी तो यहॉ नहीं है.. . ।"

"मैंने बोलना समाप्त भी नहीं किया था कि समुद्र के गर्भ से भयानक विस्फोट हुआ और तूफान ! भयकर तूफान ! छूट निकला। देखते ही देखते सर्वत्र अधकार छा गया। तूफान गरज रहा था—समुद्र मे ज्वार-भाटे हुॅकार रहे थे और उन सबके ऊपर उस सांपों के राजा का अट्टहास ऐसे सुनाई पड रहा था जैसे भीमकाय गगनचुम्बी पर्वत खड-खड होकर बिखर रहा हो। दो नाग कन्याओं ने मुझे पकडा और नाग-पाश मे बॉध लिया . ।'

"जब मुझे प्रज्ञा आई और मैंने ऑखे घुमाकर देखा तो अपने को एक रमणीय उद्यान के मध्य भाग मे नीलमणि की बनी चौकी पर पडे पाया। चारों ओर हरियाली छा रही थी जिसमें रंगबिरगे मदहोश खुशबू फैलने वाले पुष्प खिल रहे थे।"

"उनकी रशना के हिलने से ही बज उठते थे। अलौकिक सौंदर्यमयी थीं वह नर्तकियॉ क्योंकि वैसी सुन्दरता तब तक मैंने कहीं नहीं देखी थी।

उनके शरीर हीरक की भाँति दमदमा रहे थे। अपने अंगों का विचित्र प्रकार से चालन करती हुई वे अपनी उँगलियों, हाथों और कटि को मोड़कर नाना मुद्राएँ दिखाती थी। उनके भ्रूभंग से चपल मीन की भाँति विशाल नेत्रों के कटाक्ष से हृदय को काबू में रखना असम्भव सा हो गया।"

"हठात् मेघ गंभीर ध्वनि से आकाश गुँजाता हुआ वह नाग बोला और संगीत रुक गया मेरी खोई प्रज्ञा लौट आई वह बोला :

"ओ अदने आदमी! देख लिया तूने मेरा लोक ?"

"मैं पृथ्वी पर औंधा लेट गया और मैंने उसे साष्टांग दण्डवत की, फिर करबद्ध होकर बोला

"हे सर्वशक्तिमान्! तेरा वैभव अतुल है! तेरा साम्राज्य अखंड है और तेरी ही दया से सारे लोक जीवित हैं तू धन्य है"

"वह मुस्कुराया फिर बोला :

"हम तुझसे खुश हैं तू यहाँ रह सकता है . तुझे आज्ञा है परन्तु पहिले तुझे कोई चमत्कार दिखाना होगा क्योंकि यदि तू नहीं दिखा सकेगा तो तुझे मृत्यु दण्ड दिया जायेगा तू बुद्धिमान है निश्चय ही कोई नई बात अथवा चमत्कार जानता होगा..."

"सुनकर मैं पहिले तो घबराया परन्तु फिर मुझे युक्ति सूझी और मैंने धनुष संधान के कई चमत्कार उसे दिखाये। वह उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और बोला :

"अब तू यहाँ रह सकेगा परन्तु जब तीन वर्ष बीत जायेंगे, घनी काली रात के समय यहाँ एक जहाज आवेगा और उसमें तुझे स्वदेश लौट जाना होगा—तब तक तू यहाँ स्वच्छन्द होकर विचर सकेगा

"मैंने कहा, 'हे राजा! मैं जाकर मिश्र के फराओ से तेरा संवाद कहूँगा और वह तुझे असंख्य धन राशि और तेल भेंट में देगा"

"मुझे धन नहीं चाहिये क्योंकि धन का राजा तो मैं स्वयं हूँ। तेल अवश्य मेरे लोक में यहाँ नहीं है परन्तु ऐसा कुछ नहीं हो सकेगा फराओ जब यहाँ भेंट भेजेगा तब यह लोक यहाँ किसी को नहीं मिल सकेगा समुद्र की अतलांत गहराइयों में हमें कोई ढूँढ नहीं सकेगा।"

'मैंने फिर उसे दंडवत की और जब उठा तो आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि सारा दृश्य बदल चुका था। अब न वहाँ वह राजा था न उन सुन्दरियों से घिरा हुआ वह सिंहासन। माधवी कुञ्ज, फव्वारे, नीलमणि की चौकियाँ और वह अनिंद्य सुन्दरियाँ न जाने कैसे सब गायब हो चुके थे। मैं अकेला खड़ा था और मेरे चारों ओर दूर-दूर तक हरियाली फैल रही थी। सघन वृक्ष खड़े थे और पास ही कलकल शब्द करती हुई एक नदी बह रही थी जिसका जल सूर्य की किरणों में चाँदी के बड़े थाल की भाँति चमचमा रहा था। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था।'

"इसके बाद मैं निश्चित समय तक वहीं रहा। नाना भाँति के भोजन करता हुआ मैं वहाँ सुन्दरियों के सहवास में सुख पाने लगा। और जब तीन वर्ष बीते तब रात के घनघोर अँधेरे में अदृश्य हाथों ने मुझे पकड़कर एक जहाज में चढ़ा दिया। इतना मजबूत था वह पंजा कि उसकी पकड़ से मैं मूर्छित हो गया। जब मेरी प्रज्ञा लौटी तो मैंने यहीं बाहर अपने को पड़े पाया.... ।"

कुफ्ती चुप हो गया। वह खोया-खोया-सा लग रहा था। सेनूवर्ट उठा और उसने कुफ्ती को पकड़कर हृदय से लगा लिया। देर तक वह ऐसे ही खड़े रहे। तत्पश्चात् सेनूवर्ट ने कहा :

"मैं तुझे दासता से मुक्त करता हूँ कुफ्ती। अब तू मेरे भाई के समान है आराम से यहीं मेरे यहाँ रह। मैं तुझे फराओ के पास ले चलूँगा और तू वहाँ अपनी ही जुबानी अपनी विचित्र कथा उससे कह .."

कुफ्ती कृतज्ञ नेत्रों से अपने स्वामी की ओर देख रहा था।

———

फराओ का न्याय

मिश्र देश के फराओ अति न्यायप्रिय होते थे, उनके राज्य में छोटे से छोटे आदमी के साथ भी न्यायोचित व्यवहार किया जाता था। गरीब से गरीब आदमी भी राजा के पास अपनी फरियाद ले जा सकता था।

खूफू मिश्र का एक पराक्रमी फराओ था। उसके पराक्रम और यश की धाक दूर दूर तक फैली हुई थी। उसके समय में यह मशहूर था कि यदि किसी को स्वर्ग में भी न्याय न मिल सके तो वह अवश्य खूफू के दरबार में उसे पा सकेगा।

एक बार उसके राज्य स्थित फायूम नामक स्थान में एक किसान रहता था। इस किसान के पास एक गधा था जिस पर वह शोरा, बाँस की फॅमटे नमक, पत्थर की गिट्टियाँ इत्यादि लाद कर पास ही दक्षिण दिशा में स्थित एक नगर में सामानों का आदान प्रदान खाने की सामग्रियों से करके कुछ थोडा बहुत अपने लिये बचा लिया करता था। उन दिनों सिक्के का प्रचार बहुत ही कम होने के कारण व्यापार में सामानों का बदलाव ही होता था। इसी प्रकार नियमपूर्वक वह नित्य अपने गधे को लेकर बाजार जाता और कुछ न कुछ बचाकर अपने घर वापस आता था, क्योंकि उसकी अपनी चीजें फायूम में उसे प्राय मुफ्त ही मिल जाती थी। इसलिये उसे कभी नुकसान नहीं हुआ बल्कि धीरे-धीरे उसके पास धन इकट्ठा होने लगा और वह खुशहाल हो गया परन्तु उसका व्यापार उसी भाँति चलता रहा।

एक बार वह अपना गधा लेकर एक अन्य स्थान की ओर पहुँचा। फसल कटने का मौसम था और स्थान स्थान पर किसान लोग अपने खेतों को काट कर समेट रहे थे। यह भूमि भाग मैरिटैन्सा नामक एक बडे राज्याधिकारी की जागीर में था जिसे उसके काश्तकार लोग जोतते थे। उस दिन गधे पर नमक लदा हुआ था और उस किसान को पूर्ण विश्वास था कि अवश्य ही आज वह उसकी अच्छी कीमत पावेगा।

मैरिटैंसा के एक काश्तकार का नाम हम्ती था तथा यह आदमी झगडालू और दुष्ट प्रकृति का था। इसकी नीयत भी सदा मैली रहती थी और वह पराये माल को धोखे अथवा जबर्दस्ती हथिया लेने की फिराक में लगा रहता था। इसने दूर से उस किसान को जो भरे गधे के साथ आते देखा तो वह बडा खुश हुआ और स्वत. बोला :

"हे भगवान ! क्या घर बैठे ही माल आया है वाह ! मुझे नमक की भी कितनी अधिक आवश्यकता थी, सो अपने आप ही यहाँ चला आया है।"

फिर कुछ सोचकर उसने चुटकी बजाई और फिर बोला :

"अभी ठगता हूँ, इसको। कहाँ जायेगा यह मुझसे।"

हम्ती का खेत नदी किनारे था। वैसे तो खेत और नदी के बीच काफी जगह थी जिसमें आने-जाने वाले आराम के साथ आ जा सकते थे परन्तु इधर कुछ सालों से हम्ती नदी की ओर अपनी डोर सरकाता चला आ रहा था। अब उसने खेत इतना बढा लिया था कि नदी और उसके खेत के बीच सिर्फ एक पतली पगडडी ही रह गई थी। हम्ती को युक्ति सूझी और उसने अपने एक नौकर को बुला कर कहा :

"जल्दी घर जा और एक कबल ले आ।"

खेत के एक किनारे ही उसका मकान था। नौकर दौड़ा-दौडा गया और लाकर हम्ती को एक कंबल दे दिया। हम्ती ने उसे अपने खेत के छोर से नदी के बीच जाती हुई उस पगडडी पर बिछा दिया और स्वयं भी वहीं अनजान बनकर बैठ गया।

उधर जब गधे वाला उस तग रास्ते से होकर हम्ती के खेत के पास पहुँचा तो उसने देखा कि रास्ते के बीच में एक कंबल बिछा है। वह जरा ठिठका। इतने मे ही हम्ती ने गर्दन फिराकर उसे देखा और कडक कर कहा :

"ऐ गधे वाले होशियार! देख मेरा कबल न बिगड़ जाये... ..इधर रास्ता नहीं है...... ."

"आप जैसे कहेंगे वैसे ही मैं करूँगा.. ." नम्रता के साथ किसान बोला, "आप यकीन मानिये मै आपको क्तई तग न करूँगा . .. " और उसने

घिघियाते हुए अपने गधे को पकड़ कर मोड़ा। अब उसने चाहा कि खेत का चक्कर अंदर की तरफ से देकर निकलें, पर तभी हस्ती फिर कड़का और बोला :

"अच्छा तो अब तेरी यह हिम्मत हो गई कि तू अपने गधे से मेरी फसल खुदवायेगा ? " और धुड़ककर उसने कहा :

"खबरदार जो इधर गया यहाँ रास्ता नहीं है " अब किसान भी जरा अड़ गया। बोला:

"तब फिर और मै कर ही क्या सकता हूँ। रास्ते मे जब तुमने कंबल बिछा लिया है तो फिर मै किधर से जाऊँ ?"

"मै क्या जानूँ तेरा रास्ता भाग यहाँ से" कह कर हस्ती ने डॉटा। इधर इन दोनो की बातें हो रही थी कि गधे ने जौ का खेत खड़े-खड़े चरना भी शुरू कर दिया। हस्ती ने जो उसे चरते देखा तो लाल-लाल आँखें किये वह उसकी तरफ झपटा और उसने उसे पकड़ लिया और अपने नौकर की मदद से उसे बोझ सहित अपने कब्जे मे कर लिया। वह किसान से बोला :

"तेरी यह मजाल कि तेरा गधा मेरे पके खेत चरे ! तूने तो मेरी फसल का नुकसान किया है पर देख ! मै भी हर्जे, खर्चे मे तेरा गधा मय बोझा लिये लेता हूँ . जा भाग जा वरना ' और यह कह कर उसने हाथ उठा कर इशारे से बताया कि वरना वह मारेगा।

किसान ने देखा, आँखो के सामने ही गधा मय नमक लुट गया—अब वह चिल्लाया :

"ऐसा जुल्म ! हाय ऐसा जुल्म कभी सहन नही हो सकता। पहिले तो मेरा रास्ता रोक दिया और जब फिर मैंने कुछ नहीं कहा तो अब दो बाल जौ खा जाने से मेरा गधा ही छीन लिया नहीं ऐसा कदापि नहीं होगा याद रख यह भूमि श्रीमत मैरिटैंसा की है तू तो केवल एक काश्तकार ही है तू मुझ पर अत्याचार नही कर सकता। मैरिटैसा जैसे उच्च राज्याधिकारी और ऊँचे न्यायाधीश के रहते भला इस प्रकार का अन्याय कब चल सकता है ? होशियार हो जा...वरना समझ ले तुझे कड़े से कड़ा दंड झेलना पड़ेगा।

क्योंकि महान् मैरिटैंसा की छत्रछाया में अंधेर नहीं चल सकेगा . मेरा गधा मुझे दे दे " और वह जोर-जोर से मैरिटैंसा का नाम ले-लेकर दुहाई देने लगा ।

परन्तु हम्ती पर उसका कोई असर नहीं पडा । वह बडी जोर से हँसा । फिर बोला :

"हे जन्मजात मूर्ख गधे वाले ! तेरी अक्ल तो तेरा पेशा ही बतलाती है । जिस मैरिटैंसा का नाम ले-लेकर दुहाई दे रहा है वह भी तो मैं हूँ...ले देख .. मैं ही वह न्यायाधीश हूँ.. अब मैं तुझे न्याय भी दूँगा..." इतना कहकर हम्ती ने एक मोटी चाबुक हाथ में उठा ली और लगा किसान को मारने । उसने उसे बडी निर्दयता से बुरी तरह मारा और वहाँ से तुरन्त भाग जाने को कहा । परन्तु गधे वाला पिटता चला गया पर वहाँ से हिलने का उसने नाम नहीं लिया । चोट से वह बेहाल हो गया था. उसका सारा शरीर पीडा से व्यथित हो गया था और अब उससे खडे रहना भी मुश्किल हो रहा था परन्तु वह वहाँ से गया नहीं और बार-बार हम्ती से अपने गधे को माँगता ही रहा ।

हम्ती ने उसे मार-पीटकर उसका गधा मय नमक हाँक कर अपने घर ले गया और फिर उसने उसकी तरफ मुडकर भी नहीं देखा । किसान की प्रार्थना, उसके आँसू, उसकी धमकियाँ किसी बात ने भी उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला और उसने उसकी तनिक भी परवाह नहीं की । सारे दिन किसान वहीं अडा रहा । जब शाम हुई और अँधेरा झुकने लगा तो वह धीरे-धीरे उदास मन लेकर दुखी होकर वहाँ से चला ।

किसान हम्ती के खेत से चलकर सीधा मैरिटैंसा के महल की ओर चला । जब वह वहाँ पहुँचा उस समय रात हो चुकी थी और द्वार पर जबर्दस्त पहरा लगा हुआ था जिसमें होकर उसका अंदर जाना असंभव था । वह वहीं चहारदिवारी के पास पडा रहा और प्रतीक्षा करता रहा ।

रात बीत गई, सुबह हुई, क्षितिज में सिंदूर फूटा और मंद-मंद समीरण बहने लगा । पक्षियों का कलरव उस मनोरम वेला में संगीतमयी मालूम होता था । किसान मैरिटैंसा महान के महल के ऊँचे तोरण के बाहर उनके दर्शनों के

हेतु पडा रहा। हब्शी की चाबुक ने उसके शरीर को स्थान स्थान पर लहूलुहान कर दिया था जिन पर अब खाल सिमटकर सख्त हो गई थी। पीडा अब भी अत्यधिक थी और उसे उठने-बैठने मे भी कष्ट हो रहा था। परन्तु उसने धैर्य नही खोया था। वह उस अन्याय का बदला लेने के लिये ही मैरिटसा महान् से न्याय माँगने आया था। उसे निश्चय था कि इतने बडे द्वार से वह कभी निराश वापस नही होगा। उसे विश्वास था कि जब वह उच्च राज्याधिकारी अपने न्यायासन पर बैठ कर निर्णय देने लगेगा उस समय सचाई का पलडा नीचे झुकता चला जायेगा और उसे वास्तविक न्याय मिलेगा वह बैठा रहा।

एकाएक महल के अदर से आवाज आई 'सावधान' और अरीकर दुर्गद्वार खुल गए। प्रहरी और भी अधिक सन्नद्ध होकर पहरा देने लगे। फिर उसने देखा सैनिक पक्ति बाँधकर अस्त्र-शस्त्रो से सज्जित बाहर निकले। उनके पीछे धीरे धीरे चलते हुये लबी दाढी वाला एक व्यक्ति आ रहा था। यह व्यक्ति बहुत रोबीला और ऊँचा था। उसके चेहरे पर तेज झलक रहा था। वह गभीर और समुद्र की भाँति प्रशान्त था। उसके भुजदड कठोर तथा प्रशस्त वक्ष उसके पौरुष को अद्वितीय घोषित कर रहे थे। उन्नत ललाट और शान्तिमयी आँखें उसकी गरिमा को भव्य बना रही थी। यही वह मैरिटैसा था जो फराओ महान् का दाहिना हाथ था और जिनकी न्यायप्रियता गाथा बन कर मिश्र के अखड साम्राज्य मे गूँजा करती थी। इस समय वह नदी की ओर नौकारोहण के लिए जा रहा था।

किसान ने उस अदम्य पौरुष और न्याय की मूर्ति को श्रद्धा से देखा। अपना साहस बटोर कर वह खडा हो गया। जमीन चूमकर उसने उसकी अभ्यर्थना की और ऊँचे कठ से चिल्लाकर दीन स्वर से कहा '

"जिसके न्याय की गाथा सारे देश मे जन जन के मुख से उच्चारित है, जिसके शौर्य्य की महिमा नील नदी अति वेग से बहकर समुद्र को सुनाया करती है, ऐसे हे वीर! मै गरीब आपके पास न्याय माँगने आया हूँ अपने किसी नौकर को कृपया आज्ञा दें कि वह मेरे दुख को सुने और तत्पश्चात् श्रीमन्त से निवेदन कर सके।"

मैरिटैसा ने उसकी बातें सुनी। एक बार निगाह भर कर उसकी ओर देखा, तत्पश्चात् अपने एक लेखक को आज्ञा दी और कहा :

"इसकी फरियाद सुनो और जब हम वापस लौटे तो हम से उसे कहो।" लेखक ने कर बद्ध होकर माथा नवाया और एक तरफ हटकर खडा हो गया। जब मैरिटैसा और उसके सेवक आगे बढ़ गए तो उसने उस किसान को अपने पास बुलाया और उससे कहा :

"ऐ अजनबी ! तू कौन है और हमसे क्या कहना चाहता है ?" किसान ने उसे झुककर सलाम किया और फिर बोला :

"इंसाफ की कमान से छूटा हुआ तीर बडे और छोटे, अमीर और गरीब सब के एक सा लगता है। ऐ मेरे मालिक ! भगवान ने तुम्हे वह ओहदा बख्शा है कि अफसर के सामने तुम गरीबो की पुकार पहुँचा सको। तुम चाहो तो सही को गलत और गलत को सही करके दिखा दो। तुम लेखक हो। तुम्हारे लेखो को लोग हजारो सालो तक पढ़ते रहेंगे और तुम्हारे यही लेख तुम्हारी कीर्ति फैलाया करेंगे—ऐ मेहरबान, सुनो तुम्हे मै अपना दुख सुनाता हूँ।"

और तब उसने उन्हे अपनी सारी कहानी कह सुनाई। लेखक उसके वाक् चातुर्य्य तथा उसके द्वारा की गई अपनी प्रशंसा सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसे आश्वासन देते हुए कहा

"अच्छा तू इन्तजार कर। मै मालिक से कह कर तुझे इंसाफ दिलाने की पूरी-पूरी कोशिश करूँगा—" और यह कह कर वह चला गया।

किसान फिर आकर वहीं दरवाजे के पास पड रहा।

रात्रि के समय मैरिटैसा का भवन उल्काओ के प्रकाश से जगमगा रहा था। अभी रात शुरू ही हुई थी। हवा की तेजी के साथ उल्काएँ फरफरातीं और उनका हिलता हुआ प्रकाश भवन की स्वच्छ व सफेद भीतों पर कंपन पैदा करता हुआ प्रतीत होता था। सभी तोरणों पर पहरा और भी अधिक कडा हो गया था तथा द्वारपालो के भाले उल्का के प्रकाश में चमक रहे थे। उनकी लम्बी-लंबी तलवारें और ढालें ऐसी विकराल मालूम होती थीं कि सहसा द्वारों में घुस जाने का साहस किसी को नहीं होता था। भवन के अंदर से कहीं से संगीत की मधुर ध्वनि सुनाई देती तो कहीं से किसी अनिंद्य सुंदरी के मनोहारी

नृत्य से क्वणित पायलों की झंकार सुनाई देती थी। मनोरम वेला थी। सभी लोगों में एक प्रकार का नवीन साहस और स्फूर्ति भरी हुई थी।

मैरिटैसा एक ऊनी काली नपर लेटा हुआ मद्य पी रहा था। उसके सम्मुख ही विशाल स्तंभों पर खड़ी चित्रित छत के नीचे चमचमाती हुई फर्श पर कई सुंदरी युवतियाँ नृत्य कर रही थीं। वे प्रायः नग्न थीं तथा उनके सुन्दर शरीर से यौवन मानो फट पड़ना चाहता था। मैरिटैसा विभोर होकर उस नृत्य को देख रहा था और निर्निमेष नेत्रों से देखता हुआ उस अपूर्व सौन्दर्य से प्रस्फुटित अग्नि में जल जाना चाह रहा था। उसके लेखक गण तथा उसके सेवक चुपचाप साँस बाँधे उसके पीछे की ओर बैठे उस कुसुमित वातावरण का रसास्वाद ले रहे थे।

हठात् मैरिटैसा को परिस्थिति का ध्यान हो आया। इस प्रकार सबके बीच सुन्दरियों में खो जाने से उसे तनिक ग्लानि हुई और तुरन्त ही उसने दृष्टि उठाकर अपने मुसाहिबों की ओर देखा। उसकी निगाह उस लेखक से जाकर मिली और तब उसे वह गरीब गधे वाला किसान याद आ गया। न्याय! न्याय!! यही तो था जिसे लोग उससे माँगते थे। यही तो था जिसके कारण वह नील से समुद्र तक विख्यात था। अवश्य उसे अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिये। वह उठ गया। नृत्य हठात् रुक गया।

अपने कक्ष में आराम से लेट कर उसने उसी लेखक को बुलाया। वह आया और खड़ा रहा। मैरिटैसा न जाने क्या सोच रहा था, कदाचित् वह अपने गौरव और यश के बारे में सोच रहा हो। उसने लेखक की ओर नहीं देखा। वह अपने विचारों में ही खोया सा सोचता रहा। न्याय! यह शब्द फिर, उसे खटका और एक बार फिर उसका ध्यान उसी किसान की ओर जा लगा। उसने मुड़ कर देखा कि नतमस्तक लेखक सामने खड़ा था। मैरिटैसा ने उसे बैठने को इंगित किया और तब उसे आज्ञा दी कि वह सब बातें विस्तारपूर्वक उससे कहे।

जब तक लेखक कहता गया मैरिटैसा ध्यान मग्न होकर सुनता रहा और जब वह चुप हो गया तब उसने पूछा :

"परन्तु इन सब बातों का कोई गवाह भी है या नहीं?"

"केवल भगवान ही इस बात का गवाह हो सकता है", लेखक ने उत्तर दिया "क्योकि उस समय कोई अन्य व्यक्ति वहाँ नही था। मुझ से उस किसान ने ऐसा ही कहा है।"

"तुम जा सकते हो," विचारमग्न होकर मैरिटैसा ने कहा और फिर बिना और किसी बात की प्रतीक्षा किये ही वह करवट बदल कर लेट गया। लेखक कुछ देर तक तो बैठा रहा परन्तु फिर धीरे धीरे उठा और कक्ष के बाहर चला गया।

मैरिटैसा उस किसान को न्याय देना चाहता था परन्तु उसका गवाह तो कोई भी नही था। हो सकता है यह सब झूठ हो और किसान ही उस हम्ती नामक काश्तकार को ठगना चाहता हो। कैसे न्याय हो ? यही सोचते-सोचते नींद आ गई और वह सो गया।

भोर हुई और रा हर्मांचिस ने आकाश मे चढकर अपनी दिग्विजय की घोपणा कर दी। प्रकाश की किरणो से पवित्र भूमि जगमगाने लगी। न्यायालय मे आज भी नित्य की ही भाँति भीड़ उपस्थित थी। अपने सुवर्णमय ऊँचे सिहासनो पर न्यायाधीश बैठे थे। वे कुल पाँच थे और उनके गभीर मुखो को देखकर चचलता साक्षात्कार भी होकर कदाचित् अपने अस्तित्व को भूल जाती। मैरिटैसा अपने अन्य साथियो के साथ विचार मुद्रा मे बैठा था। बारी-बारी से दुखी मनुष्य आकर उसके सामने अपना दुखडा रोते और न्याय की दुहाई देते थे। जब उस किसान की बारी आई तो वह बुलाया गया। वह आया और दोनो हाथ फैलाकर उसने आकाश की ओर देखा और तत्पश्चात् उन पाँचो भाग्य-विधाताओ की ओर देखकर उनको अभ्यर्थना की। उसने जमीन चूमी और फिर वह ऊँचे स्वर से बोला

"रा-हर्मांचिस के प्रचण्ड पराक्रमी पुत्र फराओ महान् के राज्य मे अन्याय नही पनपता—भला इस बात को कौन नही जानता ? उसी फराओ महान् के न्याय की कीर्ति रखने वाले तथा स्वय अन्यायी को दड देने वाले न्यायाधीशो के समक्ष आज मै न्याय माँगने की इच्छा लेकर आया हूँ। मै एक गरीब गधे वाला हूँ और मुझे श्रीमान् मैरिटैसा के

एक काश्तकार हम्ती ने बलपूर्वक लूट लिया है। उसने आगे रास्ता बन्द कर दिया और जब मै घूमकर दूसरी राह जाने को मुडा तो उसने मेरा गधा मय नमक के बोझ, सब इसलिये मुझसे छीन लिया क्योकि मेरे गधे ने रास्ते बीच उसके खेत से दो-चार बालें जौ की खा डाली थी, भला यह कहाँ का इन्साफ है ? उसने निश्चय ही खेत इतना बढा कर बो लिया था कि नदी मे केवल हाथ भर का फासला ही बीच मे मार्ग के लिये रह गया और उस मार्ग मे अपना कम्बल बिछाकर वह स्वय बैठ गया था। बताइये श्रीमान् मै आगे किधर से जाता ? मेरे साथ बहुत अन्याय हुआ है। मै निश्चयात्मक रूप से कह सकता हूँ कि हम्ती ने यह सब जान-बूझकर ही किया है क्योकि उसकी नीयत साफ नही है। मै हम्ती के यहाँ दिन भर रहा। मैने उससे प्रार्थना की, उसके सामने रोया कि किसी भी प्रकार वह राह पर आ जाय। परन्तु वह भला क्यो मेरी बाते सुनता ? उसे यदि सुनना ही होता तो भला मुझे ऐसे लूटता ही क्यो ? उसने मुझे इतना मारा है कि मेरे शरीर पर जगह जगह खून जम गया है जो श्रीमान् देख सकते है। अन्नदाता ! न्याय की कमान सबो के लिए बराबर खिचती है। अमरपुत्र (फराओ) की छत्रछाया मे इन्साफ का पाठ प्रथम ही है। यह मेरा अहोभाग्य है कि इस बहाने इतने उच्च अधिकारियो के सामने उपस्थित होकर आज मै उनके दर्शन तो कर सका ”

उसके वाक् चातुर्य से सभी प्रसन्न हुए और उसके लबे वक्तव्य से प्रभावित भी कम नही हुए। परन्तु जब गवाहो का प्रश्न उठा तो किसान सिवा ऊपर हाथ उठाने के और कुछ न कह सका। देर तक उसने अपनी सच्चाई दिखलानी चाही, पर न्यायाधीशो ने बिना गवाही के फैसला देने से इकार कर दिया। मेरिटेसा को न जाने क्यो उसकी बात पर विश्वास हो आया था, कदाचित् इसलिए कि यह मामला उसकी जागीर का था और इसलिये भी कि शायद वह हम्ती को जानता भी था। वह बोला :

“यह मामला मेरे इलाके का है और मेरे विचार से इसकी बाते हम लोग यदि सही मान लें तो कोई हर्ज नहीं होगा।”

“यह न्याय का गला घोटना होगा,” दूसरे न्यायाधीश ने तुरन्त आपत्ति की, “हो सकता है कि यह गधे वाला ही झूठ कह रहा हो। हाँ यदि श्रीमान्

मैरिटैंसा स्वय उस अन्याय का जिम्मा लें और आज्ञा दे कि इस गधे वाले की बातें सही मान ली जायें तब तो बात दूसरी ही होगी और हम सभी को उनकी आज्ञा का पालन करना होगा।"

मैरिटैंसा ने देखा कि वार सही जगह नहीं हुआ था, बल्कि उसी के मर्म स्थल पर चोट की जा रही थी। उसने चुप रहना ही ठीक समझकर गधे वाले को बाहर निकलवा दिया। परन्तु मन मे वह उस पर अवश्य कृपा दृष्टि रखने लगा।

मैरिटैंसा नें अब गुप्त रूप से असलियत जानने के लिये उसी लेखक को एकान्त मे बुलाकर आज्ञा दी कि वह स्वय जाकर हम्ती से मिले और किसी तरह सब बातें जानकर उसे बतलाये। लेखक चुपचाप सब कुछ सुनकर हम्ती के पास गया और वहाँ जाकर उसने उसके यहाँ एक गधा बँधा देखा। गधा काफी तन्दुरुस्त था और उसे देखकर ही मालूम होता था कि अच्छा बोझा ले जा सकता था। लेखक ने हम्ती से कहा:

'मुझे एक गधे की आवश्यकता है, क्या तुम इसे मुझे बेच दोगे ?"

"नहीं," हम्ती ने उत्तर दिया।

"क्यों ?"

"मेरी मर्जी।"

"मैरिटैंसा को चाहिये।"

अब हम्ती डर गया। सोच मे पड गया। कुछ देर बाद बोला:

"ले लें श्रीमान्।"

"तेरे पास यह गधा कहाँ से आया ? इसकी माँ कहाँ है ?"

हम्ती चुप रहा—घबरा गया।

"तो बिना माँ का है। ठीक है। उस नस्ल का है जिनकी माँ नहीं होती।"

"हाँ मालिक ! यह मेरे यहाँ ही अपने आप हो गया था", हम्ती ने खुश होते हुए कहा।

लेखक वापस चला आया और उसने सब हाल मेरिटसा से जा सुनाया। मैरिटैसा सब कुछ सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने लेखक को आज्ञा दी कि वह उस मामले को अभी गुप्त ही रखे।

दूसरे दिन सुबह के वक्त मैरिटैसा पालकी मे बैठकर बादशाह के पास गया। फराओ उस समय उपवन मे खिले पुष्पो के सौन्दर्य का वर्णन कर रहा था। उसके प्रत्येक शब्द को लेखक गण ताड के पत्तो पर लिख लेते थे। वह उस समय प्रसन्नचित्त था। मैरिटैसा ने जाकर उसके सम्मुख झुककर अभिवादन किया और जमीन चूमी। फराओ मुस्कुराया और उसने उससे नगर का सवाद पूछा। मैरिटैसा ने उस किसान का सारा किस्सा बयान कर दिया और साथ-साथ उसके लबे वक्तव्य के बारे मे भी कहा। फराओ ने उस लबे वक्तव्य को सुनने की इच्छा प्रकट की और कहा :

"यह किसान निश्चय ही बुद्धिमान है। इसमे बोलने की अदम्य शक्ति है। मै चाहता हूँ कि इसे अभी न्याय न दिया जाय क्योंकि शीघ्र न्याय देने से तो यह यहाँ से चला जायेगा। अभी इसे रहने दो। तग होने दो और इसी तरह लबी लबी बुद्धिपूर्ण बाते कहने दो—लेखको को आज ही से नियुक्त कर दो कि वह इसके द्वारा प्रत्येक शब्द को ताड के पत्तो पर अकित कर ले—इसके पास शब्दो का खजाना है—मुझे इसके बोल बहुत पसन्द हैं।"

मैरिटैसा चला आया। दरवाजे के पास ही बाहर वह किसान पडा था और उसे देखते ही उठकर खडा हो गया और लगा दुहाई देने। वह बोला :

"ऐ दरियादिल मालिक! आपको भला कौन नही जानता? सारे ससार के विजेता जिसके चरणो पर बैठ कर अपने भाग्य की सराहना करते है। ऐसे फराओ महान् के आप मर्जादान हैं। वह फराओ जिसकी छत्र-छाया मे बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीते हैं—वह जो गरीबो का दोस्त है, मै प्रार्थना करता हूँ कि आप ससार के सबसे पवित्र न्यायाधीश कहलायें—सद्बुद्धि के झोंके आपको ज्ञान की झील पर लाकर अभय बना दें। जिसके पिता नही है उसके लिये आप पिता हैं। जिसके भाई नही हैं उसके भाई हैं।

बिना उजरत सलाह देने वाले, बिना किसी प्रतिकार के न्याय देने वाले साक्षात् धर्म की मूर्ति हैं। आपसे अपराधी भय खाता है, निर्दोष आपका नाम लेकर दुहाई देता है। नील की लहरें जब बहती हैं तो आपके इन्साफ का शोर करती हैं—समुद्र की तरगों पर आपका नाम ज्वार बनकर गर्जन करता है, जिसे सुनकर अन्यायी का कलेजा थर्रा उठता है।"

मैरिटैसा ने सुना और प्रसन्न हुआ। उसने देखा, लेखक गण उसकी सारी बातें लिख चुके थे। वह और भी संतुष्ट हुआ पर उसने अपना संतोष प्रकट नहीं किया। वह सीधा अपने महल में चला गया।

मैरिटैसा ने अब उस किसान के घर वालों के लिये भोजन इत्यादि सभी बातों का प्रबन्ध अपनी ओर से चुपचाप कर दिया। किसान को भी भोजन वह गुप्त रूप से दिलाने लगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल हो मैरिटैसा ने वह लेख फराओ के पास भिजवा दिया। फराओ उसे पढ़ कर अत्यत प्रसन्न हुआ और उसने उसी प्रकार के लेख पढ़ने की इच्छा जाहिर की। जब मैरिटैसा सायंकाल अपने भवन से बाहर निकला तो किसान ने फिर उठकर अपनी दास्तान कहनी शुरू की। अबकी बार वह बोला •

"रा हर्माचिस ने ठोस सोने की सिल पर जब भरपूर हथौडा मारा तो उसमें से छिटक कर एक स्वर्गीय पुरुष अलग खडा हो गया। उसका शरीर स्वर्ण की भाँति देदीप्यमान था, उसके नेत्र नीले तथा केश पिंगल थे—वह दीर्घाकाय था तथा उसमे अपार पौरुष था। रा हर्माचिस ने उससे कहा, 'जा और पृथ्वी पर राज्य कर।' वह आया और दुनिया ने उसके पैर चूमे। उसने दस्युओ को पकड कर मरवा डाला, उसने बर्बर लोगो को पकडकर उन्हे कठोर दड दिया, उसने अपनी प्रजा को त्राण दिया, अभय दिया, न्याय दिया—वह कौन था ? वही मिश्र का सम्राट है—वही फराओ महान् है जो कभी नहीं मरता। जब वह रहते-रहते ऊब जाता है तो पिरैमिड मे चला जाता है और अपने पुत्र को वापस फराओ बना जाता है—वह है तो न्याय है—वह है तो व्यवस्था

है—वह है तो शाति है। उसी फराओ महान् के आप मत्री हैं—मुझे न्याय दीजिये ”

फराओ ने दूसरे दिन यह लेख पढा और पढ कर उस किसान के ज्ञान तथा वाक्‌चातुर्य पर आश्चर्य चकित रह गया। वह बोला

“मैरिटैसा! अभी और ”

और इसी भाँति नौ बार मैरिटैसा उसके सामने से निकला और हर बार उसने नई-नई तरह से उससे प्रार्थना की जो सभी लिख ली गई और फराओ के पास पहुँचा दी गई।

एक बार मैरिटैसा ने उसे पिटवाया भी और उसकी परीक्षा लेनी चाही कि देखें अब क्या कहता है। पिट कर जब किसान गिर गया तो दुहाई देकर बोला:

“सच्चे मोती समुद्र की अतल गहराइयो मे ही मिलते हैं—मैं भी मोती ढूँढ रहा हूँ। इन कष्टो से नही डरता मैं निश्चय कर चुका हूँ कि न्याय लेकर उठूँगा क्योकि फराओ के राज्य मे अन्याय पनप ही नही सकता ”

दसवे दिन जब मैरिटैसा के सेवकगण फिर उसकी ओर आये तो वह डरा कि कदाचित् फिर वह मारपीट करे परन्तु जब वे पास आये तो बोले:

“तू डर मत। तेरी बोलने की अदम्य-शक्ति है। तेरी हर बात लिख ली गई है और स्वय फराओ उसे पढता है—उसे तेरे बोल अत्यत प्रिय हैं। निश्चय ही तुझे न्याय ही नही बल्कि इनाम भी पूरा मिलेगा।”

यह सुन कर किसान बहुत खुश हुआ और अपने भाग्य को सराहने लगा।

मैरिटैसा ने जब फराओ से उसका न्याय करने की प्रार्थना की तो वह बोला:

“तुम्हीं कर दो। मुझे इतना अवकाश नही है। उसको इनाम भी गहरी दो जिससे वह भविष्य मे सुखपूर्वक रह सके।”

मैरिटैसा ने लौटकर हम्ती को पकड़वा कर बुलवाया और उसे पिटवाया, उसकी जमीन, घर-बार सारा सामान व धन उस किसान को दिलवा दिया और हम्ती को मारकर भगा दिया। इसके अतिरिक्त राज्य की ओर से भी उसे एक जागीर दिला दी। अब वही गधे वाला किसान ठाठ के साथ अपने परिवार सहित रहने लगा और अपने वाक्-चातुर्य्य तथा बुद्धि से सदैव फराओ को प्रसन्न रखता था। फराओ उसके बोल पर मुग्ध था। बेहतरीन भोजन तथा पुरस्कार वह उसे देता और लेखक सदा उसके बोल अंकित करते रहते थे।

———

स्वयंवर

प्राचीन समय म मिश्र देश मे पराक्रमी राजा ऐमेन होतेप राज्य करता था। राजा धन-धान्य मे समृद्ध विशाल राज्य का एकाधिपति होते हुए भी अत्यन्त दु खी था क्याकि उसके हरम मे बहुत सी रानियो के होने हुए भी उसके कोई उत्तराधिकारी पुत्र नही था। पुत्र प्राप्ति के लिए उसने जाने क्या क्या उपाय किये, परन्तु किसी भी प्रकार उसका अभीष्ट सिद्ध नही हो सका। ऐलाम के पडे ने उसे एक सहस्र स्वर्ण मुद्राये लेकर स्वर्ण पत्र पर दिव्य अभिमन्त्रित एक कवच पुत्र प्राप्ति के लिए दिया था। सुमेरु के योद्धा ने अर्द्ध रात्रि के समय उत्तग शिखरो पर रहने वाले हा-हू देवता से प्राप्त किया हुआ चॉदी का बना एक कर्ण पत्र दिया था, जिसके धारण करने से निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती थी। फराओ ने उससे प्रसन्न होकर उस अमूल्य कर्ण पत्र के बदले मे उसे अनेकानेक रत्न और अपनी हीरक जडी अद्‌भुत कटार दी थी। चन्द्र मन्त्रो से अभिमन्त्रित काष्ठ की बनी हुई, करताल अरब देश के पूज्य और ज्ञानी सिद्धो ने उसे दी थी, जिसमे यह विशेषता थी कि जब वह बजाई जाती थी निश्चय ही फराओ की प्रधान रानी गर्भ धारण कर लेती ऐसा ही कुछ उसको बतलाया गया था। मोहनजोदडो और हडप्पा से आये हुए भारतीय व्यापारियो ने पुत्र प्राप्ति के लिए महादेव के मन्त्रो से पूरित बडे-बडे मोतियो से पिरोये हुये सुवर्ण मडित तावीज दिये थे जिनके बारे मे यह ख्याति थी कि यदि वह सूखे पेड से बॉध दिये जाते तो वह भी हरा होकर नई कोपले छोडने लगता। ऐमेन होतेप ने असख्य धन व्यय किया और अनेकानेक पशुओ की बलि भी दी, परन्तु पुत्र उत्पन्न नही हुआ। निराशा ने उसके हृदय को डस लिया और वह दुखी रहने लगा। कभी कभी वह क्रोध से विक्षुब्ध हो जाता और वह घडी मानो प्रलय की घडी हो जाती क्योकि तब सब कुछ विनाश को प्राप्त हो जाता था।

राजा ने एक दिन ऊषा काल मे उठकर पूर्वाभिमुख होकर एकाग्र चित्त से घुटनों के बल बैठकर गद्‌गद् वाणी से देवताओं की अभ्यर्थना की। उसने इतने आर्द्र हृदय से प्रार्थना की कि दयालु देवता प्रसन्न हो उठे और उन्होने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। आकाश में मेघ गर्जन करने लगे। एक ओर से दूसरी ओर तक विद्युत का स्फुरण हुआ और ब्रह्माड गूँज उठा। समुद्र थपेड़े लेने लगा और आकाशवाणी हुई •

"राजा तेरी मनोभिलाषा अब पूर्ण होगी। देवता तुझ पर प्रसन्न हैं। तेरी प्रधान रानी के गर्भ से तेरा उत्तराधिकारी निश्चित समय पर उत्पन्न होगा!"

ऐमेन होतेप पृथ्वी पर झुक गया और उसने देवताओं को प्रणाम किया। जब वह खड़ा हुआ सब कुछ शान्त हो चुका था, नीरवता छा गई थी। उल्लसित मन से राजा शुभ सूचना देने के लिए हरम की ओर चला।

× × ×

नील नदी की हरी-भरी उपत्यका उत्सव से रोमाचित हो रही थी। आज नगर मे रँगरेलियाँ मनाई जा रहीं थीं। नाना प्रकार के वाद्य बज रहे थे। कठोर शरीर वाले सैनिक दोनों हाथों से मद्य-पात्र उठाकर एक ही साँस मे गट-गट मदिरा पी रहे थे। उनके दीर्घ वक्षस्थल चमचमाते हुये लौह कवचों से उन्नत और विशाल दिखाई देते थे। वृषभ स्कंध, सिंह कटि और पीन भुज-दण्डों से उनकी कठोरता और भी साक्षात् होकर मानो नये जीवन का आह्वान कर रहे थे। यह वही सैनिक थे जिनकी उठी हुई तलवारों ने सुदूर अरब देश तक फराओ की यश गाथा रक्त से लिखाई थी। उनके वज्र कठ से अट्टहास रह-रहकर फूट पड़ता था। मद्य विक्रेताओं की दूकानें गुजित थी। अर्द्ध नग्न सुन्दरियाँ हाथ में बिल्लौर के पात्र लेकर उन्हें मदिरा पिला रही थीं। चतुष्पथों पर भारी भीड़ थी। सैनिको और आबाल वृद्ध नागरिकों से घिरी हुई नर्तकियाँ वहाँ मनोहारी नृत्य कर रही थीं। एक ओर से चपल-मीन सदृश्य नयनों वाली सुन्दरियाँ कटाक्ष करती और दूसरी ओर से सुवर्ण बरस रहा था। नगर-रक्षक व्यवस्था मे संलग्न थे। आनन्द का स्रोत बह रहा था। राज प्रासाद भेरी निनाद से प्रकपित था, उन्मुक्त हाथो से राज्य-कोष लुटाया जा रहा था। आज सर्वत्र आनन्द ही आनन्द छाया हुआ था। रा (सूर्य) के पुत्र यशस्वी

राजा ऐमेन होतेप फराओ महान की प्रधान रानी के गर्भ मे पुत्ररत्न उत्पन्न हो गया था, जिसके यश की गाथाएँ शत्रु के रक्त से लिखी गई थी, जिसके वैभव का प्रतीक पर्वत से लगने वाले पिरेमिड खडे थे। आज उसका उत्तराधिकारी पैदा हो गया था। महामन्त्री की महा आज्ञा से फराओ का झडा आकाश मे चढा दिया गया था। सूर्य की किरणो मे चमकता हुआ वह झडा सूर्य-पुत्र के यश और उसके पूर्वजो की कीर्ति मे मानो सारे ससार को चुनोती दे रहा था। महा-नगर के तोरणो पर अट्टहास करते हुए सैनिक मदिरा से चूर होकर अर्द्ध नग्न नर्तकियो से केलि कर रहे थे। अद्भुत वेला थी, वैभव और विलास का नग्न प्रदर्शन हो रहा था।

हरम मे महारानी शिथिल वसना थकी हुई लेटी थी परन्तु उस अवस्था मे भी उसके मुख पर गर्व की मुस्कान छा रही थी। अनेकानेक दासियाँ इधर से उधर कार्य मे व्यस्त डोल रही थी। नव जात शिशु शुभ्र शैया पर कुशल परिचारिकाओ द्वारा लिटा दिया गया था। प्रकोष्ठ के बाहर अरब देश के नजूमी तथा भारत से आये हुये ज्योतिषी बालक के भाग्य की परीक्षा कर रहे थे और तभी स्वर्ग से सातो हाथोर्स (भाग्य-विधाता) वहाँ आये। परिचारिकाये नतमस्तक होकर उन्हें नवीन उत्तराधिकारी के पास ले गई। सभी लोगो ने आश्चर्य किया कि उन्हे देखकर बालक मुस्कुराया। हाथौर्स ने भविष्यवाणी की। वह बोले : "प्रचण्ड पराक्रमी फराओ का पुत्र वीर, बुद्धिमान और यशस्वी बनेगा परन्तु इसकी मृत्यु अचानक होगी।

इतना कह कर भाग्यविधाता अतर्धान हो गये। दाइयो ने जब यह समाचार राजा को दिया तो वह चिन्तित हो उठा। वह अपने इस पुत्र को किसी भी हालत मे खोना नही चाहता था। उसने अपने प्रधान सेवको को बुला कर मत्रणा की। आइसिस और होरस के पुजारी से आशीर्वाद माँगा। ओसिरिस को मोटे-मोटे पाँच सौ बैलो की कुरबानी दी। एनूबिप, नेकथिस, सिबिक, हारपोक्रेस्ट, तथा खनूमू आदि देवताओ के मदिरो मे बहुमूल्य भेंट भेजी और प्रार्थना की कि वह सब उसके पुत्र की रक्षा करे। इसी प्रकार कई। साँप, मगर अथवा कुत्ता इन तीन मे से ही कोई इसकी मृत्यु का कारण बनेगा।" दिन बीत गये। राजा की चिन्ता कम नही हुई।

एक दिन भोर के समय राजा ने शैया से उठ कर आज्ञा प्रदान की। लगता था जैसे उसने कोई उपाय सोच लिया था। बियावान जङ्गल के बीच एक बहुत बड़ा भवन बनाया गया, जिससे बाहर जाने का रास्ता केवल एक था। ऐश्वर्य और विलास की सामग्रियों से वह सजाया गया। चारो ओर सतर्क सैनिकों का घेरा डलवा दिया गया तथा अनेकानेक दास और दासियों से युक्त उस भवन मे वह राजकुमार अपनी माता के साथ रहने लगा। राजा की कठोर आज्ञा थी कि किसी भी हालत में कुमार भवन के बाहर न लाया जाय और न कोई अन्य व्यक्ति ही उससे मिलने अन्दर जा सके। इसी प्रकार दिन बीतने लगे। भवन की चारदीवारी के भीतर दुनिय से दूर वह पलने लगा।

वर्षों व्यतीत हो गये और एक दिन जब वह बड़ा हुआ तो दुनिया से बेलकुल अनभिज्ञ था। देखने में वह इतना सुन्दर बलिष्ठ और लम्बा-चौड़ा था कि वह निश्चय ही उस विराट साम्राज्य का योग्य उत्तराधिकारी प्रतीत होता था। एक दिन वह अपने भवन की छत पर चढ गया। उसने देखा कि दूर कहीं कोई आदमी चला जा रहा था, जिसके पीछे एक छोटा सा जानवर भागा-भागा उसका अनुसरण कर रहा था। राजकुमार ने उसे देख कर बहुत आश्चर्य प्रगट किया और अपने एक सेवक से पूछा कि वह क्या था जो उस आदमी के पीछे अपने चारों पैरों से जा रहा था। सेवक बोला, "श्रीमन्त वह तो एक कुत्ता है।"

"कुत्ता क्या ?" राजकुमार ने ताज्जुब से फिर पूछा।

"वही जो जा रहा है," सेवक ने उत्तर दिया।

"वह तो बहुत अच्छा है," राजकुमार ने जिज्ञासा भरे नेत्रों से पूछा।

"हॉं श्रीमन्त," सेवक नतमस्तक होकर बोला। राजकुमार उसके उत्तर को सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। थोड़ी देर सोचने के उपरान्त वह उस सेवक से बोला :

"ऐसा कुत्ता एक मेरे लिए भी लाओ मैं उसे पालना चाहता हूँ," सुन कर वह नौकर सीधा राजा के पास पहुँचा और उसने सारी बातें कह सुनाई। राजा ने सुना और कुछ सोच कर कहा :

"एक छोटा सा अनैले सूअरो का शिकार करने वाला बच्चा लाओ और उसे राजकुमार को पालने के लिए दे दो। परन्तु ध्यान रहे कि इसे काटने की आदत न पड़ जाय।"

राजकुमार उस बच्चे को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। धीरे-धीरे कुत्ता उसका पालतू हो गया, परन्तु अब उसके लिए भवन मे रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। सारे दिन वह उद्विग्न होकर घूमा करता और रात को उसे नीद नही आती थी। बाहर जाने की आज्ञा न होने के कारण कुछ ही समय मे वह खीज उठा और उसने दास-दासियो से मार-पीट शुरू कर दी, परन्तु इससे भी उसका काम नही बना क्योंकि बाहर सैनिको की भीत खडी रहती थी। आखिर उसने एक दिन अपने पिता को एक पत्र लिखा और दूत के द्वारा उसे राजा के पास भिजवा दिया। उसमे लिखा था—"आखिर आप ने मुझे कैद क्यो कर रक्खा है। हाथौर्स की भविष्यवाणी झूठी तो नही की जा सकेगी क्योकि वह तो भगवान की ही आज्ञा से उन्होने की थी। जब मगर, साँप और कुत्ते के ही द्वारा मेरी मृत्यु निश्चित है तो भला मै यहाँ दुनिया से दूर क्यो अकेला पडा रहूँ। आज्ञा दीजिये कि मे ससार मे घूम सकूँ। इन तीन शत्रुओ से मे सदैव अपना बचाव करता रहूँगा। मुझे भी सर्वशक्तिमान ने अतुलनीय बल दिया है, मेरी भुजाओ मे अपार पौरुप है, मै क्यो घर मे बन्द रहूँ।'

राजा उस पत्र को पढ कर पहले तो हैरान हो गया। तत्पश्चात् उसने सोचा और निश्चय किया कि जो कुछ राजकुमार ने लिखा है। ठीक है उसने उसे तुरन्त बाहर निकल कर घूमने की आज्ञा दे दी परन्तु यह भी कहा कि वह अपने कुत्ते को साथ लेता जाय। राजकुमार यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। राजा की आज्ञा से तुरन्त एक मत्री राजकुमार को लेकर राजधानी के पूर्वी द्वार की ओर गया और वहाँ से राजकुमार को साथ लेकर उसे साम्राज्य की सीमा तक छोड आया क्योंकि यही वह दिशा थी कि जिस ओर से कभी कोई खतरा नही रहता था। आज पहली बार ऐमेन होतेप के लडके ने अपने आप को इतनी बडी दुनिया के बीच अकेले खडे पाया। उस एकान्त का अनुभव करके वह रोमाञ्चित हो उठा। उसका कुत्ता न जाने क्यो वहाँ से उत्तर दिशा की ओर बढा और वह उसके पीछे पीछे चल दिया।

आकाश और पृथ्वी के बीच पूर्ण चन्द्र की ज्योत्सना फैल रही थी। उत्तर से मलयानिल मन्द समीरण बन कर बह रहा था जिसके स्पर्श मात्र से युवकों के हृदय मे स्फुरण हो उठता और सुप्त कामनाएँ रह-रह कर स्वत जाग्रत हो उठती थीं। सघन वृक्षों की छाया चॉद की किरणो से छन रही थी। दूर कही कोकिल बोल उठी, चक्रवाक ने किसी सघन वृक्ष की डाली से विरह का गीत प्रारम्भ कर दिया। नील के धूमिल कगारो से सारस की जोडी उडी और तभी छपाक सी ध्वनि हुई मानो कोई जल मे कूदा हो। राजकुमार आज प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठा था। मनोरम वेला थी। छपाक का स्वर सुन कर वह चौंका और दौडता हुआ नदी की ओर पहुँचा परन्तु तब तक वहॉ कोई नहीं रह गया था, जो उसे दिखाई देता। कुत्ता जोर से भूँका और जल मे कूद पडा। आवेश मे राजकुमार भी उसके पीछे कूदा और वेगपूर्वक जल को काटता हुआ सतरण करने लगा, देर तक वह तैरता रहा और आगे बढ़ता रहा और अब किनारे से थोडी ही दूर था कि उसके पीछे जल बडे वेग से ऊपर उठा।

उसने मुडकर देखा कि विकराल डाढ़ों को खोले अपनी खूनी ऑखों से घूरता हुआ एक विशाल मगर उसकी ओर तीव्र गति से आ रहा था। राजकुमार भयभीत हो उठा और विद्युत गति से आगे बढा। उसी समय नील के दूसरे कगारे की ओर से देदीप्यमान प्रकाश हुआ और उर्ध्व श्वासो से वातावरण कॉपने लगा। दिव्यमणि को नीचे रखकर विकराल भुजङ्ग सामने लहरा रहा था। कुमार ने देखा, सर्वत्र मृत्यु की विभीषिका अट्टहास कर रही थी। अब वह कगार पर चढ़ चुका था परन्तु इससे आगे देखने व झेलने की सामर्थ्य अब उसमे नहीं थी। काले सर्प ने क्रोध से फुकारा और मगर भी पार्श्व में आ चुका था। ऐमेन होतेप के एक मात्र उत्तराधिकारी ने, मिश्र के विशाल साम्राज्य के होने वाले फराओ सम्राट ने भय से चीत्कार किया और मूर्छित होकर गिर पडा।

× × ×

जब उसकी ऑखे खुलीं उसने देखा रात्रि बीत चुकी थी। क्षितिज पर ऊषा की लालिमा छा रही थी। उस वन्य-प्रदेश में चारों ओर पक्षियों का मधुर कलरव

सुनाई दे रहा था। राजकुमार जैसे गहरी नींद से उठा हो, उस एकान्त स्थान में अपने को बालू पर पड़े देखकर आश्चर्य से चारों ओर देखने लगा। धीरे-धीरे उसकी स्मृति जाग्रत होने लगी। जब उसे पिछली रात की वह भयंकर स्थिति याद आई तो भय से उसके रोंगटे खड़े हो गये परन्तु फिर उसने साहस बटोरा और उठ कर खड़ा हो गया। दल के दल पक्षी गण पंक्ति बाँध कर आकाश में उड़ रहे थे। जङ्गली फूलों पर भ्रमर गुञ्जन कर रहे थे, वह उठा, और उत्तर दिशा की ओर आगे बढ़ा। उसका कुत्ता अब भी उसके साथ था। पूरे दिन वह चलता रहा और सायंकाल जब धीरे धीरे आकाश से पृथ्वी पर अँधेरा छाने लगा तो उसने देखा कि दूर कहीं धुँआ उठ रहा था। धुँआ काफी बीच से उठ कर चारों ओर फैलता सा दिखता था, परन्तु उसमें अग्नि की कोई लपट नहीं दिखाई देती थी। उसने सोचा कि शायद वह कोई नगरी थी। वह उसी ओर चला। जब उसे वहाँ कुत्तों के भूँकने का शब्द सुनाई दिया उसे निश्चय हो गया कि वह किसी ग्राम के निकट आ पहुँचा है। पास जाकर उसने देखा कि पक्की दीवाल से घिरी हुई किसी नगरी के द्वार पर वह खड़ा है। अभी द्वार बन्द नहीं हुआ था। वह अन्दर घुस गया। द्वारपाल अथवा वहाँ पर उपस्थित नगर रक्षकों में से उसे किसी ने न टोका क्योंकि अंदर घुसने के थोड़े ही समय पूर्व, दिन भर का भूखा रहने के कारण, उसने एक हिरन मारा था जिसे इस समय उसने कंधे पर लाद लिया था। कोई साधारण आखेटक समझकर शाम के उस झुटपुटे में किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। अब वह नाहरिना मितन्नी नामक नगर में पहुँच गया था उसने एक सराय में जाकर रात काटने की सोची।

रात्रि का समय था। थका-माँदा राजकुमार खा पीकर सो गया। उसका कुत्ता उसी के पैरों के पास बैठा था। दो पहर रात जाने के बाद उसकी आँखें खुलीं। उसने सुना कुछ लोग पास ही एक कमरे में बैठकर बातें कर रहे हैं। उन लोगों में से अधिकांश युवक थे और बहुमूल्य वस्त्र पहिने थे। ढाल-ढाल कर मदिरा पीते हुए वे लोग आपस में किसी ऊँची मीनार पर बसी सुन्दरी की चर्चा कर रहे हैं। सुनकर उसे कुछ जिज्ञासा हुई और तब उसने चुपचाप सराय के

मालिक से जाकर उस सुन्दरी की बाबत पूछा। सराय का मालिक उसे देखकर हँसा और बोला :

"तुम एक साधारण आदमी हो तुम्हे समर्थ राजकुमारो की भाँति बाते नहीं करनी चाहिए। इस स्थान के सरदार की एक अत्यन्त सुन्दरी भुवनमोहिनी पुत्री है और वही उसकी अकेली सन्तान है। सात सौ हाथ ऊँची, सीधी, खतरनाक पहाड की चट्टान के ऊपर एक सौ हाथ ऊँची मीनार बनी हुई है। उस मीनार की सबसे ऊँची मजिल पर एक बहुत बडा कमरा है जिसमे चारो ओर सत्तर खिडकियाँ खुलती हैं। वह कमरा अमूल्य वस्तुओं से सुसज्जित है। सरदार की सुन्दरी कन्या वही रहती है। पहाड चारो ओर से सीधा है। सुन्दरी की शर्त है कि जो कोई भी चट्टान और मीनार पर सीधा चढकर खिड़की की राह उसके पास पहुँचेगा उसी से वह विवाह करेगी। सैकडो राजकुमार, शूरवीर योद्धा और बलवान पुरुष आये और ऊपर चढने की उन्हाने कोशिश की परन्तु कोई ऊपर न पहुँच सका। कितने ही तो नीचे लुढ़क कर मर गये। नित्य पहाड के नीचे भीड लगी रहती है। ये लोग जो अन्दर बैठे हैं, देश-देशान्तरो से आये हुए राजकुमार हैं और उसी सुन्दरी की चर्चा कर रहे हैं।"

राजकुमार ने सुना। वह कुछ सोचता रहा फिर उसे उपहास सूझा वह बोला :

"हमारे देश मे सराय के मालिक राजाओ की तरह इज्जत पाते हैं। भला तुम किसी राजा से क्या कम हो। क्यों न तुम भी एक बार कोशिश करो और फिर यह शर्त तो सभी के लिये लागू है कि जो भी ऊपर पहुँच जायगा उसी का विवाह राजकुमारी के साथ कर दिया जायगा। मै ज्योतिषी हूँ। मुझे भविष्य साफ दिखाई देता है। तुम्हारे जैसे सुन्दर पुरुष को देखकर राजकुमारी निश्चय ही तुम्हारे गले मे बाहे डाल देगी। पीछे न हटो क्योकि ऐसे स्वर्ण अवसर बार-बार हाथ नहीं लगते हैं।"

इतना कहकर राजकुमार वहाँ से हटा और अपनी शैया पर आकर सो गया। दूसरे दिन सुबह वह देर से सोकर उठा तब उसने देखा कि सराय सूनी पडी थी न वहाँ कोई राजकुमार थे न सराय का ही मालिक। उसने आराम से सराय के स्नानागार मे स्नान किया, सुगन्धित तेल की मालिश की। सराय

मे से ही उत्तम मास लेकर खाया और जितनी उससे पी जा सकी उतनी सुवासित मदिरा मिट्टी के भान्डो मे भर भर कर पी। उसने देखा कि उस स्थान के मिट्टी के पात्र भी मिश्र की ही भाँति चिकने, सुन्दर और कलापूर्ण बने हुए थे। जब वह सब तरफ से निश्चिन्त हो गया तो आराम से अपने कुत्ते को साथ लेकर सराय से बाहर निकला और उस मीनार की ओर चला जो कि वहाँ से भी उसे दिखाई दे रही थी।

जब वह वहाँ पहुँचा उसने देखा कि पहाडा सीधा खडा था। बीसियो युवक उस पर चढने का निष्फल प्रयत्न कर रहे थे। अधिकाश आठ-दस हाथ से ऊपर नही जा पा रहे थे। लुढक-लुढक कर उल्टे आ जाते थे। एक कोई बीस हाथ की ऊँचाई पर जा चढा था पर अब वापस लौट आने का प्रयत्न कर रहा था क्योकि आगे जाने का साहस उसे नही होता था। राजकुमार ने ओर निगाह उठाई कि उससे भी ऊपर कोई और व्यक्ति चढ रहा था कि नही और तभी भयानक चीत्कार करता हुआ वह सबसे ऊपर चढा हुआ व्यक्ति करीब पचास हाथ से नीचे लुढका, उसका शरीर क्षत-विक्षत हो गया था और वह मर गया था। राजकुमार को पहली रात के किये हुए अपने इस क्रूर उपहास पर पश्चात्ताप हो रहा था क्योकि मरने वाला वही सराय का मालिक था। वह सराय को वापस लौट आया और उसम आकर ऐसे रहने लगा जैसे वह स्वय ही उसका मालिक था। इसी प्रकार कितने ही दिन बीत गये। सराय का मालिक बनकर वह नित्य अपने यहाँ आने वाले युवको की बाते सुना करता था। एक दिन प्रात काल जब वह उस पहाड के पास पहुँचा तो उसने देखा कई नवयुवक थक कर एक ओर बैठे हैं। यह उनके पास गया और उनको अभिवादन किया। उन लोगो ने प्रसन्न होकर इसको सुवर्ण इनाम मे दिया। एक ने इसके लिए सुन्दर चर्म मे बने हुए उपानह खरीद कर दिये। एक और ने उसे अपना घोडा ही दे डाला। इसने सब ले लिया और विनम्र बना रहा। उनकी सेवा मे तत्पर सा रहता हुआ उनकी हर बात पर हाँ मे हाँ मिलाने लगा। उन्होने पूछा

"हे अजनबी! तुम कौन हो और यहाँ किस लिये आये हो?"

तो वह बोला

"मैं मिश्र के महान् फराओ के सारथियो मे से एक का पुत्र हूँ। मेरी माता के गुजर जाने के बाद मेरे पिता ने एक अन्य स्त्री से विवाह कर लिया है जो मुझसे नफरत करती है। इसी कारण मै घर छोड़ कर भाग आया हूँ। यहाँ मेरी एक सराय है जहाँ कठिनाई से मै अपनी गुजर करता हूँ। राजकुमारों ने उसकी गरीबी से दयार्द्र होकर उसे और भी बहुत से आभूषण रत्नादिक और सुवर्ण के सिक्के दिये, जिन सब को समेट कर वह सराय में आ गया। इसी तरह धीरे-धीरे उसके पास धन बढने लगा और उसके ठाट-बाट भी बढ गये। राजकुमार चतुर था, उसने चुपचाप धन व्यय करके भारत से आने वाले व्यापारियों से बाघनख खरीदे। व्याघ्र के कटि भाग के चर्म से बने हुए चमड़े के उपानह लिए और खरगोश की चरबी लेकर अपने सारे शरीर मे मली। तत्पश्चात् एक दिन भोर के समय उस पहाड़ के पास जाकर राजकुमारों से विनीत स्वर से बोला :

"यदि आप लोगों की अनुमति हो तो मैं भी इस पर चढने का प्रयत्न करूँ।"

आज वह अपने असली रूप मे था। अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रहा था। राजकुमारों ने उसे देख कर व्यंग से अट्टहास किया और आज्ञा दे दी। वह तेजी के साथ झपटा और देखते ही देखते आधे पहाड़ तक अथक पावो से जा पहुँचा। उसके इस अद्भुत कौशल को देखकर नीचे से लोग चिल्ला-चिल्ला कर उसकी प्रशसा करने लगे, वह चढता रहा। धीरे-धीरे नीचे बहुत बड़ी भीड इकट्ठी हो गई। लगता था सारा नगर इकट्ठा हो गया है, भीषण कोलाहल होने लगा, जिसे सुन कर नाहरिना सरदार की सुन्दरी बेटी ने ऊपर खिड़की से नीचे झाँक कर देखा कि बाघनखों को पहाड की दरारो मे घुसाता हुआ सँभलता-फुदकता बिना रोये के हल्के और न फिसलने वाले उपानहो से पैर जमाता हुआ वह ऊपर चढ रहा था। वह स्वेदश्लथ था, परन्तु अपने विशाल सुदृढ शरीर को उपर फेंकता चला जा रहा था। राजकुमारी उसे ऊपर से निहार रही थी, राजकुमार तन्मय था, न उसे नीचे का कोलाहल सुनाई पड रहा था न उसने आतुर नेत्रों से प्रतीक्षा करती हुई ऊपर खडी राजकुमारी को ही देखा। अब वह खिडकी से केवल एक हाथ रह गया था। पृथ्वी से

भीषण जयजयकारों ने उठकर ऊपर पहाड़ को हिला दिया था। राजकुमारी झुक कर उस अपार पौरुष वाले अपने प्रेमी से मिलने को बेचैन हो उठी थी। अब वह उसका रूप भी नेत्र भर-भर कर देख रही थी, वह प्रसन्नता से विभोर हो उठी थी क्योंकि उसका होने वाला पति इतना सुन्दर और डील-डौल वाला अपार पौरुष का प्रतीक वीर पुरुष था और तभी राजकुमार की बाईं जंघा में पीछे की ओर से खच से एक तीर आकर गड़ गया। ईर्षा से जलते हुए एक राजकुमार ने उसे नीचे से छोड़ा था। राजकुमार के दोनों पैर शिथिल हो गये और फूल गये। अब वह केवल हाथों से लटक रहा था। नीचे मृत्यु का गह्वर था और ऊपर जीवन की आशा। जंघा में तीर के गड़ने से भीषण यन्त्रणा हो रही थी, लगता था वह अब गिरा तब गिरा। सारा नगर साँस खींचे उसी ओर देख रहा था। वह मुश्किल से दो चार पल ही ऐसा लटका रहा होगा परन्तु उसे ऐसा लगा जैसे वह जाने कब से ऐसा ही लटक रहा था और तब ही उसने सुना कोई स्त्री-कंठ उसे ऊपर से पुकार रहा था। कितना स्नेह व कितनी चाह उस स्वर में थी कि उस मृत्यु की विभीषिका से भी उसको एक नवीन स्फूर्त्ति का अनुभव हुआ, हृदय में मानो रक्त का नवीन स्फुरण हुआ। वह विद्युत की भाँति उछला और अपने भीम शरीर को साध कर कठोर भुजाओं से उसने खिड़की की चौखट पकड़ ली। उसी समय नीचे से और एक तीर छूटा परन्तु निशाना चूक गया तीर चौखट में आकर घुस गया, राजकुमार ने अंतिम प्रयत्न किया कुलाँच मारी और वह कमरे के अन्दर आ गिरा, वह जीत गया।

पहाड़ की तलहटी जयजयकारों के वज्र घोष से गूँजने लगी। आकाश और पर्वत उस दिशाओं को गुंजाने वाले घोष से थर्राने लगे। सुन्दरी राजकुमारी ने ऊपर से इंगित किया, नीचे तीर छोड़ने वाले की हत्या कर दी गई। वह एड़ियों पर घूमी और उसने राजकुमार के गलबाहीं डाल कर उसे चूम लिया।

तुरन्त वायु को काटते हुए, तीव्र गति से, वायु के ही समान सैनिक राज-प्रासाद की ओर भाग चले। जिसने सब से पहिले सरदार को यह संवाद दिया, उसने उसे घड़ा भर कर स्वर्ण इनाम में दिया, बहुमूल्य रत्न और मणि-

माणिकों की बिखेर कर दी। वह आज बहुत प्रसन्न था क्योंकि आखिर उसे एक योग्य वर मिल गया था। उधर राजकुमारी अपने प्रेमी को आलिगन-बद्ध किये सेवा-सुश्रुषा कर रही थी, उसने उसके जॉघ से वह तीर खींच कर निकाल दिया था। राजकुमार उस समय पीडा से व्याकुल हो उठा था।

यथा समय एमेन होतेप का पुत्र सरदार के सामने लाया गया, उसने जाकर सरदार की वन्दना की। मंत्री ने युवक के कौशल और बुद्धि की भूरि-भूरि सराहना की। तत्पश्चात् सरदार ने उससे पूछा :

"हे सुन्दर युवक तुम्हारे साहस और बल की चर्चा सुन कर हमे बहुत खुशी हुई है, अब तुम अपना परिचय हमे दो कि तुम कौन हो और कहाँ से आए हो ?"

राजकुमार बोला :

"मिश्र देश के महान फराओ के रथ हॉकने वालों मे से एक व्यक्ति का मै पुत्र हूँ। मेरी माता मर गई, विमाता मुझसे घृणा करती थी। अतएव मैं घर से भाग आया हूँ।"

सरदार ने सुना और जैसे वह आसमान से नीचे गिर पडा, आश्चर्य-चकित होकर विस्फारित नेत्रो से वह उसे देखने लगा। एक साधारण रथ हॉकने वाले के पुत्र से भला वह अपनी इकलौती पुत्री का विवाह कैसे कर सकता था। उसने तो उसे राजकुमार समझा था, उसको स्वय ही इस बात पर बड़ा ताज्जुब हो रहा था। एकाएक फिर उसे क्रोध चढ आया, उसने सोचा 'नहीं, नही ऐसा नही हो सकता, वह अपनी पुत्री को एक दास के हाथो मे नही दे सकता,' परन्तु उसी समय हृदय से न्याय मानो उठ कर बोल उठा, 'परन्तु शर्त ?' वह गहरी चिन्ता में पड़ गया। हठात् वह अपने शरीर को झक-झोर कर उठा और चिल्ला कर बोला :

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता, शर्त कुलीनो के लिए थी। हर एक के लिए नहीं, इसको मै अपनी पुत्री नहीं दे सकता।"

फिर उसने मुड़ कर राजकुमार से कहा : "नौजवान यदि जीवन प्यारा है तो शीघ्र यहाँ से भाग जाओ।"

उसी समय राजकुमारी भागी हुई आई और उसने अपने प्रेमी का आलिंगन कर लिया। वह चिल्ला कर बोली :

"नहीं, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। यह मुझे अत्यन्त प्रिय है मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकती, मैं रा-हरमाचिस की शपथ खाकर कहती हूँ कि यदि यह मुझे पति रूप में नहीं मिला तो मैं इसी क्षण से खाना-पीना बन्द कर दूँगी।"

इस पर सरदार गरजा और बोला :

"इस रथवान के पुत्र की हत्या कर दो और उसकी लाश बुर्ज पर टाँग दो।"

"तो मेरी भी हत्या कर दो", लड़की चिल्लाई, "क्योंकि मैं इसके बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती।"

सरदार ने राजकुमार को घूरा, फिर वह उठा और तीर की तरह चल कर उसके पास आया। सभी ने समझा कि अब वह उसकी हत्या कर देगा। भय मिश्रित दृष्टि से सब लोग साँस बाँधे उसे देखते रहे। राजकुमार अपनी जगह भय से थर थर काँप रहा था, कुमारी सहम कर अपने पिता का मुख देख रही थी। उसी समय सरदार ने अपनी दोनों बाँहें फैला दीं और झपट कर उस राजकुमार से लिपट गया, उसने स्नेह से उसका मुख चूम लिया। वह बोला :

"सचमुच ही तुम आदर्श पुरुष हो। तुम मुझे अपने पुत्र की तरह प्यारे हो। मैं तो तुमसे पहिले ही खुश था परन्तु अपनी पुत्री की इच्छा जानना चाहता था कि सचमुच ही यह भी तुमसे प्रसन्न है अथवा नहीं।

दरबार में खुशी की लहर फैल गई, क्षण भर में ही पाँसा पलट गया था। राजकुमारी अपने पिता के वक्ष से लिपट गई। आनन्दातिरेक सरदार ने अपनी पुत्री का माथा सूँघा। मन्त्री ने इंगित किया और प्रहरी भाग चला, दूसरे ही क्षण राजप्रासाद के बाहर भेरी निनाद होने लगा। नरसिंहे फूँके गये, वह स्वर हवा में तैरता नगर में फैल गया। तोरणों पर नगाड़े बजने लगे, विद्युत गति से समाचार सारे नगर में फैल गया, आनन्द की लहर छा गई, उस

दिन सायकाल सरदार ने अपनी पुत्री का विवाह उस राजकुमार के साथ कर दिया और उन्हे यहीं रहने के लिये एक महल, कई गाँव और बहुत-से मवेशी दिये। जब रात हुई तो राजकुमार ने अपनी स्त्री से कहा, "ज्योतिषियों ने मेरी मृत्यु के बारे मे भविष्यवाणी की है कि मगर, साँप अथवा कुत्ता इनमें से कोई भी मेरी मृत्यु का कारण होगा।"

राजकुमारी ने यह सुनते ही दासी को आज्ञा दी, "इस कुत्ते को ले जाओ और बाहर खडे सैनिकों से इसे मरवा डालो।"

"नही-नहीं यह कुत्ता मुझे बहुत प्यारा है। मै इसे नहीं मरने दूँगा।"

राजकुमार ने फौरन विरोध किया। राजकुमारी चुप रह गई परन्तु वह उसी घडी से राजकुमार के जीवन की रक्षा मे चिन्तित रहने लगी।

कई दिन बीत गये कोई खास घटना नहीं हुई। केवल राजकुमारी उस कुत्ते की ओर से सजग रहने लगी थी।

राजकुमार भी अपनी स्त्री की ओर से सतर्क था। उस कुत्ते को वह उसे हमेशा अपने साथ रखने लगा था क्योंकि उसे शक था कि कहीं उसकी स्त्री उसे मरवा न डाले। एक बार राजकुमार अपनी स्त्री को लेकर मिश्र देश में भ्रमण करने के उद्देश से गया। उसके साथ एक भयानक दानव भी था। वह जाकर एक निरापद स्थान में ठहर गया। दानव राजकुमार का सरक्षक था और इसीलिए उसे सायकाल के बाद घर से बाहर नहीं जाने देता था। उसे मालूम था कि नित्य संध्या समय जब अँधेरा झुकना शुरू हो जाता था तो नील नदी से एक मगर किनारे पर आता जो बडा विशाल और भयकर था। वह मगर न जाने क्यों राजकुमार के मकान की ओर लोलुप दृष्टि से देखा करता था। दानव स्वयं जादूगर भी था। उसने अपने जादू से पता चला लिया कि मगर की नीयत खराब थी। उसने एक मिट्टी की रँगी रँगाई राजकुमार की नकली मूर्ति बनाई। मूर्ति को उसी के से कपडे भी पहिनाये और उसे अपने जादू के मन्त्रों से भर दिया। उसे ले जाकर दिन में ही नील के किनारे कगारे के पास रेत के बने एक ढूह की आड मे रख दिया। जब शाम को अँधेरे में मगर उधर से निकला तो वह उस पुतले को देखकर

बहुत प्रसन्न हुआ और चुपचाप उस ओर मुड़ा। जब पास पहुँचा तो देखा कि उसका शिकार सो रहा था। वह झपटा और उसने उस पुतले को मुँह मे भर लिया। जादू का असर हुआ और वह मगर उसी क्षण लकडी का बन गया। इधर जब राजकुमार को स्त्री को जलाने का ईंधन घटने लगा तो दानव ने सेवको से उठवा कर वही मगर उसे दे दिया। राजकुमारी ने लकडहारे को बुलवाकर उसे फड़वा दिया और जब वह टुकडे-टुकडे हो गया तो नित्य जलाने के काम मे लाया जाने लगा, इस प्रकार दानव ने राजकुमार के प्राणो की रक्षा की। दानव नित्य रात्रि के समय घर से बाहर चला जाता था, जब वह आ जाता तो दिन मे राजकुमार बाहर जाता। इसी प्रकार दो महीने और बीत गये। एक दिन राजकुमार ने अपने यहाँ जशन किया। सुन्दरी मिश्री नर्तकियो ने विचित्र अग चालन करके नृत्य किया। नाना प्रकार के तारो के वाद्य बजाये गये और सगीतज्ञों ने गाने गाये। काफी रात तक जशन होता रहा। तदुपरान्त जब सब कुछ समाप्त हो गया तो थका-माँदा नशे मे चूर राजकुमार आकर सो गया। उसकी रूपवती स्त्री ने सोने से पहिले नित्य की भाँति स्नान किया और अपने सारे शरीर मे सुगन्धित तैल मलवाया। उसी समय उसकी निगाह दीवाल मे एक छेद से निकले हुये एक साँप पर पडी जो कि सिर उठाये राजकुमार को काटने चला आ रहा था। उसने उसे देखा और एक बार तो भय से वह ऐसी घबडा गई कि उसकी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई परन्तु शीघ्र ही उसने अपने आपको सँभाला। वह तुरन्त उठी और एक बडे चाँदी के कटोरे मे मधु मिश्रित दूध भर कर लाई। उसमे उसने काफी मात्रा मे मीठी परन्तु तेज मदिरा भी मिला दी। उस कटोरे को जमीन पर रख कर वह हट गई। साँप आया और उसने दूध देख कर प्रसन्नता से उसे पीना शुरू कर दिया, वह इतना मीठा था कि वह एक ही साँस मे सब पी गया और तुरन्त बेहोश होकर गिर पडा।

राजकुमारी ने अपने छुरे से टुकडे-टुकडे कर डाले और उन टुकडो को स्नानागार मे फेंक दिया। फिर उसने उस स्थान को साफ करक अपने पति को जगाया और उसे स्नानागार मे लेजाकर उन टुकडो को दिखाया, परन्तु कहा कुछ नहीं। राजकुमार भय से विह्वल हो उठा। उसने समझा

कि देवताओं ने ही इस आपत्ति से उसकी रक्षा की है। वह उसी दम पृथ्वी पर साष्टाग दण्डवत् करके उनको प्रणाम करने लगा। तत्पश्चात् उसने राजकुमारी को प्रेमावेश मे हृदय से लगा लिया।

कुछ महीने और निकल गये। एक दिन राजकुमार शाम के वक्त घर से बाहर घूमने निकला। उसका कुत्ता भी उसके साथ चला। नील के किनारे पहुँच कर कुत्ता पूर्ववत् शिकार को देख कर पानी में कूद पडा। राजकुमार नदी के किनारे खडे होकर उसे देखने लगा। उसी समय पानी से एक मगर निकला, राजकुमार उसे देख कर घबराया और तभी मगर उससे बोला :

"पहली बार दानव ने तुझको मुझसे बचा लिया था, जब उसने मेरा शरीर लकडी का बना दिया था। मै उसी समय अपने प्राणों को लेकर इस शरीर मे घुस आया था, इससे पहिले एक बार तेरा कुत्ता, सॉप और एक मगर से सयोग हुआ था। तू मूर्छित होकर गिर गया था, परन्तु जान और समझ ले कि तीन तो क्या किसी दो के इकट्ठे होने पर तू अवध्य है, आज भी कुत्ता मोजूद है, इसलिए मै तुझे नही मारूँगा। दानव जादूगर है। यदि तू भी जादू करने लग जाय तो भी मै तेरा पीछा नही छोडूँगा। अब की बार जब भी तू मुझे अकेला मिला, समझ ले जीवित बचकर नहीं जायगा। सावधान!"

इतना कह कर मगर पानी मे डुबकी ले गया।

राजकुमार ने घर आकर सोचा कि प्राण वचाने का अब एक ही उपाय था और वह यह कि अपने पालतू कुत्ते का साथ कभी न छोडे। वह पास रहेगा तो न तो मगर ही और न सॉप ही उसका कुछ बिगाड सकेगे और उसी दिन से वह उस कुत्ते को एक पल के लिए भी ऑखों से ओझल नहीं होने देता था।

इसी बीच एक दिन जब वह मिश्र के उस उपनगर मे घूम रहा था। सामने से राज्य के कुछ सैनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर आ रहे थे। राजकुमार भूल गया कि वह अज्ञात वास कर रहा था और प्रतिष्ठित रूप मे उसने एक टीले पर चढ कर उन्हें राजकीय भाषा मे रुकने का आदेश दिया। सैनिक तुरन्त खडे हो गये बल्कि उनके नायक ने आगे बढ कर मर्यादापूर्वक उसका अभिवादन भी किया। वह बोला :

"श्रीमान मै आपको पहिचान गया हूँ। आपके पिता फराओ महान की आज्ञा थी कि जो भी उनके पुत्र को ढूँढ कर लायेगा उससे वह प्रसन्न होगे। आज मेरा भाग्य उदय हुआ है जो मैने आपके दर्शन पा लिये, चलिये क्योकि सम्राट आपको देखने के लिए आतुर हो रहे ह।"

अब छिपने का और कोई चारा नही था, अज्ञात ही भेद खुल गया था। राजकुमार कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा, फिर बोला :

"चलूँगा, सैनिक चलूँगा, परन्तु अभी नहीं, पहले मै घर हो आऊँ।"

और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुये ही वह अपने घर की तरफ चल दिया। नायक हत-प्रभ-सा देखता रह गया। परन्तु तुरन्त ही उसने अपना कार्य निश्चित किया। आधे सैनिक उसने राजकुमार के पीछे रवाने किये और आधो को स्वय लेकर तीव्र गति से राजप्रासाद की ओर चला।

ऐमेन होतेप उदास बैठा था। नायक की बात सुन कर वह हर्ष से उछल पडा। अब एक पल भी पुत्र को देखे बिना उसको चैन नही आ रहा था। उससे मिलने के लिये वह अत्यन्त अधीर हो उठा था।

राजकुमार घर पहुँचा। उसने देखा कि उसकी स्त्री ने आज मौका पाकर उसके कुत्ते को मरवा डाला था। क्रोध से भनभनाता हुआ वह अपनी स्त्री के शयन कक्ष की ओर चला। सुन्दरी राजकुमारी उस समय वैवेल देश की बनी हुई कलापूर्ण चन्दन की चौकी पर बैठी हुई दासी से अपने पेरो मे हड़प्पा से व्यापारियो द्वारा लाया हुआ आलक्तक लगवा रही थी। उसके घुँघराले केश पीठ पर उन्मुक्त पडे थे। उस समय उसकी पतली कटि से केवल एक वस्त्र ही बँधा था। शेप सब कुछ उन्मुक्त था। दिन के उजाले मे अपनी स्त्री के उस अपूर्व सौन्दर्य को देख कर वह ठिटक गया और परदे के पीछे छिपकर उसे देखने लगा। अपना सारा क्रोध वह भूल गया। कुछ देर तक वह वही खड़ा रहा, फिर हटा और दीवाल के सहारे छिपता हुआ एक दूसरे परदे के पीछे जाकर खड़ा हो गया। वह आज अपनी स्त्री के सामने आश्चर्य-पूर्वक एकाएक पहुँच जाना चाहता था। उसी समय वाहर तोरण पर भीपण कोलाहल होने लगा। वज्र कठ से फराओ का जयजयकार होने लगा। राज-

कुमारी ने हाथ उठाकर घबराते हुये दासी को इंगित किया कि वह उसके शरीर पर स्तन पट्ट बाँध दे और उत्तरीय उढा दे, वह स्वय भी उस रव को सुन कर घबडा गई थी। तभी नीचे धडधडाहट तथा कई व्यक्तियो के शीघ्र चलने की आहट आई और सारा घर उस धमाके से गूँजने लगा। राजकुमारी अब घबडा कर खडी हो गई और उसने दासी को तुरन्त नीचे जाकर हाल मालूम करने को आज्ञा दी। वह शीघ्रता से स्वयं ही पट्ट बाँधने लगी। परन्तु वह सफल नहीं हो रही थी क्योंकि स्वय उसे इसका अभ्यास नहीं था। वह जल्दी मे बार-बार उसे खीचती और हर बार उसका दमकता-हुआ यौवन मानो उस बन्धन का विरोध करता हुआ थिरक उठता। निर्निमेष दृष्टि से राजकुमार पर्दे की ओट से अँधेरे मे खडा हुआ उस उफनते हुये यौवन के रस को पी रहा था। उसे तन-बदन किसी की सुधि नही थी। देखते-देखते अनायास ही उसने परदे को हाथ से ऊपर उठाकर पकडा और उचक कर उस समय खडी हुई राजकुमारी की नग्न-कटि देखना चाहा। उसी समय भयानक चीत्कार करके वह वहीं गिर पडा। परदे के ऊपर छिपे हुये काल के अग्रदूत भुजग ने उसे ग्रस लिया था। राजकुमारी उस पहिचानी हुई चीत्कार के स्वर को सुन कर स्तन-पट्ट फेंक कर उसी भाँति दौड पडी। पलक मारते वहाँ पहुँच कर उसने वह परदा खींच कर गिरा दिया और साथ ही भयातुरा होकर चीत्कार कर उठी। उसने देखा उसका पति नीचे गिरा हुआ है और उसके शरीर पर कुन्डली मारे काला सर्प बैठा है। उसी समय बाहर से धडधडाते हुये कई आदमी कक्ष के अन्दर घुस आये। आगे आने वाले सैनिक ने उच्च कठ से चिल्ला कर कहा :

"रा के पुत्र फराओ महान का आगमन हुआ है। जो भी यहाँ हो उसके सामने नत मस्तक हो जाय . "

"कहाँ है मेरा पुत्र . कहाँ है ?"

दीर्घाकाय फराओ चिल्लाया और तब जब सामने ही अपने पुत्र को नीचे पडे देखा तो घबडा कर वह उसके पास झुक गया। राजकुमार नीला पड चुका था। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे। उसने एक बार पिता क

देखा, फिर स्त्री को ओर उसकी गर्दन लुढक गई। वह मर गया। राजकुमारी जो अब तक गुमसुम सी बैठी रह गई थी अब उठी और उसने झपट कर विद्युत गति से उस सर्प को पकड लिया ओर उसके फन को अपने वक्ष से मसल डाला। वह मरना चाहती थी। परन्तु वह नही मरी। सबने आश्चर्य-चकित होकर देखा कि उसके हाथ मे अब जीवित सर्प नही बल्कि लकडी का बना एक सर्प था। राजकुमारी ने उसे दूर फेंक दिया और अपने पति के शरीर से लिपट कर गला फाड कर रोने लगी। ऐमेन होतेप दीर्घ श्वाश लेकर वही मूर्छित हो गया। इतने दिनों बाद उसे खोया हुआ पुत्र मिल गया था।

— -o-. —

अमरीकन—

गोविला

कैलीफोर्निया के पास जिगुल्माट्ट नामक स्थान मे एक बुढिया रहती थी। वह अत्यन्त दुर्बल और निर्धन थी। वह अकेली ही थी और उसका नाम ट्सोरे-जोवा था। प्रति वर्ष बसत ऋतु मे वह पश्चिम दिशा मे जाकर साल भर खाने के लिये जगली कद खोद लाती थी।

एक बार उसे एक बडी जारौद दिखाई दी। वह उसे खोदने लगी। जब चारो ओर से वह खुद गई तो ट्सोरे-जोवा ने उसे पकड कर खींचा, पर वह नही उखडी। बुढिया ने चारों ओर से फिर खोदा और अबकी बार काफी गहरा खोदने लगी। जब काफी खुदाई हो गई तो जड ढीली पड गई और बुढिया ने उसे खींच कर अलग रख दिया, परन्तु उसके नीचे उसने एक जीवित बालक लेटा हुआ पाया। बुढिया एक बार तो भय से चीख उठी पर फिर साहस एकत्रित करके उसके पास आई। बालक की आँखे बाहर निकली हुई थीं। उसने धीरे से उन्हें अपनी जगह पर बिठा दिया और फिर उसके हृदय मे उसके प्रति प्रेम का एक तूफान उमड आया। उसने उसे उठा लिया और अपने पास की खरगोश की खाल उसे उढा दी। वह उसे अपने घर ले आई। रात को उसने उसे बकरी का दूध पिलाया और पालने मे सुला दिया। दूसरे दिन सुबह बुढिया ने देखा वह कल से बहुत बडा हो गया था। बुढिया उसे ध्यान-पूर्वक देखती रही। उसने उसे सारे दिन देखा, सारी रात देखा, जब वह पाँच दिन का हुआ वह काफी बडा हो गया था। छठे दिन वह सडक कर खेलने लगा। बुढिया उसे चुपचाप देखती रही। नवे दिन वह बालक चलने-फिरने लगा। पँद्रहवे दिन वह काफी बलिष्ठ हो गया और उसने उस बुढिया से कहा :

"मुझे एक धनुष और कुछ तीर दे दो।"

"नहीं, नहीं तुम घर छोड कर बाहर कहीं मत जाओ", बुढिया बोली।

"अब मुझे ढॅक दो" लड़का पानी मे पड़ा हुआ बोला। बुढिया ने एक दूसरा पानी से भरा पात्र उस पहिले पात्र पर रखकर उसे बिल्कुल ढॅक दिया। लडका उबलते पानी मे पडा रहा। जब पानी बहुत गर्म हो गया तो उसमे से भाप निकली जिसने ऊपर का पात्र फेक दिया। भाप तेजी से बाहर निकली और उसके साथ वह लडका भी बाहर उड गया और छत पर जाकर गिरा। वहाँ से उतरकर वह जल्दी-जल्दी नीचे आया और फिर दोडकर नदी के ठडे जल मे कूद गया जहाँ देर तक वह तैरता रहा।

जब वह लौटकर आया, उसकी दादी उसकी विचित्रताओ से चकित हो गई थी। वह उससे बोली :

"तुम बहुत बलवान बनोगे। इल्हैटिऐन्त के नाम से प्रसिद्ध होगे।"

लड़का फिर पूर्व दिशा की ओर भाग गया। अबकी बार वह एक मीठा पाइन का पेड उखाड कर ले आया। फिर पानी उबाला गया और अलाव लगाया गया। लडका फिर खौलते पानी मे उतर गया और इस बार बुढिया ने उसे चार पात्रो से ढॅक दिया। जब भाप बनी तो सभी पात्र उड गए और वह लडका भाप के साथ छत पर पहिले से भी अधिक वेग से उड गया। वह फिर नदी मे तैर कर नहाने लगा। देर तक नहाने के बाद जब वह घर लौटा तो बोला :

"अब मै गोविला से मिलूँगा "मै जा रहा हूँ," और तब उसने वही पुराना धनुष और कई विषैले तीर अपने साथ ले लिये। उसकी दादी उसका जाना देख कर चिन्तित हो उठी। उसने उसे रोकना चाहा। वह उससे बोली :

"नहीं पुत्र मुझे छोड कर कही मत जाओ मुझे अकेला न छोडो मेरी आँखों के सामने ही बने रहो," बुढिया ने यह सब बडे दीन स्वर से कहा पर उसने जैसे सुना ही नही। औहर की खाल से बने बीस तरकस उसने दीवाल से उतार लिये जो सभी तीरो से भरे हुए थे। उन्हे लेकर वह बोला :

"इन्हे मै आपने साथ ले जाऊँगा।"

बुढिया ने जब यह निश्चय जान लिया कि यह अवश्य जायगा तो उसने उसको रास्ते के लिये खाना बना कर दिया। उसने कई कद पकाये और मास भूनकर उसे दिया। लडका उस सबको लेकर पश्चिम की ओर चल दिया।

बहुत दूर जाकर उसे एक स्थान पर पेडो के घने झुरमुट मिले। वह वहीं रुक गया और उसने अलाव लगाया। आग की रोशनी चारो ओर फैल गई। अब उसने पेडो की डालियों पर साल्मन मछलियाँ स्थान-स्थान पर लटका दी और जादू द्वारा एक विचित्र मोर वहाँ उत्पन्न कर दिया। ऐसा लगता था जैसे वहाँ बहुत से स्त्री-पुरुष हँसी बोल रहे हैं। हालाँकि वहाँ उसके सिवा और कोई भी न था। यह सब उसने गोविला को आकर्षित करने के लिए किया था।

तत्पश्चात् वह कद खोदने लगा। खोदते समय वह इधर-उधर बिल्कुल भी नही देखता था। शीघ्र ही एक अत्यत कुरूप परन्तु अति बलिष्ठ आदमी उत्तर दिशा से आया। उसके साथ भेडिये की नस्ल का एक भयकर कुत्ता भी था। यही व्यक्ति गोविला था। उसकी पीठ पर लबे सींगो वाले हिरन का एक सिर लटक रहा था। उस समय वह लडका मधुर स्वर से गा रहा था। गोविला उसके गीत पर रीझ गया। वह उससे बोला :

"तुम वास्तव मे बहुत अच्छा गाते हो ", परन्तु इल्हैटिऐन्त ने सिर ऊपर नहीं उठाया। गोविला फिर बोला :

"आग के पास आजाओ . ।"

लडका फिर भी नहीं बोला। खोदने मे वह तन्मय बना रहा, गोविला थोडी देर चुप रहा। उससे फिर कहा :

"आग के पास आ जाओ .... मुझे बडी भूख लग रही है", लड़का फिर भी नहीं बोला। पर फिर थोडी देर बाद वह उठा और आग के पास आ बैठा। गोविला ने उससे पूछा :

"तुम गाना बहुत अच्छा गाते हो, तुम कहाँ के रहने वाले हो ?"

लड़के ने उत्तर दिया :

देखो मै उस दुष्ट के फेफडे और उसका गुरदा अपने साथ लाया हूँ ", यह कहकर उसने वह चीजे बुढिया को दिखलाई। अब वह बहुत प्रसन्न हुई। वह बोली :

"जाओ पुत्र अवश्य जाओ। तुम सचमुच ही बहुत वीर हो—अब मुझे किसी का भय नही है।"

"तुम फिक्र न करना दादी," लडका बोला, "कल प्रात काल यहीं वापस आ जाऊँगा।"

अब वह गोविला के मकान की तरफ चला जो उत्तर मे स्थित था। वह बहुत दूर था परन्तु इल्हैटिऐन्त जल्दी ही वहाँ पहुँच गया। जब वह घर के पास पहुँचा तो बिल्कुल गोविला की सी चाल चलकर गया। वहाँ जाकर उसे पता चला कि उस स्थान पर तो बहुत से आदमी रहते थे। वहाँ सर्प-मनुष्य भी बहुत थे जो आधे सर्प तथा आधे मनुष्य थे। उनके अतिरिक्त साँप भी बहुत प्रकार के थे। रगदबसी, भुजग, ककरगडा, घोडापछाड, धामिन, पनिया तथा सहस्रो भाँति के साँप वही फुफकारी मारा करते थे।

लड़के ने गोविला के फेफडे और जिगर को मकान के बाहर ही एक स्थान पर लटका दिया और फिर अदर जाकर गोविला की दोनो स्त्रियो के बीच वह बैठ गया। कुत्ता पास ही अपने स्थान पर लेट गया वह दोनो स्त्रियाँ आपस मे बहिनें थी। लड़का उनसे बोला :

"बाहर मास लटक रहा है उसे ले आओ और अच्छी तरह पकाओ, भूख लग रही है।"

तत्पश्चात् जब वे स्त्रियाँ उस मास को उसके पास ले आई तो उसने चाकू लेकर उसे टुकडे-टुकड़े कर दिया। उन टुकड़ो को उन स्त्रियो ने पानी मे डालकर आग मे सिझा लिया। वह बहुत देर मे सीझे और उनमे से इतनी भाप निकली कि सारे घर मे फैल गई।

फिर सभी ने बैठ कर उन टुकड़ो को खाया। जब सभी खा रहे थे। उस समय इल्हैटिऐन्त उठ कर बाहर आया जहाँ उसे हजारों आदमियो के पैर दिखाई दिये। यह पैर सारे मकान मे इधर-उधर बिखरे पड़े थी। गोविला

मनुष्यों के शरीरों को तो खा जाता था परन्तु उनके पैरों को वैसे ही फेंक देता था। लड़के ने यह सब देखा और चुपचाप वह घर के अंदर आ गया।

जब रात को सभी सो गए तो वह उठ कर बाहर आ गया, उसने बाहर निकलने का दरवाजा मजबूती से बंदकर दिया और बाहर खड़े होकर बोला :

"इस मकान की दीवारों पर कलौंच छा जाय—यही मैं चाहता हूँ", उसने इतना कहा ही था कि एकदम सारे घर पर कलौंच छा गई। तत्पश्चात् उसने उस मकान में आग लगा दी। वह बाहर खड़ा हुआ अंदर जलते हुये लोगों की भयानक चीत्कारें सुन रहा था। शीघ्र ही सब शोरगुल मिट गया। गोविला की स्त्रियाँ तथा सर्प-मनुष्य, अन्य सर्प सभी जलकर मर गए।

अब उस लड़के ने उन सभी पैरों को इकट्ठा किया जो वहाँ बिखरे पड़े थे और अंगूर की एक लंबी बेल से उन्हें बाँधकर अपने घर ले चला। वहाँ पहुँच कर उसने उन पैरों को नदी के जल में डाल दिया जहाँ वह एक स्थान पर रखे रहे और भींगा किये। उसी समय सिंदूरा फूटा और दिन निकल आया। इल्हैटिऐन्त तब अपने घर चला गया।

बुढ़िया बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। पहुँच कर वह उससे बोला : "मुझे शीघ्र किसी बड़े टोकरे में छिपा दो और खुद सिर के नीचे दोनों हाथ देकर पृथ्वी पर औंधी सो जाओ।" उसने ऐसा ही किया।

जब तीसरा पहर हुआ तो घर से बाहर बहुत से आदमियों की आवाज आने लगी। वे सब लोग नदी के जल से बाहर निकल कर आ रहे थे। एक-एक कर के सभी घर के अंदर आ गए। उसी समय बुढ़िया उठ कर खड़ी हो गई। उसने देखा उसके सब आदमी बंधु-बाँधव, पुत्र,-पौत्र तथा सगी स्त्रियाँ सभी जीवित होकर वापस आ गई थीं। वह उन्हें देख कर बहुत खुश हुई।

"हमें किसने पुनर्जीवित किया ?" एक ने पूछा।

"हम उसे देखना चाहते हैं दादी ! उसे हमें दिखाओ," दूसरा बोला। बुढ़िया ने टोकरा खोला और उसमें से उस लड़के को बड़े स्नेह से बाहर निकाला। वह बोली : "इसने।"

"शाबाश भाई, तुमने बहुत अच्छा किया।" सभी उससे कहने लगे। अब उसे सभी भाई कहने लगे और उन्होंने उत्सव मनाया। खूब खा पी कर गाना गाते हुए वह नाचने लगे। उसी समय इल्हैटिऐन्त बोल . 'मै जा रहा हूँ मै यहाँ नही रहूँगा।"

"कहाँ जाओगे मेरे भाई?" एक ने प्रश्न किया। लडका चुप रहा, बोला नही। बुढिया अब रोने लगी, वह उसे जाने नहीं देना चाहती थी।

"कही मत जाओ भैया", एक और बोला। पर फिर भी वह लडका नहीं बोला। तब एक और बोला :

"लाख और चपड़ा लोगे?"

"नही", उसने उत्तर दिया।

"घोंघे, शख?"

"नही।"

"भेडिये की खाल की पोशाक?"

"नहो।"

"बिलाव के खाल की पोशाक?"

"नही।"

"लोमडी की खाल की पोशाक?"

"नही।"

"तब यह पुरानी खरगोश की खाल लोगे जिसे मै अपनी पीठ पर बहुत दिनो से पहिन रहा हूँ?"

"हाँ", इल्हेटिऐन्त ने उत्तर दिया। "यही मुझे चाहिये।"

उसने वह लेकर अपनी कमर मे कसकर बाँध लिया। तत्पश्चात् वह कहने लगा .

"अब बाहर चलकर देखो, मै कैसे जाता हूँ। देखो मै बिलकुल तैयार हूँ।"

बाहर आकर उन्होंने देखा कि आकाश मे एक काले बादल का टुकड़ा तैर रहा था। उसी को देखकर इल्हैटिऐन्त बोला :

"मै उसी मे चला जाऊँगा जब कभी पानी बरसे तो समझना मै ही उसे अपनी इस पुरानी खरगोश की खाल मे से बरसा रहा हूँ।"

जब वह बादल सिर पर आ गया तो वह फिर बोला :

"लो मैं चला आयंदा तुम लोग मुझे इस प्रकार यात्रा करते देखोगे।" और तभी पृथ्वी से उस बादल तक बिजली कौंध गई जिसमे वह अदृश्य हो गया। सभी लोग उदास हृदय से उसे देखते रह गए। कद की जड से निकल कर वह आकाश में बिजली बन कर हमेशा के लिये चला गया।

—·०·:—

बीलोनियन—

आदि पुरुष अप्सु

चारो तरफ पानी ही पानी छा रहा था। उसका रग नीला था। उस पानी के सिवा कही भी कुछ नही था। पानी की लहरे ही लहरें उठा करती थीं, लेकिन उस पानी का कही भी किनारा नहीं था। बिना किनारे का वह पानी ऊपर नीचे, अगल-बगल, उत्तर दक्खिण, पूर्व ओर पश्चिम सब जगह छा रहा था। उसकी मोटाई का कोई अत ही नही था, क्योंकि उसके सिवा और कुछ कही था ही नही। उस समय न तो आकाश मे स्वर्ग के बारे मे कोई जानता था, न कोई यही जानता था कि धरती क्या है।

वह पानी एक महासागर था। वह हिलता, गरजता, लेकिन उससे कोई भी बात नही करता था।

कभी कभी वह पानी सुनता कि उसके माँ और बाप बात कर रहे हैं। उस महासागर के पिता का नाम अप्सु था और माँ का नाम तइमात था। लेकिन अप्सु और तइमात से पहले कोई नही था। अप्सु बडा बली था और तइमात बड़ी सुन्दरी थी। लेकिन तइमात भयानक भी थी। बल्कि यह कहना ठीक होगा कि तइमात मे हलचल की आत्मा थी।

तइमात और अप्सु कहाँ रहते थे, यह महासागर को मालूम नही था। वह इतना जानता था कि उसका कोई किनारा नहीं है और धरती न होने से वह कहीं दलदल भी पैदा नही कर पाता था और महासागर के इतने बडे होने से ही अप्सु और तइमात भी असल मे उसी मे रहते थे। एक दिन महासागर को लगा कि उसके भीतर कुछ है जरूर। वह क्या है यही वह सोचने लगा। तभी उसका पानी जोर-जोर से हिलने लगा और लहरों पर लहरे उठने लगीं।

महासागर घबराया। उसने पुकारा "माँ तइमात। पिता अप्सु!!"

किन्तु उसे न माँ ने जवाब दिया, न बाप ने। तभी एक व्यक्ति बाहर निकल आया।

महासागर ने अपनी भारी आवाज मे पुकारकर कहा : "जिन लहरों पर आज तक कोई नहीं चला, उनके ऊपर दिखाई देने वाला तू कौन है ?"

निकले हुए व्यक्ति ने चारो ओर देखा और चारों ओर पानी ही-पानी देखकर वह पानी के बाहर हो गया।

महासागर ने फिर गरजकर कहा : "तू कौन है ? कहाँ से आया है ? तेरा नाम क्या है ? तू कहाँ जायगा।"

उसकी वह भारी आवाज सब तरफ गूँज गई, इतनी गूँजी कि वह पानी पर ही लौट कर घूमने लगी।

निकले हुए व्यक्ति ने कहा : "तू कौन है ?"

महासागर ने कहा : "मै अप्सु और तइमात का बेटा हूँ। मेरी माँ में हलचल की आत्मा है। जब वह चलती है तो कुछ भी अपनी जगह ठहरा नहीं रहता। मै उसका बेटा हूँ। मेरे सिवा और कुछ नही है।"

"नहीं, मै हूँ," निकले हुए व्यक्ति ने कहा, "मै देवता हूँ। मेरा नाम लछमू है। मै तेरे इस गहरे जल मे से निकला हूँ। तेरा पानी बड़ा गहरा है। मै कहाँ जाऊँ, मै अकेला हूँ।"

"क्यो", महासागर ने उसी तरह भारी आवाज से पूछा, "क्या तेरे साथ तेरी स्त्री नहीं है ? क्या तुझे देवी नही मिली ?"

"नहीं", लछमू ने कहा।

तभी पानी के ऊपर खलभल-खलभल सी होने लगी और बुलबुले से फूटने लगे। उस आवाज मे किसी ने सुरीले स्वर से कहा : "मै कहाँ हूँ ?"

"यह कौन है ?" महासागर ने पूछा।

यह एक स्त्री थी जो पानी मे से निकली थी।

उसने कहा : "मै लछामू नाम की देवी हूँ।"

इसके बाद कोई नहीं बोला। अप्सु और तइमात महासागर में साथ रहते थे। लछमू और लछामू साथ रहते थे, लेकिन महासागर अकेला ही था।

और इसी तरह अकेले ही जाने कितने दिन-रात बीत गये, कितने महीने और ऋतुएँ बीत गई और न जाने कितने वर्ष और युग भी बीत गये, क्योंकि तब न सूरज था न चाँद न दिन होता था न रात।

जब कई युग बीत गये तब एक दिन फिर पानी पर हलचल हुई और अबकी बार दो व्यक्ति पानी पर निकल आये।

महासागर ने पुकार कर पूछा "तुम कौन हो?"

उनमे से एक पुरुष था, उसने कहा "मै देवता अशार हूँ।"

"और तू?" महासागर ने स्त्री से पूछा।

स्त्री ने कहा "मै देवी किशार हूँ।"

"अच्छा!" महासागर ने कहा "पहले मै केवल अप्सु और तइमात को जानता था। फिर लछमू देवता और लछामू देवी को जान गया। अब तुम दोनो आये हो, अशार देवता और देवी किशार!"

अशार और किशार को निकले भी कई दिन बीत गये। जब ये लोग भी पुराने पड गये तब महासागर मे फिर हलचल हुई। महासागर ने पुकारा: "अबकी बार कौन निकला?"

एक देवता निकला। वह आकाश बन गया।

महासागर ने पूछा: "तू कौन है?"

देवता ने कहा: "मेरा नाम अनु है, मै आकाश का देवता हूँ।"

"और", महासागर ने पूछा, "यह तेरे साथ कोन है?"

"यह अनातु है, मेरी स्त्री," देवता ने कहा, "यह मेरी स्त्री है। वैसे यह देवी है।"

"हूँ," महासागर ने कहा।

"हूँ।" अनु ने दुहराया और कहा: "महासागर! ओ महासागर!!"

"क्या?" महासागर ने कहा।

"तूने इसे नहीं देखा," देवता अनु ने कहा।

"हाँ। यह कौन है?"

"यह भी अभी निकला है, जल मे से ही।"

“इसका नाम क्या है ?”

“इश्रा।”

“इश्रा ?”

“हाँ यह देवता इश्रा है। यह बड़ा बुद्धिमान है, बड़ा शक्तिमान है।”

“अच्छा ? मुझसे भी ?”

“हाँ तुझसे भी, क्योंकि इसकी बराबरी करने वाला कोई भी नहीं है। इसकी-सी ताकत किसी मे भी नहीं है।”

उस समय इश्रा ने कहा : “जानो और सुनो कि मेरा नाम इश्रा है। मै इस महासागर का देवता हूँ। मेरा नाम इश्रा ही नहीं है। मेरा दूसरा नाम ऐन्की है। मै पृथ्वी का भी स्वामी हूँ। मै बड़ा बली और बड़ा शक्तिमान हूँ।”

अभी उसकी बात समाप्त भी नहीं हुई थी कि प्रकाश बिखेरती दमकीना जल के बाहर निकली। उसने ऊँचा हाथ उठाकर सबको प्रेम से देखा।

अनु चकित होकर चिल्ला उठा :

“यह कौन है ?”

ईश्रा ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया :

“यह है मेरी स्त्री दमकीना। यह पृथ्वी की स्त्री है इसलिये इसे गाशानकी भी कहते हैं। परन्तु अब यह देवी है।”

सागर शात हो गया। अनु, अनातू सहित आकाश में चला गया। ईश्रा केवल दमकीना के साथ सागर तट पर रह गया।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। एक दिन सागर फिर हिल उठा। ईश्रा की स्त्री ने पुत्र को जन्म दिया। वह पुत्र बहुत कीर्तिवान तथा सुन्दर था। उसका नाम बेल रखा गया। वह जब छोटा था तो सागर की लहरों पर चढ़कर खेला करता। उसने बड़ा होकर पृथ्वी पर मनुष्य की रचना की।

सभी देवता लोग अभी तक जीवित थे, और सभी बलशाली थे। उनका राज पाट पूरे जोर-शोर से चलता था।

देवताओं में अब प्रधानता ईआ की थी जो सर्व शक्तिमान माना जाता था। दमकीना सुन्दरी तो थी ही पर अब अपने अधिकार और पद से प्रसन्न उसका शरीर दमका करता, बेल उसका प्रतिभाशाली बेटा था, जिसने दुनिया मे इसान बनाया था। सभी उसका आदर करते थे।

यह बात आदि देवता अप्सु को सहन नहीं हो पाई। वह इन नये छोकरे को राजा भला कैसे मान लेता। इसके अतिरिक्त एक बात और थी। अप्सु और तईमात अब तक हलचल और अँधेरे भरे वातावरण मे रहने के आदी थे। अब जो इन नये देवताओ ने सारी दुनिया मे शान्ति की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया तो यह उनसे देखा नही गया। अप्सु अब भी पराक्रमी था। वह भयानक भी बहुत था। तईमात पड़ी-पडी गुर्राती थी और भयङ्कर आँधियाँ छोड़ा करती थी। दोनो का यही काम था कि सारे विश्व मे उत्पात फैलावे।

अप्सु ने अपने मत्री मुम्मू को बुलाया। यह उसका बेटा भी था और अपने पिता की इच्छाओं को हमेशा पूरा किया करता था। अप्सु इससे बहुत खुश था क्योंकि वह उसकी हर बात मे हाँ मे हाँ मिलाता था।

अप्सु बोला :

"बेटा मुम्मू तुम मुझको बहुत प्यारे हो क्योंकि तुम सदा मेरी आज्ञा का पालन करते हो। चलो हम लोग तईमात के पास चले और इन नये देवताओं को मारने की सलाह करे।"

और दोनो उसी समय तैयार होकर तईमात के पास चल दिये। तईमात फूँको से आंधियाँ बना-बनाकर उडा रही थी। जब उसने अप्सु और मुम्मू को आते देखा तो उठकर बाहर आ बैठी। अप्सू और मुम्मू ने पास पहुँचकर जमीन चूमकर उसका अभिवादन किया। तईमात प्रसन्न हो उठी।

अप्सु ने अब अपना मुँह खोला :

"हे तईमात, तू सदा अपने तेज से दमकती रहती है। तेरा बल बहुत प्रभावशाली है। सारी दुनिया तेरे नाम से काँप जाती है। आज मे तेरे पास इस कारण आया हूँ कि ये नये देवता मुझे चैन नहीं लेने देते। ये हलचल को ही रोक कर पृथ्वी पर नियम बनाना चाहते हैं। मुझे ये लोग दिन मे

आराम नहीं करने देते और रात में सोने नहीं देते। मै इन पर बडे-बडे दुख भेजूँगा और बदला लूँगा और जब ये लोग दुखित हो जायँगे तब मैं बेखटके चैन से सोऊँगा। हे देवी! तुम्हारी क्या राय है?"

तईमात ने सब सुनकर खर्राटा लिया। फिर उसने क्रुद्ध और गरजते तूफानो को बनाकर आकाश मे छोड दिया। वह चारों ओर भयङ्करता के साथ फैलने लगे।

तूफान गरजते हुये आगे बढे। काले तूफान ने पृथ्वी पर अँधेरा कर दिया। लाल तूफान ने खून बरसाया। तईमात ने क्रोध मे भरकर कई श्राप नये देवताओ को दे डाले और उस भयङ्कर हलचल के मध्य मे वह अप्सु से बोली :

"*हमे क्या करना चाहिये, हे अप्सु, कि इन लोगों का काम बिगड़ जाय जिससे बेफिक्र होकर हम फिर हलचल के बीच पडे रह सके?*"

अब तक मुम्मू मत्री चुप था। उसने उत्तर दिया :

"हालाँकि देवता लोग बलवान हैं फिर भी वह आपसे जरूर हारेंगे। हालाँकि उनके निश्चय भी अडिग हैं फिर भी आप उनके विचार नष्ट कर सकती हैं। यदि आप ऐसा करें तो निश्चय ही आप एक बार फिर बेखटके दिनों में आराम व रातों को नींद का सुख प्राप्त कर सकते हैं।"

अप्सु ने जब यह सब सुना तो प्रसन्नता से उसका मुख खिल उठा। परन्तु नये देवताओं का नया काम जब उसे याद आया तो,वैरी होते हुये भी उसका हृदय काँप गया। उसने तईमात से खूब ही शिकायतें कीं कि नये देवताओं ने तो सभी बातो मे दखल देना शुरू कर दिया है। तब तीनो मिल कर शत्रुओं के खिलाफ षड्यन्त्र करने लगे।

ईआ जो सर्वज्ञ था उसे इनके इस षडयन्त्र का पता चल गया। वह बढता हुआ, इनके बहुत पास आ पहुँचा और उसने इन तीनो को बुरी नीयत मे फँसे देखा और सुना। उसने ऊँचे स्वर मे सच्चे हृदय से श्राप दिया। श्राप के छूटते ही अप्सु और मुम्मू अपने आप बैठ गये और ऐसी हालत मे लुढ़क कर ईआ के पास आ गये। ईआ ने उन्हे फौरन गिरफ्तार

कर लिया और शीघ्र कारागार मे बद करवा दिया। अब तईमात अकेली रह गई। वह सोच ही रही थी कि अब क्या किया जाय कि किंगू जो एक और बदमाश देव था अपनी सेना सहित वहा आ पहुँचा और उससे बोला :

"तईमात, क्या सोचती है ? अप्सु और मुम्मू तो पकड़ लिये गए पर ते साथ हम लोग हैं। जब तक हम बदला न ले लेंगे चेन नही लेंगे। तू अपन शत्रुओ से लड़। तू तो खुद बड़ी जबर्दस्त देवी है। कौन नहीं जानता कि तेरे तूफानो का मुकाबला करना कितना खतरनाक है।"

तईमात् ने यह सब सुना तो बोली

"किंगू तू बड़ा बुद्धिमान और अच्छा है। तू सचमुच ही मेरी शक्ति क जानता है। अब मै लड़ूँगी। आओ हम लोग सलाह कर लें फिर लड़ा छेड़ दें।"

शून्य और अतराल के वीर योद्धा इकट्ठे होने लगे। नये अच्छे देवताओं के विरुद्ध हर तरह की बुरी बुरी योजनाएँ बनाई जाने लगीं। वे पूर तरह से जग की तैयारी मे क्रोधपूर्वक काम करने मे जुट पडे। उन्हे सिव बुराई करने के और कोई काम ही न रहा।

माता तईमात की लड़ाई की तैयारी सबसे अधिक भयकर थी। बिजल की तरह वह एक जगह से दूसरी जगह जाती, सेना का निरीक्षण करती। उसने अजीब-अजीब हथियार बनाये। ग्यारह प्रकार के अत्यत भयकर दानव बनाये अतिकाल सर्प जिनके पेने फन बाहर निकले रहते और जिनका विष बहुत ही ज्यादा तेज था, उसने बनाये। उनके सारे शरीर मे रक्त के स्थान पर हलाहल विष भरा हुआ था। ऐसे-ऐसे अजदहे जो अपने खर्राटो से पहाड़ को हिला देते थे और जिनका रूप भयानक था। वह इतने बडे थे कि उनकी छाया से भी कलेजा मुँह को आता। और उनका प्रहार ऐसा प्रबल था कि कोई उसे झेल नहीं सकता था। इतने बड़े अजगर और उड़न-सर्प कि जिनके सामने पड़ना ही मृत्यु को बुलाना था। क्रोध से पागल हुए शिकारी कुत्ते, बिच्छू के डक वाले मनुष्य, मछली के से बदन वाले मनुष्य और पहाड़ी मढे, सब इतने डील डौल वाले और ताकतवर बनाये कि जिनकी सेना प्रचड मालूम होती थी। अब तईमात ने उन सब को विचित्र हथियारो से सज्जित किया।

और आगे बढ़ाया वह हुकार कर आगे बढे। उनमें युद्ध से डरने का नाम निशान नहीं था।

तब तईमात ने, जिसकी आज्ञा अटल थी, महान् किंगू को अपना सेनापति बनाया। उसे उसने भडकीली पोशाक पहिनाई, ऊँचे तख्त पर बिठाया और युद्ध मे नये देवताओं को हराने को उसे उकसाया। वह बोली :

"हे किंगू! मैने तेरा अधिकार सब देवताओं से श्रेष्ठ बना दिया है। तू ही सब का राजा है। सब को तेरी आज्ञा माननी पडेगी। तू महान् है तेरी अवज्ञा जो करने का साहस भी करे वह मौत के घाट उतार दिया जाय। तू मेरा चुना हुआ प्यारा पति है। आगे बढ़ और तेरा साम्राज्य.स्वर्ग और पृथ्वी दोनो मे फैल जायगा।"

फिर तईमात ने किंगू के सीने से भाग्य-तावीज बॉध दिया और कहा :

"अब तेरी अवज्ञा कोई नहीं कर सकेगा, जो कुछ तू कह देगा वह अटल रहेगा।"

किंगू अत्यत गौरव को प्राप्त हुआ और चलते-चलते तईमात ने उसे, पहिले अनु को दिये गए भाग्य के अधिकार को भी अनु से छीन कर दे दिये। वह ऊपर हाथ उठाकर बोली :

"तेरी आज्ञा से अग्नि देवता भी अपना प्रहार नहीं कर सकेगा, युद्ध मे तेरे सम्मुख कोई नहीं टिक सकेगा।"

और दूसरी तरफ ईआ को जो कि सब कुछ जान लेता था इनकी सारी करतूतों का पता चल गया। वह बहुत दुखी हुआ और उसने काफी दिनों तक अफसोस किया। तत्पश्चात् वह उठा और उसने अपने पिता अशार से जाकर कहा :

"गुस्से से पागल होकर हमारी आदि माता तईमात हमारे खिलाफ होकर षड्यन्त्र कर रही है। उसने अपने आसपास के सभी देवता तथा जो तुम्हारे बनाये लोग थे उन्हे भी अपनी तरफ मिला लिया है। वह हमारी सब की शत्रु बन गई और हमारा नाश कर देना चाह रही है।"

और जब ईआ ने अशार को वह तमाम तैयारियाँ जो तईमात ने उनके विरुद्ध की थी बतलाई तब तो वह भी घबराने लगा और उसके दाँत बजने लग गए। वह दुखी भी बहुत हुआ और उसे क्रोध भी बहुत आया वह बोला :

"ईआ तुमने पहली बार तो अप्सु और मुम्मू को पकड कर बद कर दिया था—पर अफसोस अब तो किगू मुकाबले पर आ रहा है—हाय अब तो सचमुच ही तईमात से कोई नही जीत सकेगा", और वह लबी लबी साँसे लेने लगा। बडी देर बाद उसे होश आया और उसने अपने पुत्र अनु को बुलाया। जब वह सामने आया तब वह उससे बोला :

"हे महावीर अनु, तुम बहादुरों मे श्रेष्ठ हो और तुम्हारे हमले को कौन रोक सकता है। तुम तईमात के पास जाओ और उसके क्रोध को शात करो। ऐसी तरकीब से जाओ कि वह अपना गुस्सा भूल जाय और प्रसन्न हो उठे। और यदि वह तुम्हारे समझाने-बुझाने से न माने तो मेरा नाम लो और उससे कहो कि हे देवी अपना गुस्सा छोड कर हम पर कृपा करिये।"

अनु अशार का हमेशा आज्ञाकारी था। वह विचित्र रास्तो से सीधा तईमात के स्थान को पहुँचा पर जब उसने उसे गुर्राते और क्रोध से काँपते देखा तो पास जाने की उसकी हिम्मत नहीं पडी और वह वहीं से वापस भाग आया।

अबकी बार ईआ भेजा गया और वह भी डर के मारे भाग आया। अशार ने तब मेरोडाख को बुलाया। यह ईआ का प्रिय पुत्र था। जब वह आया तब अशार ने उससे कहा :

"हे मेरे प्यारे पुत्र, तू हमेशा मुझे बहुत अच्छा लगता है, तू मेरे कहने से युद्ध करने जा और तेरे पराक्रम के सामने अवश्य ही कोई नहीं ठहरेगा।"

मेरोडाख का हृदय अपनी स्तुति सुनकर फूल गया। वह अशार के सामने खुशी के मारे ऐंठ कर खड़ा हो गया। उसमे हिम्मत के हौसले बढ गए। अशार ने उसे चूमा और उसे आशीर्वाद दिया कि वह निर्भय रहे।

मेरोडाख ने अब कहा :

"हे देवताओ के देवता, तुम्हारे शब्दों का असर सदा सच्चा होता है। तुमने मुझे आशीर्वाद दिया है कि मै हमेशा जीतूँगा, तो हे पिता, अब यह निश्चय बात है कि मुझसे कोई कभी जीत नहीं सकेगा। तुम्हारी इच्छा के अनुसार मैं जरूर युद्ध करने जाऊँगा और जिससे तुम चाहोगे उसी से लड़ूँगा। अब मुझे बताओ कि किसने इतनी हिम्मत की है और तुम्हे युद्ध को ललकारा है।"

अशार ने उत्तर दिया :

"मुझे किसी पुरुष ने नहीं बल्कि एक स्त्री ने युद्ध करने को ललकारा है और वह स्त्री जानते हो कौन है? खुद तईमात! और कोई नहीं। तुम तो जानते ही हो कि वह माता है और साथ ही साथ बहुत ताकतवर भी है। अब उसी से लड़ना पडेगा। वह खतरनाक है जरूर पर तुम डरना मत क्योंकि तुम शक्तिवान हो और तईमात का सिर तोड़ सकते हो। तुम अपने पवित्र विचारों से ही उसे जीत लोगे। अब तुम तनिक भी देर मत करो और एकदम रवाना हो जाओ। मै तुमसे पक्की बात कहता हूँ कि तईमात तुम्हे घायल या मार न सकेगी और तुम सकुशल विजयी होकर मेरे पास वापस आ जाओगे।"

अशार की हर एक बात मेरोराख को उल्लसित कर रही थी। वह वीरता के नशे मे झूमने लग गया और बोला :

"हे देवताओं के भी पूज्य और भाग्य बनाने वाले परम पवित्र देवता यदि तेरी आज्ञा से तईमात से बदला लेने मुझे ही जाना है तो सारे देवताओ से मेरी प्रधानता की डोंडी पिटवा दो। सभी देवता लोग हँसी-खुशी सभा मे आवे और मुझे ऐसा अधिकार दें कि जो मैं कहूँ या आज्ञा दूँ वह बात अटल रहे। जिस तरह मेरी बात नहीं टाली जा सकती और उसे पूरा करना ही होता है उसी तरह मेरा हुक्म भी सबको मान्य हो और आइन्दा से तेरे बजाय मैं ही लोगों के भाग्य का विधाता बनूँ।

अशार ने सब कुछ ध्यानपूर्वक सुना और सिर हिलाया और कहा:

"मेरोडाख राजा है।"

फौरन उन्होने उसे तख्त पर बिठाया और उसके हाथों मे राज दण्ड दिया। उसे चक्रवर्ती होने की सनद भी दे दी। जब यह सब हो चुका तो बाद मे उसे एक भयङ्कर हथियार भी दिया। यह ऐसा खतरनाक हथियार था कि उसकी मार से कभी कोई नही बच सकता था। उन्होने उससे कहा :

"हे वीर! अब तुम जल्दी करो और तईमात को मार दो। तुम्हें कोई नही रोक सकता। तईमात को मार कर पटक दो जिससे उसके खून को हवाएँ उडा कर सूनी जगहो मे छिपा दे। तुम सीधे आगे बढो और हम लोग तुम्हारे साथ हैं।"

इस तरह मेरोडाख सारे विश्व का राजा बना और उसने देवताओ की ओर से तईमात से युद्ध करके उसे हराने की ठानी। देवताओ ने उसका रास्ता साफ करा दिया और अब उसे कोई अडचन न रही। मेरोडाख ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। उसने अपने हथियार ठीक किये। अपने धनुष मे टकार भरी और तीरो को सजाया। अपने बैल जैसे ठोस और पुष्ट कधो पर एक भाला बाँधा। दाहिने हाथ मे एक भयकर गदा ले ली और चला। अपने आगे-आगे उसने बिजलियाँ रखी और अपने सारे शरीर को उसने दहकती आग की लौ से भर लिया। अनु ने उसे एक बहुत बडा जाल दिया जिसमे वह अपने शत्रुओं को फँसा सके और यदि वे भागे तो पकड सके। उसने उस जाल को भी रख लिया।

अब मेरोडाख ने सात आँधियाँ पैदा कीं। इनके नाम थे दुष्ट आँधी, बेकाबू आँधी, रेतीला तूफान, गोल भूलभुलैया डालने वाला तूफान, चारो तरफ की आँधी, सतगुनी आँधी और वह तूफान जिसके सामने कोई जीवित ही न रह सके। आखिर मे उसने अपना महाभयकर हथियार, आसमान की बिजलियो से बना पत्थर उठाया और दौड़ कर अपने तूफानी रथ पर चढ गया जिसमे चार खतरनाक बलिष्ठ घोड़े जुते हुए थे। ये घोडे हवा की तरह तेज भागते थे और उनके मुँह झागो से भरे रहते थे। घोडे जिधर जाते उधर ही अपनी बडी टापों से सभी कुछ नष्ट कर देते थे। उनके दाँत बडे पैने और जहर से भरे थे। मेरोडाख के सिर के ऊपर प्रकाश फैल रहा था और

वह उसकी ज्योति मे चमक रहा था। भयकरता का कवच ओढे अपने खतरनाक जहरीले घोडों को वायु वेग से भगाता वह बढा चला जा रहा था। उसके पीछे-पीछे अपने-अपने रथो में बैठ कर उसके साथी देवता लोग उसकी मदद को चले। जो बडे थे उन्होंने मेरोडाख के रथ को तीन तरफ से रक्षा करने के लिये घेर रखा था।

मेरोडाख बढता गया। बादलों की पर्तो पर होता हुआ उसका रथ दुश्मन के मोर्चे की तरफ बढा चला जा रहा था। ज्यो ज्यों वह आगे बढता उसकी हिम्मत बढती जाती और वह सीना ठोंक कर हुकार भरता जाता था। उसकी बढी हुई हिम्मत और पराक्रम तथा खतरनाक रूप को देख कर उसके पिता देवताओं ने दिलजमई कर ली कि वह जरूर ही तईमात और किंगू को युद्ध मे परास्त करेगा।

जब रथ वाले बादलो के घिराव मे चला तो अँधेरे मे रास्ता नही दिखता था पर घोडे अपनी चाल किसी भी तरह कम करने को तैयार न होते थे। उसने काले बादल को हुक्म दिया :

"हे काले बादल, तू हट जा और मुझे रास्ता दे।"

पर वह तो तईमात की तरफ था। भला क्यो उसका हुक्म मानता? वह नहीं हटा और उसने रास्ता भी नही दिया बल्कि और गाढा हो गया। मेरोडाख ने क्रुद्ध होकर अपने आगे चलने वाली बिजलियों को आज्ञा दी :

"बिजलियो तुम चमक कर हमे रास्ता दिखाओ यह बादल नष्ट कर दो।"

बस फिर क्या था? बिजलियाँ बादलों पर टूट पडीं। उनकी गडगड़ाहट से आसमान फटने लगा। क्षण भर में ही बादलों के टुकडे-टुकडे उड गये और मेरोडाख ने गर्व सहित अपना रथ आगे बढाया। देवताओं ने हर्षध्वनि की। एक बार पुन. पूरे वेग से मेरोडाख अपनी सेना सहित आगे बढ़ा।

जब वह तईमात के विचित्र और छिपे हुए स्थान के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह अपने नये मत्री व पति किंगू से चुपचाप उसके विरुद्ध कुछ सलाह कर रही है। उसने जो तईमात को देखा एक बार वह खुद भी घबरा गया और उसे ऐसी हालत मे देखकर सभी देवता लोग

भय से कॉप गये। पर शीघ्र ही मेरोडाख ने अपने डर को काबू मे कर लिया और साहस बटोर कर आगे बढा।

तईमात के लिए तो जैसे उसका आना या न आना दोनो बराबर था। वह तो जैसे उसके लिए कोई चीज ही नही था। उसने उसकी ओर मुडकर देखा तक नही, सिर्फ अपनी जगह से ही पडे-पड़े वह गुर्राई। उसने वैसे ही उसे गालियाँ दी और अनेक शाप भी दिये

"अरे मेरोडाख! तू जो देवताओ का राजा बन कर मुझमे लड़ने आया है तो सुन ले। मै तुझ जैसे लोगो से जरा भी नही डरती। तू भला है कान जो मेरे सामने जीवित रह सके। तेरे जैसे लड़के तो मेरी चुटकियो मे मसलकर फेंक दिये जाते हैं। शायद तुझे मालूम नही कि तईमात आदि देवी के पराक्रम से खेलना मौत से खेलने से भी भयकर होता है। और देख, इस समय मेरे सभी मित्र यहाँ इकट्ठे बैठे हैं जिनकी ताकत तेरी और तेरे साथियो की ताकत से कई गुनी ज्यादा है। आज निश्चय ही तू इनके हाथों मारा जायगा और तेरे सभी देवता लोग आज बेमौत मरेंगे।"

अब मरोडाख के बोलने का अवसर आ गया। उसने अपना हाथ ऊँचा उठाकर, जोर से चिल्लाकर अपने बिजलियो के पत्थर वाले हथियार को हवा मे घुमाया और बोला '

"तू अपने आपको सारे विश्व की मालिक समझने लगी है और तूने व्यर्थ के अहकार मे पड़कर अपने आप ही सब अधिकार प्राप्त कर लेने की कोशिश की है। तूने अपने बुरे विचारो के कारण अच्छे देवताओ से अन्याय पूर्ण युद्ध करने की ठानी है क्योंकि तू उनसे घृणा करती है। तूने किगू जैसे नीच लोगों को अनुदेवता का भाग्य बनाने का पवित्र अधिकार देकर बहुत नीचा काम किया है। तू सभी अच्छी चीजो से नफरत करती है और दुनियाँ की हर बुरी बात तुझको प्रिय है। तूने अब तक खूब मनमानी कर ली पर याद रख कि मै, मेरोडाख, देवताओ का राजा, तुझे मारकर क्षण भर मे तेरे सारे घमण्ड को मिटा देने की ताकत रखता हूँ। देख यह मेरी फौलाद की गदा है और यह जो बिजलियो का बना मेरा मुगदर है। इसका मुकाबला कोई हथियार कर ही नहीं सकता। मै मेरोडाख, ईआ का बेटा, अनु का नाती

मैं अभी मारकर देवताओं का बदला लूँगा। अपनी सेना को तैयार कर ले और खुद भी तैयार होकर मैदान में आ जा और मेरे दो-दो हाथ देख।"

सारे दुश्मनों के दिल उसके कठोर वचन को सुनकर दहल गए। किंगू जो बहुत बहादुर था वह भी एक बार तो घबरा कर भागने को हो गया। शत्रु-सेना में गडबडी-सी नजर आने लग गई। ऐसे ही मौके को देख कर देवताओं की फौज ने हुकार भरी।

जब तईमात ने यह सब सुना और देखा तो वह क्रोध से चिल्ला उठी और बकने लगी। वह इतनी नाराज हुई कि थर-थर काँपने लगी। वह गालियाँ देती जाती थी और उसका गुस्सा उमडा पड रहा था। उसके हाथ हिलने लग गये थे और उसने एक मारण मन्त्र पढ़ा। बस युद्ध छिड गया और देवता लोगों ने अस्त्र उठा लिये।

घोर मार-काट शुरू हो गई। देवताओं की सेना किंगू पर झपट पडी और हाथों-हाथ भयानक लडाई होने लगी। आँधियों से आँधियाँ टकरातीं—बिजलियाँ कडकने लग गईं। गदा पर गदा बज उठी और तीर छूटने लग गये। थोडी ही देर मे लडाई का मैदान लाशो से भर गया। जमीन पर खून बहने लग गया। पर लडने वालों को इसका कोई ध्यान ही न था। अपनी वीरता दिखाते हुए योद्धा भयकर मार-काट कर रहे थे। जब मेरोडाख रथ घुमाता तो सैकड़ों दुश्मन उसके पहियों से कट जाते। बीसियों लोगों को घोडे अपनी बडी-बडी टापों से रूँधकर मार डालते और जब वह खुद बिजलियों वाला मुगदर घुमाता तब तो मरने वालों की गिनती ही न रहती। मेरोडाख रथ बढाये चला जा रहा था। वह सीधे तईमात से भिड जाना चाहता था क्योंकि सब झगडों की जड तो वही थी।

आखिरकार उसने ठीक तईमात के सामने जाकर अपना रथ रोका और उसे ललकारा। क्रुद्ध होकर तईमात ने उस पर हमला किया। बस अब तो भयानक लडाई शुरू हो गई। दोनों एक दूसरे को मार डालने का पूरा प्रयत्न करने लगे। मूसल फेंके गये और तरह-तरह के तूफानो से प्रहार किया जा रहा था। घोडे हिनहिना रहे थे, खून बरस रहा था। लडते-लडते मेरोडाख ने अनु का दिया हुआ जाल चारों

तरफ फैला दिया और तईमात जिस अजदहे पर चढी लड रही थी उसे उसमे फँसा लिया। अजदहे ने भागकर बचना चाहा पर इतने मे ही मेरोडाख ने झटका देकर उसे भी उसमे बाँध लिया। अब तईमात जाल मे फँस चुकी थी। उसने तरह तरह से अपने को छुडाना चाहा। वह गुर्राई और उसने अपने ग्यारह तरह के खतरनाक सर्पा, बिच्छुओ और उडने वाले साँपो को एक साथ मेरोडाख पर टूट पडने की आज्ञा दी। फौरन चारों तरफ से भयकर और तेज जहरवाले अजगरो व अजदहो ने मेरोडाख को घेर लिया। पर मेरोडाख ने बिजलियो को फौरन आज्ञा दी '

"इन्हे टुकडे-टुकडे कर डालो।"

पलक मारते-मारते बिजलियो ने मैदान साफ कर दिया। मेरोडाख ने फिर तईमात पर हमला किया। तईमात ने अब अपना मुँह खोला और उसमे सब को निगल जाना चाहा। उसने आकाश से पृथ्वी तक अपना मुँह खोल दिया। उस समय उसका मुँह सात मील लबा हो गया। देवताओ मे भगदड मच गई। पर मेरोडाख बडा दिलेर था। उसने फौरन अपनी बनाई दुष्ट आँधी को आज्ञा दी :

'इसके शरीर के अदर घुस जा और इसे खूब काट ओर सता।" दुष्ट आँधी अदर घुस कर उपद्रव मचाने लग गई। फिर मेरोडाख ने आज्ञा दी ·

"इतनी तनी रहो कि यह अपना मुँह बद न कर सके।" बस दुष्ट आँधी कड़ी हो गई आर लाख कोशिश करने पर भी तईमात अपना फैला मुँह बद न कर सकी।

इसके बाद मेरोडाख ने अपनी सभी आँधियाँ और तूफानो को आज्ञा दी ·

"सभी इसके शरीर मे घुस कर इसे नष्ट करो।"

अब सातो आँधियाँ ओर तूफान तईमात के शरीर मे घुस कर उसे घुलाने लगी। शीघ्र ही उसका दिल कमजोर पड गया और उसका अग-अग ढीला पड गया। वह थक कर हाँफने लग गई। अच्छा मौका देख कर देवताओ के राजा मेरोडाख ने अपने रथ से एक छलाँग लगाई और दूसरे ही

क्षण तईमात के पास जा पहुँचा। उसने अपना भाला तईमात के शरीर में नीचे से ऊपर तक घुसा दिया जिसने उसके शरीर को अदर से फाड डाला और उसके दिल को चीर दिया। तईमात झूल कर गिरी और मर गई। हवा उसके शरीर मे अब भी भरी हुई थी, जिसने उसे मरते समय चीखने-चिल्लाने भी नहीं दिया।

मेरोडाख ने मरे हुए अजदहे पर खडे होकर सिंहनाद किया जिसको सुनकर तईमात के सभी साथियों के छक्के छूट गये। तईमात को मरा हुआ देख कर उनकी रही-सही हिम्मत भी छूट गई और वे भागे। लेकिन उसी वक्त जाल को मेरोडाख ने और अधिक फैलाकर सबको उसमें फँसा लिया। वे भाग भी नहीं सके बल्कि एक दूसरे पर लदर-पदर गिरने लगे। उनके चीत्कार से सारी दुनिया हिल गई क्योंकि वे बडी जोर से रोने लगे थे। मेरोडाख ने उनके सब हथियार छीन कर तोड डाले और उन्हे बन्दी बना लिया। अब वह गदा लेकर उन राक्षसों पर टूट पडा जिन्हें तईमात ने बनाया था। उन सबको उसने बहुत मारा, उनकी पसलियाँ तोड दीं और उन्हें पैरों तले कुचल कर समाप्त कर दिया। किंगू जो उन्हीं सबों के साथ पकडा गया था, बहुत अधिक पीटा गया और उससे भाग्य के तावीज छीन कर मेरोडाख ने अपने सीने में रख लिया। अब उन तावीजों पर उसने अपनी छाप लगा ली थी।

इस प्रकार दुश्मनो का सफाया कर दिया गया और परम देवता अशार और इआ की इच्छाएँ पूर्ण हुई। मेरोडाख ने सभी बन्दियों के बन्धन खींच कर मजबूत किये और तईमात के पास पहुँचा। वह मरी पडी थी। उसका मुँह अब भी खुला पडा था पर अब सात मील लबा नहीं था बल्कि सिकुडकर मामूली रह गया था। वह तो उसने जादू से जो बढाया था। मेरोडाख कूद कर अजदहे पर से उतरा और उसने अपनी भारी गदा से तई-मात का सिर फोड डाला। फिर खून की नलियाँ काट दी, खून तेजी से बह निकला। मेडोराख ने उत्तर की हवाओं को आज्ञा दी :

"इसके रक्त की प्रत्येक बूँद समेट कर अनजान जगहों में छिपा दो।"

फौरन हवाओं ने रक्त गायब कर दिया। सभी देवतागण उसके चारों तरफ इकट्ठे होकर जीत की खुशी मे नारे लगाते हुये नाचने-कूदने लगे और बारी-बारी से सभी ने उसे जो उनका राजा था, नजरें दीं। मेरोडाख ने इस प्रकार देवताओं का बदला दुष्टों से ले लिया।

कुछ देर आराम करने के बाद मेरोडाख ने फरसे का एक पूरा हाथ अजदहे पर मारा। वह दो टुकडे हो गया। एक टुकड़े से उसने जल की मेड़ बनाई और दूसरे से पृथ्वी बनाई। मेड की रखवाली पर उसने एक देवता को बिठा दिया ताकि आगे कभी देवताओं मे अधिकारो के तथा एक जगह रहने के कारण झगडा न पड जाय, इसलिये उसने सब देवताओं के रहने के अलग-अलग स्थान नियत किये। ईआ को आकाश का राजा बना दिया और अनु को स्वर्ग का राज्य दिया। एनियल को हवा का राजा बना दिया। इसी तरह सभी देवताओ को एक एक राज्य देकर अलग-अलग काम बतला दिया।

जब सब कामों से फारिग हो गया तब वह दुनिया बसाने मे लगा और उसने दुनिया को आदमियों से भर दिया। देवताओं को आसमान मे तारो की सी चमक दे दी जिससे आदमी लोग उनकी पूजा कर सकें। जगह जगह देवताओं के मदिर बनवा दिये। आखिर मे वह खुद जाकर निबूरू तारे मे बस गया और वहीं से सपूर्ण पृथ्वी और स्वर्ग पर अखण्ड राज्य करने लग गया।

———

तम्मुज़ की दीवानी इश्तर

सुन्दर तम्मुज के अपरूप रूप को देखकर देवी इश्तर उस पर ऐसी रीझी कि बिना उसको देखे उसे चैन नहीं आता था। वह उसके पीछे-पीछे छाया की तरह घूमने लगी और उसे हमेशा बस उसी का ख्याल बना रहता। अपने शरीर को हमेशा सजाये रखकर देवी इश्तर इसी कोशिश में लगी रहती कि तम्मुज उस पर सदा खुश रहे और वह भी उसे चाहने लग जाय। इश्तर स्वर्ग की रानी थी और उसने अपने पिता अनु से कहकर तम्मुज के लिये तमाम जाने-आने के रास्ते खुलवा दिये थे। तम्मुज के हुस्न की वह पूजा किया करती और चूँकि पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले धनधान्य और सभी फस्लों का वह स्वामी था, इसलिये अनु से कह-सुनकर हमेशा वक्त पर मेह बरसवाया करती थी ताकि अनाज धरती पर ज्यादा से ज्यादा पैदा हो और इस तरह तम्मुज हमेशा खुश रहे।

तम्मुज बेबल मे आया करता था और सभी उसे बहुत मानते थे। वह ही धरती पर अनाज पैदा कराने वाला देवता था। सभी हरियाली व जिंदगी उसी की कृपा से चलती थी। वह बहुत ही खूबसूरत, बहादुर और अच्छे गुणों वाला था। उसने बेबल में (३६०००) छत्तीस हजार साल तक बड़ी अच्छी तरह राज किया। वह गडरिये का भेष बनाकर खेतों में घूमा करता और लोगों की फस्लों को बढ़ाया करता था। वह अपनी लोकप्रियता और खेतों के लिये सिंचाई के साधनों का इंतजाम करने की वजह से दुमू-जी-अब्जू भी कहलाता था। वह सभी रूपों में पूजा जाता था। उसे बच्चे के रूप मे पूजा जाता क्योंकि बीज खेत में बोने के बाद पौधा जब छोटा होता तो वह बच्चे का रूप था यानी वह छोटा पौधा ही बच्चा तम्मुज था। और फिर उसे जवान मर्द भी माना जाता जब खेत पूरे बढ़कर लहराया करते।

ईआ जो आकाश का देवता था, उसका पिता था। उसकी स्त्री का नाम दमकीना था क्योंकि वह हमेशा दमकती रहती थी। उसके कई पुत्र थे।

गेरोडाख, बेल, नीरा, की-गुल्ला, अरनुन्ता सा, तम्मुज ये सभी उसके पुत्र थे। इसके अलावा उसकी एक लड़की थी जिसे खी-डिम्मी अजागा कहते थे क्योंकि वह मशहूर आत्मा वाली थी। इसी को तम्मुज ने बाद में बहुत माना और चाहता रहा था। तम्मुज को पृथ्वी के खेतों, अनाज और खुशहाली का राज मिला जिसे वह बड़े हौसले से सँभाला करता। छोटी फसल के साथ वह बच्चा बनकर खेलता और बड़ी फसल को जवान बनकर सँभालता और तब बहुत ही बुरा होता जब फस्ल कटने के साथ ही साथ वह गायब हो जाता और फिर तब प्रगट होता जब फिर बीज उगकर खेतों में पैदा हो जाता। जब वह गायब हो जाता तब चारों तरफ रोना धोना मच जाता और उसे चाहने वाले उसकी याद में तड़पा करते। किसी भी देवता के इस तरह खो जाने से दुनिया के आदमियों का यह फर्ज हो जाता था कि वे उसकी याद में गम मनावें। और यह तो तम्मुज का मामला था जिसको फर्ज के अलावा भी लोग इतना ज्यादा प्रेम करते थे। यह भी कहा जाता था कि जब अनाज पक कर तैयार हो जाता था तो तम्मुज भी मर जाता था और तब उसके दुख में औरतें गला फाड़कर रोती थीं। परन्तु जब वह नई फस्ल बोने के साथ ही साथ बच्चा बनकर फिर आ जाता तो लोग पहले दुख को बिल्कुल भूल जाते और नये सिरे से खुशियाँ मनाते थे।

तम्मुज को स्वर्ग का सच्चा रास्ता दिखाने वाला भी कहा जाता था। उसकी बलि के लिये अकसर सफेद मेमना काटा जाता या कभी कभी मोटा सुअर भी भेंट चढ़ाया जाता था। वह तूफानों के दानवों को हमेशा मार भगाया करता और उनसे फसलों की रक्षा किया करता था।

देवी इश्तर के प्रेम को पाकर वह पहले तो बेरुखा सा ही रहा। उसके शृंगार और बहुमूल्य आभूषणों की तरफ वह मुड़कर देखता भी नहीं था। पर इश्तर भी पागलों की तरह उसी के पीछे पीछे छाया की तरह घूमने लग गई थी। इश्तर जवान थी और बहुत ही अधिक सुन्दरी थी। अनु ने दुनिया भर के जवाहिरात इकट्ठे करके उनमें से सब से अच्छे छाँटकर उसके जेवर बनवाये थे। उसके गले में चमकीले हीरों का हार हमेशा दिल हिलकर अपनी

चमक से देखने वालों की आँखे चौंधियाया करता। पन्ने की करधनी उसके चलने के साथ-साथ हिला करती और बहुत ज्यादा खूबसूरत मालूम होती थी।

आखिरकार तम्मुज भी उसकी तरफ खिंच गया और वह उससे बोलने लग गया। इश्तर की खुशी का ठिकाना न रहा और वह और भी जोरों के साथ उससे प्रेम करने लग गई। उसने तम्मुज को स्वर्ग की सैर कराई और ले जाकर अपने पिता अनु से उसकी भेंट कराई। सारे स्वर्ग और दुनिया मे मशहूर हो गया कि देवी इश्तर सुन्दर तम्मुज से प्रेम करने लग गई है। तम्मुज अब इश्तर की तरफ काफी झुक गया था और उसे भी उसकी मौजूदगी मे आनद आता। जब वह चली जाती तो वह भी खोया-खोया सा अनुभव करने लगता था। जब वह सामने रहती तो घटों वह उसके रूप को निहारा करता और उससे मीठी-मीठी अच्छी बातें किया करता। सारे स्वर्ग के देवता और दुनिया के आदमी उसके भाग्य को सराहते कि खुद इश्तर जैसी देवी उसको इतना चाहती है। साथ ही साथ इश्तर की किस्मत भी अच्छी मानी जाती कि तम्मुज जैसा आदमी उसे प्रेम करता था और इतना अधिक चाहता था कि बिना उसके साथ रहे उसे तनिक भी चैन नही आता था।

एक दिन तम्मुज और इश्तर बेबल मे दजला नदी के किनारे बैठे-बैठे बातें कर रहे थे। नदी हल्के स्वर से बह रही थी और हवा ठन्डी-ठन्डी चल रही थी, तम्मुज इश्तर के पास रेत पर बैठा था और इश्तर के हाथों में पड़ी जवाहिरात जडी चूड़ियो को देख रहा था। तभी उसको एकाएक कुछ सूझा और उसने अपनी निगाहें उठाकर इश्तर के मुँह पर गडा दीं और बोला :

"जानती हो पृथ्वी पर रहने वालों को एक दिन मरना ही होता है ? इसी तरह मुझे भी एक न एक दिन मरना ही होगा।"

इश्तर इस बात से बहुत ही अधिक दुखी हुई और रोने लगी। तब तम्मुज ने कहा :

"चाहे मौत अपने आप आवे चाहे किसी की मारफत आवे पर मरना तो सब को होगा ही। लोग प्रेम करके भी मर जाते हैं। किसी-किसी को शिकार खेलते वक्त जगली जानवर ही मार डालते हैं तो कोई लडाई के मैदान

मारा जाता है। और ऐसे भी होते हैं जो उम्र पाकर मर जाते हैं। मरना सब को पड़ता है क्योंकि हमेशा जिंदा कोई नहीं रह सकता। इसी तरह जब मैं एक दिन मर जाऊँगा तब हे इश्तर! तुम क्या करोगी?"

इश्तर ने कहा :

"ऐसा हो ही नही सकेगा कि कोई मेरे प्रेमी को मार सके। हेडिस (नरक) की रानी अल्लातू जिसका नाम इरैश-की गाल भी है, मुझसे दबती है। वह मुझसे कमजोर है, फिर भला उसकी क्या मजाल जो वह तुम्हे मुझसे छीन सके? चाहे वह अपने मन मे तुम्हें चाहती हो और तुम्हे वक्त आने पर अपने यहाँ ले जाना भी चाहती हो पर यह नही हो सकेगा कि मेरे जीते जी वह तुम्हारे हाथ भी लगा सके। और फिर मेरे पिता अनु हैं, मेरी खुशी में ही वह अपनी खुशी मानते हैं। वह बहुत जबर्दस्त देवता हैं। उनसे सारा स्वर्ग, आकाश और दुनिया डरती है। फिर भला हमारे रहते तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है? हे सुदर तम्मुज! तुम मौत से बिल्कुल मत डरो। खुश होकर बेफिक्री के साथ राज करो और मुझसे प्रेम करो, क्योंकि हमारे बीच मे बोलने या पड़ने का साहस किसी को नहीं हो सकेगा।"

यो कहकर इश्तर ने गर्व से उसकी तरफ देखा और उसे हिम्मत बँधाने लगी। तम्मुज देर तक सोचता रहा, फिर बोला :

"मैने दुनिया मे (३६,०००) छत्तीस हजार साल तक बेफिक्री के साथ जबर्दस्त राज किया है। मै हमेशा जवान रहता हूँ और जब मेरा अन्त आता है, तो फिर बच्चे का रूप लेकर दुनिया मे प्रगट हो जाता हूँ। यह सच है कि मै हमेशा के लिये तो कभी नहीं मरता पर फिर भी एक सा नही रहता। तुम शायद नही जानती कि जब मै यहाँ नही रहता तब मुझे अल्लातू के राज मे रहकर उसके प्रेम को निभाना पड़ता है।"

इश्तर इस बात को सुनकर जल उठी और बोली :

"भला मुझसे क्या छिपा है जो मे नहीं जानती पर अल्लातू अब कभी तुम्हे मुझसे छीन नही सकेगी।"

इसी तरह बहुत दिन हो गये। और एक दिन एकाएक जब तम्मुज अपने मामूल के मुताबिक गायब हो गया तो इश्तर को बहुत ही ज्यादा बुरा लगा।

वह अल्लातू से झगड़ा करने चली। उधर अल्लातू भी लड़ाई की तैयारी करके आगे बढ़ी। तभी अनु ने आकर बीच-बचाव किया और झगड़े को खत्म कराया। तब अनु बोला :

"बेटी इश्तर तू उन बातों को नहीं जानती जो पराक्रमी तम्मुज की जिन्दगी के साथ हमेशा लगी रहती हैं। इसलिये तू उन्हें सुन ले।" अनु ने सुनाया :

"तम्मुज की माँ को जब पता लगा, कि उसका पति क्रोध मे भरकर दानव का रूप धर कर उसे मारने आ रहा है, तो वह डर गई और उससे भागते भी नहीं बना। वह झट से एक पेड़ बन गई और रास्ते के एक तरफ खड़ी हो गई। उसके पति को मालूम नहीं पड़ा और वह भन्नाता हुआ उसकी तलाश में आगे बढ़ गया। उस पेड़ के तने को फाड़कर तम्मुज बाहर कूद पड़ा और इस तरह यह बहादुर पैदा हुआ था। जब तम्मुज छोटा-सा खूबसूरत बच्चा था उस वक्त उसे एक बक्स में बन्द करके, 'इरैश की गाल' जिसको अल्लातू भी कहते हैं, को दे दिया गया कि वह उसकी देख-रेख करे और बड़ा करे। तभी से यह उसके पास रहा आता था।"

"ठीक है पर तम्मुज को तो तुमने मुझे दिया था कि मै उसे प्यार करूँ और अपने पास रखूँ, यह भी तो मुझे खूब याद है," इश्तर बोल पड़ी।

अनु ने उत्तर दिया :

"तू भूल गई है क्योंकि वक्त के साथ-साथ तू सब बातें भूल जाया करती है। फिर प्रेम करने वालों को पुरानी बातें याद भी नहीं रहतीं। इसलिये मेरे ऊपर इलजाम भी भूलने का नहीं लगाया जा सकता। तम्मुज अल्लातू के पास ही रहता आया था और वह उससे बहुत प्रेम भी करने लग गई थी। उसने यह इच्छा प्रगट की थी कि वह उसे हमेशा अपने पास रख सके और तभी तूने झगड़ा मचाया था कि अल्लातू को ऐसा अधिकार न दिया जाय। तुम दोनों में बहुत समय तक लड़ाई होती रही। आखिरकार तुम दोनों ही मेरे पास आकर इंसाफ करने को जोर डालने लगीं। तुम कहती थीं : 'तम्मुज मेरा है' और वह कहती थी 'मेरा है'।

"और मैने तब यही फैसला दिया था कि तम्मुज साल मे आधे दिन इश्तर के साथ और बाकी आधे दिन अल्लातू के साथ रहे। तभी से यह कायदा चला आ रहा है और अब जो तम्मुज तुझे छोड गया है तो वह तो शर्त के मुताबिक ही अल्लातू के पास चला गया है। इसलिये चित्त को धीरज दे। क्योकि देख शीघ्र ही वह तेरे पास बच्चा बन कर आ जायगा।"

इश्तर चुप हो गई और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी जब बच्चा बन कर तम्मुज वापस आ जाय और फिर फोरन जवान बनकर उसे अपना ले। और अब जब कि वह नही था, फसलें भी काटी जा चुकी थी और दुनिया मे नये पेड सब मर चुके थे नये जीवन का कोई निशान ढूंढे से भी नही मिलता था। इश्तर दुखी थी और उसके दुख के साथ साथ दुनिया के लोगो मे भी अपार दुख था।

कुछ महीने इसी तरह इतजारी और दुख मे काटे गये। जब आकाश मे बादल उठे और हवा चली, चारो तरफ अँधेरा छा गया और बिजलियाँ कडकी और जोरो का पानी बरसा तो लागों ने धरती मे बीज बोया। जब वह उग आया तो साथ ही साथ सूर्य के समान काति वाला और सुन्दरता मे लाजवाब एक बालक प्रगट हुआ। उसका नाम था तम्मुज क्योंकि वह फसला की रक्षा करता था और उसे दुमू-जी-अञ्जू भी कहते क्योंकि वह फसलो को बढाने के लिये समय समय पर जल की वर्षा भी कराता था। इश्तर उसे बहादुर दुमू कहती और उसकी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा था। अब वह हॅसी मे रहा करती और तम्मुज को हमेशा अपने साथ रखती। तम्मुज की यह खूबी थी कि कुछ ही महीनो मे वह जवान हो गया और एक बार फिर इश्तर के प्रेम मे पागल होकर उसी के साथ साथ हमेशा रहने लग गया। इश्तर एक बार फिर पुरानी बातो को भूल गई।

इसी तरह बहुत दिन हो गये और खुशी दिन दूनी रात चौगुनी बढती चली गई। अनु भी खुश था कि उसकी बेटी इश्तर खुशी से हमेशा नाचा करती है। पर उसे आगे का ख्याल बना रहता, इसीलिये वह अकसर इश्तर से कहा करता :

'बेटी बहुत ज्यादा खुशी अच्छी नहीं होती क्योंकि ज्यादा खुशी ही ज्यादा रंज पैदा करती है। इसलिये रंज को दूर रखने के लिये किसी को भी खुशी को इतना नहीं अपनाना चाहिये।"

पर भला इश्तर पर इसका क्या असर होता। वह तो खुशी से हमेशा थिरका करती और पल भर को भी तम्मुज को अपने से दूर नहीं होने देती थी। वह उसे इतना चाहती और बदले मे तम्मुज उसे इतना प्यार करता कि सारे स्वर्ग, पृथ्वी और आकाश मे इन दोनो की जोडी मशहूर थी और इनका प्रेम सभी जगह प्रसिद्ध था।

और तभी एक दिन जरा-सी इश्तर की गलती ने गजब कर डाला। तम्मुज ने उससे कुछ कहना चाहा पर उसने अपने ध्यान में उसकी बात नहीं सुनी और अपनी ही अपनी धुन में मस्त उसकी बाते उडाती चली गई। जब वह ऐसे ही मन मौज कर रही थी, तम्मुज एक तरफ जंगल में चला गया। वहाँ मौका पाकर एक जगली सुअर ने उस पर हमला कर दिया और उसे मार डाला। जब वह देर तक न लौटा तो इश्तर ने उसे ढूँढा और जिधर वह गया था उधर ही वह भी उसे ढूँढने चली। थोडी ही दूर जाकर जङ्गल के बीच उसे तम्मुज पडा मिला। वह दौडकर उससे लिपट गई क्योंकि उसने देखा कि उसका शरीर जगह-जगह से फट गया है और खून काफी निकल चुका है। वह उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी। पर जब वह बिल्कुल भी नहीं हिला-डुला तो उसने उसके शरीर को अच्छी तरह देखा और शीघ्र ही जान गई कि वह मर गया है। अब तो वह दहाडे मार-मार कर रोने लगी और अल्लातू को शाप देती हुई कोसने लगी कि उसी ने उसके प्यारे साथी को इतनी निर्दयता से मार कर अपने पास बुला लिया है। वह बहुत देर तक रोई पर तम्मुज को न उठना था न वह उठा। इश्तर ने बहुत विलाप किया। रोते-रोते उसकी आँखे सूज गईं और उसके सिर के बाल बिखर गये, उसका सारा शृङ्गार बिगड गया। पर तम्मुज तो मर गया था। उसे क्या मालूम था कि उसकी साथिन उसके लिये इतना विलाप कर रही है।

इसी तरह रोते-रोते इश्तर ने यह तय किया कि वह खुद हेडिस मे जाकर अपने प्यारे साथी से मिलेगी और उसे अपने साथ वापस ले आवेगी। वह तो खुद जबर्दस्त ताकत वाली देवी थी, उसे भला क्या डर था। उसने विचार पक्का किया कि यदि वहाँ उसे घुसने से रोका भी जाय तब वह नही रुकेगी और जोर जबर्दस्ती से अदर घुस कर अपने प्रेमी को अल्लातू के मोत के पंजा से छुडा कर ले आवेगी। उसने सोचा और फिर सोचा और बारबार उसका फैसला यही रहा कि जरूर तम्मुज को वापस लाने के लिये उसे खुद ही जाना चाहिये। वह जानती थी कि उस लोक मे जहाँ मरी हुई आत्माएँ रहती हैं लोग परिंदे बन कर ही जा सकते ह। जो भी वहाँ रहता है सभी के पर होते हैं। उसने सोचा और वह खुद ब खुद कहने लगी.

"मैने अपने हाथा को फैला लिया है और उन्हे परो की तरह हिला-हिला कर उड़ने लग गई हूँ।

"मै नीचे-नीचे और नीचे जा रही हूँ—वहाँ जहाँ केवल अँधेरा ही अँधेरा है। जहाँ उजाले की एक किरण भी नही है—वहाँ जहाँ देवता इरक का राज्य है जिसकी बेटी अल्लातू है।

"वह ऐसा स्थान है जहाँ जाकर आज तक कोई नही लौटा।

"यह वह सड़क है जिसमे लौटने की कोई जगह नही है।

"यह वह स्थान है जहाँ घुसते ही प्रकाश गायब हो जाता है।"

फिर इश्तर गुनगुनाने लगी :

"उस जगह लोग धूल खाते हैं और कीचड़ पर गुजर करते हैं—वहाँ हर चीज पर धूल ढकी रहती है और अँधेरा हमेशा बना रहता है। वहाँ जीवन की खुशी का नाम-निशान नही है। वहाँ के अधिकारी लोग भी परिंदो जैसे परो वाले होते हैं—

"वहाँ धूल ही धूल है—दरवाजे और चूलकब्जों सभी पर बेहद धूल पडी रहती है।"

ऐसा ही सोचते सोचते इश्तर हाथ मे हवा चलाती हुई की नीचे ओर उड़ चली ओर चलते-चलते, उड़ते-उड़ते वह हेडिस के द्वार पर जा पहूँची।

जब वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि दरवाजा मजबूती के साथ अदर से बद है तो वह चिल्लाई :

"हे कीचड मैले में रहने वालो! दरवाजे को शीघ्र खोलो जिससे मैं इश्तर स्वर्ग की रानी अदर घुस सकूँ—

"हे धूल से ढके हुए लोगों! द्वार खोलो जिससे मै अदर आ जाऊँ। और यदि तुमने द्वार नहीं खोला तो सुन लो कि मै उसे तोड कर चूल वगैरह सबको उखाड कर जबर्दस्ती अदर आ जाऊँगी। मै देहली को तोड कर शान के साथ भीतर चली आऊँगी और मुझे कोई भी नहीं रोक सकेगा—

"और भी सुनो हे हेडीस की घुटन मे रहने वाले प्राणियों! यदि तुम फिर भी नहीं माने तो सुनो कि मै सब मुर्दों को जिंदा कर दूँगी जो जी कर इतने अधिक हो जायँगे कि सब जिंदा लोगो को खा जायँगे—इसलिए फौरन द्वार खोलो।"

द्वारपाल डर गया क्योंकि अब तक उस भयानक द्वार पर कोई ऐसा नहीं आया था जो इतनी बडी-बडी बाते कह कर धमकियाँ दे सके, फिर भी उसने साहस किया और बोला.

"लेकिन द्वार खोलने पूर्व यह मेरे लिये जरूरी है कि मैं अपनी मालकिन अल्लातू से पूछ लूँ कि द्वार खोलूँ कि नहीं। मेरी मालकिन यहाँ की रानी है और उसकी आज्ञा बिना यहाँ कोई काम नहीं होता।"

जब द्वारपाल ने जाकर रानी अल्लातू से इश्तर की बाबत कहा तो वह गुस्से से लाल-पीली हो गई और क्रोध मे भर कर इश्तर की बुराइयाँ करने लगी। उसने उन अभागों के लिये अफसोस किया जिन्हें इश्तर ने अपने रूप के घमड मे व्यर्थ ही कुचल दिया था। वह साँस भर कर चिल्लाई :

'हाय! उन बलिष्ठ लोगों को याद करके मुझे रोना आता है जिन्हें स्वार्थी इश्तर ने अपनी खुशी में मार कर उनकी स्त्रियों को बेवा बना दिया—

'हाय! मुझे उन सुन्दर लडकियों पर तरस आता है जो इस दुष्टा इश्तर की खुदगर्जी की वजह से अपने पतियों से जबर्दस्ती दूर कर दी गईं—

"हाय ! मै माता के अकेले बेटे की मौत पर रोती हूँ जिसे इश्तर ने वक्त आने से पहिले ही महज अपने गुस्से के कारण मार डाला था।"

और फिर गुस्से से भभक उठी और बोली :

"जाओ द्वारपाल, उस दुष्टा को अदर ले आओ जब वह इतना ज्यादा अदर ही आना चाहती है। पर ध्यान रखना कि उसे उसी तरह हेडीस के अदर लाया जाय जैसे कि सभी को लाया जाता है। कोई रियायत नही की जाय।"

द्वारपाल ने जाकर तब इश्तर के लिये दरवाजा खोल दिया और इश्तर उस अँधेरे लोक मे घुसी। जैसे ही वह अदर घुसी द्वारपाल ने उसके सिर से रत्न जटित मुकुट उतार लिया। वह आगे बढी और दूसरा दरवाजा आया। द्वारपाल ने उसके कानो के लटकते, मोती के बहुमूल्य बुदे उतार लिये। फिर वह और आगे बढी। जब तीसरे फाटक पर पहुँची तो उसके गले का मानिक जडा अनोखा हार उतार लिया गया। चौथे फाटक को जब उसने पार किया तो उसके छाती पर पहनने वाले हीरे के हार को उतरवा लिया गया। पॉचवे दरवाजे पर उसकी जवाहिरातो से जडी हुई करधनी उतार ली गई। पर वह बढी चली गई क्योकि वह भी अपनी धुन मे पक्की थी। पर हर दरवाजे पर जेवरात उतारते समय वह पूछती जरूर थी :

"ऐसा क्यो करता है ?"

तो द्वारपाल हर दरवाजे पर एक ही जवाब देता था :

"मालकिन का ऐसा ही हुक्म है। अल्लातू के हुक्म को कोई टाल नही सकता।"

वह आगे बढी। सर्वत्र अँधेरा ही अँधेरा था पर देर तक अँधेरे मे देखते रहने के कारण अब उसकी चमकीली ऑखे भी वहाँ की चीजो को देखने मे कामयाब हो गई थी। जब वह छठवे फाटक पर पहुँची तो द्वारपाल ने उसके हाथों और पैरो के जवाहिरात जडे सोने के कडे उतरवा लिये। अब इश्तर के बदन पर नाम के वास्ते भी एक जेवर बाकी नही था। पर वह और आगे चली। आखिर सातवॉ फाटक आया और यहाँ झटके के साथ उसके तमाम

कपडे उतार लिए गए और वह बिल्कुल नगी हो गई। न उसके बदन पर जेवर थे न कपडे, अब वह बिल्कुल खाली थी। उसके सिर के बाल खोल दिये गये और उसे वैसे ही आगे बढने को कहा गया। उसने बहुत बुरा माना और पूछा :

"मेरे साथ ऐसा बुरा बर्ताव क्यों करता है ?"

तो वही जवाब जो हर दरवाजे पर मिला था अब भी मिल गया :

"मालकिन का ऐसा ही हुक्म है। अल्लातू के हुक्म को कोई टाल नही सकता।"

और उसी हालत मे अँधेरे में द्वारपाल उसे नीचे-नीचे बहुत नीचे ले गया। और आखिरकार नगी स्वर्ग की रानी को हेडीस की अँधेरी रानी के सामने जा खडा किया। आभूषण और कपडों से खाली नगी इश्तर अब भी गर्व से सिर ऊपर किये हुये थी और अपनी हठ मे अडना उसे अब भी आता था। वह उसके सामने जाकर सिर उठाये खडी रही और अल्लातू यह सब देख कर उससे बहुत ज्यादा नाखुश हुई। उसने साथ ही साथ यह भी सोचा कि इस घमडी औरत को सजा जरूर देनी चाहिए। उसने ताली बजाई और सामने गुलाम हाजिर हो गया। वह उससे बोली :

"जाओ और नामतार को फौरन हमारी खिदमत मे हाजिर करो।"

गुलाम ने आगे-आगे जाकर नामतार को इत्तिला दी जो भागा-भागा आकर अल्लातू के सामने घुटने टेक कर बैठ गया और उसने जमीन चूमकर रानी को सलामी दी। नामतार ताऊन फैलाने वाला दानव था जो तूफान बनकर उडा करता और ताऊन की बीमारी फैलाया करता था। उसको देखकर अल्लातू ने हुक्म दिया :

"इश्तर के बदन मे जगह-जगह हमला करो और इसे बीमारी में ग्रस लो।"

बस फिर क्या था। बडी जोर की आँधी उठी और फिर तेज तूफान शोर मचाने लग गये। इश्तर को बड़ी तकलीफ हुई पर वह परवश थी। बार बार तूफान के थपेडे उसके नगे शरीर पर लगते और हर बार नई-नई जगहो मे

बीमारी फूट निकलती। वह दर्दो से कराह उठती पर कर कुछ न सकती थी। राज तो अल्लातू का था। तूफान पर तूफान छूटता रहा और ताऊन के दानव ने इश्तर के तमाम खूबसूरत बदन को बीमारी से भर दिया और वह पीड़ा मे चिल्लाने लग गई और जब वह इतनी दयनीय अवस्था मे हो गई तो पृथ्वी पर भी चीजो की बढन और नई जिन्दगी खातमे पर आ गई क्योंकि पृथ्वी की जिन्दगी और खुशहाली का सारा जिम्मा उसी का तो था। जैसे जैसे वह ताऊन के दर्द से वहाँ करवटे लेती और कराहती वैसे ही दुनिया मे भी बीमारी फैल गई और जगह जगह लोग मरने लग गए। उधर उसने दर्द से आँखे बन्द कर ली तो दुनिया मे भी लोगो की आँखें हमेशा के लिये बन्द होने लग गई। सारी सुन्दरता का अन्त आ गया और सब तरफ हाहाकार छा गया। दुनिया मे लोग बेदर्द बीमारी के शिकार होने लगे और उसका मरना देख कर अपने काम मे सफलता देखकर नामतार इश्तर के नगे जिस्म पर ज्यादा से ज्यादा हमले कर रहा था। अल्लातू अपने मन मे बहुत खुश थी कि वह देवी इश्तर से अच्छा बदला ले सकी थी।

जब हाहाकार बहुत बढ गया और दुनिया की व्यवस्था बिगडने लग गई तो देवताओ के दूत पाप-सुकल ने भागे भागे जाकर इश्तर पर छाई मुसीबत का जिक्र शामाष देवता से किया। शामाष सूर्य का देवता था, वह फौरन अपने पिता चन्द्रमा के मालिक सिन से जाकर मिला और उसने इश्तर पर हुए जुल्मो को सिन से बयान किया और यह भी कहा कि इश्तर के साथ दुश्मनी की वजह से ही दुनिया मे लोग ताऊन से मर रहे हैं और यदि इश्तर को वक्त से उस दुष्ट अल्लातू के पजो से नहीं छुडाया गया तो यह निश्चय है कि वह उसे मार ही डालेगी और इश्तर के साथ-साथ दुनिया का जीवन भी खत्म हो जायगा। सिन तब शामाष को लेकर भागा-भागा आकाश के देवता ईआ के पास गया और कहा :

"हे ईआ! तू सर्वशक्तिमान है। इश्तर जो स्वर्ग की रानी है, जो सुन्दरी है और जिसकी वजह से सारी दुनिया मे जिन्दगी और हँसी खुशी से लोग रहते हैं, वह इस समय हेडीस की रानी अल्लातू के फदे मे फँस गई है। उसे छुड़ाओ क्योंकि तुम्हारे सिवा किसी मे यह शक्ति नहीं है कि हेडीस के सात

फाटकों को अपनी खुशी से पार कर सके और फिर अपनी इच्छानुसार वापस भी आ सके।

ईआ ने उनकी तरफ गौर से देखा और फिर धीरे से कहा :

"यह तो कुदरत का कायदा है, जो हेडीस में एक बार चला जाता है वह वापस नहीं आता क्योंकि वहाँ से लौटने का रास्ता है ही नहीं। अल्लातू अपने देश की रानी है। जो वह करती है ठीक ही करती है। इश्तर वहाँ क्यों गई जब उसका वहाँ कोई काम ही नहीं था। भला उसको हेडीस के अँधेरे मे क्या लेना-देना था। पर जब उसने गलती की है और अपने गर्व में अल्लातू से टक्कर लेने गई है तो भुगतने दो। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा, मै क्यों उसकी मदद करूँ जब सब काम अपने आप कायदे से चल रहे हैं।"

ईआ की बेरुखी से क्रुद्ध होकर सिन और शामाष ने भला-बुरा कहना शुरू किया और जितना ही यह उसे छेड़ते उतना ही वह ऊँघने लगता था। पर आखिर मे सिन को एक तर्कीब सूझी। वह बोला :

"हे ईआ! तू घमड में हमारी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है पर तुझे शायद मालूम नहीं है कि इश्तर तेरे पुत्र तम्मुज के प्रेम में दीवानी हो गई है। तम्मुज को वह अल्लातू वक्त से पहिले मार कर अपने अँधेरे मैले और धूल-भरे लोक मे उठाकर ले गई थी और इश्तर उसी को छुड़ाने आँधी बन कर हेडीस जैसी मनहूस जगह में चली गई है। अब अगर तुझे इश्तर से मुहब्बत नहीं है और उसके दुख के द्वारा दुनिया मे फैले हुए हाहाकार की भी परवाह नहीं है तो कम से कम अपने पुत्र तम्मुज को छुड़ाने के लिये तो इश्तर की मदद कर।"

ईआ यह सुनकर खड़ा हो गया। उसे अपने प्यारे पुत्र तम्मुज पर दुख पड़ा जानकर बहुत दुखी हुआ और वह फौरन मदद को तैयार हो गया और बोला :

"इश्तर ने बहुत अच्छा काम किया है। मै तो तुम लोगों की परीक्षा कर रहा था कि तुम लोग दुनिया की कितनी भलाई चाहते हो। अल्लातू का यह काम बहुत ही अधिक बुरा है जो उसने तम्मुज को अपने यहाँ छिपा रखा है।

भला तम्मुज का उस अँधेरे लोक मे क्या काम जब कि उसके जिम्मे दुनिया की जिदगी और फसलो को बढाना है। जरूर म इसी वक्त इश्तर की रक्षा करूँगा और उसे अल्लातू के हाथो परेशान नही होने दूँगा। म आकाश का बड़ा देवता हूँ और अल्लातू दर्जे मे मुझसे नीची है, फिर सिन और शामाश हम तीनों की आज्ञा उसको माननी पडेगी क्योंकि हम सभी ऊँचे देवता हैं।"

सिन जो अब उकता गया था जल्दी बोला :

"तो जल्दी करो वरना इश्तर का न जाने क्या होगा ?"

और तब ईआ ने अपनी इच्छा से एक शेर-आदमी बनाया। यह एक बहुत बड़ा शेर था जिसका चेहरा आदमी का सा था। उसके बहुत बडे बडे पर भी थे और वह बहुत बलिष्ठ था। उसको ईआ ने वरदान दिया और कहा .

"तू जा और इश्तर को छुड़ा ला। अल्लातू को जाकर हमारा हुक्म सुना कि इश्तर के शरीर से, तमाम रोग फौरन दूर हो जाने चाहिये। तुझे मै यह ताकत देता हूँ कि तू बेखटके हेडीस लोक के सातो फाटको को अपनी मर्जी से लाँघ कर आगे जा सकेगा और वहाँ से वापस भी आ सकेगा। तेरा नाम नादूशू नामीर होगा और तुझे कोई कही भी न रोक सकेगा।"

और तब सिन और शामाश बहुत खुश हुये। नादूशू नामीर तब नीचे की ओर पर फैला कर उड़ गया और लम्बी सफर तय करने के बाद हेडीस के बाहरी फाटक पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने उस फाटक के बाहर खडे होकर पुकारा .

"खोलो फाटक ! खोलो ! मै नादूशू-नामीर हुक्म देता हूँ कि फाटक फौरन खोल दो वरना मै अपनी ताकत से सभी फाटक तोड़ दूँगा और सपूर्ण हेडीस लोक मे तहलका मचा दूँगा—सुनो ! कि मै बडे देवताओ का भेजा हुआ दूत हूँ और मेरा हुक्म तुम सब को मानना पडेगा।"

उसका गभीर गर्जन सुनकर हेडीस का द्वारपाल घबरा गया और बोला

"हे अनजान आदमी ! तुम थोडी देर प्रतीक्षा करो और मै जाकर शीघ्र ही अपनी मालकिन अल्लातू को तुम्हारी बातें जाकर बतलाता हूँ क्योंकि यहाँ

उनकी आज्ञा बिना कोई कुछ कर नहीं सकता ”

उसने अपनी बात भी पूरी नहीं की थी कि नादूपू-नामीर बीच में ही गुर्रा कर बोल उठा :

“मै कर सकता हूँ—क्योकि मैं तेरी मालकिन से भी ऊँचे देवताओं का भेजा हुआ हूँ।”

और उसने जोर लगाकर हेडीस का विशाल और मजबूत फाटक एक ही धक्के मे तोड़ दिया और तूफान की तेजी की तरह उस अँधेरे लोक में घुस गया। द्वारपाल डर के मारे सिर पर पैर रखकर भागा और उसने जाकर अल्लात् को उसके आने की खबर दी और कहा कि नादूपू नामीर ने बाहरी फाटक भी तोड दिया है। वह कह ही रहा था कि उछलता कूदता और जो उसके बीच में आता उसे मारता हुआ वह शेर-मनुष्य अल्लातू के सामने जा पहुँचा। उस समय हेडीस की रानी अपने धूल से ढँके तख्त पर बैठी फैसले कर रही थी। दरबार लगा हुआ था और अपनी-अपनी जगह सभी दर्बारी बैठे हुए थे। एक तरफ भयकर आग जल रही थी जिसकी पीली रोशनी उस भयानक दृश्य को और भी डरावना बना रही थी। बहुत बुरे और खतरनाक मुख वाले उसके सभी दरबारियों के विशाल पंख थे, जो उन्होंने ऊपर समेट कर खडे कर रखे थे। जमीन पर भयानक आग की लहरें हिलोरें मारती फिर रही थीं। पर नादूपू-नामीर न कभी डरना जानता था न वह डरा ही और अकड कर बोला :

“हे अल्लातू! मै महाबली ईआ, सिन और शामाष का भेजा हुआ दूत हूँ। मै भयानक योद्धा भी हूँ और इतना ताकतवर हूँ कि मेरे हमले को कोई भी नहीं रोक सकता, मै तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू शीघ्र इश्तर को छोड दे और जो ताऊन की बीमारी तेरे हुक्म से उसके शरीर में घुस कर उसे परेशान कर रही है उसे फौरन अलग कर ले। इश्तर महान् देवता अनु की बेटी है, और वह उज्वल स्वर्ग की रानी है। वह अपने प्रेमी तम्मुज से मिलने आई है इसलिये उसके काम में बाधा डालने का तेरा कोई हक नहीं है और यदि तू यह समझती हो कि हेडीस लोक मे जो कुछ होता है उसके बीच तुझे यहाँ की रानी होने के नाते दखल देने का अख्तियार है तो सुन कि यह मेरी आज्ञा है

कि तू अगर अपना भला चाहती है तो चुप बैठी रह। इश्तर अपनी मर्जी के अनुसार जहाँ जाना चाहेगी वहीं जायगी और जब तक वह चाहे तब तक तम्मुज से मिल सकेगी। इतना ही नही बल्कि यदि तम्मुज को वह अपने साथ ले भी जाना चाहेगी तो भी उसे पूरी छुट्टी है। वह अपनी तबियत से हर काम कर सकेगी। उसे किसी भी काम करने से रोकने का तेरा हक मै आज मे छीन कर तुझे आगाह करता हूँ कि यदि तूने मेरा कहा अर्थात् उन महान् देवताओ का कहना नही माना जिन्होंने मुझे भेजा है, तो समझ ले कि मेरा नाम नादूपू-नामीर है और मै मारते-मारते तेरी धज्जियाँ उडा दूँगा और तुझे बदी बना लूँगा और तेरे यह अँधेरे मे बसने वाले परिंदे दर्बारी भी सब मेरे हाथो मौत को सुपुर्द कर दिये जायँगे। भला इसी मे है कि पेश्तर इसके कि मुझे गुस्सा आवे, तू फौरन मेरे हुक्म की तामील कर।''

अल्लातू ने जब भरे दर्बार मे अपनी इस तरह तौहीन सुनी और सभी तरह से उसे नीचा देखना पडा तो पहिले तो गुस्से से थर थर काँपने लग गई पर बाद मे जब उसे होश आया कि वह सचमुच ही आने वाले के सामने कितनी कमजोर थी और खासकर उन महान् देवताओ के सम्मुख तो वह नाचीज ही थी, तब वह दुख से भर गई और अपमान से उसे रोना आ गया।

शोक और लज्जा से उसने छाती पीट ली और अपने होंठ काट डाले। गुस्से मे आकर उसने अपना अँगूठा भी दाँतो से काट डाला और सिसककर रोने लगी। उसके बाद वह उठी और कमजोर औरत की तरह नादूपू-नामीर को शाप देने लगी

''पराक्रमी देवता ऐसा करे कि म तुझे गिरफ्तार कर सकूँ और बडे कारागार मे हमेशा के लिये बन्द कर सकूँ!—

'नगर की नींवों मे सडता हुआ कूड़ा तेरा भोजन हो!—

''नगर की गन्दी नालियो की कीचड ही तेरे पीने का पानी हो!—

'अँधेरी सीलन भरी काल कोठरियाँ ही तेरा घर बनें!—

''तू हमेशा काँटो पर बैठे!—

''तेरे वश मे पैदा होने वाले हमेशा भूखे, प्यासे रहा करें और भूख और प्यास से तड़पा करें।''

शाप तो उसने नादूपू-नामीर को जी भर के दे लिये पर उसकी अवज्ञा करने का साहस उसको नहीं हुआ और उसने अपने ताऊन के देव नामतार को हुक्म दिया :

"इश्तर को जीवन का पानी पिला और मेरे सामने हाजिर कर।" जब नामतार जीवन का पानी लेकर दुख से कराहती हुई इश्तर के पास पहुँचा तो वह पहिले समझी कि वह कोई नई तकलीफ देने आया है पर जब पास पहुँचकर उसने उसे वह पानी दिया और पीने के लिये कहा तो उसके ताज्जुब का ठिकाना नहीं रहा। वह फौरन उसे पी गई और दूसरे ही क्षण उसका सारा दुख और दर्द और बीमारी जाती रही और वह पूर्ण रूप से तन्दुरुस्त हो गई। नामतार ने उसके जिस्म को उसी पानी से धो डाला। इश्तर का बदन बीमारी से मुक्त हो गया और वह सुन्दरी देवी फिर स्वस्थ होकर उठ बैठी और उसे ध्यान भी नहीं रहा कि थोड़ी ही देर पहले उसे पीड़ा से कितनी ज्यादा तकलीफ थी। जब वह अल्लातू के सामने लाई गई तो उसे देखकर वह किटकिटाने लगी पर नादूपू-नामीर को देखकर डर के मारे बोली कुछ भी नहीं और तभी इश्तर वापस जाने को तैयार हुई और जब वह पहले दरवाजे के पास पहुँची तो उसे उसके कपड़े वापस दिये गये और उसने वह पहन लिया। दूसरे दरवाजे पर उसको उसके हाथ और पैरों के सोने के जवाहिरात जड़े कड़े वापस मिल गए। उसने वह भी पहन लिये और आगे बढ़ी। अँधेरा अब भी वैसा ही था जैसा कि तब था, जब वह आई थी। तीसरे दरवाजे पर उसकी जवाहरातों से जड़ी करधनी उसे वापस मिल गई जो उसने बड़े चाव से अपनी पतली कमर के चारों तरफ पहन ली। चौथे दरवाजे पर उसे अपनी छाती पर पहनने वाला हीरे का हार वापस मिल गया। पाँचवे पर उसे गले का मानिक जड़ा अनोखा हार वापस मिला। वह खुशी में आगे बढ़ी और जवानी के जोर से उड़ी चली जा रही थी। छठे दरवाजे पर उसे उसके मोती के बुन्दे वापस दे दिये गये और जब वह हेडीस के बाहरी फाटक पर पहुँची तो द्वारपाल ने उसे उसका रत्नजटित मुकुट भी वापस दे दिया। उसने वह लेकर जैसे ही सिर पर रखा वैसे ही नामतार बोल उठा :

"हे इश्तर तू यहाँ से वापस तो जा रही है पर तूने अपने छोड़े जाने के सबध मे अल्लातू को कायदे के मुताबिक कुछ भी नहीं दिया है। इसलिए तू फिर वापस हो और अल्लातू के सामने जा—

'तू अपने प्रेमी तम्मुज से मिलने और उसको छुड़ाने आई थी पर अपना काम भूलकर वापस अकेली ही जा रही है। तू वापस जा और अल्लातू की इस नगरी मे तम्मुज को जीवन का पानी पिला और उसे उससे नहला दे। यह वही जीवन का पानी (अमृत) है जो तुझे अभी पिलाया गया था—

"अपने प्रेमी को नया जीवन देकर उसे अच्छी से अच्छी पोशाक पहना और स्फटिक की अँगूठी उसकी उँगली मे पहनाकर उसे सजा।"

इश्तर अपनी गलती पहचानकर रोने लगी। उसे अपने प्रेमी तम्मुज की याद ने घायल कर दिया और उसकी याद मे फफक-फफककर रोने लग गई। उसने दुख से अपनी छातियाँ पीट ली और बाल नोच डाले। फिर वह नामतार को बहुमूल्य हीरे जड़ी चूड़ियाँ देकर बोली :

"यह अपने प्रेमी तम्मुज की याद म मे तुझे देती हूँ", और फिर वह रोने लगी और कहने लगी·

"हे मेरे प्रेमी तम्मुज, क्या तू भी मेरी तरह विरह मे रोता रहता है?

"हाय वह दिन कहाँ गये जब दिनो मे स्फटिक की अँगूठी पहनाकर तम्मुज मुझे निहारा करता था!

"हरे पन्नो से बने कगनो से मुझे सजाकर मेरा प्यारा तम्मुज मुझे अपने साथ-साथ हँसी खुशी खेल खिलाया करता था—हाय वह समय कहाँ गया?

"हे पृथ्वी के मनुष्यो! हे स्त्रियो! तम्मुज को फूलो की सेज पर बिठाकर याद करो और पूजो और वह जरूर आयेगा क्योंकि वह बड़ा प्रेमी है।"

और फिर नामतार द्वारा बताये गये मार्ग से वह अपने प्रेमी से मिलने गई। गहरी अँधेरी कोठरी मे सील मे तम्मुज पड़ा हुआ था। फूल और गर्द उसके इर्द-गिर्द उसके सिर और शरीर पर छाई हुई थी। वह उदास और दुखी था। वह बहुत कम बोलता था और एक तरह से चुपचाप ही पड़ा रहता। उसकी तदुरुस्ती भी काफी गिर गई थी। वह पीला पीला हो रहा

था। उसके बाल रूखे-रूखे थे और वह हारा-थका पराजित-सा हेडीस के उस मनहूस अँधेरे में रहता था।

इश्तर उसे देखकर बहुत रोई। उसे स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि उसका हँसमुख प्रेमी इतनी घोर यातना सह रहा था। उसका दुख देखकर वह अपने को सँभाल नहीं सकी। उससे उसकी यह दशा देखी भी नहीं गई और उसने अपनी गर्दन क्षण भर को दूसरी ओर फेर ली। फिर वह उसके पास गई और उसने उससे वापस चलने को कहा। पर तम्मुज अब सचमुच मे ही मर चुका था और उसने उससे इकार कर दिया। इश्तर बहुत रोई और बहुत तरह से उसने उसे समझाया और कहा कि दुनिया मे उसके बिना दुख ही दुख था और फसले नष्ट हो रही हैं, पालतू जानवरों के झुण्ड-के-झुण्ड उसके बिना सूने-सूने रहते हैं, पर तम्मुज पर इन सब बातो का कोई असर नहीं पड़ा। उसने कहा :

"इश्तर तुम वापस चली जाओ और खुशी से रहो। मै अब यहाँ से नहीं जा सकता।"

इश्तर ने उसे बार-बार समझाया और वापस चलने को कहा, पर वह हर बार मना ही करता रहा।

आखिरकार इश्तर भारी मन लिये दुखी होकर वहाँ से चली आ ।

तम्मुज फिर वापस सजीव होकर कभी नहीं आया। फसलों को बढाने और दुनिया की भलाई करने अदृश्य रूप से जरूर वह आया करता। अल्लातू के अँधेरे और गर्द छाये वातावरण में रहकर वह जीवन की खुशियाँ एकदम भूल गया और हमेशा दुखी हो गया।

दो मील था। नगर में तीन और चार मञ्जिल की इमारतें थीं और अधिक स्थान बागो से घिरा हुआ था, यहाँ तक कि नगर का एक हिस्सा इमारतो मे रुका हुआ था तो पाँच हिस्से सडको और बागों में बँटे हुये थे।

बादशाह नबूचद्नज्जर (द्वितीय) उस महानगर और उसके इर्द-गिर्द भूभाग का राजा था। वह बडा बलशाली था। उसका महल बहुत बडा था और हर तरफ एक-एक मील लबा था। चारों तरफ से मजबूत और चार मील के घेरे का वह भव्य महल बहुत ही अधिक ऊँचा था। इसमे अन-गिनती कमरे थे जो सभी बहुमूल्य वस्तुओं से सजे हुए थे। फर्श पर चमकीले पत्थर जडे थे और खम्भे बहुत अच्छी तरह गढे गये थे। जगह-जगह चित्र-कारियाँ की गई थीं और सगमरमर तथा काले पत्थरो की विशालकाय मूर्तियाँ खडी थीं।

तरह-तरह के हथियार और लबे-पैने नेजे वहाँ टँगे हुए थे। महल के चारों तरफ हिफाजत के लिये एक के बाद एक तीन चारदीवारियाँ बनी हुई थीं। इन पर गहरी नक्काशी खुदी हुई थी जिसमें लड़ाई के दृश्य और शाही-शिकार तथा राजसी-उत्सवों के दृश्य दिखाये गए थे। बडे-बडे फैले हुए परों वाले आदमी की शक्ल वाले भीषण बैल, सिंहद्वार की रक्षा करते थे।

नगर के बीच में जरा ऊँची जगह पर यह महल बना हुआ था। वह पाँच-मजिला था और हर एक मजिल में पचास पचास कमरे व दालान थे। हर कमरे में नीचे मोटी पर्तें कालीनों की बिछी रहतीं और छतो पर व दीवालों पर तरह-तरह के गहरे रग किये हुए थे। रगों के बीच मे विचित्र चित्र सुनहले रगों से बनाये गए थे। पत्थर की मूर्त्तियों के हाथों में सुनहरी डडियों में कपडे लिपटे थे जिन पर सुगधित तैल डाल कर रात मे मशाले जलाई जातीं। खम्भे बिल्लौर की तरह चमचमाते और इतनी ज्यादा नक्काशी गढी हुई थी कि रुमाल से खूबसूरत मालूम होते। बीच-बीच में उन पर बहुमूल्य जवाहिरात जडे हुए थे जो रात मे मशाल की रोशनी में जगमग-जगगम करते थे।

महल की दालानो के बाहर बडे-बड़े सगमरमर के फव्वारे चलते, जिनमे से साफ पानी निकलता रहता, रग बिरगी मछलियाँ, सुनहरी मछलियाँ और तरह तरह के चमकीले पानी के जीव उन फव्वारो के नीचे बने गोल हौजो मे तैरा करते। खूबसूरत बेलें आँगन की दीवालो पर चढी रहती जिनमे से खुशबू आया करती और इन्ही मे छोटी-छोटी रगीन चिडियाँ रहा करती। जब आँगन मे आदमी न होते तो यह चिड़ियाँ बाहर निकल कर फव्वारो मे नहाती और कलरव करती।

कमरो की दालानो की छतो से तरह-तरह के झाड लटके रहते, जिनमें रात को रोशनी छन कर रग बिरगी हो जाती।

सोने की बनी सुराहियो मे शराब भरी रखी होती और जवाहिरात जडे सोने के गिलासो मे ढाली जाती, जिसे राज-परिवार के लोग पीते। शराब फल के रसो की बनी होती थी जो बहुत ही अधिक स्वाद की मीठी होती।

महल मे दस हजार नौकर-चाकर रहते थे जिनमे दो हजार स्त्रियाँ थी, इनके अलावा पाँच सौ राजपरिवार के आदमी थे। नबूचद्नज्जर बादशाह शराब बहुत पीता था और दासियाँ ही उसको शराब ढाल ढाल कर पिलाती थी। नबूचद्नज्जर के कई रानियाँ थी जो एक से एक बढ कर सुन्दरी थी। वह बड़ा काबिल राजा था और अपने अच्छे इतजाम के लिये मशहूर था। उसने एक बाग ऐसा बनवाया था कि जो दुनियाँ मे निराला था।

पचास फीट मोटी और तीन सौ पचास फीट ऊँची दीवालो के चौकोर घेरे के बीच दैत्याकार खम्भों के ऊपर एक छत बनाई गई थी जिसका घेरा तीन मील था। यह छत मोटे-मोटे भारी पत्थरो से पटी हुई थी और पिघली धातुओं द्वारा जोडी गई थी। पूरी छत एक बहुत बडे मैदान के रूप मे फैली हुई थी। इस छत के चारो तरफ ऊँचे और मोटे पत्थरो से डौरी बनी हुई थी। यह डौरी बीस बीस फीट ऊँची चारो तरफ थी और इस पर गहरी खुदाई का काम हो रहा था। छत पर पचास फीट मोटी पर्त मिट्टी की डाली गई थी और पानी मिलाकर कूट दी गई थी।

मिट्टी के ऊपर उस चौरस मैदान में बड़ी कुशलता से एक बाग लगाया गया था जिसमें छोटे-बड़े सभी तरह खूबसूरत पेड़ लगे हुये थे। जगह-जगह पानी पीने के लिए चश्मे बनाये गए थे और हर घेरे के बीच एक संगमरमर का मजबूत व सुन्दर फव्वारा चलता रहता जिसमें से सुगंधित जल ऊपर उठकर बिखर जाता। तरह-तरह की क्यारियों में रंग बिरंगे फूल अपनी छटा बिखेरते रहते। वृक्षों पर पक्षी कलरव किया करते और घनी कुंजों में धनी लोग ऐश किया करते। हरियाली के बीच स्थान-स्थान पर संगमरमर के गोल या अठपहल चबूतरे बने रहते जिन पर सुन्दरी नर्तकियाँ नाचा करतीं थीं। कहीं गुलाब की खुशबू महकती तो कहीं केवड़ा ही केवड़ा दिखलाई देता। ऊपर हवा बड़े जोरों से चलती और वहाँ सभी तरह के सुखों का साधन था।

एक तरफ़ बादशाह के रहने के लिए एक महल भी ऊपर ही बना हुआ था जिस पर चढ़कर वह दूर-दूर तक के दृश्य देख सकता था। नगर की चारदीवारी के भी बाहर का दृश्य वहाँ खड़े होकर देखा जा सकता था। नबूचद्नज्जर अपने ऊपर के उस महल में ही अधिकतर रहा करता था। इस महल में उसके एक हजार दास-दासी रहते थे।

जब फलों का मौसम आता तब बादशाह ऊपर ही इस बाग में से फल तुड़वाकर खाया करता और मौज किया करता।

सबसे विचित्र बात यह थी कि तीन सौ पचास फीट नीचे जो यूफरिटीज नदी बहती थी उसका पानी यन्त्रों द्वारा ऊपर इस बाग तक अपने आप चढ़ जाता जिससे पूरा बाग सर-सब्ज रहता था। मिट्टी के मोटे-मोटे नलों द्वारा यह पानी बड़े जोरों से ऊपर चढ़ाया जाता और ऊपर एक बहुत बड़े हौज में जमा किया जाता और फिर वहाँ से पक्की नालियों द्वारा बाग में पेड़ पौधों में दिया जाता। बाग की पक्की रविशों के दोनों तरफ यह नालियाँ बहतीं और बड़ी मनोहर लगतीं। कई-कई जगह पानी कटे हुए रंगीन पत्थरों पर से होकर ढाल देकर नीचे उतारा जाता जिससे ऐसा लगता जैसे पानी रंगीन लहरें बनाता हुआ नीचे उतरता हो।

नबूचद्नज्जर को ऐसे पानी में स्त्रियों को नहाते देखने का बहुत शौक था। जब उनके लंबे-लंबे बाल पानी के साथ नीचे बह कर हिलते तो वह जोरों से हँसा करता और खुश होता था।

इस आसमान के बीच में टँगे बाग पर जाने के लिए नीचे से एक घुमौअल रास्ता था जो खम्भों के चारों ओर घूम-घूमकर ऊपर चढ़ता था। बादशाह इस रास्ते से दासों द्वारा उठाई जाने वाली सोने की पालकी में बैठकर नीचे से ऊपर जाता।

एक दिन बादशाह अपने ऊपर वाले महल की छत पर घूम रहा था। जिधर वह जाता उधर ही दासियाँ छत पर ताजे फूल बिखेर देतीं। वह रंगीन कपड़े पहने और सोने का ताज लगाये बड़ा बली मालूम होता था। इसी तरह जब उसे घूमते घूमते देर हो गई तो वह थक गया और उसने दासी की तरफ देखा। वह फौरन समझ गई और उसने दूसरी दासी को इशारा किया, उसने तीसरी को और उसने चौथी को और इसी तरह सत्तरहवीं दासी ने जाकर सोने की सुराही में शराब भरकर सोने के गिलास में शराब ढालकर उसके सामने पेश की। यही उसके महल का कायदा था कि जिसके जिम्मे जो काम हो वही उस काम को करे। शराब ढालकर पिलाने का काम उस सत्तरहवीं दासी का ही था।

जब वह शराब पी रहा था तो बोला :

"क्या ही अच्छा होता अगर एक मीनार इतनी ऊँची होती जहाँ से यह बाग भी बहुत छोटा दिखलाई देता।"

उस दासी ने उत्तर दिया .

"ऐ बादशाह! तू दुनियाँ का सबसे बड़ा बादशाह है। तेरे सामने सारी दुनियाँ झुकती है। तेरे हुक्म में मौत और खुशी दोनों ही खड़ी रहती है। फिर भला तुझे फिक्र किस चीज की है। क्यों नहीं हुक्म देता और देख कि तेरे हुक्म से एक मीनार तो क्या कई आसमान तक ऊँची इमारतें बन जाती हैं।"

बादशाह की आँखों में चमक आ गई और वह उस दासी से खुश हुआ। फौरन अपने गले से उतार कर बड़े-बड़े मोतियों का एक हार उसकी ओर फेंक दिया। दासी ने जमीन चूमकर राजा का अभिवादन किया और उसकी और भी तारीफ करने लगी।

नवूचद्नज्जर ने दूसरे ही दिन भुवन विख्यात मीनार नगर के एक कोने में बनवाना शुरू कर दिया। एक फर्लाङ्ग लम्बी, एक फर्लाङ्ग चौड़ी जमीन में गड्ढा खोदा गया। आधा मील गहरा गड्ढा खोदा गया और उसे पत्थर से चिन कर उसके ऊपर एक ठोस पत्थर और चूने की मीनार बनाई गई जिस पर चढ़ने की सीढ़ियाँ मीनार के चारों ओर घूमकर चढ़ती थीं। उस मीनार पर दूसरी, और उस पर तीसरी और इसी तरह आठ मीनारें एक दूसरे के ऊपर बनाई गईं।

जब मीनार बनकर तैयार हुई तो वह एक फर्लांग लम्बी, एक फर्लांग चौड़ी और आठ फर्लाङ्ग ऊँची थी। हर एक मंजिल में बैठकर आराम करने की जगह थी। इन जगहों में कुर्सियाँ पड़ी रहती थीं जिन पर कई आदमी बैठकर थकान मिटा सकते थे।

मीनार की सबसे ऊँचे हिस्से में एक विशाल मंदिर बनाया गया था। इस मंदिर के बीचोबीच एक बहुत ज्यादा बड़ा पलंग था जो बेशकीमती सामानों से सजा हुआ था और उसके सामने एक ठोस सोने की बड़ी मेज रखी थी। कोई मूर्त्ति इस मंदिर में नहीं थी। न उस मंदिर में रात्रि के समय कोई रह ही सकता था। केवल एक जवान औरत वहाँ रहती थी जो बेबल की ही निवासिनी होती। चैल्डियनों के पुरोहितों के मतानुसार यह औरत उस देवता की स्त्री थी जो अदृश्य रूप में उस मीनार के ऊपर बने हुए उस मंदिर में रहता था। उसी बड़े पलंग पर वह सोता था और उस सोने की बड़ी मेज पर खाना खाता था। ऐसा खयाल था कि देवता ने बेबल नगर से अपनी मन-पसंद स्त्री अपने लिये छाँटी थी।

एक दिन नवूचद्नज्जर उस मंदिर की ऊँची चोटी पर चढ़ कर जब नीचे देखने लगा तो दूर नीचे उसे अपना महानगर दिखाई दिया जिसके एक

तरफ कुछ ऊँचाई पर उसका बाग लहरा रहा था। वह बहुत खुश हुआ और वहाँ खडे होकर बडी देर तक सुख देने वाली हवा का आनन्द लेता रहा।

उसके बाद भी बादशाह का इमारत बनवाने का उत्साह कम नही हुआ। उसने नगर की चारदीवारी के अदर एक बहुत ऊँचा पक्का बाँध बनवाया जिसमे यत्रो द्वारा हमेशा पानी भरा रहता। जब नदी मे बाढ आती या जब गर्मियो मे वह पतली सी धार रह जाती तब नगर के निवासियो को उस बाँध से पानी मिलता।

बाग बगीचे और छोटे खेत वगैरह मे पानी नदी से लाई गई नहरो द्वारा दिया जाता था।

नगर मे हमेशा इतना अन्न भरा रहता कि अगर कभी बेबल पर शत्रु हमला कर देता और उसे चारो तरफ से घेर लेता तो भी बरसो वहा के लोग आराम से उसे खाते रहते। रात्रि के समय नगर के सौ फाटक बद हो जाते और जब शत्रु हमला करता तो हमेशा बद रहते। फाटक ठोस पीतल के मोटे दल के थे जो किसी भी तरह टूट ही नही सकते थे।

इतना वैभव और बलशाली राज्य जो दुनिया भर मे कही भी नही था—उस जबर्दस्त बादशाह नबूचद्नज्जर के नीचे था।

इसी तरह रहते-रहते बहुत दिन हो गए। एक दिन एक विचित्र घटना हुई। बादशाह ने अपनी परछाँई पानी मे देखी और उसी समय से वह पागल हो गया। किसी को उसके एकदम पागल होने का ध्यान तब तक नही हुआ जब तक उसने अपनी अजीब हरकत शुरू नही की। जब उसने एक नौकर को उस ऊँचे बाग की डौर के ऊपर से नीचे ढकेल दिया तो सबो ने यह समझा कि वह गुस्सा हो गया है, पर जब खुद भी कूदने को तैयार हो गया तब तो सेवको ने उसे पकड लिया। अब वह काटते, चिल्लाते और ऊधम मचाते, अट-सट बकते हुए राजमहल की तरफ भागा और जब वह वहाँ पहुँच गया तो उसके इस अजीब तरह के बर्ताव से घबराई हुई एक दासी को उसने गला घोट कर मार डाला। चारो ओर कुहराम मच गया। सभी अपनी जान बचाकर भागने लगे। तभी राजमहल के अन्दर के हिस्से मे जाकर बहुमूल्य

वस्तुओ को बर्बाद करने लगा। उसने भारी लोहे की गदा से कई अनोखी पत्थर की मूर्तियाँ तोड दीं और उठा-उठाकर सोने व जवाहिरात के सामान बाहर फेंक दिये। उसकी एक रानी उसे समझाने आई तो उसके सिर पर गदा मार कर उसको मार डाला। चारो तरफ हाहाकार मच गया।

उसके वजीरो ने तब यह उचित समझा कि उसको बलपूर्वक पकड़ लिया जाय और उसका इलाज कराया जाय। पर उसको पकडना भी हँसी-खेल नही था। फिर भी हिम्मत करके उसे चारो तरफ से घेरा गया और शेर पकडने के जाल मे फँसा कर बेकाबू कर दिया गया। उसके बाद उसका इलाज शुरू हो गया। अब वह अपने जमीन पर बने महल मे रखा गया था। वह पडे-पडे उस ऊँची मीनार को देखा करता और हँसा करता। कभी अपने कपडे फाड डालता तो कभी दाढ़ी नोचने लग जाता। आखिरकार जब वह पागल-पन मे ही मार काट की ओर बढा तो लोगो ने मुनासिब समझा कि उसे या तो जान से मार दिया जाय या फिर नगर के बाहर छोड दिया जाय क्योंकि इलाज तो उसका होता ही नहीं था। चूँकि वह राजा था इसलिये मारना तो उसका किसी को मंजूर नही हुआ। यही हुआ कि उसे नगर के पीतल के फाटक के बाहर रात्रि के समय छोड दिया गया।

वह नबूचद्नज्जर जिसने इतना बडा नगर भुवन-विख्यात बनवाया था, जिसने आसमान के बीच बाग लगाया था और वह जिसने एक मील ऊँची ठोस मीनार बना कर उस पर सुन्दरी स्त्री को अदृश्य देवता की पत्नी बनाया था, अब असहाय होकर, पागल बनकर अपने ही नगर से बाहर निकाल दिया गया। पर उसे इस बात का थोडा सा भी ज्ञान नही रहा क्योंकि वह तो पागल हो चुका था। वह सीधे जगल की ओर बढ़ा और चलते-चलते घोर वन में जा पहुँचा। जब थक गया तब एक जगह पत्थर पर लुढक कर सो गया। रात भर जाडे मे वहीं पड़ा रहा। दूर, बेबल की चारदिवारी के अदर एक मील ऊँची मीनार खडी थी और अपने बनाने वाले उस पागल को देख-देख कर मानो रो रही थी। पर नबूचद्नज्जर बेखबर था। देवताओ के प्रकोप से बेचारा ऐसी बुरी गति को प्राप्त हुआ था।

ऐसे ही जगल मे रहते-रहते वह जगल का ही निवासी बन गया। उसके कपडे वगैरह जो वह पहन कर आया था सब फट चुके थे और वह नगा ही घूमा करता था। वह जानवरो के साथ रहता और उन्ही के साथ घास खाया करता था और पानी पीता था। धीरे-धीरे जब वह और भी ज्यादा उनके साथ रहा तो बाद मे वह झुककर घास चरने और जानवरो की ही तरह झुककर यूफरिटीज नदी से पानी पीने लग गया। उसकी बोलने की आदत भी छूट चुकी थी और जानवरो की तरह वह कभी रँभाता, तो कभी गुर्राता तो कभी भूँकने लग जाता। दूर से कभी मनुष्यो को देखता तो डर कर जगल की ओर भाग जाता। उसका नाम अब वेबल मे 'जानवर-मनुष्य' पड चुका था और उससे लोग डरने भी लग गये थे। नगर के कई निवासी जब जगल की ओर जाते थे तो दूर से देख कर वापस भाग आते थे और देखी-सुनी अनेक प्रकार की कथाएँ अपने मित्रों और सबधियो को उसकी बाबत सुनाते।

राज मत्रियो ने एक दिन मत्रणा की और उसे किसी तरह अच्छा करने की तरकीब सोची जाने लगी। हकीमो से पूछा गया कि क्या वह दोबारा इलाज कर सकते हैं और इसी तरह बादशाह के हित की बाते सोची जाने लगी।

आखिरकार यह तय पाया कि इस तरह जीने से तो उसका मर जाना ही अच्छा था क्योकि मर कर वह मेरोडाक वेल देवता की शरण मे चला जायगा। एक शिकारी को उसके पीछे जगल मे भेजा गया कि जाकर उसे तीर मार दे और दुनिया से उठा दे।

इधर नबूचद्नज्जर के शरीर के बाल बढने लगे और रोज रात के वक्त स्वर्ग से ओस उन बालो को भिगोती और सीचती, साथ ही साथ उसके नाखून भी बढने लगे। अब वह दूर से देखने पर जानवर जैसा ही मालूम होता था। एक दिन सुबह जब वह जागा तो वह बहुत शात था—उसका पागलपना जाता रहा था। अब वह ठीक हो गया था। उसने अपने चारो तरफ देखा। दूर वेबल शहर के अदर उसे अपनी बनवाई हुई एक मील ऊँची ठोस मीनार दिखाई दी। फिर उसने वह आकाश मे टँगा बाग देखा। सामने ही

नगर की ऊँची और मजबूत चारदिवारी दिखाई देती थी। उसे पुरानी बातें याद आने लगी। पर जैसे-जैसे उसे सब बातें याद आती जाती वैसे ही वैसे उसका दिल दुनिया से हटता जाता यहाँ तक कि वह बेबल से मुँह फेरकर दूसरी ओर घूम कर बैठ गया और मेरोडाख बेल से प्रार्थना करने लगा और उसके बाल और नाखून तब तक इतने बढ गये थे कि बाज के पंखों और नाखून जैसे हो गए थे। उसने अपने बाल फड़फड़ाये और उडने लग गया।

नीचे शिकारी ने देखा कि उसका शिकार तो उड़ा जा रहा है। पर वह कुछ भी नहीं कर सका। नबूचद्नज्जर उड कर स्वर्ग चला गया।

सुन्दरी सैमीरैमिस

ईसामसीह से करीब तीन हजार साल पहले एसिरिया मे एक बहुत ही बड़ी रानी राज करती थी। उसका नाम सैमीरैमिस था। इसे सम्भू-रम्मात भी कहा करते थे क्योकि उसे बचपन मे कबूतरो ने पाला था।

एक बार एक स्वर्ग की देवी के एक लडकी पैदा हुई। लडकी पृथ्वी पर हुई थी, इसलिये उसे वह स्वर्ग कैसे ले जाती और खुद ठहर भी नहीं सकती थी क्योकि उसे स्वर्ग मे जाना था, इसलिये वह उसे जगल मे छोडकर चली गई, जहॉ कबूतर बहुत थे। बच्ची पहिले तो सोती रही पर जब जागी तो रोई। पर उसकी मॉ तो चली गई थी, कबूतरो ने पेड से उसे देखा और उन्हे बडी दया आई। वह फौरन उडकर उसके पास आ गए। बच्ची उन्हे देखकर हॅसने लग गई तो वह भी उसे चारो तरफ से घेरकर उसकी रक्षा करने लग गए। उन्होंने उसको पाला-पोसा और उसको ला-लाकर दूध पिलाया और उससे हर वक्त खेला करते। बच्ची भी कबूतरो से बहुत खुश थी और इसी प्रकार वह बडी होने लगी।

एक दिन राजा का चरवाहा अपनी भेड़ बकरियॉ चराते-चराते उसी जगल मे आ निकला। उसने बकरियॉ जगल मे चरने छोड दी और खुद एक पेड की घनी छॉह मे सो गया। वह देर तक सोता रहा और जब उसकी आँखें खुलीं तो शाम हो चुकी थी। वह घबराकर उठा और भेड-बकरियों को घेरकर वापस जाने की तैयारी करने लगा। सभी भेडे और बकरियॉ उसे मिल गई-पर एक भेड़ का बच्चा न मिला। चरवाहा अपने एक बच्चे को भी जगल मे कभी नहीं छोड़ता था चाहे उसके पास हजारों जानवर ही क्यो न हो। बस उन सब जानवरो को घेरे मे खड़ा करके वह उस भेड के बच्चे को ढूँढने निकल पडा। ढूँढते-ढूँढते वह जगल के बिल्कुल अदर तक जा पहुँचा और वहाँ जहॉ उसे वह बच्चा नजर आया तो वहीं देखता क्या है कि एक पेड के नीचे घास के मुलायम बिछौने पर एक बहुत ही अधिक सुन्दर बच्ची लेटी हुई है

और कबूतरों से किलकारियाँ मारकर खेल रही है। वह छिप गया और आश्चर्य से देखने लगा। एक कबूतर उसी समय एक मिट्टी के बर्तन में दूध लाया और उसने उस बच्ची को पिलाया। देर तक कबूतर उससे खेलते रहे। यह सब उसे बहुत अच्छा लगा।

जब चरवाहा उस पेड़ के नीचे पहुँचा तो कबूतर मिलकर उस पर हमला कर बैठे। पर चरवाहे ने उनकी परवाह न करते हुए उस बच्ची को झुककर उठा लिया और प्यार से उसे अपने सीने से चिपका के वापस लौटा। कबूतरों ने उस पर चोंचें मारी पर उसने अपना डंडा चारों तरफ ऐसा घुमाया कि कबूतर सभी उड़ गए और बच्ची के बिछोह मे पेड़ की डालियों पर बैठकर जोर-जोर से चिल्लाकर रोने लगे।

अँधेरा छा चुका था। अब चरवाहे ने एक हाथ मे उस बच्ची को लिया और दूसरे से मेमना उठाया और अपने टैने की तरफ चल दिया और फिर उन्हें हाँककर वह गाँव की ओर ले चला।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी स्त्री ने उससे पूछा :

"आज तुम्हे इतनी देर क्यों हो गई ?"

तो उसने जवाब के बदले मे उस सुन्दर बच्ची को अपनी गोद से उसकी गोद मे दे दिया और सारा किस्सा उसे खोलकर सुना दिया। चूँकि चरवाहे के अपना कोई बच्चा नहीं था, इसलिये उसकी स्त्री को वह बच्ची बहुत ही ज्यादा प्यारी लगी और उसने उसे अपनी छाती से लगाकर चूम लिया और उसे प्यार करने लगी। चरवाहे ने उस बच्ची को गोद ले लिया और वह बच्ची सुखपूर्वक उसके घर मे रहकर बडी होने लगी। वह चरवाहा और उसकी स्त्री उसे जान से भी ज्यादा प्यार करते और बडे प्यार से पालने लगे। बच्ची जैसे-जैसे बडी होती जाती वैसे ही वैसे उसकी सुन्दरता बढ़ती जाती थी। वह इतनी सुन्दर और हृष्ट पुष्ट सुडौल बदनवाली लडकी थी कि उसे जो देखता वही मुग्ध हो जाता था।

और इसी तरह जब वह एक दिन बडी हुई तो उसकी सुन्दरता की चर्चा गाँव गाँव में होने लगी। उसका रूप देखकर आकाश के देवता भी उसकी

प्रशंसा करते और हर एक युवक उसे अपनी स्त्री बनाने को लालायित रहता। चरवाहा और उसकी स्त्री उसे देख देखकर खुशी से फूले नहीं समाते थे। सैमीरैमिस जितनी सुन्दर थी उतनी ही तेज बुद्धिमती भी थी। वह अच्छे-अच्छे शृंगार करके हमेशा हँसती-कूदती, नाचती गाती फिरती और सब का मन अपनी ओर खींचकर रखती थी।

ऐसिरिया के बादशाह निन्नस के एक सेनापति का नाम ओन्नस था जो उस समय निनैवेह प्रान्त का सूबेदार था। वह बड़ा बलवान और बहादुर सेना का अफसर था। वह एक दिन घोड़े पर बैठकर शिकार को निकला तो जब इस गाँव से निकला तो उसे सैमीरैमिस रास्ते मे दिखाई दी। वह उसकी सुन्दरता को देखकर ठिठक गया और उसने उसके बारे मे जाँच की। जब उसको मालूम हुआ कि वह एक चरवाहे की बेटी थी तो उसने फौरन उससे वह लड़की अपने लिये शादी मे माँगी, क्योंकि वह उस पर ऐसा रीझ गया था और उसके बिना रह नही सकता था। चरवाहा इस बात को सुनकर बहुत खुश हुआ और फौरन सैमीरैमिस की शादी उससे करने को तैयार हो गया, फिर दूसरे ही दिन कायदे के मुताबिक सैमीरैमिस के लिये पालकी आई और उसमे बिठाकर उसे ओन्नस के महल को भेज दिया गया। जब वह चली गई तो उसके विछोह मे चरवाहा और उसकी स्त्री जी भरकर खूब रोये और सैमीरैमिस भी जाते वक्त बहुत रोई।

अब वह ओन्नस के महल मे पहुँचकर रानियो की तरह रहने लगी और अमीर होने के कारण हमेशा शृङ्गार व ऐश मे रहने लग गई।

ओन्नस उस जैसी सुन्दरी स्त्री को पाकर हमेशा मौज करने लगा और इतना खुश रहता कि जिसका कोई ठिकाना नहीं था, पर सैमीरैमिस चालाक औरत थी। सुन्दरी होने के साथ-साथ वह चालाकी से भी अपना मतलब निकालना सीख गई थी क्योंकि महलो मे रहने पर सभी को थोड़ी बहुत चालाकी सीखनी होती थी। फिर वह ठहरी चरवाहे की बेटी, एकदम जो सेनापति के घर मालकिन बनकर आई तो अमीरी के नशे मे चूर रहने लगी। ओन्नस ने उसे पूरी आजादी दे रखी थी कि जहाँ चाहे जा सकती थी, जो चाहे पहिन सकती थी और जो चाहे खा सकती थी। ओन्नस उसके प्रेम

में सब कुछ भूला हुआ था यहाँ तक कि अपना सरकारी काम भी सही तरीके से नहीं करता था। पर सैमीरैमिस अपने मन मे उसे बिल्कुल नहीं चाहती थी और अपने मन में हमेशा और ऊँचे चढ़ने का सपना देखा करती थी।

जब इसी तरह ओन्नस की गफ़लत से काम बिगड़ने लगा और आसपास के इलाकों मे उपद्रव मचने लगा तो बादशाह निन्नस ने उसे तलब किया और उसे अपने सामने बुलाकर बहुत डाँटा। उसे खुद आश्चर्य हो रहा था कि आखिर इतने योग्य सेनापति को हो क्या गया जो उसका काम में जी नहीं लगता। बादशाह होशियार आदमी था। उधर तो उसने ओन्नस को डाँट-फटकार वापस भेजा और चुपचाप कुछ आदमी इसलिये उसके घर की तरफ रवाना कर दिये कि वे जाँच करें कि वे किस काम की वजह से या किस कारण से अच्छी तरह से काम नहीं करता।

दूत चुपचाप ओन्नस के यहाँ गए और शीघ्र ही उन्हें जाँच पड़ गई कि ओन्नस की सुन्दरी स्त्री सैमीरैमिस ही उसे गाफिल बनाने का कारण है। उन्होंने यह भी जान लिया कि सैमीरैमिस की अपूर्व सुन्दरता के ही कारण सेनापति का जी सिवा उसके पास रहने के और किसी काम में नहीं लगता है। और यह भी कि सैमीरैमिस को वह बिल्कुल पसन्द नहीं है।

उन्होंने जाकर सब बातें बादशाह निन्नस को बतलाई और उस औरत की खूबसूरती का ऐसा बखान किया कि बादशाह उसे देखने को आतुर हो गया। बस उसने ओन्नस को उस स्त्री सहित अपने महल में आने का हुक्म जारी कर दिया।

जब ओन्नस ने हुक्म देखा तो घबराया और तरकीब सोचने लगा कि किस तरह सैमीरैमिस को बादशाह के सामने जाने से रोका जाय पर जब उसको यह मालूम हुआ कि सैमीरैमिस खुद जाने को तैयार बैठी है बल्कि जाने का मौका ही देख रही है तब तो उसे चुप रह जाना पड़ा क्योंकि वह उससे डरता भी था। निश्चित दिन ओन्नस सैमीरैमिस सहित बादशाह निन्नस के महल मे पहुँचा तो वहाँ उनकी बहुत आवभगत हुई और बड़ी शानदार दावत उनको दी गई। इस मौके पर सैमीरैमिस का शृंगार बहुत ही

अच्छा था और वह देखने मे रानी सी मालूम होती थी । निन्नस उसे देखते ही उस पर रीझ गया और मोका पाकर उससे अकेले मे अपनी मशा जाहिर की । सैमीरैमिस हॅसती रही पर बोली कुछ नही ।

जब दावत खत्म हुई तो ओन्नस ने बादशाह के सामने जाकर उसके कदम चूमकर अपना धन्यवाद प्रगट किया। बादशाह ने उससे कहा :

"ओन्नस हम तुमसे खुश हें और तुम्हारी इस औरत सैमिरैमिस से और भी ज्यादा खुश हैं। हम चाहते हें कि तुम अपना प्रान्त अच्छी तरह इतजाम मे रखो और क्योकि तुम इस औरत की वजह से ठीक काम नही कर रहे हो, इसलिये इसे हम अपने लिये यहीं रोक लेंगे। तुम अकेले वापस चले जाओ ।"

ओन्नस बहुत रोया, घिघियाया और कहा .

"हे बादशाह ! इसके बिना मैं जिन्दा नही रह सकूँगा क्योकि इसे मै बहुत चाहता हूॅ। इसलिये या तो मुझे इसके साथ जाने दीजिये या मुझे मरवा डालिये ।"

पर जब तक सैमीरैमिस हॅसती हुई बादशाह के बगल मे जाकर खडी हो गई थी जिसको अपने पास देखकर बादशाह ने ओन्नस को डॉटा और कहा .

"तुम चले जाओ जैसा कि तुमको हुक्म दिया गया है वरना मारकर निकाल दिये जाओगे ।"

और बादशाह सैमीरैमिस का हाथ पकडकर महल के अन्दर जाने लगा। अब जब सारी आशाएँ डूब गई तो ओन्नस निराश होकर चिल्लाने लगा और उसने बादशाह को श्राप दिये और पागलो की तरह उस पर मारने को झपटा और बोला .

"मे सैमीरैमिस जो मेरी स्त्री है, इसको जीते जी तुम्हें कभी नही ले जाने दूॅगा ।"

"इसे मार डाला जाय।" और फौरन ही सिपाहियों ने उसको घेर लिया और नगी तलवार से उसका गला काटने ही वाले थे कि सैमीरैमिस ने बादशाह से कहा :

"उसे मरवाओ मत, वैसे ही भगा दो।"

उसके कहने के अनुसार बादशाह ने ऐसा ही हुक्म जारी कर दिया। सिपाहियों ने उसे पकड़कर शहर से बाहर निकाल दिया और वापस आ गए।

जब ओन्नस जङ्गल में अकेला रह गया और उसने देखा कि बादशाह ने उसकी सुख की दुनिया ही उजाड़ दी और सैमीरैमिस खुद भी उसे छोड़ गई तो उसका जी दुनिया से उचट गया और उसने जाकर फाँसी लगायी और मर गया।

सैमीरैमिस को यह जब मालूम हुआ कि उसका पति फाँसी लगाकर मर गया तो उसने तनिक भी दुख न माना बल्कि उल्टे उसने बादशाह के सामने अपना प्रेम और भी ज्यादा दिखाया। बादशाह उससे बहुत खुश हुआ और उसे उसने अपनी रानी बना लिया।

अब सैमीरैमिस के ठाठ हो गए। अब वह रानी थी, उसका हुक्म चलता था। सभी उसके सामने सिर झुकाये रहते थे। किसी की मजाल भी नहीं होती थी कि उसके सामने बोल भी सके। खुद निन्नस बादशाह भी उसका गुलाम था और हमेशा इसी ताक में लगा रहता था कि उसे खुश रखे। रानी के शृंगारों के अब क्या कहने थे। उसे तो अब जैसे शृंगार से फुरसत ही नहीं मिलती थी। उसके महल में अनेक नौकर-चाकर थे और कितनी ही दासियाँ भी थीं जो सदा अपनी मालकिन को सेवा करके खुश रखा करती थीं।

एक दिन बादशाह उससे इतना खुश हुआ कि उसने सैमीरैमिस को अपनी जगह पाँच दिन के लिये बादशाहत दे दी। डौंडी पिटवा दी गई कि सैमीरैमिस पाँच दिन पाँच रात एसिरिया की हुकूमत खुद करेगी।

जब वह मलिका बन गई तो पहिले दिन तो उसने बड़ी शानदार दावत सरदारो को दी और सारी रात नाच-गाने मे निकल गई।

दूसरे दिन वह बन्दीग्रह का मुआयना करने गई और साथ मे अपने पति निन्नस को भी ले गई। देर तक मुआयना करने के बाद उसने एक अँधेरी सीलनभरी काल-कोठरी खुलवाई और उसमे निन्नस को जाने की आज्ञा दी कि वह जाकर देखे अदर वायु कैसी है। जब वह अदर चला गया तो सिपाही को हुक्म दिया कि किवाड़ बन्द कर दे। इस तरह निन्नस बादशाह को गिरफ्तार करके वह वापस महल मे चली आई।

तीसरे दिन उसने गरीबों को खाना-कपड़ा बटवाया और सभी की दुआयें ली और मदिरों मे देवी-देवताओं को बलि दी।

चौथे दिन उसने अपने पति निन्नस को बन्दी-गृह में कत्ल करवा दिया और पॉचवें दिन उसकी लाश को दजला मे फेकवाकर महल मे वापस लौट आई।

वह पॉच दिन यों खत्म हुये पर अब उससे बादशाहत वापस मॉंगने वाला कोई बचा ही नही था, इसलिये उसी ने तख्त को सॅभाला और हमेशा-हमेशा के लिये अपने सिर पर ताज पहिन लिया। वह चालाक औरत तो थी ही, इसलिये जब-जब जिंदगी मे उसे बढने का मौका मिला वह कभी नही चूकी और वार करती हुई हमेशा सफलता पाती गई।

अब उसने राज सॅभाला और अपने राज की सीमायें दूर-दूर तक फैला दी। वह इतनी जबर्दस्त रानी थी कि उसके नाम से ही शत्रु थर-थर कॉपते थे। उसने बेबीलौन नगर बसाया और उसकी चहारदिवारी मजबूत बनवाई। खेतीबारी की तरक्की के लिये उसने बॉध व नहरें बनवाई और उसमे पानी दजला व फरात नदियों से भरपूर भरा। वह न्याय भी सच्चा पर कठोर करती थी। उसके शासन-काल मे एसिरिया और बेबालौन मे बहुत ज्यादा तरक्की हुई। उसने दजला के बहाव का बॉध बनाकर कर रुख बदला और इस तरह बाढों से बेबीलौन की रक्षा की। उसने पॉच पीढियों तक राज किया और उसका राज बड़ा मजबूत और कला वैभव से परिपूर्ण था। सगीत कला को भी उसने बहुत बढाया।

उसकी सेना बहुत मजबूत थी और जिधर वह जाती उधर ही जीत कर आती। उसका राज देश-देशांतर तक फैला हुआ था और सभी उसका लोहा मानते थे।

परन्तु जब उसकी सेना आगे बढते-बढ़ते भारत मे पचनद (पजाब) मे पहुॅची तो वहाॅ के राजा ने उसे बहुत बुरी तरह से हराकर भगा दिया। इस युद्ध मे उसकी सेना के सभी नायक मारे गये और सैनिक भी काम आये। जो थोड़े-बहुत बचे थे उन्होने फटे-हाल जाकर सैमीरैमिस रानी को इत्तिला दी। वह सुनते ही दुख से बीमार पड गई और उसने राजगद्दी छोड दी और उस पर निन्यास को बिठा दिया जो उसका बेटा था। उसके बाद वह मर गई। ऐसा भी कहा जाता है कि वह मरी नहीं थी बल्कि कबूतर बनकर देह समेत स्वर्ग को उड गई थी।

उसके मरने के बाद वह उस देश में देवी मान ली गई और उसकी पूजा लोग करने लग गये और उसके मदिर भी बना लिये गये। जो उसका भक्त होता वह सिवा बलि के, अन्य समय मछली नहीं खाता था और जब वह उसके मदिर मे जाता तो मछली भेट चढाता। उसके मदिर में एक सोने की ठोस मछली लटकी रहती थी।

इस तरह सैमीरैमिस ने जिंदा रहकर भी यश कमाया और मर कर भी देवी बनकर पूजी गई।

पिरैमिस की प्रिया—थिसबे

बेबीलोन के जगलो मे मलबरी का एक बहुत पुराना वृक्ष खडा है। वह इतना पुराना है कि उसकी लकडी ऊपर से सूखकर जर्जर हो गई है। उसका आकार और रूप काफी बडा है और वह पुराने साहसी योद्धा की भाँति अब भी निर्भीक होकर खडा है।

कहते हैं पहिले इस पेड़ के फूल हिम की भाँति श्वेत थे। परन्तु यह कथा कोई आज की नही है। हजारो साल पहिले जब वह जवान था तब इसके फूल सफेद थे परन्तु फिर एक आकस्मिक घटना के कारण कुछ ही क्षणो मे वह लाल हो गए। बस तब से अब तक लाल ही लाल फूल इसमे उगते हैं। यह भी कहा जाता है कि दो प्रेमियो की मृत्यु किसी समय मे इस पेड के नीचे हो गई थी और उस समय जो दुख से इसके फूल रक्त वर्ण के हुये तो उन्होने अभी तक अपना मातम का बाना नही उतारा है। यह पेड़ ससार भर के मलबरी के पेड़ो का राजा भी है क्योकि जब से इसके पुष्प लाल हुये हैं, उसकी देखा-देखी ससार के सभी मलबरी के फूल लाल हो गए हैं।

× × ×

उन दिनो बेबीलोन ससार का सर्वश्रेष्ठ नगर माना जाता था। सुख और समृद्धि का वहाँ अभाव नही था। सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँचकर वहाँ के लोग कला और रसिकता मे सदा विभोर रहने लगे थे। वहाँ की रानी सैमिरैमिस स्वय अद्‌भुत सुन्दरी थी और भोग-विलास और वासना मे सदा लिप्त रहा करती थी। परन्तु साथ ही साथ उसके राज्य मे पूर्ण व्यवस्था भी थी। शत्रु उससे डरते थे क्योकि उसकी वाहिनी विशाल और सुसगठित थी। शासन सबन्धी कार्यो मे वह स्वय सिद्ध हस्त थी। सैमिरैमिस के प्रेमियो की गणना नही थी। वह बहुत अधिक थे। परन्तु यह सब कुछ होते हुए

भी वह किसी से दबती नहीं थी। जहाँ एक ओर वह उनके आलिङ्गन में बद्ध हो कर केलि करती थी वहीं, उसकी नाखुशी से उन्हें जल्लाद के खड्ग के नीचे अपने सिर भी कटवाना पड़ता था। वह पहले एक सूबेदार की पत्नी थी परन्तु जब राजा ने उसको देखा तो वह उसकी सुन्दरता पर रीझ कर उसे अपनी रानी बना कर ले आया था। सूबेदार उसके वियोग मे तथा इस असह्य अपमान को नहीं सह सका था और उसने फाँसी लगा ली थी। सैमिरैमिस ने उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर खुशी से सुवर्ण के प्यालों मे शराब भरकर पी थी और जशन मनाया था। राजा उसकी इस खुशी को देखकर बहुत खुश हुआ था और समझा था कि वह उसके प्रेम के ही कारण ऐसा कर रही है। एक दिन उसने राजा को भी बहुत शराब पिला कर उसकी मदहोश हालत मे उससे वचन ले लिया था कि वह उसे छै दिनों के लिए अपने तख्त पर बिठा देगा। राजा ने उसको उस समय अर्धनग्नावस्था मे देखकर उन्मत्त होकर वचन दे दिया था जिसका नतीजा उसे बहुत बुरी तरह झेलना पड़ा। सैमिरैमिस ने गद्दी पर बैठते ही पहिले राजा को ही फाँसी पर चढवा दिया और स्वय रानी बन गई। वही सैमिरैमिस अब अखड भोग करती हुई बेबीलोन का राज्य कर रही थी।

सैमिरैमिस के उस बेबीलौन मे बडे तालाब के सहारे जहाँ अप्सु और तईमात का प्राचीन मन्दिर खडा था, थोडी ही दूर पर घरों की लंबी पंक्तियाँ बनी हुई थी जिनमे साधारण श्रेणी के लोग रहा करते थे। इन्हीं घरो में से एक मे एक सुन्दर नवयुवक पिरैमिस रहता था जिसके माता-पिता तथा भाई इत्यादि कठोर प्रकृति के मनुष्य थे। उसके बगल मे जो परिवार रहता था, उसका मालिक एक मन्दिर का उप पुजारी था और वह अपनी एक मात्र संतान थिसबे नाम की सुन्दरी युवती पर कठोर नियन्त्रण रखता था।

थिसबे उस समय सोलह या सत्तरह वर्ष की अति सुन्दरी और कमनीय युवती थी जिसके नीले नेत्र समुद्र की भाँति गहरे और मछली की भाँति चपल थे। उसके पिगल केश जानु से नीचे लटकते और उनमें प्राकृतिक छल्ले पड़ते थे। वह तप्त सुवर्ण की भाँति चमकते थे। थिसबे का कठ

[illegible]

[illegible]

जब पिता अथवा माता, अपनी सन्तान को संसार से ऐसी बातों से ज्यादा से ज्यादा दूर रखने के लिए उन पर कठोर नियन्त्रण करते हैं तो अक्सर वह छिपकर उन्हीं कामों में लिप्त हो जाते हैं जिन्हें उनसे छिपाया जाता है। जितना ही थिसबे को संसार से छिपाकर रखा गया उतना ही उसकी जिज्ञासा इस ओर ज्यादा बढ़ी। एक दिन जब वह अपने मकान के पिछवाड़े बाग में घूम रही थी उसी समय उसने देखा कि पड़ोस में रहने वाला युवक पिरेमिस अपने मकान की छत पर खड़ा होकर उसे घूर-घूर कर देख रहा है। वह लजा गई और पेड़ों की ओट में हो गई परन्तु न जाने क्यों वह स्वयं भी तब छिपकर उस सुन्दर युवक की ओर देखने लगी। बाग में उस समय मंद-मंद हवा चल रही थी और खिले हुये पुष्प वायु में अपनी सुगंध से मदहोशी फैला रहे थे। पिरेमिस ने जो उस भुवन सुन्दरी को देखा तो वह एकदम बेकाबू होकर छत से सीधा उसके पास चला आया और उसने उससे प्रेम याचना की जिसके उत्तर में वह केवल मुस्कुरा दी। प्रणय का बीज बो गया और वे दोनों एक दूसरे के प्रेम में बद्ध हो गए।

इसके पश्चात् दोनों ओर से यौवन धधकने लगा और जब मौका मिलता तभी वे मिलने लगे। धीरे धीरे यह बात खुल गई कि पिरेमिस और

थिसवे आपस मे एक दूसरे से छिपकर मिलते हैं और तब इस बात पर एतराज होने लगा। थिसवे को उसके पिता ने मारा भी और वह क्रोध-पूर्वक बोला ·

'तू ने मेरी मान-मर्यादा को धूल मे मिला दिया है—अब कभी उस शैतान से मिली तो समझ ले कि मै तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा .. .. तू कभी इस भूल मे मत रहियो कि तुझे उस दुष्ट पिरैमिस की स्त्री, मैं बनने दूँगा " और वह भन्नाकर चला गया। थिसवे बेचारी दुख से रोती हुई पडी रही।

पिरैमिस के पिता ने घर के सभी आदमियो को एकत्रित किया और तब सबके बीच उसने उससे कहा ·

'पिरैमिस! तुमने आज हमारे कुल को बट्टा लगा दिया है। हमे तनिक भी आशा नहीं थी कि तुम इस प्रकार किसी लडकी से एकात में मिलकर लोगो के सामने अपनी बुरी करतूत से हमें नजरे नीची करने को मजबूर करोगे !. .. "

फिर वह गरजने लगा और अनेक प्रकार से सौगन्ध लेता हुआ उसे धमकाने लगा। वह बोला :

" मै तुझे मार डालूँगा..... जिस प्रकार मेरोडाख ने तईमात को मारा था और उसका कलेजा फाड डाला था, उसी भाँति, यदि तूने मेरा कहना नहीं माना तो मै तुझे ..।"

पिरैमिस चुपचाप सब कुछ सुनता रहा। जब उसका पिता काफी बक चुका तो वह बोला :

" परन्तु थिसवे के साथ मै विवाह करना . ..."

"हरगिज नही ", गरज कर बीच मे ही उसका पिता बोल उठा।

बस उसी दिन से पिरैमिस और थिसवे पर उनके बुजुर्गों का कड़ा नियन्त्रण हो गया और उन्हे मिलने से रोक दिया गया।

परन्तु जब प्रेम का अकुर फूट निकलता है तो उसको बढने से रोकना सासारिक शक्तियों के बस की बात नहीं है। जितना ही उन्हें अलग रहने पर

वह दीवाल के दोनों ओर से चुम्बन करने का प्रयत्न करते परन्तु उनके होंठ उस छोटे छेद में नहीं समाते थे और तब वे और भाग कर वहाँ से हट जाते।

सारी रात इसी भाँति उनका प्रणय चलता रहता और जब भोर का प्रकाश फैलता, वह चुपचाप वहाँ से हटकर अन्य स्थानों को चले जाते। आखिर एक रात ऐसी आई कि वह अब और अधिक बर्दाश्त न कर सके। और तब उन्होंने दूसरी रात घर से भाग जाने की योजना बनाई।

पिरैमिस ने कहा

"प्रिये! ऐसे जीवन से तो मर जाना ही बहुत अच्छा है। चलो कल रात हम दोनों कहीं दूर भाग चलें, जहाँ स्वतंत्र होकर प्रेम से रह सकें।
. ... रात्रि के अंधकार में घरों से छिप कर निकल कर छिपते हुए नगर को पार करके जंगल में चलो, वहाँ एक मलबरी के पेड़ के नीचे

निनस की कब्र है। उस मलबरी मे सफेद फूल लदे रहते हैं, वहीं हम लोग मिलेंगे ।"

थिसवे ने उस योजना को सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया। वह अपने प्रियतम से मिलने के लिये तड़प रही थी।

उस रात के बीतने पर जब दिन आया तो दोनो प्रेमी सूर्यास्त की प्रतीक्षा बडी उत्सुकता के साथ करने लगे। दिन इतना बडा हो गया था कि मानो कई महीनो का हो और खत्म ही न होता था। प्रेमियों की अधीरता बढती ही जाती थी, थिसवे तो बार-बार आसमान देखकर आह भरती थी। पिरैमिस अधीरता के साथ इधर से उधर घूम रहा था।

आखिर बडी मुश्किलो से दिन डूबा और शाम आई। पिरैमिस और थिसवे ने सतोष की सॉस ली। जब रात हुई, थिसवे चुपचाप अपनी शैया से उठी और सबसे छिपती हुई खामोशी के साथ घर से बाहर निकली। घर से बाहर आकर उसने चुपचाप खडे होकर आहट ली पर जब सब बदस्तूर पाया तो साहस बॉधकर आगे बढी। सारा नगर उस समय निस्तब्ध था। वह तेजी से आगे बढती चली गई और शीघ्र ही नगर से बाहर निकल गई। अब एक ओर तो उसके मन मे सफलतापूर्वक बाहर आ जाने की खुशी थी दूसरे अपने प्रियतम से मिलने की चाह मे वह मदहोश हो उठी थी।

जिस समय वह निश्चित स्थान पर पहुॅची तब तक पिरैमिस नही आया था। मलबरी श्वेत पुष्पों से लदा हुआ खडा था और उसमे से मादक सुगन्ध निकल कर चारों ओर फैल रही थी। उसके कुछ पुष्प नीचे बनी हुई पुरानी कब्र पर भी बिखरे पडे थे, थिसवे निराशा से चारो ओर देखती हुई वही एक शिला पर बैठ गई और अपने प्रियतम के आने की, अधीर होकर, प्रतीक्षा करने लगी, उसे एक-एक पल एक साल जैसा लम्बा मालूम होने लगा। रह-रहकर वह अपने चारों ओर देखती और जरा-सी आहट पर चौंक उठती थी।

उसे प्रतीक्षा करते हुये आधे घण्टे से भी अधिक समय निकल गया परन्तु पिरैमिस नहीं आया। प्रेमी हृदय आशकाओं से भी शीघ्र व्यथित हो उठते हैं।

उनसे थोडी से मार भी सहन नहीं होती, बिजली की तरह उसके मन मे ध्यान आया : 'कहीं पिरैमिस ने मुझे धोखा तो नहीं दिया है ?' और तब उसके नेत्रों के सामने घोर अधकार छा गया और वह इस विचार से ही घबराकर पसीने-पसीने हो गई। परन्तु फिर उसने अपने मन को बहलाने का प्रयत्न किया। वह पिरैमिस के वचनो और उसके प्रेम को स्मरण करके बार-बार कहने लगी :

'नहो-नही व अवश्य आयेगा '

आसमान मे चॉद उग आया था। उसकी चॉदनी से जङ्गल मे उजाला फैल गया था। दूर कही सूखे पत्तो की खडखडाहट हुई और चमक कर थिसबे ने उसी ओर अपनी ऑखें फेरी। वह भय से थर-थर कॉपने लग गई। करीब सौ कदम पर एक खूँखार शेरनी खडी थी। वह एकदम पीछे की ओर तेजी से भागी। उसके हृदय मे भय अपनी सीमाएँ लॉघ चुका था, परन्तु भागने मे उसकी ओढनी उसके शरीर से नीचे गिर पडी। उसकी भागने की आहट सुनकर शेरनी का ध्यान उस ओर गया और तब वह भी छलॉगें भरती हुई उसका पीछा करने लगी। थिसबे अभी शेरनी से काफी दूरी पर थी। प्राणपण से भागती हुई वह एक ऊँचे वृक्ष पर चढ गई। उसकी छाती धौकनी की तरह चल रही थी और वह अपने दिल की धडकन स्वय सुन रही थी।

शेरनी आई और पृथ्वी पर उसकी गिरी हुई ओढनी को उसने मुँह से उठा लिया। वह उस समय कोई शिकार खाकर आ रही थी क्योकि उसका मुँह और उसके पजे खूनोखून हो रहे थे। ओढनी को लेकर वह खोलने लगी और उसने अपने मुँह का सारा खून उसमे पोछ दिया। पजो से वह ओढनी स्थान स्थान पर फट गई और फिर शेरनी ने अनिच्छापूर्वक वहीं पटक दिया। दो-चार बार इधर-उधर देखा, तत्पश्चात् एक दिल दहला देने वाली दहाड लगाई और फिर जगल मे एक ओर जाकर गायब हो गई। थिसबे ने पेड पर बैठे-बैठे वह दहाड सुनी और वह भय से कॉपने लगी।

जब शेरनी ने दहाड लगाई थी उसी समय पिरैमिस मलबरी के उस पेड़ की ओर जंगल मे आ रहा था। उसने वह भयानक दहाड सुनी और उसका माथा ठनका, 'कही प्यारी थिसबे पहले न आ गई हो ?' एकदम यही प्रश्न उसके दिमाग मे उठा, वह तेजी के साथ आगे बढने लगा। उसने तलवार म्यान से बाहर निकाल ली और उस शेरनी के मुकाबले के लिये आगे बढा। दहाड़ से डर कर उसने छिपने का प्रयत्न नहीं किया। उस समय उसके हृदय मे शीघ्र जाकर अपनी प्रिया की रक्षा करने की बात ही उग्र रूप धारण कर रही थी।

वह शीघ्र उस निश्चित मलबरी के पेड के पास जा पहुँचा जिसके सुन्दर श्वेत पुष्प अब भी अपनी महक चारो ओर फैला रहे थे। थिसबे को वहाँ न देख कर उसके मन को बहुत सात्वना मिली। उसने स्वतः कहा :

"तो वह अभी नहीं आई है अच्छा है खतरा तो टल गया • • "

फिर एकाएक उसके दिल मे उस शेर को ढूँढ़ने की बात उठी। 'मुमकिन है वह वहीं कही छिपा बैठा हो और धोखे से हमला कर बैठे या फिर जब थिसबे आती हो तो मार्ग में उसे छेडे।' वह फिर एकदम चारों ओर घूम घामकर उस सिंह को ढूँढने लगा। पर वह उसे कहीं नहीं मिला। मलबरी के पेड के दक्षिण की ओर एक बडा गड्ढा था और उसके ऊपर उसने कुछ काला-काला सा देखा। वह शकित हृदय से तलवार को मजबूती से पकडे उसी ओर दबे पाँवों से चला। उसका मस्तिष्क सतर्क था और निगाहें अपलक देख रही थी। उत्तेजना के कारण उसका सारा शरीर ऐंठ कर कठोर हो गया था, उसकी धमनियों मे रक्त बज रहा था जिसे वह स्वय सुन सकता था, मजबूत कदम रखते हुए वह आगे बढ़ने लगा।

परन्तु तब उसकी वह सतर्कता क्षीण पड गई जब पास पहुँच कर उसनो सिह के बजाय एक बडे कपडे को वहाँ पडे देखा। कौतहलवश उसने वह कपडा अपनी तलवार की नोक से उठा लिया। वह उसे लेकर चाँदनी मे आया और उसे उसने पास से देखा। वह चीख मार कर पीछे हटा। वह तो उसकी प्राण प्यारी की ओढ़नी थी। वह उसे बखूबी पहचानता था। और बत

उसने जल्दी-जल्दी उसे खोल कर देखा। वह जगह-जगह फटी हुई थी और उस पर खून के बडे बडे निशान थे। वह सोचने लगा :

"तो क्या ? तो क्या मेरी प्रिया को सिह ने नही-नही ... पर यह तो उसी की ओढनी है हाय तब तो उस फूल जैसी कोमल सुन्दरी को वह नृशस पशु खा गया आह .. "

और वह वही धरती पर लोट गया। उसने वह ओढनी अपने हृदय से कस कर लगा ली और रोने लगा।

"हाय ! मेरी प्राण प्यारी ! तुम्हें उस सिह ने खा लिया है हाय ! अब मै तुम्हे कहाँ पाऊँ "

फिर उसके विचार उठे, क्यो नही वही शीघ्र आ गया ? क्यो रुका रहा वह इतने समय तक ? वह कहने लगा :

"मैने ही अपनी प्राणप्रिया की हत्या की है सिह तो पशु है उसको तो शिकार मिल गया परन्तु मे क्यो नही जल्दी आया। मैने ही तो थिसबे रानी को यहाँ बुलाया था और मे स्वय ही देर से आया हाय क्यो न सूझी मुझे यह बात कि बियाबान जगल मे उस जैसी कोमलाङ्गी स्त्री कैसे रह सकेगी कैसे अपनी रक्षा कर सकेगी ?" और तब वह धूल मे अपना माथा पीटने लगा उसने अपना सिर धूल से भर लिया और अत्यत कातर होकर अपनी प्रिया के लिए रोने लगा।

"आह इतने पास आकर भी हम इतनी दूर हो गये !"

बडी देर तक वह वहाँ पडा रहा। तत्पश्चात् उसने निश्चय किया कि अब उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है। जब उसकी प्राणेश्वरी मर चुकी तो वह भी अब जीवित रहना नही चाहता। जीवन की ज्योति ही जब बुझ चुकी तो फिर जीने से क्या प्रयोजन ?

वह उठा और दृढ कदमो को रखता हुआ उस मलबरी के पेड़ के पास पहुँचा। थिसबे की वह ओढनी अब भी उसने हृदय से लगा रखी थी। वह कब्र के पास बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने अपनी कटार निकाली और उस ओढनी का बार बार चुबन लिया। तत्पश्चात् वह बोला

"रानी थिसवे ! मै तुझे छोडकर कैसे रहूँ ? तू जहाँ गई है मैं भी वहीं आ रहा हूँ ....."

और तब उसने उस ओढनी को और भी कस कर हृदय से लगा लिया। उसका हाथ कटार की म्यान पर कडा हुआ और तत्क्षण उसने वह तीक्ष्ण कटार अपने हृदय में मूँठ तक घुसा ली। वह लुढक कर मलवरी की जडों पर गिर गया।

बहुत देर तक पेड पर चढी बैठी हुई थिसवे ने अब सोचा कि सिंह तो चला गया, शायद प्रियतम आकर प्रतीक्षा कर रहा हो, उसने अपने चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा और आहट ली, जब सब ओर सुनसान पाया तो उसका साहस बढा, वह नीचे उतरी और दबे पाँवों आगे बढती हुई उस मलबरी के पेड के पास पहुँची, चाँदनी छिटक रही थी परन्तु मलबरी के नीचे घना अधकार था। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, वह अपने प्रेमी की ओर से अब बिलकुल निराश हो चुकी थी, वचन देकर भी वह जो नहीं आया था। कितना झूठा वह ! उसे उस पर बहुत क्रोध आया। फिर उसने सोचा "तो क्या मै अब वापस चलूँ ? घर पर जब पूछेंगे कि कहाँ गई थी तो क्या कहूँगी ? नहीं . नहीं मै अब वहाँ वापस नहीं जा सकती। तो फिर ? तो फिर अब मै कहाँ जाऊँ ? आखिर पिरैमिस आया क्यों नहीं ? क्या धोखा किया था उसने अब तक ? क्या उसका प्रेम एक खिलवाड था, नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता तो फिर ? तो फिर ?"

वह ऐसे ही द्वद मे पडी हुई कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रही थी। तभी उसके कानों में एक बहुत ही क्षीण 'आह' सुनाई पडी। वह चमक कर सुनने लगी। कराह की आवाज प्रति क्षण कम होती जाती थी वह दबे पाँवों पेड़ के मध्य भाग की ओर बढी। अब छाया में चलते हुए उसकी आँखें अँधेरे मे देखने की अभ्यस्त हो चुकी थीं, उसने देखा मलबरी की पेड के पास एक आदमी की लाश पडी हुई है। वह एक बारगी भय से काँप उठी पर दूसरे ही क्षण उसे ध्यान आया "कहीं पिरैमिस . . शेरनी . ..."और वह आगे न सोच सकी। भाग कर उस लाश के पास पहुँची। उसने हिलाया—

बुलाया पर वह न हिली। सिसबे ने उसका मुंह ऊँचा करके देखा और देखते ही चीख मार कर उससे लिपट गई। तत्पश्चात् उसने उसका मुंह अपनी हथेलियों में लेकर रोते-रोते कहा :

"प्रियतम मैं आ गई हूँ ... तुम्हारी सिसबे आ गई है ... आँखें खोलो ... देखो मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूँ ..." और वह सिसकी लेती हुई रोने लगी। उसके आँसुओं से उसका और पिरेमिस दोनों का मुंह भीग गया।

पिरेमिस मर रहा था। उसकी आखिरी साँसें चल रही थीं। प्रिया की पुकार सुन कर उसने आँखें खोलीं, धुंधला दिखाई देने लगा। फिर उसने सामने ही अपनी प्राणप्रिया को देखा। उसने मुस्कुराने का प्रयत्न किया और उसका सिर झट एक तरफ लुढ़क गया। वह मर गया।

सिसबे चीख उठी और उससे लिपट कर रोने लगी। उसने पिरेमिस के शरीर को पृथ्वी पर लिटा दिया। उसी समय उसने देखा कि उसके प्रेमी के एक हाथ में एक कपड़ा है और दूसरे में एक छुरा जो छाती में घुसा हुआ है। रक्त चारों ओर फैल रहा है। उसने वह कपड़ा देखा। वह उसी की ओढ़नी थी। बिजली की भाँति उसके दिमाग में सारी बातें आ गईं। फिर वह बोली :

"प्रियतम ! मुझे मरा हुआ समझ कर तुमने आत्महत्या कर ली ! अब मैं भी जीवित नहीं रहना चाहती। जब तुम ही न रहे तो मेरे लिये इस संसार में क्या है ? तुम स्वर्ग में पहुँच चुके हो ... लो तुम्हारी प्रियतमा भी तुम्हारे ही पास आ रही है ..."

उसने पिरेमिस की छाती से वह छुरा निकाल लिया। रक्त की धारा बाहर फूट निकली।

सिसबे ने आखिरी बार पिरेमिस का चुम्बन किया और उसके बगल में लेट गई। एक बार फिर उसे देखा और वह कटार अपनी छाती में घुसा ली। वह मर गई।

पिरेमिस और सिसबे का मिश्रित रक्त उस मलबरी की जड़ों में उतर गया। नीरव रात्रि रो उठी। पृथ्वी ओस रूपी आँसुओं से भीग गई।

प्रातःकल पिरैमिस और थिसबे को घर पर न पाकर लोगों ने उन्हे ढूँढा। वह कहीं न मिले। एक चरवाहे ने उसी समय जगल में देखा—

एक मलबरी के नीचे दो लाशें पडी हैं। एक पुरुष और दूसरी स्त्री, दोनों ही सुन्दर और युवा हें। रक्त से वृक्ष की जडें लाल हो उठी हैं—

उसने सिर उठा कर ऊपर देखा—मलबरी के हमेशा खिलने वाले हिम श्वेत पुष्प—आज लाल हो गए हैं, उसको आश्चर्य हुआ और उसने फिर आँखे मींज कर उन्हे देखा, वह सचमुच ही रक्त वर्ण के हो चुके थे।

गिलगामिश

इरक के पास गिलगामिश रहता था। वह सारी दुनिया का बहुत ही जबर्दस्त बादशाह था। उसके सामने सब सिर झुकाते थे क्योंकि उससे ऊँचा कोई न था। वह बहुत बड़े खानदान का और बहुत ताकतवर राजा था। उसने अपने काल मे बहुत बड़े-बड़े काम किये थे और दूर दूर समुद्र पार जाकर यात्रा भी की थी। अपने समय मे उसका यश सूर्य की भाँति फैला हुआ था।

उस समय इरक मे देवी इश्तर का एक मदिर था जो बहुत बड़ा था। पर समय की गति के अनुसार उसमे वैभव की कमी आ गई थी। नगर की चारदीवारी भी कमजोर हो गई थी क्योकि तीन वर्षो से एलामिलो ने उसे घेर कर नगर पर हमला बोल रखा था। देवता लोग सभी मक्खियाँ बन कर उड गये थे और उडने वाले बैल सब डर के मारे चूहे बन कर दुबक गये थे। चारो तरफ दुख ही दुख फैला हुआ था। आखिरकार तग आकर लोगों ने देवी अरूरू से प्रार्थना की कि शीघ्र ही एक ऐसा योद्धा वह उन्हे दे जो सब दुखो को दूर कर सके। बेल, शामाष और देवी इश्तर भी मदद को आ पहुँची और सभी ने मिलकर अरूरू से प्रार्थना की।

अरूरू ने प्रसन्न होकर अपना हाथ पानी मे डुबोया और मिट्टी सान कर एक पुतला बनाया फिर उसमे तीन फूँक मारी। पुतला सजीव होकर घूमने लग गया। उसका नाम ईआ-बानी पडा क्योकि उसमे देवता ईआ का अश आकर बसा था।

गिलगामिश ने उसकी मदद की और देवताओ का यश फिर फैलने लग गया। इरक मे शाति छा गई। सब दुख मिट गया। फिर से लोगो मे सुख छा गया। सभी जगह खुशियाँ मनाई जाने लग गई।

पर ईआ-बानी को यह सब राग-रग पसन्द नही था। वह जगलो मे चला गया और वहाँ वह मनुष्य रूपी दानव पैन की तरह घास खाता और जगली

जानवरों के साथ पानी पीता। फिर वह मनुष्य-दानव के नाम से मशहूर हो गया। वह अन्न घास खाता न था बल्कि जानवरों की तरह उसे झुककर चरने लग गया था। लोग उसे दूर से देखकर डरकर भाग जाते और उन्हें उसे देखकर बहुत पहले की एक कथा याद आ जाती जब इसी तरह एक दिन एक राजा जिसका नाम नबूचद्नज्जर था, पागल होकर जगल मे भाग गया था और वहाँ बैलों के साथ घास चरने लग गया था। उसके बाल सदा स्वर्ग की ओस से भीगे रहते और बढने लगे थे। वह नित्य बढ़ते जाते और इसी तरह एक दिन इतने बढ गए कि वह बाज के पर जैसे हो गए और उसके नाखून बढ़कर बाज के पजों जैसे हो गए और वह आसमान में उड गया था।

ईआ बानी के जिस्म पर घने बाल थे। वह दूर से जानवरों जैसा ही लगता था और बहुत बलिष्ठ भी था।

उसको खतरनाक समझ कर उसको मारने के हेतु एक शिकारी जगल भेजा गया। परन्तु जब शिकारी उसके पास पहुँचा तो उसने ईआ-बानी को मारने का विचार बिल्कुल छोड दिया। ईआ-बानी के शरीर पर घने बाल तो थे पर वैसे वह था बहुत सुन्दर। शिकारी ने सोचा कि इसे फँसा लिया जाय, यही अच्छा होगा और उसने एक सुन्दरी स्त्री उसके पास भेजी। जगलों मे जानवरो के साथ रहने वाले ईआ-बानी को उस औरत का साथ बहुत अच्छा लगा और वह धीरे-धीरे जगलीपन छोडने लगा। अब उसे एक क्षण भी उसके बिना बुरा लगता। जानवरों का साथ उसने छोड दिया और हमेशा उस औरत के साथ साथ घूमने लग गया। अब उस स्त्री ने उससे कहा कि :

"चलो हम लोग इरक मे चलें, वहाँ अनु और इश्तर के बडे बडे मदिर हैं और वहाँ पराक्रमी राजा गिलगामिश राज्य करता है। वहाँ हम लोग सुख पूर्वक रहेंगे।"

ईआ-बानी के दोस्त जानवर तो छूट ही गए थे, इसलिये अकेलेपन से उकताकर उसने भी इरक चलने की स्वीकृति दे दी। बस वह अपनी स्त्री के

साथ इरक चल पड़ा। शिकारी ने उससे कह रखा था कि गिलगामिश बहुत बली था, इसलिये उसने अब चाहा कि इरक चलकर उससे दो-दो हाथ करें। पर उसी समय सूरज के देवता शामाप ने उसे खबरदार किया कि वह गिल गामिप से कभी न लडे न लडने का विचार ही करे क्योंकि वह खुद गिल गामिश की तरफ था। अलावा इसके गिलगामिश बहुत ही समझदार राज था जिसकी बुद्धि अद्भुत थी। देवता अनु और ईआ और बेल ने उसर्क रक्षा का तमाम भार अपने ऊपर ले रखा था। यह सभी बातें ईआ-बानी क शामाप ने बतलाई और कहा कि उससे लडना मत बल्कि उससे मित्रत करना ही अधिक उचित होगा।

उधर गिलगामिश को भी स्वप्न हुआ कि ईआ-बानी को अपना मि बना ले।

जब ईआ बानी इरक मे पहुँचा तो उसकी तबियत वहाँ बिल्कुल नह लगी। उसे वहाँ की भीड-भाड से नफरत थी और वह मकानो मे रहने क भी बुरा समझता क्योंकि उनमे वह घिरा घिरा सा महसूस करता—फिर कह जगल की खुली हवा, आजाद जीवन और कहाँ शहर की हलचल। वह एव दम घबरा गया और उसने जगल वापस चले जाने की इच्छा प्रगट की पर शामाप देवता ने उसे कह सुनकर रोका और कहा

"हे ईआ-बानी तू जगल को मत जा। तू गिलगामिश की मित्रता मे य रह। निश्चय ही तेरा ओहदा बडा हो जायगा और तेरा नाम सब जग फैल जायगा। थोडे दिन प्रतीक्षा कर और देख तू कितना बडा आदमी ब जायेगा।"

ईआ बानी रुक गया और गिलगामिश से उसकी गाढी दोस्ती ह गई।

× × ×

गिलगामिश और ईआ-बानी की मित्रता बहुत गाढी थी। एक दूसरे व जान से ज्यादा प्यार करते थे। हमेशा साथ रहते, खाते और पीते। घूम जाते या शिकार खेलते तो भी साथ ही साथ जाते थे, उन्ही दिनो एलाम

राजा चबावा ने सिर उठाया। भला गिलगामिश कब सहन कर सकता था। फौरन ईश्रा-बानी को साथ लेकर चबावा को हराने चल दिया। बडे खतरनाक रास्तो से होता हुआ, घोर जगलो को पार करता हुआ वह आगे बढा। रास्तो में उसने सीधी और लबी सडक देखी जो चबावा के राज्य को जाती थी। बडे-बडे पहाड और ऊँचे-ऊँचे सेडार के वृक्ष देखे। वहाँ देवताओ के मदिर भी थे। उन सबको देखकर दोनो मित्र बहुत खुश हुए क्योकि अब से पहले उन्होने यह सब नही देखा था। सुगधित रास्तो से होते हुए उन्होंने जाकर चबावा पर हमला कर दिया और उसे मार डाला। उसको मारकर उन्होंने हरेक को जिसको चबावा ने बन्दी बना रखा था, छुडाया और उसे वही का राज्य देकर वापस आ गये।

धीरे-धीरे गिलगामिश और ईश्रा-बानी बहुत धनी और महान हो गए। उनकी खुशी का ठिकाना ही न था। गिलगामिश राजसी वस्त्र और सोने का चमचमाता हुआ ताज पहनता और उसके समान सुन्दर व बलिष्ठ आदमी दूसरा न था। देवी इश्तर ने उसके सुन्दर रूप को देखा तो मोहित हो गई। वह उससे प्रेम करने लग गई और यह बात भी मशहूर थी कि जिस मनुष्य से देवता लोग या राक्षस प्रेम करने लग जाते बस उस पर मुसीबत आना लाजिमी ही होता। यही हाल अब गिलगामिश का होता।

एक रात सुनसान देखकर इश्तर उसको अकेले मे मिली। गिलगामिश अपनी धुन मे मस्त घूम रहा था। इश्तर सुन्दरी युवती बनकर उसके पास आई और बोली ·

"हे गिलगामिश, तु मुझे बहुत ही अधिक पसद है। तू मेरा साथी बन जा और अपनी शक्ति से मुझे अपना ले, मेरा पति बनकर तू रह और मै तेरी पत्नी बनना चाहती हूँ। मै तुझे चढने के लिये ठोस सोने का रथ दूँगी जिसमें जगह-जगह जवाहिरात जडे हुए होंगे और उसकी चमक रग-बिरगी होगी, ऐसी कि जिसे देखकर सभी की आँखें चौंधिया जावेगी। तू मेरे साथ मेरे विशाल भवन मे रहेगा जहाँ से उसके फूलों की खुशबू सदा महका करती है और दुनिया भर के राजे और शाहजादे तुझे सिजदा करेगे और सभी तेरी प्रजा बनने, तेरे कदम चूमने को आतुर रहेंगे।"

गिलगामिश सुनकर चमक गया। वह जानता था कि देवियो से प्रेम करने का नतीजा अच्छा नही होता, यह लोग बाद मे खतरनाक बन जाती हैं। उसने जवाब दिया :

"हे इश्तर! तू अब तक किसकी स्त्री बनकर रही है? तेरे यौवन का प्रेमी तम्मुज अब भी हर साल तेरे बिना रोता रहता है। परन्तु उसकी तरफ कभी मुड़कर भी नही देखती। तूने अल्लाला परिंदे से प्रेम किया था। और जब वह फॅस गया तब तूने उसके पर काट डाले थे और वह अब भी जङ्गलो मे 'हाय मेरे पर, हाय मेरे पर' चिल्लाकर रोता फिरता है। तूने शेर से प्रेम किया था और बाद मे उसे जाल मे फॅसा कर बॉध दिया। तूने घोड़े से प्रेम किया था और बाद मे उसकी पीठ पर जीन कस कर उसे पचास मील भगाया था। वह बेचारा अधमरा हो गया और तूने उसकी मॉ सिलीली को भी कष्ट दिया। तूने एक गड़रिये से प्रेम किया था और वह तुझे मेमनो की कुर्बानियाँ दिया करता था। बाद मे उसी बेचारे को तूने काटा और गीदड़ बना दिया। उसी के झुण्ड के लड़को ने उसे बाद मे हॉक दिया था और उसी के कुत्तो ने उसे फाड़ डाला था। अनु के माली इशुल्लालू को तूने अपना प्रेमी बनाया था। वह तुझे नित्य नई भेंट देता था और बाद मे उसको तूने ऐसा काटा कि बेचारा हिल-डुल भी न सका और मर गया। अफसोस कि अगर मै भी कहीं तेरे जाल मे फॅस जाऊॅ तो निश्चय ही तू मुझे भी वैसे ही सतायेगी। तब मेरा भाग्य भी उन्ही सब की तरह हो जायगा और मै व्यर्थ ही मारा जाऊँगा। इसलिये मुझे तेरा प्रेम नही चाहिये। तू दूर ही से भली है।"

इश्तर यह सुनकर गुस्से से आग बबूला हो गई और उसने दौड़कर अपने पिता अनु से कहा :

"एक बहुत बड़ा भयानक सॉड बना कर गिलगामिश के खिलाफ शीघ्र भेजो जो उससे मेरे अपमान का बदला ले।"

फौरन ही एक भयानक लाल सॉड गिलगामिश की तरफ पेड़ो की ओट से भागता हुआ आया। वह इतना भयानक और बड़ा था कि उसकी

दौड़ की आवाज से पहाड़ भी हिलने लग गए। उसने अपनी पूँछ मरोड़कर ऊपर तान रखी थी। उसके सफेद लबे-लबे सीग बहुत ही खतरनाक और पैने थे। लाल-लाल आँखे फैलाये, नाक से फुफकारता हुआ वह साँड गिलगामिश पर टूट पड़ा। गिलगामिश ने ईआ-बानी को इशारा किया और कूद कर दोनो मित्र ऊचे-ऊँचे घोड़ो पर चढ गए और साँड़ के मुकाबले पर आ खड़े हुए। साँड ने एक जोर की टक्कर ईआ बानी के घोड़े को मारी। घोड़ा ईआ-बानी को लेकर गिर पड़ा। पर गिरते-गिरते घोड़े ने साँड के दो करारी लात जमा दी। फौरन् गिलगामिश ने ताक कर भाला फेका जो साँड़ के सीने मे घुस गया। दूसरा भाला ईआ-बानी ने उसकी पसलियो मे घुसा दिया और साँड जोर से दहाड़ता हुआ जमीन पर गिरा और फौरन मर गया। इश्तर ने अपने साँड को ऐसे मरते देखा तो गिलगामिश को गालियाँ दी और शाप दिये। ईआ-बानी ने इश्तर से कहा :

"होश से बाते कर वरना तुझे भी तेरे साँड की तरह मार डालूँगा।"

इस पर क्रुद्ध होकर देवी इश्तर ने ईआ बानी को भी शाप दे दिया। गिलगामिश ने उस साँड के सीगो को लेकर शामाष को भेट चढा दिया और अपने मित्र सहित इरक को लौट आया। उसका बहुत स्वागत हुआ। खुशी मे एक उत्सव मनाया गया और उसके बाद दोनों दोस्त खा-पीकर आराम से सो गए। 'तब ईआ-बानी को सपना हुआ जिसमें उसने बुरे शकुन देखे। उसने उठकर गिलगामिश से कहा कि सपने मे उसने देखा है कि वह शीघ्र ही मर जायगा।

थोड़े ही दिनों बाद एक जग मे ईआ-बानी सचमुच ही मर गया। गिलगामिश अपने मित्र की मृत्यु पर बहुत रोया पर वह तो मर चुका था। गिलगामिश को ईआ-बानी की मौत से बहुत ही ज्यादा धक्का लगा और वह मौत को इतने करीब देखकर काँप उठा। उसके शरीर को बीमारी ने भी घेर लिया। दुखित हो कर वह चिल्लाया :

"नही, मै ईआ बानी की तरह नहीं मरना चाहता। मै कतई मरना नहीं चाहता। मुझे मौत से बहुत डर लगता है। मै अपने पितर पीर नपिश्तिम से

मिलूँगा जो अमर है और उसी से अमर रहने की तरकीब पूछूँगा। मेरा पितर समुद्र के बीच मे टापू पर रहता है, वह मुझे जरूर अमर होने का रास्ता बतलाऐगा। अमर बेल और अमर जल ही नहीं बल्कि मै अपने मित्र ईआ बानी जो मुझे इतना प्यारा है उसे भी जिंदा करूँगा।"

अब गिलगामिश सब कुछ छोड कर यात्रा को निकल पडा। चलते चलते उसे बहुत दिन हो गए पर वह हिम्मत बाँधे बिना थके चलता ही चला गया। वह एक पहाड़ की गहरी घाटी मे पहुँचा और वहाँ से उसने पहाड की कठोर ऊँचाइयो पर भयानक सिह देखे तो उसका कलेजा डर के मारे दहल गया। उसने चद्र देवता को याद किया और उससे प्रार्थना की

"हे देवता मुझे बचाओ।"

चदा ने उस पर रहम किया और उसकी रक्षा की। उसी की सहायता से अब वह आगे बढा। उसने पहाडी कठोर दर्रा पार किया और बाद मे गजब के ऊँचे पहाड माशी के सामने पहुँचा। इसे सूरज का पहाड़ भी कहते थे क्योकि इसी के एक ओर जीवित मनुष्य रहते थे और दूसरी ओर मरे हुए लोगो की दुनिया थी। इस पहाड़ की ऊँची चोटी स्वर्ग मे थी और इसकी जडे पाताल म अरालू तक थी। एक घनी अँधेरी गुफा इसमे होकर आर-पार जाती थी जिसका दरवाजा सामने ही वह देख रहा था। परन्तु वह इस समय बद था और उसकी चौकीदारी दो बहुत बडे शरीर वाले भयानक दानव कर रहे थे। यह बिच्छु मनुष्य था और दूसरी उसकी स्त्री थी और वह इतने ज्याद बड़े थे कि उनके सिर ऊपर आकाश मे बादलो को छू रहे थे। जब गिलगा-मिश ने उन्हे देखा तो डर के मारे बेहोश हो गया। परन्तु उन दानवो ने उसका कोई नुकसान नही किया क्योकि एक तो उसकी रक्षा खुद चन्दा कर रहा था दूसरे उन्होने देखा कि वह खुद भी देखने मे देवताओं जैसा सुन्दर था।

जब गिलगामिश को होश आया तो उसने देखा कि वे दानव उसे हम-दर्दी से देख रहे हैं तो उसकी हिम्मत बँधी। परन्तु फिर भी उनसे बोलने को

उसका मुँह डर के मारे खुल नहीं रहा था। बड़ी देर तक वह चुपचाप बैठा रहा और उन दानवों ने भी उससे कुछ नहीं कहा। आखिरकार सारी हिम्मत बटोर कर वह बोला :

"हे दानव! मै अपने पितर पीर नपिश्तिम के पास जाना चाहता हूँ। वह मेरा पितर देवताओं के साथ उनके दरबार मे बैठता है और दैवी शक्ति रखता है।"

दानव ने यह सुनकर उसे समझाया कि वह व्यर्थ में परेशान न हो और वहीं से वापस लौट जाय क्योंकि वहाँ जाने मे उसे बहुत खतरों का सामना करना पड़ेगा। उसने कहा कि वह गुफा बारह मील लम्बी है और बिलकुल काली अँधेरी है जहाँ हाथ को हाथ नहीं सूझता। रास्ते में वह कहीं-कहीं बहुत ही तंग है जिसमे से केवल एक आदमी भी मुश्किल से आगे जा सकता है। कहीं-कहीं पानी भी पार करना पड़ता है।

पर अब गिलगामिश डरने वाला न था। वह निडर होकर दानवों से रक्षित उस पहाड़ी गुफा के दरवाजे को ठेल कर घने अन्धकार मे घुस गया जहाँ उजाले की एक किरण भी नहीं जाती थी। अन्दर जाते ही दरवाजा फिर बन्द हो गया। अनजान अँधेरे रास्ते मे वह आगे बढ़ता गया और एक जगह जहाँ गुफा बिलकुल सॅकरीं थी वह पहाड़ की चट्टानों के बीच जाकर अटक गया। पर वह घबराया नहीं। उसने जोर लगाकर अपने शरीर को सिकोड़कर कदम रखा और आगे निकल गया। गुफा अब फिर चौड़ी होने लगी। पर थोड़ी दूर जाने पर उसके पैरो तले पानी लगा, वह समझ गया कि अब पानी आ गया है। धीरे-धीरे वह बढ़ने लगा। पानी उसके घुटनों तक आ गया पर वह न रुका। अब पानी कमर तक आ गया पर वह और बढ़ा। जब वह गले तक पानी में डूब गया तब उसने फिर चन्दा को याद किया और आगे बढ़ने को हाथ फेंके और दूसरे ही क्षण जल इतना गहरा हो गया कि उसे तैर कर आगे बढ़ना पड़ा। दिखाई तो कुछ देता ही नहीं था, इसलिये वह केवल अंदाज से ही आगे तैर रहा था। फिर धीरे-धीरे उसके पैर जमीन पर टिकने लगे। वह और आगे बढ़ा। अब पानी

कम होता चला गया और गिलगामिश एक बार फिर सूखी जमीन पर आ खड़ा हुआ और आगे चलने लगा। अँधेरे मे चलते चलते उसे पूरे चोबीस घंटे हो गए तब उसने दूर प्रकाश की हल्की किरणें देखीं। वह जल्दी जल्द कदम उठाता हुआ उसी तरफ चला और शीघ्र ही वह उस मौत की गुफा रे बाहर सूर्य के प्रकाश मे आ गया। उसका दिल खुशी से नाचने लग गया। अब उसने अपने आपको एक जादुई बाग मे पाया। बाग के बीच मे एक बहुत ही ज्यादा खूबसूरत पेड़ खड़ा था। वह उसके पास भागकर ज पहुँचा। उस पेड़ पर हीरे-जवाहरातो के गुच्छे के गुच्छे लटक रहे थे औ वह सतरगे रगो मे झिलमिला रहा था। उसकी आँखे यह सब देखक चौधिया गई पर न तो उसने उसे छुआ न वहाँ अधिक देर ठहरा ही। इस तरह के कई विचित्र पेडो को देखता हुआ वह आगे बढ़ता गया और अत मे जल के किनारे आकर वह ठहर गया। वह अपने मन मे समझ गया थ कि वह मृत्यु के समुद्र के किनारे जा पहुँचा था। जिस मुल्क मे वह घूम रह था उसकी मालिक समुद्र की रानी थी, जिसका नाम सबितू था। जब रानी ने मुसाफिर को आते देखा तो जल्दी से अपने महल मे घुसकर दरवाज बन्द कर लिया।

गिलगामिश ने बाहर खडे होकर बडी देर तक बिनती की कि उसे दर वाजा खोलकर महल मे अदर घुसने दिया जाय। साथ ही साथ वह बोला '

'हे रानी! मै मुसाफिर दूर से आया हूँ मुझे अदर आने दो। यदि तुमने दरवाजा कहने-सुनने से नही खोला तो मै इसे तोडकर भीतर घुस जाऊँगा।"

अत मे दरवाजा खुला और रानी सबितू बाहर आई। वह बोली '

"अरे गिलगामिश तू कहाँ जल्दी-जल्दी जा रहा है? क्यो तू परेशान होता है। जो तू चाहता है कि अमर हो जाय सो तो तू होगा नही क्योंकि जो पैदा होता है उसे तो मरना ही होता है। देवताओ ने जब आदमी को बनाया था तभी उसके लिये मौत भी रख दी थी। जिन्दगी की लगाम उन्होंने अपने हाथ मे रख ली थी। तू वापस जा और दुनिया के सुख भोग। खूब खा

और पी। मस्त रह और खूब अच्छे कपड़े पहन कर अच्छे जेवर से अपनी सजावट कर और नाच गाने में मौज उड़ा, अपने बच्चे और स्त्री सहित दुनिया के मजे लूट।"

लेकिन गिलगामिश ने उसकी बात नही मानी, उसने उससे पूछा ·

"मुझे तू मेरे पितर पीर नपिश्तिम का ठिकाना बतला दे मैं तो वहीं जाऊँगा। चाहे मुझे यह मौत का समुद्र ही क्यों न पार करना पड जाय। और अगर न जा सकूँगा तो दुख से मर जाऊँगा।"

सबितू ने उत्तर दिया :

'अरे गिलगामिश! इस महासागर को कोई दुनिया का निवासी पार नहीं कर सकता। इसे तो हर कोई देवता भी पार नहीं कर सकता। शामाष के अलावा इसे पार करने वाला और है ही कौन? रास्ता बहुत ही खतरनाक है जहाँ पग-पग पर मौत से खेलना पडता है। हे गिलगामिश तुम बहादुर ज़रूर हो पर तुम मौत के जबडों से कैसे लड सकते हो?"

पर गिलगामिश नहीं माना, वह बोला

"चाहे मर ही क्यों न जाऊँ पर जाऊँगा अपने पितर पीर नपिश्तिम के पास ही।"

आखिरकार सबितू को भी उस पर दया आ गई और उसने उसका हठ देख कर उससे कहा :

"पीर नपिश्तिम जो तेरा पितर है, उसका सेवक अराद ईआ है। वह मल्लाह है। तू उसके पास जा और वह तुझे अपने मालिक के पास पहुँचा सकता है। गिलगामिश अब उसे ढूँढने निकला और शीघ्र उससे जा मिला। उससे भी उसने अपनी वह इच्छा जाहिर की। पहले तो वह भी मना करता रहा पर इसका पक्का इरादा देख कर उसने कहा ·

"अच्छा तो चल मेरी नाव में बैठ जा पर जाने के पहले नाव के लिये मुझे एक मस्तूल की जरूरत है। तू उसे कहीं से ला।"

गिलगामिश ने फौरन एक पेड काट कर नाव का मस्तूल बना दिया। जब यह सब हो गया तब यात्रा शुरू हो गई। रास्ते मे बड़े-बड़े खतरनाक

रोड़े अटके पर आखिरकार नाव पवित्र आत्माओ के टापू के करीब आ गई जहाँ गिलगामिश के पितर पीर नपिश्तिम अपनी स्त्री के साथ साज से रहते थे। नाव किनारे से जा लगी। पर गिलगामिश नाव म ही पड़ा रहा, नीचे नहीं उतरा। वह बेहद थक गया था और अब तक बीमारी ने उसके शरीर को भी बेकार बना दिया था।

पीर नपिश्तिम ने उसकी नाव को दूर से मौत के समुद्र को पार करते देख लिया था और वह हैरत मे थे कि कौन और कैसे उस समुद्र को पार करने का साहस कर रहा है। पर जब नाव किनारे से लग गई और उस पर से कोई नही उतरा तो उन्होंने अपने ज्ञान से समझ लिया कि यह उन्ही का एक वशज है जो उनसे मिलने इतने खतरे मोल ले कर आया है। वह अपने मन म बहुत खुश हुए और उन्होंने अपनी स्त्री से सभी बातें कही, फिर दोनो, पीर नपिश्तिम और उनकी स्त्री गिलगामिश के पास आये जो बीमारी और थकान के कारण उठ भी नहीं सकता था। उनको देखकर गिलगामिश ने फर्शी सलामी दी और कहा

"हे पीर नपिश्तिम, तुम महान हो। तुमने मृत्यु को जीता है तुम यहाँ देवताओं के बीच, पवित्र आत्माओं के बीच इज्जत से रहते हो और वक्त तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड सकता। तुम्हारी ताकत के सामने मौत भी दूर भागती है। बीमारी तुम्हारे पास तक नहीं फटकती। मैं गिलगामिश तुम्हारे खानदान का हूँ और मुझे बीमारी ने बेकार कर दिया है। मेरा शरीर जीर्ण हो गया है और मौत मुझे निगल जाना चाहती है। मै तुम्हारे दर्शनों के लिये इतनी दूर आया हूँ। तुम मुझसे प्रसन्न होओ तो तुम्हारे सामने कुछ निवेदन करूँ।"

पीर नपिश्तिम ने सिर हिला कर स्वीकृति दी। तब गिलगामिश फिर बोला।

"हे मेहरबान! मुझ पर जो तुम खुश हो तो मेरी बीमारी दूर करो और मेरा बिगड़ा हुआ शरीर जल्दी से सुन्दर और स्वस्थ हो जाय। मुझे अमर बना दो क्योंकि मैं मौत से बहुत डरता हूँ और उसे हमेशा दूर रखना चाहता हूँ। मेरे ऊपर मेहरबानी करो।"

तब पीर नपिश्तिम बोलेः

"यह तो ससार का नियम है। जो पैदा होगा वह मरेगा। मनुष्य घर-बार नाते हैं, आपस मे सौदे-व्यापार करते हैं, कभी लडते-झगडते भी हैं और जब तक उनका समय रहता है, और जब मौत आ जाती है तो उन्हें सब कुछ छोड कर चला जाना पडता है। कोई नहीं कह सकता कब किसको जाना होता है। जब तक नदियों मे बाढ आती रहेगी तब तक ऐसा ही होता रहेगा। भाग्य बनाने वाला खुदा सबकी मौत की घड़ी बना देता है, पर वह इस बात को किसी और को बतलाता नहीं है, अपने ही पास रखता है।"

गिलगामिश को ऐसे उत्तर से खुश नहीं हुई। ऐसा तो सभी लोगों से सुनता रहता था। वह निराश हो गया पर उसने पडे ही पडे पूछा :

"लेकिन हे पीर, तुम क्यों नहीं मरे और समय का या मौत का तुम पर तो थोडा सा भी असर नही हुआ है' इसलिये हे पीर नपिश्तिम तुम अब मुझसे असली बात को मत छिपाओ और कह दो कि तुमने देवताओं के साथ रह कर स्वर्ग की जिन्दगी कैसे पा ली। तुम कैसे अमर हो गए ? आखिर मै भी तो तुम्हारा जैसा ही हूँ फिर क्यों नहीं मैं भी अमर हो सकता हूँ।"

पीर नपिश्तिम उससे खुश होकर बोले :

"हे गिलगामिश तू मेरे खानदान मे से है और इतनी दूर मेरे पास अमर होने की तर्कीब पूछने आया है, रास्ते में इतनी तकलीफें झेली हैं, तो सुन, मै तुझे सब बातों का पुराना ब्यौरा तुझे बताता हूँ। तू उठ और मेरी दूसरी नाव में आकर बैठ जा।"

गिलगामिश धीरे से उठा और पीर निपिश्तिम की बतलाई नाव में बैठ गया। पीर नपिश्तिम भी उसके पास आकर बैठ गया और उससे कहने लगा :

"बहुत पहले की बात है जब देवताओं ने तय किया था कि दुनिया में प्रलय भेजा जाय और जब यह तय हो गया कि ग्यारहवें दिन प्रलय भेजा जायगा तब देवता ईआ ने मुझको सपने में सब बात बतला दी और

आगाह किया कि प्रलय से पहले ही मै एक बड़ी नाव तैयार कर लूँ जिसमे बैठ कर अपने प्राण बचा लूँ—बस मैने एक बहुत बड़ी नाव बनाना शुरू कर दिया। बनाते-बनाते मुझे एक बात सूझी कि नाव के बजाय क्यों न एक बड़ा जहाज ही बना डालूँ जिसम अपने नौकर-चाकर व घर के अन्य लोग भी रह सके और जिसमे खाने-पीने व आराम मे रहने का सामान भी रखा जा सके। मैने इसकी आज्ञा ईआ से माँगी जो मुझे मिल गई। बस फिर तो मैने जहाज बनाना शुरू कर दिया। जहाज नीचे से भारी और फैला हुआ था और एक सौ बीस हाथ लम्बा और एक सौ बीस ही हाथ ऊँचा था। उसम छै मजिलें थी और हर एक मजिल म नौ नौ कमरे थे।

"मैने अपना सब सोना और चाँदी इकट्ठी की और जहाज मे लाद ली। फिर जो तरह-तरह के बीज मेरे पास थे उन्हे भी प्रलय के बीत जाने पर बोने की खातिर रख लिया क्योकि मुझे यह पहले से ही ध्यान था कि प्रलय के बाद तो दुनिया मे कुछ भी बाकी नही रह जायगा। अपने घर के तमाम लोग, सभी को मैने जहाज पर चढा लिया। खेतो के जानवर और पशु पक्षी जो भी मेरे व मेरे घर के लोगो के थे सबको जहाज पर चढा लिया गया। जब सब प्रबंध हो गया तो मैने आराम की साँस ली।"

इतना कह कर पीर ने अब साँस ली क्योकि इतनी देर बोलते-बोलते वह थक गए थे। गिलगामिश बडे ध्यान से इन सभी विचित्र बातो को सुन रहा था। अब वह अपने ध्यान से जागा और पूछ बैठा :

"फिर क्या हुआ?"

पीर ने उसकी उत्सुकता को देखकर खुशी से फिर कहना शुरू किया। उसने कहा :

"फिर शामाप देवता ने मुझे वक्त बतला दिया कि दूसरे दिन प्रलय होगा और कहा कि उसके पहले ही जहाज मे हम सब लोग चढकर दरवाजा बंद कर ले। हमने ऐसा ही किया दूसरे दिन पानी आया। हाथी की सूँड़ जैसी मोटी मोटी बूँदे आसमान से गिरने लग गईं। आसमान मे घनघोर बादल गरज-गरज कर बरसने लगे। घना अँधेरा छा गया। कभी-कभी बडे जोरो से

बिजली चमकती और उसके प्रकाश मे नीचे पानी ही पानी दिखाई देता था। इसके बाद मैने देखा कि स्वर्ग से नये काले बादल और आ गए। यह बहुत ही भयानक थे और कडककर बरसने लगे। बीच-बीच मे खुद देवता रम्मन बिजली बनकर कडकता फिर रहा था। उसके आगे-आगे नबू और मेरोडाख थे जो उन सबको पृथ्वी के मैदान और पहाडो का पता बतला रहे थे। मैने भय से आँखें मीच ली थीं। अब तक सारी दुनियाँ पानी मे भर गई थी।"

"तब तो आपका जहाज भी तैरने लग गया होगा," गिलगामिश ने सवाल किया।

"हाँ", पीर ने कहा . "तब हमने उसके लंगर उठा लिये और वह अथाह पानी पर तैरता हुआ इधर-उधर आने-जाने लगा।"

'फिर", गिलगामिश ने उत्सुक होकर पूछा।

"उसके बाद", पीर ने लम्बी साँस ली और बोले .

'गजब हुआ। निपिन देवता जो तूफानो का मालिक है, उसने तूफान पर तूफान छोडे और पृथ्वी की आत्माएँ जलने लग गई और थोडी ही देर मे आग लग गई। नीचे पानी था, ऊपर आग लगी हुई थी। निपिन ने स्वर्ग से आती हुई रोशनी को बदकर दिया और घना अँधेरा फैला दिया। आग बुझ गई थी। सब कुछ खत्म हो चुका था। अब नदियाँ उमडने लगीं और सारा ससार अथाह जल मे डूब गया। लोग मर गए। जो बचे थे वह पानी पर तैरने लगे पर उन्हे कुछ सूझता ही नही था। कोई किसी को नहीं पहचानता था। भाई-भाई को नहीं देखता था, स्त्री-पुरुष सब अँधेरे मे खो गए थे। आत्माएँ पानी के ऊपर से नीचे देख रही थीं और डर से कॉप रही थी। बाद मे उन्होने भागकर अनु के पास स्वर्ग मे शरण ली और इधर-उधर चौकियों, कुर्सियो, बक्सो के नीचे दुबक कर अपनी रक्षा की। छै दिन, छै रात इसी तरह प्रलय बरसता रहा।"

पीर फिर चुप हो गए जैसे कुछ सोच रहे हो। गिलगामिश आगे जानने को इतना इच्छुक था कि फौरन बोल उठा :

"हे पितर रुको मत कहे जाओ, आज मुझे कुदरत का खेल सुनने को मिल रहा है। यह तो मेरा बड़ा भाग्य है।"

"हाँ तो फिर", पीर ने कहना शुरू किया, "सब कुछ तबाह हो गया। सब तरफ गहरा सन्नाटा छा गया और अँधेरा इतना कि जैसे काली मोटी चादर सब तरफ फैल गई हो जहाँ रोशनी की एक किरण भी नहीं थी और तभी देवी इस्तर आई। उसने जो यह तबाही देखी तो फफक-फफक कर रोने लग गई और चिल्लाकर कहने लगी :

'आह! देवताओं की बुरी सलाह मे म भी पड गई थी और पहली पीढी सब मिट्टी हो गई। बाकी जो बचे सो पानी मे डूब कर मर गए। जाने मैंने क्यो अपनी बनाई हुई मनुष्य जाति को यो खत्म हो जाने दिया। हाय! वह तो सब, मछली के बच्चो की तरह गहराइयो मे खो गये हैं, अब म आदमी कहाँ से लाऊँ।'

"इश्तर जब रोई तो उसके साथ पृथ्वी की आत्माएँ जो अनु के स्वर्ग म दुबक रही थी, वह भी बाहर निकल आई और उसके साथ बैठकर रोने लगी। पर आत्माएँ बोली कुछ भी नहीं, केवल रोती रहीं।"

गिलगामिश भी यह सब सुनकर रुँआसा हो गया और आँखें पोछने लगा। तब पीर ने फिर कहा

'सातवें दिन प्रलय घटने लगा। मैंने अपने जहाज की खिडकी खोलकर बाहर झाँका। सूरज उग आया था, अँधेरा गायब हो चुका था। सूरज की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं क्योकि इतने दिनों मैं अँधेरे मे ही रहा रहा था। मै जोर से चिल्लाया पर कोई उत्तर मुझे कहीं से नही मिला, मनुष्य सब मिट्टी के बन गये थे। मै दिल फाड़ कर खूब रोया, खूब रोया। जहाँ पहले खेत थे वहाँ अब दलदल थी।

"फिर जमीन दिखाई देने लगी। मेरा जहाज नितसिर मुल्क की तरफ जा रहा था, जहाँ वह उसके एक बड़े पहाड़ से अटक कर रुका खड़ा था। पूरे प्रलय में वह वहीं रहा था।

"और तब मैने एक जल मुर्गी को उडाया कि देखें कहीं बैठने का भी ठिकाना है या नहीं पर वह इधर-उधर उडकर वापस आ गयी। जाहिर था कि कहीं कोई जगह सूखी नहीं थी। तब मैने एक अबाबील भेजी और वह भी वापस आ गई क्योंकि कहीं कोई जीवित ही नहीं बचा था। आखिर मे मैंने एक को उड़ाया जो लौटकर नही आया। तब तक पानी कम होता चला जा रहा था। मैने अपने जानवरों को स्वर्ग की हवा में तब बाहर निकाला।"

गिलगामिश ने पूछा :

"फिर तुमने क्या किया, हे पीर ?"

"मै जहाज से नीचे उतरा और पहाड़ की चोटी पर बैठकर सबसे पहला काम मैने यह किया कि खुदा के नाम पर एक बलि दी। फिर सुगंधित जल फैलाया और खुशबूदार सामान बर्तनों मे जलाकर देवताओं को चढाया। सेडार की खुशबू भरी लकडी जलाई और देवताओं को याद किया। जो महक फैली तो देवता लोग मक्खियाँ बनकर आ गए और बलि के चारों तरफ उड़ने लगे। फिर इश्तर देवी पास आई। अपने गले के हार को हाथ मे लेकर वह बोली : 'ओह ! इन देवताओं ने जो नुकसान मेरे आदमियो का किया है वह मैं कभी नहीं भूलूँगी। कसम है मुझे मेरे इस सुन्दर हार की कि मै यह दिन हमेशा याद रखूँगी। अब जो तुमने यह बलि दी है तो भले ही सब देवता यहाँ उसे खाने आ जायँ पर बेलएन्लिल यहाँ न आवे क्योंकि उसी ने मेरी बात नही मानी और दुनिया को प्रलय मे डुबो दिया।"

"तो फिर बेल न आया होगा", गिलगामिश बोल उठा।

"नहीं, वह जरूर आया", पीर ने कहा, "और जब उसने मेरा जहाज देखा त वह चमक कर खड़ा रह गया। फिर उसे गुस्सा चढा और वह चिल्लाया— 'यह कैसे बच गया ? इसे किसने बचाया ? हम लोगों ने तो यह तय किया था कि कोई भी आदमी इस प्रलय से न बच पावे।' और उसने चारों तरफ घूमकर देखा।

निपिन जो बेल का बेटा था बोला :

'और भला कौन बचाता ? ईआ ने इसको बचाया क्योंकि वह सब कुछ जानता है।'

"अब ईआ बोला :

'तुम देवताओं के राजा हो। तुम सदा शत्रु को हराने वाले हो। तुम दुष्टों को दण्ड देते हो और देते रहो पर मेरी भी मानो कि आदमियों को बिल्कुल ही खत्म मत करो। उन पर थोड़ा सी दया भी करो। शेर बना दो जिससे आदमी कम हो जायँगे पर प्रलय न होने दो।'

'चीते बना दो और आदमी अपने आप कम हो जायँगे पर प्रलय मे उन्हे न मारो। भूमि मे अकाल फैला दो बीमारियाँ फैला दो। उसको भेजकर आदमियो को कम करवा दो पर आयन्दा कभी प्रलय मत भेजो क्योंकि उससे तो सभी मर जाते हैं। मैने देवताओं की गुप्त सभा की कार्रवाई खोली नहीं थी बल्कि सपने मे अपने भक्त अत्राचेसिस (पीर नपिश्तिम का दूसरा नाम) को आगाह कर दिया था कि वह बच सके तो बच जाय। अब तुम इस पर रहम करो।'

"उसकी बातें सुनकर बेल ने थोड़ी देर सोचा, फिर वह मेरे जहाज मे घुस आया। उसने मेरा और मेरी स्त्री का हाथ पकड़कर हमे बाहर निकाला और मेरी स्त्री को मेरे सामने झुकाया। बीच मे खड़े होकर उसने हमे दुआ दी। वह बोला

'पीर नपिश्तिम प्रलय के पहले मनुष्य था। अब वह देवता माना जाय, इसकी स्त्री और यह हम लोगों की तरह आज से देवता माने जायँगे और नदियो के मुहानो से भी आगे इन्हे रहने को स्थान दिया जाय।'

'और इसीलिये बेल ने हम लोगो को यहाँ नदियो के मुहानो से भी आगे बीच समुद्र मे लाकर रख दिया। अब हम लोग अमर हैं।"

उसकी कहानी सुनकर गिलगामिश की तबियत खुश हुई और वह बोला :

"हे पितर तुम हमारे पूज्य हो। तुम सचमुच मे बहुत बड़े हो और देवता हो तुम्हारा कहना कभी झूठा नही जा सकता। इसलिये अब तुम मुझ पर दया

करो और मेरे रोगो को दूर करके मुझे भी अमर बना दो." और उसने उसकी तरफ सिर झुकाकर सिजदा की।

पीर ने कहा :

"हे गिलगामिश, तू मुझे बहुत प्यारा है। शायद तुझे मालूम नहीं कि तू कैसे पैदा हुआ और छुटपने मे कैसे पला था। ले मै तुझे सब बतलाता हूँ। बेबल के किले के पास एक कोने मे एक बच्चा पड़ा देखकर किले के पहरेदारों ने उसे लावारिस समझा और उसे ऊपर से बाहर नीचे फेक दिया। एक तेज निगाहों वाले बाज ने उड़कर उसे अपने परों पर समेट लिया और जमीन पर नहीं गिरने दिया। वह उसे लेकर आसमान मे उड़ गया और फिर एक बाग मे ले जाकर उसे धीरे से नीचे उतारा और उसी ने उसे पालकर बड़ा किया। वह बच्चा अब तू है। तेरी पैदाइश अजीब है और इसीलिये तू सब लोगो से भिन्न है। मै तुझे खूब जानता हूँ क्योंकि तूने ही जाड़े के और तूफान के दानवो को मारा था अब मेरी आज्ञा से तू साल में आधे दिन दुनिया मे रहेगा और आधे दिन हेडीस मे भी जाकर घूम सकेगा और वहाँ भी चाहे जिसकी मदद कर सकेगा।"

"पर मै तो पहले अच्छा होना चाहता हूँ और अमर बनना चाहता हूँ।" गिलगामिश बोल उठा।

"ठीक है", पीर ने हँस कर कहा, "तुझे वह मिलेगा जो तूने माँगा है। तो ध्यान देकर सुन। छै दिन और सात रात तू लेटेगा नहीं बल्कि मातम मनाता हुआ बैठेगा और तब तुझे तेरी मुराद मिलेगी।"

गिलगामिश बैठा रहा। और नींद ने काला तूफान बनकर उसे घेर लिया।

पीर ने तब अपनी स्त्री से कहा :

"वह देखो बहादुर को नींद ने काला तूफान बन कर घर दबाया है पर वह है कि लेटा नहीं है।"

उसकी स्त्री ने उत्तर दिया :

"उसकी हालत देख कर मुझे उस पर तरस आता है। उसके दुख मे मुझे दुख होता है। तुम अपना हाथ उसके शरीर पर फेर दो जिससे वह तन्दुरुस्त हो जाय और उसे शक्ति दो कि वह उस गहरी लम्बी गुफा पार कर सके और अपने घर वापस चला जाय।"

पीर ने कहा :

"ठीक है इसकी मदद तो करनी ही पडेगी, अब तुम उसके लिये जादुई भोजन तैयार करके उसके सिर के पास रख दो।"

सातवे दिन गिलगामिश लेट गया। और सात तरह के अद्‌भुत जादुओं मे पीर की स्त्री ने उसके लिये खाना बनाया जब कि वह नींद मे गाफिल पडा था। फिर पीर ने उसे छू दिया और गिलगामिश नई जिंदगी लेकर उठ बैठा। फिर उसने अपने शरीर को देखा और हर्ष से चिल्ला उठा। सामने पीर को खड़े देखा तो चिल्लाकर पूछा

"हे पीर, मै तो सो गया था और अब तुमने छू दिया तब जाग गया हूँ—यह क्या? मै तो नया आदमी बन गया हूँ। मेरे ऊपर तो जैसे जादू हो गया है। मेरा स्वास्थ्य लौट आया है। अब मै तगडा और जवान हो गया हूँ।" फिर चारो तरफ देख कर बोला :

"पर मेरा नौकर कहाँ चला गया?"

पीर ने उसे बतलाया कि उसको जो खाना खिलाया गया था वह जादू का खाना था। जब उसे वह खा चुका था तब अराद-ईआ उसके लेकर तदुरुस्ती के फव्वारे पर गया था जहाँ उसने उसे नहलाया। वहाँ उसकी खराब खाल गिर गई थी और वह सुन्दर तथा स्वस्थ हो गया था।

गिलगामिश अब बहुत ही ज्यादा खुश था क्योकि अब वह फिर जवान और बलिष्ठ बन गया था और उसकी सब बीमारी दूर हो गई थी। उसने पीर से कहा :

"तुम्हारी कृपा से मैं फिर से आदमी बन गया, अब मुझे इजाजत मिलनी चाहिये कि मैं अपने देश को वापस चला जाऊँ। तुम्हारे ऐहसानो से मै

दबा हुआ हूँ। आयदा भी मुझपर तो कृपा ही करना क्योंकि मे तुम्हारा ही वशज हूँ।"

पीर ने उसे विदाई दी और जाने से पहिले उसे एक पौधा बतलाया जिसके जादू के असर से बुड्ढा आदमी भी जवान बन सकता था और वह पौधा उसको दे भी दिया।

अराद-ईआ उसको एक नये टापू पर नाव मे बिठाकर ले गया जहाँ वह पौधा बहुत पाया जाता था और इतनी सारी जवानी देने वाले पौधे देख कर गिलगामिश की खुशी के ठिकाने न रहे उसने कई पौधे उखाडकर अपने पास रख लिये और कहा·

'मैं इसे अपने देश इरक ले जाऊँगा और बार-बार इसको खाकर जवानी को प्राप्त करूँगा।"

गिलगामिश अपने साथ अराद-ईआ को लेकर इरक लौटा। चलते-चलते उसी पहली अँधेरी गुफा को पार किया और जब उसके दरवाजे पर पहुँचे तो वह खुदबखुद खुल गया। जब बाहर निकले तो उस भयंकर दानव ने जमीन चूमकर उसको फर्शी सलामी दी। वह आगे चले।

जब इरक थोडी दूर रह गया तो एक जगह गिलगामिश को जोरो की प्यास लगी। उसने कुँए में से जल खींचा और अपनी पोटली जमीन पर रख दी। जब वह झुक कर पानी खींच रहा था तभी पृथ्वी का बब्बर शेर जो उसका पुराना दुश्मन था साँप बनकर आया और चुपके से उसकी पोटली में से जवानी के पौधो को चुरा कर भाग गया।

गिलगामिश ने उसे ले जाते देख तो लिया पर कुछ कर न सका क्योंकि वह तब तक दूर जाकर झाडियों में खो चुका था। वह बहुत ही दुखी हुआ। सारी मेहनत बेकार गई। उसने क्रोध में भर कर उसको शाप दिया और टूटे हुए दिल से खूब रोया। वह इतना अधिक रोया कि आँसुओं से उसका चेहरा भींग गया। रोते-रोते उसने अराद-ईआ से कहा·

"मुझे क्या फिर से स्वस्थ बनाया गया ? हाय हाय कलेजा दुख से फट रहा है, इतनी सारी मुसीबत, तकलीफ और इतने दिन का लंबा सफर सब बेकार गया। जो मेरा हक मुझे मिला था उसे वह नीच पृथ्वी का बबर शेर चुरा ले गया, हाय अब मैं क्या करूँ ?"

आखिरकार वह उठा और अराद-ईआ को साथ लेकर फिर चल पड़ा। रास्ते भर उन्होंने धार्मिक गाने गाये और जगह जगह देवताओं को बलि दी। उसने अपने पितरों को भी भेंटें दीं।

जब वह इरक पहुँचा तो देखता क्या है कि नगर की चारदीवारी गिरी पड़ी है। सारा नगर ऊजाड़ हो चुका है। उसने जाकर सबों को अपनी याद और धार्मिक जीवन की बाबत बतलाया।

गिलगामिस ने इरक को फिर से बनवाया और थोड़े ही समय में उसे दुनिया का सर्वश्रेष्ठ नगर बना दिया। चारदीवारें फिर से मजबूत बना दी गईं और सभी तरह से नगर पूर्ण बना दिया गया। इस तरह बहुत काल तक उसने सुखपूर्वक राज्य किया।

अपने जीवन के आखिर में उसे अपने मित्र ईआ बानी की याद बहुत सताती थी और वह उसके गम में हमेशा डूबा रहता था। ईआ-बानी की आत्मा आजाद नहीं थी बल्कि के नीचे की दुनिया यानी पाताल लोक में उसे मौत की आत्माओं ने कैद कर रखा था। वह उसे देखकर बहुत दुखी हुआ और बोला :

"हाय दोस्त, तुम्हारा यह हाल ! अफसोस अब तू अपने धनुष पर बाण नहीं चढ़ा सकता। अब तू अपनी स्त्री और बच्चों को चूम नहीं सकता और जिनसे तूने नफरत की है उन्हें मार भी नहीं सकता। हाय तेरा ऐसा बुरा हाल तो मैं सोच भी नहीं सकता।"

निराश होकर उसने अपनी देवी माता से प्रार्थना की पर नतीजा कुछ न निकला। तब उसने देवताओं से दुआ की और ईआ ने इसकी फरियाद सुनी। तब मौत के देवता नर्गल ने कब्र का पत्थर ऊपर उठा दिया और उसके अन्दर से ईआ-बानी की रूह हवा के झोंके की तरह बाहर निकली।

अब जब कि गिलगामिश अमर हो चुका था, फिर भी मौत से डरते-डरते उसने अपने दोस्त, जो कि अब भूत बना हुआ था, उससे पूछा :

'मेरे दोस्त मुझे बताओ तुम्हारा वह दोस्त कैसा है जहाँ तुम अब रहते हो ?" ईआ-बानी ने दुखित स्वर से कहा :

"अफसोस मै तुम्हें वह सब दु ख की बाते कैसे बताऊँ क्योंकि उन्हें सुन कर तो तुम बैठ कर रोने लग जाओगे।"

गिलगामिश ने उत्तर दिया :

"मै भले ही रोने लग जाऊँ पर तुम तो मुझे आत्माओं के उस देश की बाबत बतलाओ ही।"

ईआ-बानी ने तब गमगीन भारी आवाज मे कहा '

"हमारे यहॉ बुरे कर्म करने वालो को कठोर दण्ड दिया जाता है। वहॉ जवान बुड्ढे सब एक से होते हैं और सभी को कीडे खाते हैं और सभी धूल से ढॅके होते हैं। लेकिन उस योद्धा के हाल बुरे नही होते जो लडाई मे मारा गया हो और जिसे सही कायदे से गाड दिया गया हो। उसकी फिक्र कोई नहीं करता न कोई दण्ड ही उसे दिया जाता है। बल्कि वह तो आराम से बिस्तर पर लेटा रहता है और साफ पानी उसको पीने को मिलता है। और जो जग में बहादुरी से मरता है और अच्छी तरह दफनाया जाता है उसके सिर को उसके पिता अपने हाथों में साधे रहते हैं और उसके पास ही उसकी स्त्री बैठी होती है।

"उसकी आत्मा पृथ्वी पर चक्कर नहीं लगाती। परन्तु वह जिसकी लाश ठीक तरह से दफनाई नहीं जाती उसकी आत्मा कभी शान्ति नहीं पाती और डोला करती है। वह सडको पर मैला खाना खाती है। दावतों की फेंकी जूठन खाती है और नालियों का गॅदला पानी पीती है। उनके लिये घोर दु:ख है। और उस दुनिया मे दुखी ही अधिक हैं।"

"बस करो, बस करो", गिलगामिश चिल्ला उठा, "मुझसे और अधिक नहीं सुना जायगा, तुम जाओ मेरे दोस्त। चॅकि तुम बहादुर थे और युद्ध

न मर कर ठीक तरह से दफनाये गए थे इसलिये मैं ख्याल करता हूँ तुम तो आराम से ही होंगे, लेकिन बस अब मैं उस दुनियाँ की बाबत और कुछ सुनना नहीं चाहता, तुम जाओ।"

और वह रूह फिर कब्र में गायब हो गई और कब्र का पत्थर फिर बैठ गया।

गिलगामिश ने फिर मोत की दुनिया का जिक्र कभी नहीं किया। बाकी जिन्दगी जब तक वह इरक में रहा उसने मोज से काटी और जब वह रहते रहते थक गया तो देवताओं के पास सशरीर चला गया।

टेढ़ा रास्ता

अनन्तपुर नगरी का मत्री एक बार घोडे पर बैठकर सैर को निकला। वह जिस तरफ से निकल जाता उसी तरफ से लोग झुक-झुक कर उसको प्रणाम करते। जब वह चलते-चलते एक गाँव के बाहर पहुँचा तो उसने देखा कि एक आदमी सड़क के किनारे छोटे-छोटे पर गहरे गड्ढे खोद रहा था। मत्री को देखकर उस आदमी ने न तो प्रणाम किया और न उठकर खडा ही हुआ। मत्री ने उसे आश्चर्य से देखा और घोडा रोककर उससे बोला :

"ऐ आदमी! तुम सडक के किनारे गड्ढे क्यो खोद रहे हो? अगर इनमे किसी का पैर चला गया तो वह जरूर ही गिर जायगा। क्या तुम्हे इस बात का कोई खयाल नहीं है?" यह सुनकर उस आदमी ने जिसका नाम मोती था, कहा :

"भला इन गड्ढो मे कोई क्यों गिरने लगा? यह तो किनारे पर हैं। हाँ जो आदमी सीधी सडक छोड कर किनारो पर चलेगा वह जरूर इनमें गिरेगा। सीधे रास्ते जाने वालो को तो इनसे कोई खतरा हो ही नही सकता।"

मत्री ने उसके उत्तर को सुना और तब और भी आश्चर्य से पूछा :

"तुम्हारा नाम क्या है, क्या करते हो और इस समय कहाँ जा रहे हो?" वह आदमी बोला :

"नाम मेरा मोती है पर मै काम कुछ भी नहीं करता और जहाँ परम पिता परमेश्वर मुझे सुबह के समय ले जाता है वहीं दिन भर बिता देता हूँ।"

मत्री को उसका ईश्वर पर ऐसा अटल विश्वास देखकर खुशी हुई और तब उसने उससे उसके घर वालो के बारे मे पूछा तो मोती बोला :

"मेरा बाप जीवित है पर मैं उसके साथ नहीं रहता क्योंकि हर कोई संसार में अलग अलग आये हैं फिर भला साथ क्या रहें ?"

अब मंत्री ने उसे मूर्ख समझा और कहा :

"तुम मेरे साथ चलो और मेरे यहाँ रहो तो तुम्हें मैं काम दे सकता हूँ।"

"पर काम क्या होगा ?" मोती ने प्रश्न किया।

"तुम मेरे बागीचे में माली बन जाओ और मेरे पेड़-पौधों को सींचो, फूलों को सजाओ। इसके बदले में तुम्हें रोटी कपड़ा मिलेगा।" मोती यह सुनकर उसके पास आ गया और खुशी-खुशी उसने कहा :

"मैं तैयार हूँ", और मंत्री के साथ चल दिया।

मंत्री उसे ले आया और अपने बड़े बाग पर उसे बागवान नियुक्त कर दिया। उस बाग की शोभा अपरूप थी। जगह जगह फूलों के पेड़ महक रहे थे और उनके बीच पतली-पतली पक्की रविशें बनी हुई थीं जिन पर होकर मन्त्री घूमा करता था। चारों तरफ घने ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे जिनकी छाया में हमेशा पक्षी कलरव किया करते। बीच-बीच में पानी के बड़े-बड़े कुंड थे जो पक्के थे और जिनमें चारों तरफ से सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। घाट भी पक्के थे और उन पर आम के पेड़ों की सघन छाया रहती था। कुंड संगमर्मर के बने थे और उनमें पानी बिल्लौर की तरह साफ भरा रहता था। उस बाग को देखकर मोती बहुत खुश हुआ।

मन्त्री जब आता तब वह उसे एक गुलदस्ता भेंट करता और इनाम पाता था।

मोती को पक्षियों की बोली आती थी। एक दिन जब वह बाग में काम कर रहा था तो उसने एक तरफ पक्षियों को लड़ते सुना।

एक चिड़ा और उसकी स्त्री चिड़िया एक घोंसला बनाकर एक मोरछली के पेड़ में आराम से रहते थे। एक दिन चिड़िया जब कहीं बाहर गई थी तो एक नई चिड़िया उसी जगह आई और उस चिड़ा पर रीझ गई। चिड़ा भी उसके साथ चला और दोनों खूब बातें करने लगे और एक दूसरे के

मित्र बन गये और साथ-साथ झूमते हुए और उडते हुए बहुत दूर निकल गए। जब चिडिया लौटी तो उसने चिडा को घोसले में नहीं पाया। वह उसे ढूँढने लगी और जब वह कहीं नहीं मिला तो नाराज होकर पेड की एक ऊँची डाल पर बैठ गई और उसकी प्रतीक्षा करने लगी। उसने देखा कि बाग के दूसरे किनारे एक पेड़ पर बैठकर उसका चिडा एक नई चिड़िया के साथ खेल रहा है। वह गुस्से से थर-थर कॉपने लग गई और सीधी उडकर वहीं पहुँची। आपे के बाहर होकर उसने चिल्लाकर उस चिडिया से कहा :

"दूर हो जा चुडैल, मेरे पति को बहकाती है। चली जा वरना जान से मार डालूँगी।"

"मै नहीं जाऊँगी", उस चिड़िया ने कहा, "मैने इस चिडे को वर लिया है, अब तो मै भी इसी के पास रहूँगी।"

"हरगिज नहीं", पहली चिडिया झपटी और उसने नई चिड़िया की गर्दन पकड ली। तब नई चिडिया ने चिडे की तरफ मदद की खातिर देखा और उससे पूछा :

"क्या मै चली जाऊँ ?"

चिडा बोला :

"नहीं मत जाओ, तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है", यह सुनकर पहली चिडिया ने विरोध किया तो वह फिर उससे बोला :

"इसको छोड़ दो और तुम दोनों ही मेरी स्त्रियाँ बन कर रहो। कोई कहीं मत जाओ दोनों ही मिलकर प्रेमपूर्वक रहो और मत लडो।"

पर पहली चिडिया को यह मजूर नहीं था। वह झगडने लगी, बडा झगड़ा हुआ और बहुत देर तक हुआ पर कोई किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाया। तब तीनों राजा के दरबार में फैसला कराने चले।

तीनों सुबह ही दरबार में पहुँच गए और तब तक वहाँ बैठे रहे जब तक दरबार खुला रहा और जब दरबार बंद हो गया तो वे वहाँ से उड़कर चले आये।

आदमियों की बोली तो उन्हें आती न थी इसलिये वे वहाँ केवल बैठकर ही चले आये। फिर दूसरे दिन भी वह वहाँ इसी तरह गए और शाम को वापस लौट आये। तीन दिन जब इसी तरह जाकर लौट आये तो राजा को उनका नित्य आकर चला जाना कुछ अजीब सा लगा। पर वह चुप रहा। चौथे दिन जब वह तीनों फिर आकर वापस चले गए तो राजा ने मन्त्री को बुलाकर पूछा

"यह चिड़ियाँ और चिड़ा रोज यहाँ क्यों आते हैं और दिन भर दरबार में रहकर शाम को क्यों चले जाते हैं? बताओ।"

मन्त्री बोला :

"महाराज मुझे तो मालूम नहीं है।"

तब राजा ने कहा :

"तुम मन्त्री हो तुम्हें यह बात मालूम करनी चाहिये।"

"पर वह तो पक्षी हैं, भला मैं उनके मन की बात कैसे जान सकता हूँ?" मन्त्री ने हाथ जोड़कर कहा।

"हम कुछ नहीं जानते, जल्दी कारण बतलाओ।"

मन्त्री ने फिर हाथ जोड़े और वह बहुत घबराया तो राजा बोला :

"कल तक बतला दो, वरना तुम्हारा सिर काट दिया जायगा", और राजा यह कह कर अपने महल को चला गया।

अब तो मन्त्री गहरे सोच में पड़ गया। भला पक्षियों के मन की बात वह कैसे बतला सकता था? इसी सोच में जाकर वह अपने बाग में एक बेंच पर बैठ गया और गुम-सुम होकर बिना हिले-डुले, बोले चाले बैठा रहा। उसकी ऐसी हालत देख कर मोती बागवान ने उससे पूछा

"हे महाराज! आज आप इतने चिंतित क्यों नजर आ रहे हैं?" पर मन्त्री ने उसे कोई जवाब नहीं दिया और न उसका दिया हुआ गुलदस्ता ही लेकर सूँघा। मोती ने फिर कहा :

"हे महाराज! आप कहिये क्या चिन्ता है, शायद मैं उसे हल कर सकूँ?" मन्त्री मन में हँसा कि भला यह मूर्ख मेरी चिन्ता कैसे दूर कर सकता है, पर

फिर भी उसने झुँझला कर उससे सब बात कह सुनाई। सुनते ही मोती ने झुक कर प्रणाम किया और कहा :

"बस इसीलिये इतनी चिन्ता कर रहे हैं ?" अब तो मंत्री ने गर्दन उठाई और उसे गौर से देख कर पूछा : "क्या मतलब ?"

मोती ने कहा : "मतलब यह कि इस बाग में एक चिडा और चिडिया रहते हैं। एक नई चिडिया ने आकर चिडे को वर लिया है। पहली चिडिया झगडा करती है कि उसके पति के साथ और कोई दूसरी स्त्री नहीं रह सकती। चिडा कहता है कि वह दोनों को रखना चाहता है। इसी झगडे को तै कराने को वह तीनों रोज दरबार में जाते हैं, पर आदमियों की बोली तो उन्हें आती नहीं है जो वहाँ जाकर अर्ज कर सके। इसीलिये रोज लौट आते हैं।"

मंत्री यह सुन कर बड़ा खुश हुआ और बोला :

"पर तुझे यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"मुझे पक्षियों की बोली आती है", मोती ने उत्तर दिया।

मत्री ने कुछ सोचा और फिर पूछा :

"पर अपना फैसला इनको कैसे सुनाया जायगा ?"

"उसकी तो तरकीब बड़ी आसान है", मोती बोला, "यदि दोनों स्त्रियाँ चिड़ा रखे तो उसकी तरफ दो उँगलियाँ उठा दो और यदि एक ही स्त्री वह रखे तो उसे एक उँगली दिखा दो। बस फिर वह चिडिया और चिडा वापस चले जायेंगे।"

मंत्री बहुत खुश हुआ और उसने उसे अपने गले से मोतियों का हार उतार कर इनाम मे दिया। वह दूसरे दिन बहुत सवेरे ही राजा के महल में गया और उसने राजा से सब बात कही पर यह नहीं बतलाया कि उसे यह सब बात उसके बागबान ने बतलाई थीं। राजा को बडा आश्चर्य हुआ।

आदमियों की बोली तो उन्हें आती न थी इसलिये वे वहाँ केवल बैठकर ही चले आये। फिर दूसरे दिन भी वह वहाँ इसी तरह गए और शाम को वापस लौट आये। तीन दिन जब इसी तरह जाकर लौट आये तो राजा को उनका नित्य आकर चला जाना कुछ अजीब सा लगा। पर वह चुप रहा। चौथे दिन जब वह तीनों फिर आकर वापस चले गए तो राजा ने मत्री को बुलाकर पूछा :

"यह चिड़ियाँ और चिड़ा रोज यहाँ क्यों आते हैं और दिन भर दरबार में रहकर शाम को क्यों चले जाते हैं ? बताओ।"

मन्त्री बोला :

"महाराज मुझे तो मालूम नहीं है।"

तब राजा ने कहा :

"तुम मत्री हो तुम्हे यह बात मालूम करनी चाहिये।"

"पर वह तो पक्षी हैं, भला मैं उनके मन की बात कैसे जान सकता हूँ ?" मत्री ने हाथ जोड़कर कहा।

"हम कुछ नही जानते, जल्दी कारण बतलाओ।"

मत्री ने फिर हाथ जोड़े और वह बहुत घबराया तो राजा बोला :

"कल तक बतला दो, वरना तुम्हारा सिर काट दिया जायगा", और राजा यह कह कर अपने महल को चला गया।

अब तो मत्री गहरे सोच मे पड़ गया। भला पक्षियों के मन की बात वह कैसे बतला सकता था ? इसी सोच मे जाकर वह अपने बाग मे एक बेंच पर बैठ गया और गुम-सुम होकर बिना हिले-डुले, बोले-चाले बैठा रहा। उसकी ऐसी हालत देख कर मोती बागवान ने उससे पूछा

"हे महाराज ! आज आप इतने चिंतित क्यो नजर आ रहे हैं ?" पर मत्री ने उसे कोई जवाब नहीं दिया और न उसका दिया हुआ गुलदस्ता ही लेकर सूँघा। मोती ने फिर कहा :

"हे महाराज ! आप कहिये क्या चिन्ता है, शायद मैं उसे हल कर सकूँ ?" मत्री मन मे हँसा कि भला यह मूर्ख मेरी चिन्ता कैसे दूर कर सकता है, पर

फिर भी उसने झुँझला कर उससे सब बात कह सुनाई। सुनते ही मोती ने झुक कर प्रणाम किया और कहा :

"बस इसीलिये इतनी चिन्ता कर रहे हैं ?" अब तो मंत्री ने गर्दन उठाई और उसे गौर से देख कर पूछा : "क्या मतलब ?"

मोती ने कहा : "मतलब यह कि इस बाग में एक चिडा और चिडिया रहते हैं। एक नई चिडिया ने आकर चिडे को वर लिया है। पहली चिडिया झगडा करती है कि उसके पति के साथ और कोई दूसरी स्त्री नहीं रह सकती। चिडा कहता है कि वह दोनों को रखना चाहता है। इसी झगडे को तै कराने को वह तीनों रोज दरबार में जाते हैं, पर आदमियों की बोली तो उन्हें आती नहीं है जो वहाँ जाकर अर्ज कर सके। इसीलिये रोज लौट आते हैं।"

मंत्री यह सुन कर बडा खुश हुआ और बोला :

"पर तुझे यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"मुझे पक्षियों की बोली आती है", मोती ने उत्तर दिया।

मंत्री ने कुछ सोचा और फिर पूछा :

"पर अपना फैसला इनको कैसे सुनाया जायगा ?"

"उसकी तो तरकीब बड़ी आसान है", मोती बोला, "यदि दोनों स्त्रियाँ चिडा रखे तो उसकी तरफ़ दो उँगलियाँ उठा दो और यदि एक ही स्त्री वह रखे तो उसे एक उँगली दिखा दो। बस फिर वह चिडिया और चिडा वापस चले जायँगे।"

मंत्री बहुत खुश हुआ और उसने उसे अपने गले से मोतियों का हार उतार कर इनाम में दिया। वह दूसरे दिन बहुत सवेरे ही राजा के महल में गया और उसने राजा से सब बात कही पर यह नहीं बतलाया कि उसे यह सब बात उसके बागबान ने बतलाई थीं। राजा को बडा आश्चर्य हुआ।

दरबार जुड़ा और सब ने देखा कि रोज की तरह चिड़ियाँ फिर आकर हाजिर हो गई। तब राजा ने मत्री से कहा

"इनका मुकदमा आज ते होना चाहिये, इसलिये इनकी शिकायत पूछो ?"

मत्री ने सभा के बीच मे सब बातें फिर बतलाई। तब राजा ने कहा '

"इस चिडे को एक ही स्त्री दी जाती है। पहली चिडिया ही इसके साथ रहेगी, दूसरी नही।"

मत्री ने यह सुनकर एक उँगली उन चिड़ियो की तरफ उठा दी। उसकी उँगली जैसे ही उठी कि दूसरी चिडिया फुर्र से उड गई और थोडी देर बाद वह चिडा और पहली चिडिया साथ-साथ उड गये। सारी सभा को बडा अचभा हुआ और राजा बडा खुश हुआ। उसने मत्री को बहुत इनाम दिया।

जब मत्री घर लौटा तो बहुत खुश हुआ पर एक विचार उसके मन मे रह-रहकर उठ रहा था। वह था उस बागवान के बारे मे। मत्री ने सोचा कि यह आदमी मामूली नही है बल्कि बडा बुद्धिमान है। कहीं इसकी असलियत राजा को मालूम पड गई तो फिर राजा इसी को मत्री बना लेगा और मुझे हट जाना पड़ेगा। अपना भविष्य धोखे मे देखकर मत्री के मन मे बुरे विचार उठने लगे। कई दिन तक वह यह सब सोचता रहा और एक दिन उसने पक्का विचार बना लिया कि वह उस बागवान को मरवा डालेगा। क्योंकि तब न वह रहेगा न कभी राजा के सामने जाकर अपनी बुद्धिमानी दिखा सकेगा। उसने सोचा .

"न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी," बस उसने एक हुक्म जल्लाद के नाम लिखा कि जो आदमी यह हुक्मनामा लेकर उसके पास जाय उसे वह तलवार से काट डाले। और फिर उस पत्र को बद करके मोती के हाथो मे दे दिया और कहा

"मोती तुम बहुत बुद्धिमान आदमी हो, हम तुमसे बहुत खुश हैं। यह खत तुम फौरन जाकर जल्लाद को दे दो।"

मोती ने वह कागज ले लिया और जल्लाद के घर जाने लगा। पर जैसे ही घर के बाहर निकला कि उसे मत्री के पुत्र ने बुलाया। जब वह लौटकर उसके पास आया तो वह बोला .

"ऐ बागवान ! जा और मेरे लिये बाग में से एक बहुत अच्छा गजरा जल्दी तैयार करके ला !"

मोती बाला : "मुझे मन्त्री जी ने जल्लाद को यह कागज देने को कहा है इसलिये पहले मै यह खत दे आऊँ।"

"नहीं पहले गजरा लाओ", मन्त्री ने लडके से कहा।

"तो फिर यह खत ?" मोती ने उससे पूछा।

"यह मै पहुँचा दूँगा", वह लडका बोला, "और जब तक मै लौटकर आऊँ तब तक गजरा तैयार मिलना चाहिये।"

"बहुत अच्छा", कहकर मोती ने वह खत उस लड़के को दे दिया और वह बाग की तरफ मुड़ा।

मन्त्री का लडका जब जल्लाद के पास पहुँचा तो पहले जल्लाद उसे देखकर बहुत डरा पर फिर जब उसने खत पढा तो उसने उसे पकड़कर फाँसी-घर के बीच जमीन पर दे मारा और उस चिल्लाते, चीखते लडके का सिर पैनी तलवार से काट डाला।

उधर तो यह हुआ और इधर जब काफी देर हो गई और गजरा तैयार हो गया तो बागवान उसे लिये बैठा रहा। वह बैठा-बैठा उकता गया। उसने समझा मन्त्री का पुत्र शायद सीधे महल मे चला गया हो, इसलिये वह उस गजरे को लेकर सीधा महल की ओर चला। जब वह महल के पास पहुँचा तो मन्त्री ने उसे देखा और बुलाकर पूछा :

"तुमको तो मैंने जल्लाद के यहाँ भेजा था फिर तू यहाँ कैसे नजर आ रहा है ?"

मोती बोला : "हुजूर ! मै जब आपका खत लेकर जल्लाद के यहाँ जा रहा था तो आपके पुत्र ने मुझसे एक गजरा फौरन बनाने को कहा। मैंने कहा कि पहले खत दे आऊँ तो वह बोले कि नहीं पहले गजरा बनाओ। मैंने फिर कहा कि यह खत कैसे पहुँचेगा तो बोले कि खत को वह खुद पहुँचा देंगे। उन्होंने मुझसे वह खत ले लिया और खुद ही जल्लाद के

यहाँ चले गए। पर अभी तक नहीं लौटे हैं। गजरा मैंने कब का तैयार कर लिया है। अब मैंने सोचा कि शायद सीधे महल में चले गये हों तो यह गजरा वहीं उनको दे आऊँ।"

मन्त्री यह सुनकर जमीन पर गिर गया और दहाड़े मारकर रोने लगा। उसकी स्त्री आ गई और उसने अपने पति से रोने का कारण पूछा। जब मन्त्री ने रो रोकर बतलाया तो वह भी जमीन पर गिर पड़ी और फिर दोनों पति-पत्नी बेहोश हो गए। जब मोती को सारी बातें मालूम हुई तो वह अफसोस से बोला :

"हे मन्त्री जी महाराज! जब आप मुझसे पहली बार मिले थे तब मैंने कहा था कि जो सीधे रास्ते को छोड़कर अगल-बगल चलेंगे वह ही गड्ढों में गिरेंगे और आज भी ऐसा हुआ है। आपने सीधा रास्ता छोड़कर धोखे से मुझे मरवाना चाहा था पर आपका बेटा ही मारा गया।"

मोती मन्त्री का महल छोड़कर चला गया और फिर कभी वहाँ वापस नहीं आया।

जामदग्नेय परशुराम

जमदग्नि ऋषि के पुत्र का नाम परशुराम था। वह भगवान् के अवतार माने जाते हैं। इनका जन्म महत्वपूर्ण था और उसी प्रकार उनका जीवन भी।

बहुत पहले की बात है, एक राजा गाधी था जो इंद्र का अवतार था। उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम सत्यवती था।

भृगु ऋषि के पुत्र ऋचिका ने गाधी से जाकर सत्यवती को अपनी स्त्री बनाने को माँगा। राजा ने उस फटेहाल बुड्ढे आदमी को देखा तो सोचा कि किसी तरह इसको टाल बतलाई जाय पर साफ इन्कार करता तो ऋषि शाप दे देता। इसलिये उसने तरकीब सोची। वह बोला:

"महाराज आप मेरी लडकी से शादी तो कर सकते हैं पर पहले आप मुझे छै सौ श्यामकर्ण घोडे लाकर दीजिये, तब मै आपको कन्यादान करूँगा।"

श्यामकर्ण घोडे दुनियाँ मे उस समय भी बहुत कम थे, फिर भला छै सौ इकट्ठे घोडे कहाँ से लाये जाते। ऋषि चक्कर मे पड गये। पर वचन तो पूरा ही करना था, इसलिये तलाश में निकल पडे। सभी जगह वह घूम आया पर उसे कहीं भी श्यामकर्ण घोडे न मिले। हताश होकर वह गालव के पास गया जो उसे अपने मित्र गरुड के पास ले गया गरुड ने (६००) छै सौ श्यामकर्ण घोडे वरुण के पास से लाकर उसको दिये जिन्हें वह लेकर खुशी से राजा गाधी के पास गया और वचन पूरा होने की वजह से उसकी लडकी सत्यवती को पत्नी रूप मे पाया।

ऋचिका ऋषि सत्यवती को अपनी कुटी मे ले आये और पुत्र की इच्छा रखते हुए उन्होने सत्यवती से कहा:

से साफ इन्कार कर दिया। ऋषि ने उन्हें शाप दिया कि वे मूर्ख हो जावें। वह तुरन्त मूर्ख हो गए।

आखिर में परशुराम अंदर आये और ऋषि जमदग्नि ने उनसे भी ऐसा ही करने को कहा तो परशुराम ने फरसे से फौरन अपनी माता की गर्दन काट दी क्योंकि वह बहुत ही ज्यादा पितृ-भक्त थे।

जमदग्नि का गुस्सा शांत हो गया और उन्होंने अपने पुत्र परशुराम से प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा

परशुराम ने कहा :

"हे पिता यदि आप मुझसे खुश हैं तो मुझे वरदान दीजिये कि मेरी माता जीवित हो उठें और उन्हें यह याद भी न रहे कि कभी वह मारी भी गई थीं। उनका हृदय शुद्ध हो जाय, मेरे सभी भाई फिर से अच्छी बुद्धि वाले हो जायँ और मुझसे दुनिया भर में अकेला लड़कर कोई न जीते तथा मैं बहुत काल तक जीवित रहूँ।"

जमदग्नि ने सभी वरदान दे दिये। माता रेनुका उठ बैठीं और सब भाई भी ठीक हो गए।

एक बार ऋषि जमदग्नि कहीं बाहर गए हुए थे। उनके पुत्र भी जङ्गल गए थे कि पीछे से माहिष्मती नगरी का हैहय वंश का प्रतापी राजा कार्त्तिवीर्य अर्जुन उनके यहाँ गया। वह राजा बड़ा बलवान था और घमण्ड में चूर रहता था। उसके उत्साह से सभी देव, गंधर्व, मनुष्य और राक्षस डरते थे। उसके एक हजार हाथ थे और वह दत्तात्रेय भगवान का भक्त था। उसने उनसे बहुत बली होने का वर भी ले रखा था। उसका रथ सोने का था।

जब वह जमदग्नि के यहाँ पहुँचा तो ऋषि पत्नी रेनुका ने उसका स्वागत किया और सत्कार से बिठाकर अर्घ्य दिया। पर उसने अपने घमण्ड में किसी भी स्वागत को ध्यान पर नहीं रखा और अकड़कर ही बोलता रहा। जब जाने लगा तो ऋषि की कामधेनु के बछड़े को भी जबर्दस्ती अपने साथ

ले गया यद्यपि रेनुका उसे बराबर मना करती रही। जाते-जाते उसने ऋषि की कुटिया की लकडी, बॉस वगैरह भी उखाडकर फेंक दिये। रेनुका चिल्लाती ही रह गई। पर उसने एक भी नहीं सुनी।

जब जमदग्नि आये तो रो-रोकर रेनुका ने कार्त्तिवीर्य के जुल्म का सारा हाल उनको बतलाया। वह बुड्ढे थे, इसलिये अपने पुत्र परशुराम के आने की बाट जोहने लगे। जब परशुराम आये तो उन्होंने कहा :

"हे पुत्र, जिस तरह तेरी मॉ को तू बहुत प्यारा है, उसी तरह हमारी कामधेनु को उसका बछडा भी बहुत प्यारा है। वह देख गैया माता अपने बच्चे के दुख मे रॅभा रही है और रो रही है। तू जल्दी जा और इसका बच्चा ढूॅढ कर ले आ", और वह रोने लगे।

परशुराम ने जोश के साथ पूछा :

"लेकिन पिता, मुझे आप बतलाइये तो सही कि कामधेनु के बछडे को कौन ले गया है और वह कहॉ गया है?"

जमदग्नि ऋषि ने सारी बातें खोलकर बतलाई। सब चुपचाप सुनकर परशुराम क्रोध से कॉपने लगे। उनके हाथ,पैर, ऑखें सब फडकने लगे। उनका रूप महाभयङ्कर हो गया। वे चिल्लाकर बोले :

"मै कार्त्तिवीर्य को इस बर्ताव का दण्ड दूॅगा और उसको युद्ध मे परास्त करके बछडा अभी लाता हूॅ।"

अपना भयानक और बडा धनुष तथा फरसा लेकर वह तेजी से कार्त्तिवीर्य अर्जुन से भिडने चल दिये।

उधर जब कार्त्तिवीर्य ने सुना कि परशुराम लडने आ रहे हैं तो वह भी मुकाबले को खडा हो गया।

दोनों में युद्ध शुरू हो गया। धनुष से तीर पर तीर छूटते और काट दिये जाते। देर तक युद्ध होता रहा। परशुराम के सामने वह ठहर न सका। वह प्रचंड धनुर्धर तो था साथ ही महाबली भी था, पर परशुराम के सामने वह न जीत सका। परशुराम ने उसे जमीन पर गिरा दिया और दौडकर

से साफ इन्कार कर दिया। ऋषि ने उन्हें शाप दिया कि वे मूर्ख हो जावें। वह तुरन्त मूर्ख हो गए।

आखिर में परशुराम अन्दर आये और ऋषि जमदग्नि ने उनसे भी ऐसा ही करने को कहा तो परशुराम ने फरसे से फौरन अपनी माता की गर्दन काट दी क्योंकि वह बहुत ही ज्यादा पितृ-भक्त थे।

जमदग्नि का गुस्सा शांत हो गया और उन्होंने अपने पुत्र परशुराम से प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा

परशुराम ने कहा :

"हे पिता यदि आप मुझसे खुश हैं तो मुझे वरदान दीजिये कि मेरी माता जीवित हो उठे और उन्हें यह याद भी न रहे कि कभी वह मारी भी गई थी। उनका हृदय शुद्ध हो जाय, मेरे सभी भाई फिर से अच्छी बुद्धि वाले हो जायँ और मुझसे दुनिया भर में अकेला लड़कर कोई न जीते तथा मैं बहुत काल तक जीवित रहूँ।"

जमदग्नि ने सभी वरदान दे दिये। माता रेनुका उठ बैठीं और सब भाई भी ठीक हो गए।

एक बार ऋषि जमदग्नि कहीं बाहर गए हुए थे। उनके पुत्र भी जङ्गल गए थे कि पीछे से माहिष्मती नगरी का हैहय वंश का प्रतापी राजा कार्त्तवीर्य अर्जुन उनके यहाँ गया। वह राजा बड़ा बलवान था और घमण्ड में चूर रहता था। उसके उत्साह से सभी देव, गंधर्व, मनुष्य और राक्षस डरते थे। उसके एक हजार हाथ थे और वह दत्तात्रेय भगवान का भक्त था। उसने उनसे बहुत बली होने का वर भी ले रखा था। उसका रथ सोने का था।

जब वह जमदग्नि के यहाँ पहुँचा तो ऋषि पत्नी रेनुका ने उसका स्वागत किया और सत्कार से बिठाकर अर्घ्य दिया। पर उसने अपने घमण्ड में किसी भी स्वागत को ध्यान पर नहीं रखा और अकड़कर ही बोलता रहा। जब जाने लगा तो ऋषि की कामधेनु के बछड़े को भी जबर्दस्ती अपने साथ

देखकर सभी क्षत्री भय से कॉपने लगे और उन्होंने डरकर उनका स्वागत किया। उन्होंने क्रोध से गरजकर राम से कहा ·

"तुमने शिव धनुष को तोडा है परन्तु तुम यदि यह विष्णु-धनुष तोड दोगे तब मै तुम्हे वीर समझूँगा।"

लक्ष्मण ने उन्हें हँसकर चिटा दिया। क्रोध मे भरकर वे उने मारने दौडे पर रामचन्द्र ने उन्हें शात किया और उनका दिया हुआ विष्णु-धनुष भी झुकाकर तोड दिया। परशुराम प्रसन्न हो गए और आशीर्वाद देकर जङ्गल चले गए। रामचद्र ने उनकी बहुत खातिर की।

परशुराम जब तक रहे वीर बनकर रहे। सभी उनसे डरते थे और उनके आदर करते थे।

अपने फरसे से उसके नो सो अट्ठानवे हाथ काट डाले। केवल दो हाथ छोड़े। उन दो हाथो से उसने हाथ जोड़कर अपने प्राणो की भीख माँगी। परशुराम अपने बछड़े को लेकर अपनी कुटी मे चले आये।

इसके थोडे दिनो के बाद जब परशुराम घर पर नहीं थे तो कार्त्तवीर्य के पुत्रों ने जमदग्नि की कुटी पर बदला लेने के लिये हमला कर दिया और उन्हे अकेला पाकर मार डाला। उनकी स्त्री रेनुका रोती-चिल्लाती रह गई पर भला वह उसकी काहे को सुनते। उन्होने मिलकर ऋषि की गर्दन काट ली और फिर कुटी मे आग लगाकर चल दिये।

जब परशुराम लोटे तो अपने पिता का मरा देखकर उन्हे बहुत दुख हुआ। वे क्रोध मे हुकार भरने लगे। उनकी माता रेनुका ने इक्कीस बार अपनी छाती पीटी और पुत्र से बदला लेने को कहा। परशुराम ने प्रतिज्ञा की •

"मे इक्कीस बार पृथ्वी को जीतकर क्षत्रियो का जड से खोदूँगा—मेरे फरसे से एक भी क्षत्री नही बचेगा।"

सबसे पहले माहिष्मती नगरी जाकर परशुराम ने कार्त्तिवीर्य के सौ पुत्रो को मार डाला। इसके बाद वह दिग्विजय को निकले। जहाँ भी कोई क्षत्री मिल जाता, उनके फरसे से मारा जाता। इसी तरह उन्होने पृथ्वी पर इक्कीस बार घूमकर पृथ्वी को अक्षत्रिय कर दिया अर्थात् सभी क्षत्रियो को मार दिया।

परशुराम बहुत वीर थे और उनकी वीरता मशहूर थी। वह बड़े तेजस्वी भी थे और उनके तेज के सामने सभी झुकते थे। वह ब्रह्मचारी थे।

जब रामचन्द्र भगवान ने राजा जनक की सभा मे शिव धनुष को तोड दिया था और राजकुमारी सीता से स्वयवर जीतकर विवाह किया तो परशुराम को शिव-धनुष के टूट जाने से बहुत दुख हुआ। क्रोध मे भरकर वह राजा जनक की सभा की ओर चले क्योकि वह खुद शिव भक्त थे। उन्हें

देखकर सभी क्षत्री भय से कॉपने लगे और उन्होंने डरकर उनका स्वागत किया। उन्होंने क्रोध से गरजकर राम से कहा ·

"तुमने शिव धनुष को तोडा है परन्तु तुम यदि यह विष्णु-धनुष तोड दोगे तब मै तुम्हे वीर समझूँगा।'

लक्ष्मण ने उन्हे हँसकर चिढा दिया। क्रोध मे भरकर वे उसे मारने दौडे पर रामचन्द्र ने उन्हे शात किया और उनका दिया हुआ विष्णु-धनुष भी झुकाकर तोड दिया। परशुराम प्रसन्न हो गए और आशीर्वाद देकर जङ्गल चले गए। रामचद्र ने उनकी बहुत खातिर की।

परशुराम जब तक रहे वीर बनकर रहे। सभी उनसे डरते थे और उनका आदर करते थे।

पुरुर्वस का जन्म और अन्त

कर्दम प्रजापति था। उसका पुत्र इल था। भारत के उत्तर-पश्चिम मे वाल्हीक नामक एक देश था। यह इल उसी देश का राजा था। वह अपनी प्रजा को अपने पुत्र की भॉति पालता था। उसका शासन बहुत अच्छा था। वह इतना पराक्रमी था कि बडे ही उदार हृदय वाले देवता लोग भी उसका सम्मान करते थे, बल्कि उसकी पूजा भी किया करते थे। दैत्य लोगो के पास धन बहुत था। जिसके पास धन अधिक होता है वह घमण्डी हो जाया करता है और धन को सहायता से दूसरो को दबाने की कोशिश किया करता है। परन्तु इल नामक राजा की शक्ति इतनी अधिक थी कि उसके सामने धनवान दैत्य भी डरते थे। नाग, राक्षस, गधर्व और यक्ष जो कि बलवान थे वे भी उसकी शक्ति से डरते थे।

उस राजा का क्रोध बडा ही भयानक था। जब भी उसकी भौ मे बल पड़ता था, तब ही तीनो लोक कॉपने लगते थे। परन्तु वह बडा धर्मात्मा राजा था। सशक्त तो वह था ही।

एक बार उस राजा ने बैठे-बैठे सोचा कि अब चैत का महीना आ गया है, फूल खिल रहे हैं, नयी कोपले फूट रही हैं। गध से हवा लद गई है, तो उसने मन्त्री को बुलाया। उसने उसे शिकार खेलने की राय दी।

क्षत्रिय के लिये भला शिकार से बढ कर क्या था। उसने अपनी सेना को तैयार हो जाने की राय दे दी और जब सब कुछ तैयारी हो गई तो वह शिकार पर निकला।

घने वन मे पहुँचने पर उसने अपने सामने अनेक जङ्गली पशुओ को देखा। सेना के साथ वह उन जङ्गली जानवरो का अहेर करने लगा। जानवर बार-बार अपने प्राण बचाने को इधर उधर भागते, कभी झाडियो मे,

और कभी वृत्तों मे जाकर छिपते, लेकिन उन लोगों ने सैकड़ों हजारों जगली जीवो को मारा ।

लेकिन राजा का मन इतने पर भी भरा नहीं । उसे तृप्ति नहीं हुई । उसे लगता था कि उसने अभी तक शिकार ही नहीं खेला है । और वैसे वह तरह-तरह के दस हजार हिरन अपने हाथ से मार चुका था ।

आगे एक बहुत ही सुन्दर वन उसको दिखाई देने लगा । उसने अपनी सेना को पुकार कर कहा : 'वह देखो वह कितना सुन्दर कानन है ।"

एक सैनिक ने कहा "राजा ! यह वही वन् है जहाँ स्कन्द का जन्म हुआ था ।"

राजा क्षण भर सोचता रहा ।

स्कद कार्त्तिकेय का दूसरा नाम था । वह महावीर था । स्कंद अपने पराक्रम से ही इद्र बन गया था । राजा की इच्छा हुई कि वह भी जाकर उस वन मे भ्रमण करे ।

उसने अपनी सेना सहित उस वन के भीतर प्रवेश किया ।

उस समय भगवान शिव पार्वती के साथ वन मे विहार कर रहे थे । शिव के सेवक भी उनके साथ ही घूम फिर रहे थे । शिव ने पार्वती को प्रसन्न करने के लिये अपना रूप भी स्त्री का सा बना लिया था । शिव के स्त्री बनते ही उस जङ्गल मे जितनी चीजें थीं उनमें भी एक आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया । उस पर्वत के झरने के पास जितने मृग, पशु, पक्षी और वृक्ष भी जो तब तक पुरुष थे, एकदम शिव के साथ ही स्त्री बन गये, उस वन मे केवल स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ रह गई ।

उधर हाँका लग रहा था । हजारों पशुओं को मारता कर्दम का पुत्र इल भी वहीं पहुँच गया ।

वहाँ जाकर उसने देखा कि वहाँ कोई भी पुरुष नहीं था । पशु, पक्षी, वृक्ष सब ही तो स्त्री थे ।

अचानक उसकी नजर अपने ऊपर पडी । उसे विश्वास नहीं हुआ । उसने अपनी सेना के लोगो की ओर देखा ।

सब के सब स्त्री हो गये थे।

राजा के हृदय मे बडा दुख हुआ।

लेकिन वह करता भी क्या? तब वह इसका कारण खोजने लगा। आखिर उसे पता चला कि यह सब शिव के प्रभाव से हुआ है। वह बहुत ही डर गया और सकुचाता-सकुचाता जाकर शिव के चरणों पर गिरा।

उसने अत्यन्त करुण स्वर से कहा 'हे देवता। मै आहेर करने निकला था। यह अचानक ही मुझ पर कैसी विपत्ति आ गई?"

शिव हँस दिये।

कहा "क्यों क्या हुआ? तू तो कर्दम का पुत्र इल राजर्षि है।"

"हाँ महादेव!" राजर्षि ने कहा, "मै तो पुरुष से स्त्री हो गया। मेरी सेना भी स्त्री हो गई। अब हम किस प्रकार राज्य मे लौट सकेंगे। किस प्रकार अपने पिताओ को स्त्रियो के रूप मे देख कर हमारे बच्चे हम पर विश्वास कर सकेंगे? देश की रक्षा करने वाले यह वीर मेरे साथ यह सब अब युद्ध किस प्रकार करेंगे?"

शिव ने कहा "तू वर माँग! परन्तु एक बात है। अब तू स्त्री हो गया है, सो यह तो मै बदल नहीं सकता। तुझे ससार मे स्त्री बन कर ही रहना पडेगा।"

राजा ने अत्यन्त व्याकुल होकर पूछा 'तो फिर?"

शिव ने कहा 'इस बात को छोडकर तू कोई और वर क्यो नहीं माँगता?"

राजा ने कहा 'और वर मे क्या माँगू? मुझे तो मेरा पुरुषत्व लोटा दीजिये। मै शोक से मरा जाता हूँ। मुझे बडी लज्जा आ रही है। आखिर मै अब लौट कर किस प्रकार जाऊँगा? लोग मुझे देखकर क्या कहेंगे?"

शिव ने कहा 'यह तो नहीं हो सकता राजन! उस समय पार्वती की प्रसन्नता के लिये मैने स्त्री रूप धारण किया था। मेरे स्त्री रूप धारण करते

ही सब कुछ, जो भी यहाँ था वह स्त्री ही हो गया। तू भी आ गया और उसी का प्रभाव तुझ पर भी पड गया।"

राजा के शोक की सीमा नहीं रही। परन्तु वह और कोई वर माँगना नहीं चाहता था। तब उसने सोचा कि वह करे भी क्या? इस दुख का तो कोई अन्त ही नहीं था। परन्तु शिव के अतिरिक्त उसकी सहायता करने वाला भी कोई नहीं था। तब ही उसे अचानक एक विचार आया। क्यों न मैं शिव की स्त्री पार्वती से प्रार्थना करूँ? वे तो बड़ी दयालु कही जाती हैं।

उसने पार्वती से बड़ी भक्ति और नम्रता से प्रणाम करके कहा: "हे भवानी! हे वरदायिनी! तुम तो सब लोकों को वरदान देती हो, फिर मुझे ही क्यों वरदान नहीं देतीं? तुम्हारा दर्शन अमोघ है। अब मुझ पर कृपा दृष्टि करो।"

पार्वती राजा के मन की इच्छा को समझ गई। उसकी प्रार्थना से वे प्रसन्न भी हुई।

पार्वती ने कहा: "हे राजन्! तेरा दुख क्या है?"

राजा ने कहा: "देवी! दया का भिखारी हूँ। मुझे फिर से पुरुष बना दीजिये।"

पार्वती ने कहा: 'हे राजन! मै तुझे आधा वरदान दूँगी।"

"आधा?" राजा ने पूछा।

"हाँ", पार्वती ने कहा: "आधा महादेव दे।"

राजा सोचने लगा।

पार्वती ने कहा: "तू जैसा चाहे वर माँग।"

इस अद्भुत बात को सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने कहा: "हे त्रैलोक्य सुन्दरी! यही सही। मै चाहता हूँ कि एक महीने तक मै पुरुष और एक महीने तक स्त्री बना रहूँ। यदि तू प्रसन्न है तो मुझे यही वरदान दे।"

पार्वती ने कहा · "तथास्तु ! ऐसा ही होगा । और भी एक बात करती हूँ । जब तू स्त्री बन कर रहेगा तब तुझे अपना पुरुष धर्म याद नहीं रहेगा और जब तू पुरुष बनकर रहेगा तब तुझे स्त्री भाव याद नहीं रहेगा ।"

राजा इस वरदान को पाकर सतुष्ट हो गया क्योंकि इसके सिवा कोई चारा ही नही था । पूर्ण स्त्रीत्व से तो यही अच्छा था कि वह स्त्री बने और पुरुष भा और अपने स्त्रीत्व के समय मे उसे यह बिल्कुल भूल जाय कि वह पहले पुरुष था और ऐसे ही पुरुषत्व के समय मे स्त्रीत्व की याद उसे न आये ।

राजा लौट आया । अब वह स्त्री था और तुरन्त अपने पुरुषत्व को भूल गया । उसे याद भी नही रहा कि वह पहले पुरुष था । उसकी चाल भी स्त्रियों की सी हो गई । आवाज भी पतली हो गई । उसके साथ की सेना भी स्त्री हो गई थी, उसको भी यह याद नहीं रहा कि पहले वे पुरुष थे । सैनिक अब दासियों और सखियो की तरह घमने लगे ।

चैत का महीना था ही, जङ्गल मे वृक्ष, लता और फूलो की अनुपम छटा थी ।

अब इल इला हो गया ।

वह इला अब अपने वाहनो को छोडकर पर्वत की कन्दरा मे घूमने लगी । उस वन के पास एक बडा सुन्दर तालाब था, जिसमे भाँति-भाँति के पक्षी रहते थे और मधुर कलरव किया करते थे ।

इला ने उस तालाब मे स्नान किया और बाहर निकलकर घूमने लगी । वह बड़ी सुन्दरी थी ।

अचानक उसकी दृष्टि तालाब के एक ओर पडी । वहाँ कुछ उजाला सा हो रहा था । उसने गौर से देखा तो दिखाई पड़ा कि वहाँ एक तपस्वी था ।

इला अपनी सखियो के साथ जल मे उतर कर क्रीड़ा करने लगी । उन स्त्रियो ने उस तालाब के जल को खलभला डाला । फेनो मे हल्की-हल्की लहरियो मे कपन भर गया ।

वह तपस्वी जाग उठा क्योंकि स्त्रियाँ कभी हँसती थीं, कभी किलकारी मारती थीं। वे तो सब स्त्रियाँ थीं। उन्हें याद तो था ही नहीं, कि पहले वे पुरुष थीं।

तपस्वी ने उस इला का सौंदर्य देखा तो देखता ही रह गया। उसने सोचा कि यह स्त्री अवश्य कोई देवकन्या है।

यह सोचकर वह उठा और जल के बाहर निकल आया जहाँ वह बड़ी कठिन तपस्या कर रहा था और अपने आश्रम में पहुँचकर उसने इला के साथ की स्त्रियों को बुलाया। स्त्रियाँ जल से निकलकर तपस्वी के पास चली गई।

तपस्वी ने पूछा : "तुम कौन हो ?"

स्त्रियों ने तपस्वी देखकर पहले तो प्रणाम किया और कहा : "यह स्त्री हमारी स्वामिनी हैं। हम इनकी सेविकाएँ हैं।"

तपस्वी ने कहा : 'मैं चन्द्रमा का पुत्र बुध हूँ। मै यहाँ तपस्या कर रहा हूँ।"

उन स्त्रियों ने सुन रखा था कि बुध बड़ा यशस्वी, परोपकारी, सुन्दर और दयालु था। उसका शरीर बड़ा कान्तिवान था।

तपस्वी बुध ने पूछा : "इस स्त्री का पति कहाँ है ?"

स्त्रियों ने कहा : "इनके पति नहीं है।"

बुध को कौतूहल हुआ। उसने अपनी आवर्त्तनी विद्या से काम लिया और उन स्त्रियों का सारा पुराना हाल जान लिया। यह कथा समझकर उसने सोचकर उन स्त्रियों से कहा : "अच्छा तुम सब अब किंपुरुषी होकर इस पर्वत प्रांत में रहा करो। तुम अविलम्ब अपने लिये निवास स्थान बनाओ। तुम्हारे लिये मैं नित्य फल, फूल, मूल, कद आदि का प्रबन्ध कर दिया करूँगा और किंपुरुष नामक पति भी तुमको यहीं पर्वत पर प्राप्त हो जायेंगे।"

स्त्रियाँ उसके कहने के अनुसार निवासस्थान बनाने में लग गईं।

जब इला अकेली रह गई तो बुध ने उसके पास आकर : "हे वरारोहे ! मै चन्द्र का प्रिय पुत्र हूँ। तू मुझसे विवाह कर ले।"

एकात मे जब इला ने यह बात सुनी तो लज्जित होकर धीरे से कहा : "हे सौम्य ! मै तैयार हूँ।"

बुध ने कहा : 'मैने आज तक तेरी जैसी सुन्दरी कोई देवकन्या, नागकन्या, असुरकन्या और अप्सरा भी नही देखी। जब मैने तुझे देखा तो सोचा कि यदि तेरा विवाह नही हुआ हो तो तुझसे ही विवाह रचाऊँ।"

फिर वे दोनो प्रसन्न हो गये और आनन्द से साथ-साथ रहने लगे। इसी तरह एक महीना बीत गया।

सुबह हुई तो इला जागी। परन्तु अब वह इला नही थी। वह तो इल हो चुकी थी।

इल को कुछ भी याद नही था। वह बिछौने पर बैठा सोच रहा था कि यह कौन सामने था।

और वह और कोई नही स्वय बुध था जो जल मे खड़ा था। उसने अपनी बाँहें ऊपर उठा रखी थी और तपस्या कर रहा था।

राजा इल ने कहा 'हे भगवन् ! मे राजा इल हूँ। मै इस वन मे शिकार करने आया था। परन्तु मुझे पता नही कि इस पर्वत पर आने पर वह मेरी सेना न जाने कहाँ चली गई ?"

इल के रूप मे उसे बिल्कुल याद नही था कि महीने भर तक वह इला बन कर रहा था।

बुध ने कहा "हे राजन् ! पत्थरो की बड़ी भारी वर्षा हुई थी। उससे तुम्हारे सब नोकर दब गये और मरे पडे हैं। वायु ओर वृष्टि इतनी अधिक थी कि तुम उससे व्याकुल होकर यहाँ इस आश्रम मे सो गये थे। अब तुम डरो मत। किसी बात की भी चिता न करो। इस आश्रम मे फल-फूल खाकर निवास करो।"

राजा को अपने ऊपर पडी इस विपत्ति का हाल सुनकर बड़ा दुख हुआ। उसने कहा . "हे मुनिराज ! मे क्या करूँ ?"

"क्यों ?" बुध ने पूछा।

राजा ने कहा : "यह सत्य है कि अब मेरे पास एक भी सेवक नहीं रहा, सब ही मारे गये, परन्तु मैं राज्य तो नहीं छोड़ सकता। मैं क्षत्रिय हूँ। राज्य के बिना मै कुछ कर ही नहीं सकता। मै तो यही एक व्यापार जानता हूँ।"

राजा की चिंता सुनकर बुध ने कहा : "हे राजन ! जो होना था, वह हो ही गया, तुम इतना दुख मत करो। क्या तुम्हारे कोई पुत्र नहीं है ?"

"है तो सही।"

"कहाँ है ?"

'वहीं मेरी राजधानी मे।"

"क्या वह युवक है ?"

"हाँ ! वह धर्म में तत्पर और राज्य शासन करने के योग्य है।"

"तब तो वह गद्दी पर बैठ सकता है। क्या नाम है उसका ?"

"शशबिन्दु।'

और राजा ने उदासी से कहा : "अब राज्य करने का मुझे उत्साह नहीं होता। मै लौटकर किस प्रकार जाऊँ ? मेरे सेवकों की पत्नियाँ और उनके पुत्र-पुत्रियाँ आदि उनके परिवार के लोग जब मुझसे उनके बारे मे आकर पूछेंगे तो मै क्या उत्तर दूँगा ? भला मै किस तरह उनसे कह सकूँगा कि वे सब मारे गये। उनके हृदय की क्या दशा होगी ?"

यह कहकर वह लम्बी-लम्बी साँसे लेने लगा। और उसने कहा : "नहीं। मै लौटकर नहीं जाऊँगा। मैं अब उनके सामने नहीं जा सकूँगा।"

बुध ने कहा : "हे कर्दम के पुत्र ! तुम व्याकुल न हो। एक वर्ष बीत जाने पर मैं तुम्हारे भले की एक बात करूँगा फिर तुम्हारा दुख दूर हो जायगा।"

राजा मान गया। उसने कहा "विपत्ति मे मुझे तुमने ही सहारा दिया है तो मै तुम्हारे इस आश्रम मे रहूँगा। तुम्हे कोई आपत्ति तो न होगी ?"

"नहीं", बुध ने कहा।

राजा और बुध तरह तरह की बातें करते। बुध उसको तरह-तरह की कहानियाँ सुनाता। राजा बडा धर्मात्मा था। वह बडे नियम से रहता। बुध अपनी तपस्या भी करता जाता था।

जब महीना बीत गया तब राजा फिर नीद से जागा तो वह स्त्री हो चुका था और उसे यह बिल्कुल याद नही था कि वह कल रात तक ही पुरुष था। स्त्री हो जाने पर वे दोनो पति-पत्नी की भाँति रहते।

इसी तरह कई महीने बीत गये। राजा कभी पुरुष हो जाता, कभी स्त्री और इसी प्रकार उसे एक दफा वह जिस अवस्था मे रहता, उसका अगली बार उसे ध्यान नही रहता था।

नवाँ महीना जब व्यतीत होने को आ गया तो राजा उस समय स्त्री के रूप मे था। उसने एक सुन्दर बालक को जन्म दिया। बुद्ध ने उस बालक का नाम पुरुरवा रखा। इला ने वह पुत्र बुध को दे दिया।

जब एक वर्ष बीत गया तब राजा फिर पुरुष बन गया। बुद्ध ने कहा "राजा इल! तुम जानते हो तुम कर्दम के पुत्र हो?"

"हाँ", राजा ने कहा।

"तुम जानते हो कि एक महीने तुम स्त्री बनकर रहते हो और एक माह तक तुम पुरुष बनकर रहते हो?"

इल हँस दिया। उसे तो याद था ही नहीं।

उसने कहा "ऐसा कैसे हो सकता है? पुरुष स्त्री, और स्त्री पुरुष कैसे हो सकता है?"

"तो क्या तुम्हें कुछ भी स्मरण नही?"

"कैसा स्मरण?"

बुध ने पुरुरवा को दिखाकर पूछा "यह बालक कोन है? तुम जानते हो?"

'बड़ा सुन्दर बालक है", राजा इल ने उसे देखकर कहा: "यह किसका पत्र है?"

बुध ने कहा : "यह मेरा पुत्र है।"

"तो तुम्हारी स्त्री कहाँ है ? उसका क्या नाम है ?"

"इला !" बुध ने कहा।

"तो क्या वह कहीं गई है ?"

इस प्रकार का सवाल सुनकर बुध को निश्चय हो गया कि राजा को निश्चय ही कुछ याद नहीं है। तब उसने कहा : "राजा इल ! यह तुम्हारा ही पुत्र है।"

"मेरा पुत्र ?"

"हाँ, तुम ही मेरी स्त्री भी हो !"

राजा यह सुनकर हँसने लगा। उसने सोचा कि मुनि का दिमाग खराब हो गया है।

बुध विचार करने लगा। जब एक वर्ष बीत जाने पर भी राजा ऐसी बातें कर रहा था तो बुध को लगा कि राजा इस दुख से इस प्रकार कभी मुक्त नहीं होगा।

बुध ने उस समय सवर्त, भार्गव, च्यवन, अरिष्टनेमि, प्रमोदन और मोदकर दुर्वासा आदि को बुलाया। उसके निमित्रण को पाकर यह सब ऋषि आकर इकट्ठे हुए। इसी समय ऋषि कर्दम भी आ गये। उनके साथ अनेक ब्राह्मण भी थे। कुछ देर बाद पुलस्त्य, क्रतु, वषट्कार तथा ओंकार भी आ पहुँचे।

अब तो वहाँ पूरा जमघट हो गया।

बुध ने सारी बात बतलाई जिसको सुन कर सबने गभीरता से सिर हिलाया जैसे यह बहुत बुरा हुआ।

कर्दम को विशेष दुख था क्योंकि इल उन्हीं का पुत्र था। उन्होंने कहा : "यह बाल्हीक का राजा, मेरा ही पुत्र है, इसे तो आप सब जानते ही हैं।"

उन्होंने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

"परन्तु", क्रतु ने पूछा : "इस अवस्था मे तो इसका जीवन व्यर्थ है। या तो यह स्त्री हो जाय या पूर्णतः पुरुष ही।"

कर्दम ने कहा : "शिव के प्रसन्न हुए बिना इसका मगल नही हो सकता और शिव को केवल अश्वमेध यज्ञ प्यारा है और किसी प्रकार का यज्ञ उन्हें अच्छा नही लगता। इसलिये आओ! हम सब मिल कर राजा के लिये अश्वमेध यज्ञ करें।"

सब ने कहा "ठीक है, ठीक है। यही उचित है।"

बुध के आश्रम के पास ही यज्ञ प्रारभ हुआ। राजर्षि मरुत्त सवर्त्त ऋषि के शिष्य थे। उन्होने यज्ञ का भार अपने ऊपर लिया। फिर तो घोडा लाया गया और उसकी बलि मत्रोच्चारण करके दी गई।

शिव प्रसन्न हो गये। यज्ञ समाप्त हो जाने पर वे प्रगट हुए और सबने उन्हें प्रणाम किया।

शिव को इल ने देखा तो मन ही मन सोच मे पड गया कि जाने ये अब क्या करेंगे। सब ऋषि उनकी ओर कौतूहल से देख रहे थे।

शिव ने कहा "हे ब्राह्मणों मे श्रेष्ठ! इस यज्ञ मे और आप लोगो की इस भक्ति से मै बहुत सतुष्ट हुआ हूँ। अतः मै चाहता हूँ कि आप ही बतलायें कि मैं बाह्लीक राजा के लिये क्या करूँ?"

इतना सुनते ही सब ब्राह्मणों ने एक स्वर से कहा : "हे प्रभो! इसको आप पूरी तरह से पुरुष बना दीजिये।"

शिव प्रसन्न तो थे ही और फिर ब्राह्मणो की प्रार्थना थी। उन्होने कहा "तथास्तु!"

और वे अन्तर्धान हो गये।

यज्ञ समाप्त हो ही चुका था। सब लोग अपने-अपने घर को चल पडे।

अब राजा बडा प्रसन्न हुआ। उसने अपनी बाल्ही नामक पहली राजधानी मे तो शशबिंदु को राजा बना दिया और स्वय मध्यदेश मे चला गया जहाँ उसने प्रतिष्ठान नामक सुन्दर नगर बनाया और वहाँ का राजा हो गया।

अनेक वर्ष राज्य करके जब राजा इल मरा तब उसकी जगह उसका पुत्र प्रतिष्ठानपुर का राजा हुआ। इस पुत्र का नाम पुरुवंस था, जिसे पुरुर्वा

भी कहते हैं। यह राजा इल का उस समय का पुत्र था, जब कि राजा इल स्त्री बन कर बुध की पत्नी के रूप मे रहता था। इला का पुत्र होने के कारण इसको पुरुर्वस ऐल भी कहते हैं।

पुरुर्वस ऐल बडा प्रतापी राजा था। वह बड़ा सुन्दर भी था जिस जगह इसका जन्म हुआ था वह जगह बाद में पुरु पर्वत कहलाई और उसे उत्तर दिशा में बाद मे तीर्थों के समान पवित्र माना जाने लगा।

पुरुर्वा का प्रताप दिन पर दिन फैलता चला गया। इतना फैला कि वह मनुष्य हो कर भी अपने अमानुष अर्थात् जो मनुष्य नहीं थे, गधर्व, यक्ष आदि थे, ऐसे अनुचरों के साथ समुद्र के तेरह द्वीपों पर शासन करता था। उसको अपने बल और वैभव का इतना अधिक घमड हो गया कि वह मस्त हो गया।

एक बार उसने सोचा कि यह ब्राह्मण इतना दान ले जाते हैं और जमा करते हैं, इनके पास तो बहुत धन हो गया होगा। आखिर ये लोग उसका करेंगे भी क्या ?' यह विचार आते ही उसने निश्चय किया कि ब्राह्मणों का धन छीन लेना चाहिये। बस वह अपनी सेना सहित टूट पडा। उसने ब्राह्मणों पर अत्याचार किया। ब्राह्मणों ने बडी प्रार्थना की, रोये चिल्लाये पर उसने किसी बात पर भी ध्यान नहीं दिया और उनके धन-रत्न को उसने छीन लिया।

ब्राह्मण दुखी होकर ब्रह्मलोक मे शिकायत करने गये। सनतकुमार ने कहा· "घबराते हो क्यों हम चल कर राजा को समझाये देते हैं।"

ब्राह्मणों को धैर्य आया अत मे सनतकुमार को आगे करके वे पुरुर्वा के पास पहुँचे, किंतु पुरुर्वा मस्त हो रहा था। सनतकुमार ने पुरुर्वा से कहा: "राजन्! ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है उसका धन आपको नही लेना चाहिये।"

पुरुर्वा ठठा कर हँसा और निरादर से कहने लगा: "इन ब्राह्मणों को धन की कोई आवश्यकता नही है।"

सनतकुमार ने बहुत समझाया। कहा· "राजन्! आपके पिता बडे धार्मिक थे। आपके भाई शशबिंदु बाल्ही का राज्य सँभाले हुए हैं, वे भी बडे धर्मात्मा हैं। प्रजापति कर्दम स्वय ऋषि हैं। आपको उनकी परम्परा का ही ध्यान रखना चाहिये। ऐसा करने से आपको अपयश प्राप्त होगा।"

किन्तु पुरुर्वा ने कहा : "मुझे उपदेश सुनने की आवश्यकता नहीं है। मैं सब उचित-अनुचित स्वय समझता हूँ।"

उस समय ब्राह्मण सब एकत्र हो गये थे। उन्हे बहुत क्रोध हो आया। उन्होंने एकदम उस पर आक्रमण कर दिया और उसको अपने शाप के द्वारा नष्ट कर दिया। इस प्रकार कर्दम के पौत्र का अत हो गया, क्योंकि उसने घमड मे आकर ब्राह्मणो को सताया था।

उसके बाद उसके स्थान पर राज्य-सिंहासन पर ब्राह्मणो ने उसका पुत्र आयु नामक राजकुमार बिठाया। अब हम उसके विवाह और आयु नामक पुत्र होने की कथा सुनाते हैं, क्योंकि यह कथा बहुत प्राचीन और बहुत प्रसिद्ध भी है। इसका वर्णन वेद मे भी आता है और बाद मे तो जगह-जगह आता ही है।

पुरुरवा का विवाह

एक दिन इन्द्र की सभा जुडी हुई थी। गंधर्व, यक्ष, अप्सराएँ, ऋषि, मुनि आदि वहाँ उपस्थित थे। उसी समय तीनों लोकों में विचरण करने वाले महामुनि नारद अपनी वीणा बजाते हुए वहाँ जा पहुँचे। उन्हें देख कर इन्द्र ने कहा . "मुने ! पृथ्वी पर सब कुशल तो है ?"

उर्वशी नामक अनिंद्य सुन्दरी अप्सरा पास ही बैठी थी। उसके शरीर से कमलकेसर की सी सुगधि निकला करता थी।

नारद ने कहा : "देवराज ! पृथ्वी पर तो राजा पुरुरवा राज्य कर रहा है। रूप में वह अतुलनीय है, गुणों में उसकी उपमा नहीं मिलती। उदारता में वह रत्नाकर जैसा महान् है। शील स्वभाव मे वह फूलों और फलों से लदे सुगधित वृक्षों के समान है। धनसपत्ति मे वह हिमालय के समान अपूर्व है, और पराक्रम में तो अद्वितीय है।"

इन्द्र ने कहा : "तब तो वह राजा आदरणीय है।"

नारद चले गये। सभा में अप्सराएँ नाचने लगीं। देवराज इन्द्र पुरुरवा के बारे में हुई बातों को भूल गये। उर्वशी का हृदय अवश्य प्रभावित हो गया था। जब से उसने पुरुरवा के विषय मे सुना था तब से उसके मन में बार-बार यही इच्छा हो रही थी कि राजा से जाकर मिले और उसका वह सुन्दर रूप देखे। वह स्वय भी तो अत्यत रूपवती थी।

दूसरे दिन ही वह मौका निकाल कर पुरुरवा के पास गई। पुरुरवा उस समय अकेला ही मिला।

उर्वशी शापग्रस्ता थी। उसे मित्रावरुण ने शाप दे रखा था कि वह मृत्युलोक में जाकर निवास करे। परंतु अब उसे वह शाप भी अच्छा लगा। जब उसने पुरुरवा को देखा तो उसके नेत्र ठिठके रह गये। नारद ने ठीक ही कहा था।

किन्तु पुरुर्वा ने कहा . 'मुझे उपदेश सुनने की आवश्यकता नहीं है। मैं सब उचित-अनुचित स्वय समझता हूँ।"

उस समय ब्राह्मण सब एकत्र हो गये थे। उन्हे बहुत क्रोध हो आया। उन्होंने एकदम उस पर आक्रमण कर दिया और उसको अपने शाप के द्वारा नष्ट कर दिया। इस प्रकार कर्दम के पौत्र का अत हो गया, क्योंकि उसने घमड मे आकर ब्राह्मणो को सताया था।

उसके बाद उसके स्थान पर राज्य-सिहासन पर ब्राह्मणों ने उसका पुत्र आयु नामक राजकुमार बिठाया। अब हम उसके विवाह और आयु नामक पुत्र होने की कथा सुनाते हैं, क्योंकि यह कथा बहुत प्राचीन और बहुत प्रसिद्ध भी है। इसका वर्णन वेद मे भी आता है और बाद मे तो जगह-जगह आता ही है।

राजा ने जो उर्वशी को देखा तो प्रसन्नता से उसकी आँखें खिल उठीं। उसके शरीर में रोमाञ्च हो आया। उसने बड़ी मीठी वाणी में उर्वशी से कहा : "सुन्दरी! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। आओ बैठो। मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ?"

उर्वशी सकुचाती हुई बैठ गई। वह राजा की नम्रता से और भी अधिक प्रभावित हुई।

"तुम कौन हो?" राजा ने पूछा।

"राजन्!" उर्वशी ने कहा—"मैं देवराज इन्द्र की सभा में नृत्य करने करने वाली उर्वशी नामक अप्सरा हूँ।"

"यह रूप देख कर", राजा ने कहा—"मुझे भी यही लगा था कि तुम अवश्य अप्सरा ही होगी। क्या तुम मुझसे विवाह कर सकोगी?"

यह सुन कर उर्वशी ने लम्बी साँस ली।

राजा ने कहा : "क्यों क्या तुम्हें मेरी बात से दुख हुआ?"

"नहीं," उर्वशी ने कहा "मेरा दुर्भाग्य है कि मैं पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं हूँ। मुझ पर कुछ बंधन लगे हैं।"

"वह क्या है?"

"एक तो यही है कि मैं स्वर्ग की रहने वाली हूँ, अमर्त्य हूँ अर्थात् मैं देवताओं के समान हूँ। आकाश और पृथ्वी में मेरी समान गति है। और तुम पृथ्वी के वासी हो तुम्हारी गति हर जगह नहीं है। तुम मनुष्य हो, अर्थात् जन्म मरण के आधीन हो।"

"तो उसमें क्या हुआ?" राजा ने कहा—"तुम जो कहोगी, वह मैं भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा।"

उर्वशी उठ कर गई और बाहर से भेड़ों के दो बच्चे उठा लाई और उन्हें प्यार करने लगी।

राजा ने कहा "यह मेमने तुम्हें बहुत प्यारे हैं?"

"बहुत।" उर्वशी ने कहा— 'बहुत ही अधिक ! मेरी तीन शर्तें यदि स्वीकार हों तो मै यहीं रह कर आपकी पत्नी बन जाऊँगी।"

राजा ने कहा : "बताओ तो वे तीनों क्या-क्या हैं ? मैं अवश्य उन्हें पूरा करने की प्रतिज्ञा करूँगा।"

'राजन् !" उर्वशी ने कहा—"एक शर्त तो यह है कि मै केवल घी खाऊँगी।"

"स्वीकार है", राजा ने कहा, "और कहो।"

"दूसरी यह है कि आप इन प्राणो से प्रिय मेमनो की सदैव रक्षा करेंगे।"

'यह क्या बड़ी बात है," राजा ने कहा—"मै इनकी निश्चय ही रक्षा करूँगा। अब तीसरी भी कहो।"

"वह यह है कि मै मर्यादा चाहती हूँ। मै कभी आपको बिना वस्त्रों के न देखूँ।"

"अवश्य ! मुझे स्वीकार है," राजा ने कहा।

उर्वशी यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुई और तब वे दोनो आनद से पति-पत्नी बन कर रहने लगे लगे। कभी वे देवताओ की विहारस्थली चैत्ररथ में जाते, कभी नन्दन भवन मे आनन्द करते घूमते। इस प्रकार काफी समय निकल गया।

जब कई दिन से इन्द्र को स्वर्ग मे उर्वशी दिखाई नहीं दी तो इन्द्र ने कहा : "उर्वशी कहाँ गई ?"

गन्धर्वों ने कहा . "देवराज ! वह तो पुरुरवा राजा की स्त्री बन गई है।"

इन्द्र ने कहा : "तो क्या अब वह नही आयेगी ? स्वर्ग मे तो कोई आनन्द ही नही रहा। मुझे तो उर्वशी चाहिये। जैसे भी हो उर्वशी को ले आओ।"

गन्धर्वों ने कहा · "जो आज्ञा।"

आखिर उन्होने एक योजना बनाई।

एक आधी रात के घोर अंधकार मे गन्धर्व चुपचाप पुरुरवा के महल मे घुस गये। राजा अपने पलग पर सोया हुआ था। कुछ दूर एक पलग पर

उर्वशी सो रही थी। खिड़कियाँ खुली हुई थीं। गन्धर्वों ने चुपचाप उर्वशी के प्यारे मेमनों को उसके पलंग के पाये में खोल डाला और चुरा कर ले चले। वे जानते थे कि वह बहुत ही अधिक प्यारे थे। उसने राजा के पास यह शर्त रखी थी कि राजा हर अवस्था में उनकी रक्षा करेगा।

ज्योंही गंधर्व महल के बाहर हुए कि वे मेमने 'बें बें' करके पुकार उठे। उर्वशी हड़बड़ा कर जगी और जब उसने मेमने न देखे और राजा को सोया हुआ ही देखा तो उसे बहुत क्रोध हो आया। वह चिल्लाई "अरे मैं तो मारी गई। यह कायर अपने को बड़ा वीर मानता है। यह तो किसी काम का नहीं। यह तो मेरी भेड़ों को भी न बचा सका। कैसा डरपोक है कि स्त्रियों की तरह बिस्तर में मुँह छिपाये पड़ा है।"

राजा के हृदय में वे शब्द ऐसे गड़े जैसे हाथी के अंकुश गड़ गया हो। उसे बड़ा क्रोध हो आया। उसने तुरंत तलवार निकाल ली और जैसा उघाड़ा सा लेटा था, वैसे ही उठ खड़ा हुआ और गंधर्वों की ओर दौड़ पड़ा।

गंधर्वों ने जब उस पराक्रमी को अपनी ओर आते देखा तो घबराने लगे। उन्होंने एक चालाकी की। उन्होंने भेड़ों को तो वहीं छोड़ दिया और आकाश में उड़ कर बिजली की तरह चमकने लगे। अँधेरी रात में वह प्रकाश दूर दूर तक फैल गया। उर्वशी ने उन्हें नंगा देख लिया। वह झट मुँह फेर कर खड़ी हो गई। शर्त टूट गई थी।

राजा बड़े गर्व से मेमने उठाकर लाया और उर्वशी के सामने रख कर बोला "लो मैं ले आया। तुमने तो मुझे इतने कठिन वचन सुनाये।"

उर्वशी ने मुँह फेर कर ही कहा "ठीक है परन्तु अब मैं यहाँ नहीं रह सकती।"

राजा पर तो जैसे वज्र गिर पड़ा।

उसने कहा "क्यों ?"

"तुमने मर्यादा तोड़ दी है।"

राजा को अपने नगेपन का ध्यान आया। वह दौडकर कपडे लपेटकर आया, परन्तु तब तक उर्वशी गायब हो चुकी थी। राजा का हृदय टुकडे-टुकडे हो गया। वह कहीं अधेरे मे उर्वशी-उर्वशी चिल्लाता हुआ पागल-सा घूमने लगा। उसने पुकारा . उर्वशी ! अधकार छाया हुआ है, यह अधकार मुझे डरा रहा है। न जाओ ! न जाओ !"

अधेरे मे से उत्तर आया ' "मै तो अप्सरा हूँ अब गई। अब मुझे कोई नहीं लौटा सकता।"

राजा चिल्लाया : 'उर्वशी ! तेरे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। हाय मै किस प्रकार रह सकूँगा ?"

अधकार मे से कोई उत्तर नहीं आया।

उर्वशी सचमुच चली गई थी। तब तो राजा अपना सिर धुन-धुन कर रोने लगा।

सवेरा हुआ तो राजा को ससार सूना-सूना सा दिखाई दिया। वह देर तक विचार करता रहा और उसे खोजने के लिये चल पड़ा—वह शोक से विह्वल और उन्मत्त था। अनेक दिन घूमने के बाद एक दिन वह कुरुक्षेत्र जा पहुँचा। वहाँ उसने कमलो से भरा हुआ एक तालाब देखा। उस तालाब मे चार-पाँच हस तैर रहे थे। राजा ने पहचान लिया कि उनमे से एक हस उर्वशी थी। यह तालाब सरस्वती नदी के पास था।

राजा ने अत्यंत करुण स्वर से कहा : "हे प्रिये ! तनिक ठहर जाओ और मेरी एक बात मान लो। तुम बड़ी कठोर हो। आज तो मुझे दुखी मत छोड जाओ। क्षण भर ठहरो। आओ हम दोनो कुछ बाते तो कर ले—हे देवी ! यह मेरा शरीर अब तुम्हें प्रिय नही रहा। तभी तुमने मुझे छोड़ दिया है। मैं भी इस शरीर को नष्ट कर देता हूँ। तुम्हारे देखते ही देखते इसे भेड़िये और गिद्ध खा जायँगे।"

राजा का यह करुण स्वर सुन कर उर्वशी के मन मे दया उपजी। उसने अपने हस रूप मे ही उत्तर दिया : "हे राजन् ! तुम पुरुष हो ! इस प्रकार मत

मरो ! देखो ! यह भेड़िये कहीं तुम्हें सचमुच न खा जायँ। धैर्य धारण करो। तुमसे मै सच्ची बात कहती हूँ। असली बात तो यह है कि स्त्रियो के साथ किसी की भी मित्रता नही हुआ करती। स्त्रियो का हृदय एक समान होता है।"

राजा यह सुन कर व्याकुल हो गया।

उर्वशी ने फिर कहा "स्त्रियाँ निर्दय होती हैं। क्रूरता तो उनमे स्वाभाविक ही रहती है। तनिक सी बात मे वे चिढ जाती है और अपने सुख के लिये वे बड़े बड़े साहस के काम कर बैठती हैं। थोड़े से स्वार्थ के लिये विश्वास दिला कर वे अपने पति और भाई को भी मार डालती हैं। इनके हृदय मे सौहार्द्र तो होता ही नहीं। भोले-भाले लोगो को झूठमूठ का विश्वास दिला कर यह चहका लेती हैं और फिर दूसरे पुरुषो की ओर इनका हृदय आकर्षित हो जाता है। तुम तो राजा हो। राजाओ मे भी श्रेष्ठ हो। तुमको धैर्य धारण करना चाहिये। घबराओ मत। हर एक साल बीत जाने पर म तुमसे एक रात मिलने आया करूँगी। तुम मुझसे यहीं आकर मिला करो।"

राजा को इस बात से बड़ा धीरज बँधा। उसने कहा "किंतु तुम निश्चय ही, आओगी न ?"

उर्वशी ने कहा "शीघ्र ही म पुत्र को जन्म दूँगी। वह तुम्हारा पुत्र होगा। इसी प्रकार छ वर्ष मे मेरे तुमसे छ पुत्र और होगे।"

राजा अपनी राजधानी मे लौट आया और राज-काज करने लगा। एक वर्ष बाद वह वहीं गया तो उर्वशी ने उसे एक बालक दिया। वह बालक राजा का ही पुत्र था। राजा ने उसका नाम आयु रखा। इसी प्रकार छ वर्ष बीत गये। हर वर्ष के बाद उर्वशी से राजा यहीं मिलने जाता। रात भर वे बातें करते। सुबह उर्वशी चली जाती। राजा लौट आता और उर्वशी प्रत्येक वर्ष उसे उसका एक बालक दे जाती। यो राजा के छ महावीर पुत्र हुए। सबमे बड़ा आयु था। बाकी पुत्रो के नाम थे—धीमान्, अमावसु, दृढायु, वनायु और शतायु। यह सब बड़े पराक्रमी थे। आयु का ही पुत्र नहुष था जो बड़ा प्रसिद्ध हुआ।

छठे वर्ष के बीतने पर जब उर्वशी राजा से बिदा होने लगी तो राजा का मन बहुत दीन हो गया। विरह ने उसे व्याकुल कर दिया। वह कातर हो उठा।

उसने कहा : "उर्वशी ! तू मुझे छोड़ कर न जा।"

राजा ने यह बात इतनी करुणा से कही कि उर्वशी का हृदय पसीज गया। उसने कहा : "राजन् ! मुझे प्राप्त करने का एक ही तरीका है।"

राजा ने कहा : "वह क्या ? मुझे बताओ !"

उर्वशी ने कहा : "मैं गंधर्वों के अधीन हूँ। यदि वे चाहें तो मुझे तुमको दे सकते हैं। तुम गधर्वों को प्रसन्न करो।"

राजा से यह कहकर वह चली गई। अब राजा गधर्वों की स्तुति करने लगा। उसकी स्तुति इतनी हृदय को हिला देने वाली थी कि गधर्वों को दया आ गई। उन्होंने उसे एक अग्नि स्थाली दे दी।

वह अग्निस्थाली अग्नि रखने का पात्र था। राजा तो मोह मे डूबा हुआ था। उसे लगा कि वही उर्वशी थी। वह उसे हृदय से लगाकर वन-वन में घूमने लगा।

जब राजा को होश हुआ तब वह उस स्थाली को वहीं वन मे छोड़-कर महल मे लौट आया और रात को नित्य उर्वशी का ध्यान करने लगा।

इसी तरह अनेक वर्ष बीत गये।

त्रेतायुग प्रारम्भ हो गया। अचानक पुरुरवा के मन में तीनों वेद प्रगट हो गये। तब राजा उसी वन मे गया जहाँ वह स्थाली को छोड आया था। परन्तु स्थाली वहाँ नहीं थी। राजा ने ढूँढने पर देखा कि जहाँ स्थाली रखी थी वहाँ एक शमी वृक्ष उग आया था। छोंकरे का वह पेड़ अकेला न था। उसके भीतर से एक पीपल का भी पेड़ उग आया था। राजा ने उससे दो अरणियाँ बना लीं अर्थात् दो काठ के टुकडे निकाल लिये और उन्हें बना लिया। फिर राजा ने उर्वशी लोक की कामना से नीचे की अरणि

को उर्वशी कहा और ऊपर की अरणि को पुरुरवा कहा। बीच में जो काठ था उसे आयु कहा और अग्नि जलाने वाले मंत्र बोलकर वे उन अरणियों का मथन करने लगे अर्थात् उन्हें रगड़कर आग निकालने लगे। उस मन्थन से 'जातवेदा' नामक अग्नि प्रकट हुआ।

यह तरकीब असल में पुरुरवा को गंधर्वों ने बताई थी। तब तक अग्नि एक ही था। किन्तु अब राजा ने उस एक अग्नि के तीन हिस्से कर दिये। अग्नि देवता का त्रयीविद्या से राजा ने विभाजन किया और उनको आह्वनीय अग्नि, गार्हपत्य अग्नि तथा दक्षिणाग्नि का नाम दिया। फिर इन तीनों अग्नियों को राजा ने अपना पुत्र स्वीकार किया। इससे वह गंधर्व हो गया और उर्वशी उसे मिल गई। वह गंधर्वों में मिल गया। इस प्रकार पुरुरवा का अंत हुआ। वह अंत में मनुष्य नहीं रहा।

गंधर्व लोग राजा से बड़े प्रसन्न हुए और फिर उसकी कीर्ति संसार में अक्षय होकर फैल गई। उसके पुत्र बड़े प्रतापी हुये और उन्होंने इस पृथ्वी पर शासन किया। आर्य साहित्य में पुरुरवा का बड़ा सम्मान रहा और शताब्दियों तक उसके वे करुण गीत गाये जाते रहे, जो उसने उर्वशी के विरह में गाये थे, क्योंकि वे वेद में आते हैं। और भी कई सदियों तक कर्मकाण्डी ब्राह्मण अरणियों का नाम पुरुरवा, उर्वशी और आयु रखते रहे और यज्ञ में उनका प्रयोग करते रहे। इस कथा में और पहली कथा में यह भेद है कि यहाँ पुरुरवा गंधर्व बन जाता है और अन्त तक धर्मात्मा बना रहता है, अग्नि का विभाजन करता है, और पहली कथा में वह ब्राह्मणों का धन छीन कर उनके शाप से मारा जाता है। निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, परन्तु दूसरी कथा ही अधिक पुरानी मालूम होती है।

इस समय आर्य लोग अग्नि की पूजा किया करते थे। अग्नि को कभी भी वे बुझने नहीं देते थे, क्योंकि अग्नि को पवित्र माना जाता था।

इस कथा में शमी वृक्ष का नाम आया है। शमी वृक्ष छोंकरे के पेड़ कहते हैं, जिसके पत्ते बड़े पतले-पतले होते हैं। इसमें छोटे-छोटे से काँटे

भी होते हैं। वेद में भी कहा गया गया है कि अंगिरा नामक ऋषि ने सबने पहले देवताओं के लिये अग्नि को खोजा था। उस समय असली अग्नि छिप गया था। तब दूसरा अग्नि इस छोंकरे के पेड मे ही सुलगता हुआ मिला था। तब से ही भारत मे शमीवृक्ष का वहुत सम्मान किया गया है। पीपल भी इसी प्रकार वहुत पुराने जमाने से ही पवित्र वृक्ष माना जाता रहा है।

पुरुरवा और उर्वशी की कथा बहुत पुरानी है क्योंकि ऋग्वेद में भी इसको प्राचीन काल की कहानी के रूप मे ही कहा गया है। जब यह घटना हुई थी तब नहीं, इसे तो उस घटना के सैकडों साल वाद लिखा गया था। तब ही इसमे कुछ अलौकिक वर्णन आ गये हैं।

भङ्गास्वन का निर्णय

प्राचीन काल मे भङ्गास्वन नामक एक धर्मात्मा राजा था। उसके कोई सतान नहीं थी। इससे वह बडा दुखी था। अत मे पुत्र पाने की इच्छा से उसने ब्राह्मणो को बुलाया और अपनी समस्या उनके सामने रखी। ब्राह्मणो ने कहा ' "राजन् ! आप पुत्र के लिए यज्ञ करे।"

'तो कौनसा यज्ञ करना चाहिये ?" राजा ने पूछा।

ब्राह्मणो ने कहा : "अग्निष्टुत।"

"अग्निष्टुत !" राजा ने कहा : "उससे तो इद्र क्रुद्ध हो जायँगे क्योंकि, उसमें इन्द्र को हवि का भाग नही पहुँचेगा।"

राजा मन मे डर गया था।

ब्राह्मणों ने कहा : "आप इन्द्र के भय की चिन्ता करते हैं कि पुत्र चाहते हैं ?"

"मै पुत्र चाहता हूँ।"

"तो फिर सकोच कैसा ?"

राजा का मन थोड़ी देर तक चलायमान रहा। दोनो पक्षों को वे मन मे तौल रहे थे। अत में पुत्र की इच्छा ने जोर पकडा। उसने सोचा कि आदमी आता है मर जाता है। किसी न किसी दिन वह अवश्य काल के मुँह मे समा जाता है। फिर उसका नाम तो पुत्र के द्वारा ही चलता है। सचमुच जिसके पुत्र नहीं है उसके इस ससार मे कुछ भी नहीं है।

पुत्र होगा, अपनी तुतलाती भाषा मे बातें करेगा, और उसको देख-देख कर सुख होगा, यही उस समय राजा के मन मे खेल रहा था।

राजा ने सिर उठाकर कहा "मुनियो ! मै यज्ञ करूँगा।"

ब्राह्मणो ने कहा "राजन् ! यही मार्ग है और कोई रास्ता भी नहीं है।"

यज्ञ की तैयारियाँ बड़े जोरशोर से हुईं और आग्निष्टुत यज्ञ होने लगा। ब्राह्मणों के वेदपाठ से सारा स्थान गूँजने लगा। चारों ओर कोलाहल से आनन्द बरसने लगा। धुँआँ उठ-उठ कर आकाश की ओर आने लगा।

राजा का मन बिल्कुल ही इन्द्र को भूल गया।

इस यज्ञ के समाप्त हो जाने पर राजा को फल मिला और उसके सौ पुत्र पैदा हुए। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। किन्तु इन्द्र को बड़ा क्रोध आया। वह तो उसे यज्ञ करते समय ही कुछ दण्ड देना चाहता था। वह देवताओं का राजा था। उसका अपमान हुआ था। वह भला उसे कैसे सह सकता था। वह राजा के दोष ढूँढने लगा। परन्तु उसे दोष ही नहीं मिला। इन्द्र इस बात से मन ही मन और भी खिसिया गया। उसे बहुत दिन तक मौका ही नहीं मिला। फिर भी उसने साहस नहीं हारा। वह जानता था कि कभी न कभी आखिर ऐसा मौका उसके हाथ अवश्य लगेगा।

एक दिन राजा भङ्गास्वन शिकार खेलने को राजधानी से बाहर निकला। इन्द्र ने अपना अवसर आया जान कर खुशी मनाई। उसने उस समय राजा को अपने माया जाल मे फँसा लिया। राजा पर जादू सा हो गया। राजा को दिशाओं का ज्ञान नहीं रहा। अब वह नहीं समझ सका कि वह घोड़े पर बैठा-बैठा किधर जा रहा था। वह निरन्तर चलता रहा। इतना चला कि उसे समय का भी ध्यान नहीं रहा। भूख और प्यास से व्याकुल होकर वह घोड़े को चलाता भटकने लगा। कुछ देर बाद उसे जल से भरा हुआ एक सुन्दर तालाब दिखाई पड़ा। वह घोड़े से उतर पड़ा और घोड़े को पानी पिला कर उसने उसे वृक्ष से बाँध दिया और फिर स्वयं स्नान करने के लिये तालाब में उतरा।

राजा आनन्द से नहाया। उसकी थकावट ठंडे पानी से मिट सी गई। वह जल से बाहर निकला, किन्तु उसके अचरज का कोई ठिकाना नहीं रहा। स्नान के बाद वह पुरुष नहीं रहा था, स्त्री हो गया था।

राजा को बड़ी लज्जा हुई। वह सोचने लगा—'अब मैं घोड़े पर किस तरह सवार हो सकूँगा? अपनी राजधानी किस प्रकार जाऊँगा? यह मुझे हो

[illegible]

[illegible] तीन गुण [illegible] — [illegible], [illegible] और [illegible]। पुरुष [illegible] प्रधान गुण [illegible] और [illegible]। [illegible] गया हूँ तो भला [illegible] प्रकार से पुरुषों की भाँति [illegible] पर सवार हो [illegible]? नहीं यह कठिन है। परन्तु फिर मैं यहाँ भी क्या करूँगा? यह तो पागल है।

राजा ने अन्त में घर लौट चलना ही निश्चित किया। वह किसी तरह मन को समझा-बुझा कर घोड़े पर सवार हुआ और शर्माता हुआ घर लौट चला।

जब वह नगर में पहुँचा तो लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके पीछे एक भीड़ कौतूहल से चलने लगी। पुत्रों, स्त्री, नौकरों ने देखा तो दाँतों तले उँगली दबा ली।

राजा समझ गया। तब उसने कहा : "मुझे देख कर तुम लोग इतना आश्चर्य करते हो, सो ठीक ही है। मैं सैनिकों के साथ शिकार खेलने गया था। दैववश एक घने वन में जा पहुँचा। वहाँ घोड़े पर सवार अकेले ही प्यास से व्याकुल घूमते-घूमते मुझे एक सुन्दर तालाब दिखाई पड़ा। घोड़े से उतर कर ज्योंही मैंने जल में प्रवेश किया। मुझे स्त्रीत्व प्राप्त हो गया। अब मैं क्या करूँ?"

सब को यह सुन कर दुख हुआ। परतु कोई कर भी क्या सकता था?

उसके मत्री ने पूछा "इस बात का प्रमाण क्या है कि आप ही राजा भङ्गास्वन हैं।

राजा ने अपना नाम और गोत्र और पुरानी बातें बतलाईं।

रानी ने कहा : "सच ही यह राजा हैं।"

राजा ने कहा : "मै स्त्री होने के कारण अब इस राज्य के लिये बेकार हो गया हूँ। मैं अपने पुत्रो को यह राज्य देता हूँ। और वे ही राज्य का कार्य सँभाले। मेरे सौ पुत्र हैं। उन सौ पुत्रों को मिल कर राज्य चलाना चाहिये।"

"और आप क्या करेंगे?" पुत्रो ने पूछा।

"मैं यहाँ क्या करूँगा? मैं वन को चला जाऊँगा।"

इस बात को सुन कर सबको खेद हुआ।

रानी कुछ नहीं बोली। राजा सब को छोड़कर अकेला ही वन को चला गया।

अब उसे दूर से एक तपस्वी का आश्रम दिखाई पडा। वह वहीं चला गया। परन्तु अब वह स्त्री की ही भाँति बातें करता था।

उसने तपस्वी से कहा. "हे महाभाग! क्या आप मुझे आश्रय दे सकेंगे?"

तपस्वी ने पूछा. "हे सुन्दरी! तुम कौन हो?"

राजा ने कहा : "अब मैं पतिहीन अकेली स्त्री हूँ। मुझे कोई सहारा नहीं है। पहले मै पुरुष थी और तब मेरा नाम भङ्गास्वन था। मै राजा थी।"

तपस्वी ने कहा : "तुम यहीं रहो। क्या तुम मेरी पत्नी बन कर रह सकोगी?"

राजा ने कहा : "अवश्य रहूँगी। आप तेजस्वी और विद्वान हैं।"

इस प्रकार वे दोनों वहाँ सुखपूर्वक कदमूल फल खाकर रहने लगे। कुछ दिन बाद स्त्री रूप मे भङ्गास्वन के सौ पुत्र हुए। जब वे बड़े हो गये तो भङ्गास्वन ने उन पुत्रो को इकट्ठा किया और नगर ले गये जहाँ उनके अग्निष्टुत यज्ञ मे उत्पन्न सौ पुत्र थे उन्होंने उन पहले पुत्रों से कहा : "पुत्रो! तुम लोग मेरी पुरुषावस्था मे पैदा हुए थे और यह सब मेरी अबकी अवस्था मे उत्पन्न हुए हैं। मै चाहता हूँ कि तुम इन्हें भी रख लो और सौ के बजाय २०० मिलकर यह राज्य चलाओ।"

पुराने पुत्रों ने प्रसन्नता से कहा : "हे पिता! इससे बढ़कर आनन्द का विषय और क्या हो सकता है?"

यह सोचकर इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण किया। अब वह इन्द्र न लग कर ब्राह्मण सा दिखाई देने लगा। वह भङ्गास्वन के पुरुष रूप में हुए पुत्रों के पास गया और उनसे कहा : "कहो सब कुशल तो है?"

वे बोले : "हाँ, ब्राह्मण! हम आनन्द में हैं।"

"तुम कितने भाई हो?"

"हम सौ हैं।"

"अच्छा! राजा तो एक ही होता है?"

"परन्तु हम सब एक ही पिता की सतान हैं।"

'यह बात है,' ब्राह्मण ने कहा। और फिर उसने कहा : 'सौ हो तो राज्य किस तरह सँभालते हो?

"राज्य तो हम दो सौ सँभालते हैं।"

"दो सौ? सौ और कौन हैं?"

"वे भी हमारे भाई हैं।"

"कैसे हैं वे? उनका पिता कौन है?"

लड़कों ने कहा : "पहले हमारे पिता पुरुष थे तब उनके हम सौ पुत्र पैदा हुए। फिर हमारे पिता स्त्री हो गये। उन्होंने एक तपस्वी से विवाह कर लिया। उनके १०० पुत्र हुए। वे भी हमारे ही भाई हैं, अतः वे हमारे ही साथ हैं।"

इन्द्र ने कहा "तूने अग्निष्टुत यज्ञ करके मेरा विरोध नहीं किया था ?"

राजा को याद आया। उसने कहा "मुझे क्षमा करें देव ! आप तो देवताओं के भी राजा हैं।"

"तूने मुझे दुख दिया था।"

"अब भूल जायें देव ! मुझ पर कृपा करें। मैंने जो कुछ किया था पुत्रों के लिये किया था। यदि मुझसे उसमें अपराध बन पड़ा हो तो आप दया करें। आप ही संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।"

भङ्गास्वन की यह प्रार्थना सुनकर इन्द्र का क्रोध दूर हुआ और उसके हृदय में करुणा जाग उठी। उसने कहा : "मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें वरदान देना चाहता हूँ। किन्तु मेरा वरदान इतना ही होगा तुम्हारे १०० पुत्र जी उठें। बताओ ! तुम कौन से पुत्रों को जीवित कराना चाहते हो। वे पुत्र जिनके तुम पिता हो या वे पुत्र जिनकी तुम माता हो ?"

राजा चिंता में पड़ गया। उसको निर्णय देना था। उसकी ममता जाग उठी थी।

था। स्त्री कभी किसी की संतान का नाश नहीं करती। मुझे स्त्री ही बना रहने दे क्योंकि उसमें करुणा, दया और स्नेह पुरुष से कहीं अधिक होते हैं।"

इन्द्र ने कहा: "अच्छी तरह सोच लो।"

"हाँ देवराज मेरी यही प्रार्थना है।" इन्द्र को प्रणाम करके भङ्गास्वन ने कहा। "मुझे यहा रूप प्रिय है।"

तब इन्द्र की समझ में आया।

उसने कहा: "अच्छा सुन्दरी! यही हो।"

और वह स्वर्ग चला गया। भङ्गास्वन के २०० लड़के फिर राज्य करने लगे, किन्तु भगास्वन उसी तपस्वी की स्त्री बनकर रहने लगा। यही उसका निर्णय था।

मित्रभेद

[मगलाचरण]

विधि, हरि, हर, कुमार, अश्विद्वय,
इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, कुवेर,
पवन, अदितिसुत, नाग, धरणिधर,
वसु, गण, सिद्ध, यक्ष, मुनि वेद,
चण्डिकादि मातायें, श्री, दिति,
वाणी, पृथ्वी, चन्द्रादित्य,
नदियाँ, तीर्थ, सिंधु, गिरि, युग, ग्रह,
करें हमारी रक्षा नित्य !

[वंदना]

नीति शास्त्र के रचने वाले
विद्वानों मे श्रे०ठ सुजान
मनु, वाचस्पति, शुक्र, पराश०,
व्यास और चाणक्य महान—
आदि पूर्वजों को श्रद्धा से
मेरे सौ-सौ वार प्रणाम,
ज्ञान ज्योति फैलाने वालों
का ही तो पुजता है नाम ॥

[लेखक-परिचय]

जग के सकल अर्थ शास्त्रों का
पहले असली सार लिया

नहीं हथेली पर जमती है
कभी किसी के भी सरसो।"

सुमति नाम के मन्त्री ने कहा, "यह तो तुमने ठीक कहा, लेकिन जो सवाल सामने है यह उसका जवाब कैसे हुआ ? मानव का जीवन तो छोटा सा है और शास्त्रो का अन्त नही है। ऐसे समय मे इन राजकुमारो के लिये तो कोई छोटा सा शास्त्र ढूँढना चाहिये। क्योकि—

थोड़ी आयु, विघ्न बहुतेरे,
शब्द शास्त्र फिर भी अपार है,
हस दूध पी ज्यो जल छोडे
तुम भी लो वह जो कि सार है।

यहाँ एक विष्णु शर्मा नामक ब्राह्मण रहता है। वह विद्यार्थियो का प्रिय है, यशस्वी है। सारे शास्त्रो का जानकार है। हे राजन् ! आप अपने पुत्रो को उसको सौप दे। वह अवश्य ही इनको शीघ्र ही बुद्धिमान बना देगा।"

यह सुन कर राजा ने विष्णु शर्मा को बडे आदर से बुलवाया और कहा "भगवन् ! जैसे भी हो मेरे पुत्रो को आप अर्थशास्त्र मे असाधारण विद्वान बना दे। इसके बदले मे मै आपको सैकडो अधिकार दूँगा।"

विष्णु शर्मा ने कहा "देव ! मै आप से सच बात कहूँगा। मै अधिकारो के लोभ से विद्या नहीं बेचता। इन राजकुमारो को यदि मै छः महीनो के भीतर ही नीतिशास्त्र का जानकार न बना दूँ तो मै अपने नाम का त्याग कर दूँगा। यह मेरा सिंहनाद है। धन का लोभ मुझे नहीं है। मैने तो ससार के सब भोग भोग लिये। मै अस्सी वर्ष का वृद्ध हूँ। धन से मुझे अब क्या लाभ है ? लेकिन आपकी इच्छा पूरा करने के लिये मै अब सरस्वती विनोद करूँगा। आज का दिन लिखवा लीजिये, यदि छः महीनो मे मै आपके पुत्रो को असाधारण विद्वान न बना दूँ तो मुझे देवता स्वर्ग जाने मे रोक दें।"

ब्राह्मण की प्रतिज्ञा सुन कर सबको बडा आनन्द हुआ। यह तो असभव को सभव करने के समान था। राजा ने बडे आदर से राजकुमारो को वृद्ध

नहीं हथेली पर जमती है
कभी किसी के भी सरसों !"

सुमति नाम के मन्त्री ने कहा: "यह तो तुमने ठीक कहा, लेकिन जो सवाल सामने है यह उसका जवाब कैसे हुआ ? मानव का जीवन तो छोटा सा है और शास्त्रों का अन्त नहीं है। ऐसे समय में इन राजकुमारों के लिये तो कोई छोटा सा शास्त्र ढूँढना चाहिये। क्योंकि—

थोड़ी आयु, विघ्न बहुतेरे,
शब्द शास्त्र फिर भी अपार है,
हंस दूध पी ज्यों जल छोड़े
तुम भी लो वह जो कि सार है।

यहाँ एक विष्णु शर्मा नामक ब्राह्मण रहता है। वह विद्यार्थियों का प्रिय है, यशस्वी है। सारे शास्त्रों का जानकार है। हे राजन्! आप अपने पुत्रों को उसको सौंप दें। वह अवश्य ही इनको शीघ्र ही बुद्धिमान बना देगा।"

यह सुन कर राजा ने विष्णु शर्मा को बड़े आदर से बुलवाया और कहा "भगवन्! जैसे भी हो मेरे पुत्रों को आप अर्थशास्त्र में असाधारण विद्वान बना दें। इसके बदले में मैं आपको सैकड़ों अधिकार दूँगा।"

विष्णु शर्मा ने कहा "देव! मैं आप से सच बात कहूँगा। मैं अधिकारों के लोभ से विद्या नहीं बेचता। इन राजकुमारों को यदि मैं छः महीनों के भीतर ही नीतिशास्त्र का जानकार न बना दूँ तो मैं अपने नाम का त्याग कर दूँगा। यह मेरा सिंहनाद है। धन का लोभ मुझे नहीं है। मैंने तो संसार के सब भोग भोग लिये। मैं अस्सी वर्ष का वृद्ध हूँ। धन से मुझे अब क्या लाभ है ? लेकिन आपकी इच्छा पूरी करने के लिये मैं अब सरस्वती विनोद करूँगा। आज का दिन लिखवा लीजिये, यदि छः महीनों में मैं आपके पुत्रों को असाधारण विद्वान न बना दूँ तो मुझे देवता स्वर्ग जाने में रोक दें।"

ब्राह्मण की प्रतिज्ञा सुन कर सबको बड़ा आनन्द हुआ। यह तो असंभव को संभव करने के समान था। राजा ने बड़े आदर से राजकुमारों का वृद्ध

पहला तंत्र

मित्र भेद

विष्णु शर्मा ने राजकुमारों से कहा : "क्या तुम जानते हो कि—

एक सिंह और एक बैल में
बड़ी दोस्ती थी जगल में,
चुगलखोर गीदड़ ने उसको
नष्ट किया भर लोभ हृदय में ?

राजकुमारों ने पूछा : "कैसे ? कैसे ?"

विष्णु शर्मा ने कहा :

"महिलारोप्य नगर में वर्द्धमान नामक एक बनिया रहता था। वह धर्म-पूर्वक बहुत धन कमाया करता था। एक रात वह खाट पर लेटा था कि उसे चिंता ने घेर लिया। उसने मन में कहा कि बहुत धन जोड लेने पर भी रुकना नहीं चाहिये, बल्कि और भी धन जोडते रहना चाहिये। क्योंकि ठीक ही कहा है—

जग में कोई वस्तु नहीं है
जो कि नहीं मिलती हो धन से,
इसीलिये धन सदा कमाये
बुद्धिमान कर यत्न लगन से।
जिसके पास जगत में धन है
उसके सब ही मित्र दीखते,
जिसके पास जगत में धन है
उस पर सब ही आप रीझते।
जिसके पास जगत में धन है
उसके सब सम्बन्धी बनते,

जिसके पास जगत मे धन है
उसको ही सब पडित गिनते ।

न वह विद्या है, न वह दान है, न वह कारीगरी है, न वह कला है, न वह धनियों की स्थिरता है, जिसके बारे मे मॉगने वाले न गाते रहते हों।

धन के कारण यहॉ पराये
भी अपने बन जाया करते,
और गरीबी में अपने ही
बने पराये त्यागा करते ।

धन के बढने और उसके जुडने की सब बाते वैसे ही होती हैं जैसे नदियॉ पर्वतों से निकल कर बहती हैं, बढती हैं, धरती सींचती हैं।

धन की महिमा से अपूज्य भी
पूजनीय बनते हैं जग में,
जिनके पास न कोई जाये
उनसे सब मिलते हैं जग में।
जिन्हें नमस्ते भी करने की
इच्छा कभी न होती मन में,
ऐसों को प्रणाम तक करना
पडता। वह गुण होता धन में।
भोजन करने से शरीर में
ताकत जैसे आया करती,
धन मे ही वह शक्ति है कि जो
सारे कार्य पूर्ण है करती।
धन ही से सब सिद्धि जगत में
मिलती है, वह ही साधन है,
धन के बिना नहीं कुछ सरता
दरिद्रता दुख का कारण है।

धन की इच्छा से ही मानव
सिद्धि मरघटों में जा करता,
जान पिता तक को दरिद्र यह
मानव है झट त्यागा करता।
वे बूढ़े जवान माने जाते हैं
जग में जो कि धनी हैं,
और जवानी में ही बूढ़े
माने जाते जो अधनी हैं।

भीख माँगना, राजा की नौकरी करना, खेती करना, पढ़ाना, लेन-देन करना, व्यापार करना, यही धन कमाने के ६ उपाय हैं। इनमें भी व्यापार करना सबसे अच्छा होता है। क्योंकि—

पहले भी कितने ही मानव
माँग चुके हैं भीख जगत में,
और राज सेवा में धन भी
उचित नहीं मिलता सचमुच में।
खेती का धन्धा दुखदायी
बहुत काम, फिर लाभ न बचता,
और पढ़ाने वाले को तो
दब कर ही है रहना पड़ता।
लेन देन में ब्याज न पटता
मूल गया तो गये साथ में,
उसमें क्या है लाभ कि अपना
धन औरों के रहे हाथ में?

इसीलिए व्यापार करना ही मुझको सबसे बढ़िया काम दिखलाई देता है। और कोई बात इसमें भले ही हो लेकिन यह सब खतरे इसमें नहीं होते।

हर हालत में जो बिक जाये
वही वस्तु संग्रह कर लेना,

कमती बढती माल तोलकर
जाने पहचानो को ठगना,
यह तो प्रकृति किरातो की है
झूठे दाम बता कर छलना।

वर्त्तनो को वेचने मे चतुर और दूर देश मे ले जाकर वेचने वाले व्यापारी को दुगना, तिगुना लाभ होता है।"

यह सोचकर वर्द्धमान बनिये ने दूसरे दिन बिकने के लायक अच्छे अच्छे वर्त्तन खरीदे और फिर शुभ दिन देखकर बडो की आज्ञा प्राप्त करके रथ पर चढकर महिलारोप्य नगर से व्यापार करने को बाहर विदेशो की ओर चल पडा।

उसके घर मे पैदा हुए सजीवक और नन्दक नामक दो बैल थे। जब वर्द्धमान का सार्थ यमुना नदी के किनारे पहुँचा तो वहाँ की रेतीली भूमि मे दलदल मे उसके सजीवक नामक बैल का पैर फँस गया और वह लँगडा हो गया। सजीवक ने अपने कधे पर से जूआ फेक दिया और चुपचाप खडा हो गया। उसकी यह हालत देखकर वर्द्धमान वणिक को बडा दुख हुआ। तीन रात तक उसके प्रेम मे बँधा हुआ सेठ वही रुका रहा।

जब उसको इस प्रकार दुखी देखा तो उसके साथियो ने कहा "हे श्रेष्ठि। इस जगल मे सिंह भी हैं और न जाने कितनी विपत्तियाँ हैं। इस एक बैल के लिए आपने तो सबको ही खतरे मे क्यो डाल दिया है ? कहा है कि—

बुद्धिमान है वही कि थोडे
के हित बहुत न नाश करे,
थोडे से ही सदा बहुत की
रक्षा करे उपाय करे।"

इस बात को सोचकर सेठ वर्द्धमान ने सजीवक की रक्षा करने के लिए कुछ रक्षक छोड दिये और बाकी साथियो को लेकर आगे चला। जब वह चला गया तो सजीवक के रक्षक भी जगल को भयानक समझकर सजीवक को छोडकर चल दिये और दूसरे दिन उन्होने सेठ वर्द्धमान से झूठ गढकर कह

दिया कि स्वामी ! सजीवक तो मर गया। हमने आपके प्यारे बैल को चिता पर धर कर जला भी दिया।

यह सुनकर वर्द्धमान को दुख हुआ, परन्तु वह करता भी क्या ? उसने वृषोत्सर्ग और्ध्वदैहिक आदि क्रिया कर्म करके बैल के प्रति अपनी कृतज्ञता का पालन किया।

लेकिन सजीवन मरा नहीं।

सजीवक की आयु बची थी। जमुना की ठडी हवा लगने से वह स्वस्थ हो चला। किसी तरह वह उठ कर जमुना तीर पर पहुँच गया और वहाँ पन्ने जैसी चमकती हुई हरी घास को चरने लगा। कुछ दिन में ही वह शिव के नंदी की तरह स्थूल हो गया। उसके कधे पर अब जूआ तो रखा ही नहीं जाता था, इसलिये मोटा ककुभ निकल आया। वह अत्यंत बलवान हो गया। अपने सींगों से वह दीमकों के बनाये मिट्टी के छोटे-छोटे टीलों को तोडने लगा। और तब वह मस्त होकर यमुना तट पर गरजने लगा। कहा भी है—

जिसकी कोई करे न रक्षा
किंतु देव हो जिसके साथ,
उसका कुछ भी नहीं बिगडता
भले न देवे कोई साथ !
बडे यत्न से रक्षा करके
भी रखी हो कोई चीज,
मिट कर ही रहती है वह भी
जब कि दैव कर लेता पीठ !
बच जाता है अगर भाग्य हो
वन में छोडा हुआ अनाथ,
बिना भाग्य के करो सौ जतन
घर बैठे मर जाय सनाथ !

एक दिन ऐसा हुआ कि पिंगलक नामक सिंह जो जंगल का राजा था, जंगल के जानवरों को साथ लेकर प्यास से बेचैन होकर यमुना के किनारे पानी

कमती बढती माल तोलकर
जाने पहचानो को ठगना,
यह तो प्रकृति किरातो की है
झूठे दाम बता कर छलना ।

वर्त्तनो को वेचने मे चतुर और दूर देश मे ले जाकर वेचने वाले व्यापारी को दुगना, तिगुना लाभ होता है ।"

यह सोचकर वर्द्धमान बनिये ने दूसरे दिन विकने के लायक अच्छे अच्छे वर्त्तन खरीदे और फिर शुभ दिन देखकर बडो की आज्ञा प्राप्त करके रथ पर चढकर महिलारोप्य नगर से व्यापार करने को बाहर विदेशो की ओर चल पडा ।

उसके घर मे पैदा हुए सजीवक ओर नन्दक नामक दो बैल थे । जब वर्द्धमान का सार्थ यमुना नदी के किनारे पहुँचा तो वहाँ की रेतीली भूमि मे दलदल मे उसके सजीवक नामक बैल का पैर फँस गया और वह लँगडा हो गया । सजीवक ने अपने कधे पर से जूआ फेंक दिया और चुपचाप खड़ा हो गया । उसकी यह हालत देखकर वर्द्धमान वणिक को बडा दुख हुआ । तीन रात तक उसके प्रेम मे बँधा हुआ सेठ वही रुका रहा ।

जब उसको इस प्रकार दुखी देखा तो उसके साथियो ने कहा "हे श्रेष्ठि। इस जगल मे सिंह भी हैं और न जाने कितनी विपत्तियाँ हैं । इस एक बैल के लिए आपने तो सबको ही खतरे मे क्यो डाल दिया है ? कहा है कि—

बुद्धिमान है वही कि थोडे
के हित बहुत न नाश करे,
थोड़े से ही सदा बहुत की
रक्षा करे उपाय करे ।"

इस बात को सोचकर सेठ वर्द्धमान ने सजीवक की रक्षा करने के लिए कुछ रक्षक छोड़ दिये और बाकी साथियो को लेकर आगे चला । जब वह चला गया तो सजीवक के रक्षक भी जगल को भयानक समझकर सजीवक को छोड़कर चल दिये और दूसरे दिन उन्होने सेठ वर्द्धमान से झूठ गढकर कह

पीने आया। एकाएक उसने सजीवक बैल का बादलों का सा गभीर गर्जन सुना। उस आवाज को सुन कर वह बहुत ही व्याकुल हो गया किंतु राजा तो था ही। उसने अपना डर प्रगट नहीं किया। वहीं एक बड़ का पेड़ था। वह उसके नीचे बैठ गया और जगल के जानवर मडल बना कर उसको घेर कर बैठ गये। वे इस तरह बैठे कि आगे क्या होगा यह जान सके।

वहीं करटक और दमनक दो गीदड थे। वे पिंगलक के मत्री के बेटे थे। अब उन्हें मत्रीपद से हटा दिया गया था। कुछ दूर हट कर वे बैठ गये, क्योंकि मत्रीपद से हटाये जाने पर भी वह राजा के साथ ही घूमते-फिरते थे।

दमनक ने कहा "भाई करटक! क्या मामला है कुछ समझ मे नहीं आता। हमारा राजा पिंगलक तो पानी पीने आया था। फिर क्या कारण है कि प्यासा होने पर वह चुपचाप चिंतित सा यहाँ बैठ गया है? सारी सेना को चारों ओर उसने क्यों बिठा लिया है?"

करटक ने कहा "इसकी चिंता व्यर्थ है क्योंकि—

बिना लाभ का काम करे जो
होता है वह मानव नष्ट,
जैसे कील उखाड हो गया
बन्दर अपने आप विनष्ट।"

दमनक ने कहा 'भाई करटक! यह कैसी कथा है?"

यह सुन कर करटक ने कहा—

एक रोज आया बंदर दल वहाँ घूमता
लगे खेलने बन्दर ऊधम करते भारी,
कोई चढने लगा शिखर पर उछल झूमता
कोई बल्ली पर चढता था भर किलकारी।
आधा चिरा हुआ लक्कड था पड़ा वहाँ पर
जिसके बीच कील लकडी की गडी हुई थी,
छोटा बदर एक घुस गया उस लक्कड में
लगा खींचने कील पकड जो अडी हुई थी,
ज्यों ही निकली, कील भिंचा, वह मरा पिचक कर
इसीलिये हर काम करो तुम सोच समझ कर।

यह सोच कर मै कहता हूँ कि इस चिंता को छोडो। अभी हमारे खाने लायक भोजन बचा हुआ है। आओ उसे खाये।"

दमनक ने कहा · "यह तुम क्या कहते हो? क्या केवल खाना खा लेना ही काफी काम है? खाना तो सब ही खाते हैं। चिडिया भी अपनी छोटी सी चोच से ही पेट तो भर ही लेती है। लेकिन दुनिया मे और भी तो काम है। कहा भी है—

मित्रों का उपकार और
दुश्मन का करने को अपकार,
राजा का आश्रय लेते हैं
बुद्धिमान हर बात विचार।
कौन न अपना पेट पालता
पक्षी तक भरते हैं पेट,
वे क्या उन्नति कर सकते हैं
जिन्हें काम बस भरना पेट?
जिसके जीने से जीते हैं
बहुत लोग वह जीवित हैं,

जिससे बहुतों के चलते हैं
काम वही तो जीवित है।
पल भर भी विज्ञान, वीरता,
श्री, ऐश्वर्य गुणों के साथ,
जो समाज में गौरव पाये
वह जीवन जीवन है तात!
यों तो कौआ भी जीता है
बहुत दिनों तक बलि खाता,
वह जीवन है व्यर्थ काम जो
नहीं दीन का कर पाता।
यों तो कौआ भी जीता है
बहुत दिनों तक बलि खाता,
वह क्या जीवन नहीं किसी पर
दया कभी जो कर पाता!
जो अपने पर या औरों पर
दया नहीं करता है मीत,
उससे तो कौआ अच्छा है
संग्रह से है जिसे न प्रीत।
छोटी नदी और चूहे की
अंजलि जल्दी भर जाती,
कायर की आत्मा ही थोड़ा
सा पाकर है भर जाती।
जननी को दुख देने वाले
उस मानव से है क्या लाभ?
जो निज कुल में झंडा बन कर
नहीं फहरता आगे आप?
नित्य बदलती है यह दुनिया
कौन न जीता मरता है?

जहॉ लाभ दीखे कहने से
वही बात कहना है ठीक,
श्वेत वस्त्र पर ही चढती है
किसी रग की पक्की लीक।"

दमनक ने कहा "नही, नही, ऐसा मत कहो! सुन—

सेवा करने से छोटे भी
सदा बडे हो जाते हैं,
सेवा बिना बडे ही आखिर
छोटे भी हो जाते हैं।

राजा तो अपने पास वाले को ही मानता है, भले ही वह पास वाला आदमी विद्याहीन हो, छोटे कुल का हो या उसमे सस्कार भी अच्छे न हो। यही देखा जाता है कि राजा, स्त्री और लताये पास रहने वाले का ही सहारा लेती हैं। जो सेवक अपने मालिक की प्रसन्नता और क्रोध का कारण समझ लेते हैं वे धीरे-धीरे राजा को भी अपना बना लेते हैं। विद्वान्, कारीगर, वीर और नौकरी करने वाले लोगो को राजा के सिवा कोई सहारा नही होता। जो अपनी जाति के घमड मे अकडकर राजा के पास नही जाते वे मरने के समय तक भीख मॉग कर ही प्रायश्चित करते-फिरते हैं। जो बुरे लोग कहते हैं कि राजा के पास रहना कठिन है, राजा बडी मुश्किल से मिलते हैं, वे असल मे आलस, प्रमाद और जडता से भरे होते हैं। क्योकि—

जब उपाय से सॉप सिंह, गज
भी काबू मे आते हैं,
बुद्धिमान क्या राजा को भी
वश के बाहर पाते हैं?
अरे राज्य का आश्रय पाकर
करते उन्नति हैं विद्वान,
मलयाचल पर ही चदन के
उगते वृक्ष वही स्थान।

सफेद छत्र, सुन्दर घोडे, मस्त हाथी, यह सब चीजें तो राजा की प्रसन्नता से ही मिलती हैं ?"

करटक ने यह सुनकर कहा : "तो आप क्या करना चाहते हैं ?"

दमनक ने कहा : "देखा ! आज हमारा स्वामी राजा पिंगलक सारे परिवार के साथ डर रहा है। मै इसके पास जाऊँगा और इसके डर का कारण जानूँगा। ससार मे कई नीतियाँ हैं। सन्धि अर्थात् मेल, विग्रह अर्थात् लडाई यान अर्थात् शत्रु की तरफ यात्रा करना, आसन अर्थात् अवसर देखना, सश्रय अर्थात् अपने से बली से टक्कर होने पर उससे भी बली का सहारा ढूँढना। मै इनमे से किसी को अपनाऊँगा।"

करटक ने कहा : "आपको कैसे मालूम हुआ कि हमारा राजा डरा हुआ है ?"

दमनक ने कहा : "सुनो ! इसे जान लेने मे क्या बडी बात है। क्योंकि—

कही हुई बातो का तो
पशु भी लेते हैं अर्थ जान,
बोझा ढोते हाथी घोडे
मालिक की इच्छा तनिक जान।
जो बिना कहे को समझ जाय
वे ही होते हैं बुद्धिमान,
बुद्धियाँ पराई चेष्टा का
करती हैं यों अनुमान ज्ञान !

मनु भगवान ने कहा भी है—

आँखें, वाणी, चलना, इंगित
इन सबको देखो चुपचाप,
सुख दुख का दर्पण तो मुख है
जो कह देता अपने आप।

इसलिये मै राजा के पास जाऊँगा जो इस समय व्याकुल है और पहले बुद्धिमानी से बातें करके उसके डर को दूर करूँगा। तब वह अपने आप मेरे [illegible] उसका मंत्री बन जाऊँगा।"

करटक ने कहा : "आप सेवा धर्म तो जानते ही नही हैं ? राजा को किस तरह वश मे करेंगे ?"

दमनक ने कहा . "तुम कैसे कहते हो कि म सेवा धर्म नहीं जानता ? पिताजी के पास जो साधु लोग ठहरते थे। उनके मुख से मने नीतिशास्त्र सुना है। उसका सार मैंने अपने हृदय मे रख लिया है। उसको सुनो—

सेवा वृत्ति जानने वाले,
पराक्रमी जन औ विद्वान,
स्वर्ण पुष्पमय भूमि खोजकर
कर लेते ह प्राप्त सुजान।

वही सेवा वास्तव म सेवा है जो कि स्वामी का हित करती है। प्रभु की बातो से ही पता चल जाता है कि वे क्या चाहते हैं ? विद्वान् आदमी उसी बात रूपी द्वार मे से राजा के पास जा सकता है। यदि विद्वान् पुरुष अपने स्वामी के गुणो को न जान सके तो उस स्वामी के पास कभी न रहे, क्योकि उससे कोई लाभ नही हो सकता। ऊपर की धरती पर हल चलाने से धरती के भीतर का खजाना हाथ नही लगा करता। अगर गरीब प्रकृति से हीन आदमी सेवा करने के योग्य हो तो उसकी सेवा करनी चाहिये क्योकि इसी जीवन मे कुछ ही समय मे इसके द्वारा फल मिल सकता है।

बैठा रहे भूख से तपता
गडे हुए खूँटे सा दीन,
किंतु चतुर नर करे न सेवा
उस प्रभु की जो है गुणहीन।

कजूस मालिक की तो नौकर कडे शब्दो मे बुराई करता है, परतु जो नौकर सेवा करने योग्य और सेवा न करने योग्य मालिक का भेद नही पहचानता उसे तो पहले अपनी ही निंदा करनी चाहिये। जिस राजा की सेवा करने मे सेवक को भूखा रहना पडे और आराम भी न मिले उसकी सेवा को ऐसे ही छोड देना चाहिये जैसे फल-फूल वाले आक के पेड को छोड दिया जाता है। सेवक को चाहिये कि वह राजमाता, पटरानी, राजकुमार, मुख्य मत्री, पुरोहित और

प्रतीहार इनका भी राजा का-सा सम्मान करे। करने लायक और न करने लायक बात पर ध्यान न देता हुआ जो मालिक के पुकारने पर तुरत 'जी' कह कर जवाब दे देता है, उसे ही राजा चाहता है। जो मालिक की प्रसन्नता से प्राप्त धन को लाकर प्रसन्नता दिखाता और उनके दिये वस्त्र आदि पहनता है वही राजा का प्रिय होता है। जो सेवक राजा के अंत:पुर मे रहने वालो से बातें नहीं करता, न उनसे सलाह करता है और न राजा की स्त्रियों से बातें करता है वही राजा का प्रिय बनता है। जो जुए को यमदूत की भाँति समझता है, मदिरा को विष की भाँति मानता है और स्त्रियों को दूर रखता है वही राजा का प्रिय होता है। क्योंकि—

युद्ध काल मे आगे चलता
और नगर में जो पीछे,
खड़ा रहे तो प्रभु के द्वारे
अपनी आँखें कर नीचे।
सदा यही जो सोचा करता
मुझ पर प्रभु की कृपा अपार,
मर्यादाएँ नहीं लाँघता
कठिनाई की खाकर मार।
जो कि शत्रुओ को स्वामी के
गिनता है दुश्मन अपना,
जो प्रिय करता है स्वामी के
प्रिय जन को गिन कर अपना।
जो स्वामी को कभी न देता
उत्तर मुँह पर कठिन कठोर,
जो स्वामी के पास नहीं
हँसता है ऊँचे स्वर कर घोर।
निर्भय होकर युद्ध भूमि को
समझा करता घर अपना,

करटक ने कहा "आप सेवा धर्म तो जानते ही नही है? राजा को किस तरह वश मे करेंगे ?"

दमनक ने कहा "तुम कैसे कहते हो कि मै सेवा धर्म नही जानता ? पिताजी के पास जो साधु लोग ठहरते थे। उनके मुख से मैने नीतिशास्त्र सुना है। उसका सार मैने अपने हृदय मे रख लिया है। उसको सुनो—

सेवा वृत्ति जानने वाले,
पराक्रमी जन औ विद्वान,
स्वर्ण पुष्पमय भूमि खोजकर
कर लेते है प्राप्त सुजान।

वही सेवा वास्तव मे सेवा है जो कि स्वामी का हित करती है। प्रभु की बातो से ही पता चल जाता है कि वे क्या चाहते है? विद्वान् आदमी उसी बात रूपी द्वार मे से राजा के पास जा सकता है। यदि विद्वान् पुरुष अपने स्वामी के गुणो को न जान सके तो उस स्वामी के पास कभी न रहे, क्योकि उससे कोई लाभ नही हो सकता। ऊपर की धरती पर हल चलाने से धरती के भीतर का खजाना हाथ नही लगा करता। अगर गरीब प्रकृति से हीन आदमी सेवा करने के योग्य हो तो उसकी सेवा करनी चाहिये क्योकि इसी जीवन मे कुछ ही समय मे इसके द्वारा फल मिल सकता है।

बैठा रहे भूख से तपता
गडे हुए खूँटे सा दीन,
किंतु चतुर नर करे न सेवा
उस प्रभु की जो है गुणहीन।

कजूस मालिक की तो नौकर कड़े शब्दो मे बुराई करता है, परतु जो नौकर सेवा करने योग्य और सेवा न करने योग्य मालिक का भेद नही पहचानता उसे तो पहले अपनी ही निंदा करनी चाहिये। जिस राजा की सेवा करने मे सेवक को भूखा रहना पडे और आराम भी न मिले उसकी सेवा को ऐसे ही छोड देना चाहिये जैसे फल-फूल वाले आक के पेड़ को छोड दिया जाता है। सेवक को चाहिये कि वह राजमाता, पटरानी, राजकुमार, मुख्य मत्री, पुरोहित और

प्रतीहार इनका भी राजा का-सा सम्मान करे। करने लायक और न करने लायक बात पर ध्यान न देता हुआ जो मालिक के पुकारने पर तुरत 'जी' कह कर जवाब दे देता है, उसे ही राजा चाहता है। जो मालिक की प्रसन्नता से प्राप्त धन को लाकर प्रसन्नता दिखाता और उनके दिये वस्त्र आदि पहनता है वही राजा का प्रिय होता है। जो सेवक राजा के अंतःपुर में रहने वालों से बातें नहीं करता, न उनसे सलाह करता है और न राजा की स्त्रियों से बातें करता है वही राजा का प्रिय बनता है। जो जुए को यमदूत की भाँति समझता है, मदिरा को विष की भाँति मानता है और स्त्रियों को दूर रखता है वही राजा का प्रिय होता है। क्योंकि—

युद्ध काल में आगे चलता
और नगर में जो पीछे,
खड़ा रहे तो प्रभु के द्वारे
अपनी आँखें कर नीचे।
सदा यही जो सोचा करता
मुझ पर प्रभु की कृपा अपार,
मर्यादाएँ नहीं लाँघता
कठिनाई की खाकर मार।
जो कि शत्रुओं को स्वामी के
गिनता है दुश्मन अपना,
जो प्रिय करता है स्वामी के
प्रिय जन को गिन कर अपना।
जो स्वामी को कभी न देता
उत्तर मुँह पर कठिन कठोर,
जो स्वामी के पास नहीं
हँसता है ऊँचे स्वर कर घोर।
निर्भय होकर युद्ध भूमि को
समझा करता घर अपना,

स्वामी के हित पर देशों को
नगर समझता है अपना।
जो स्वामी की स्त्रियाँ देख कर
करता है उनका सम्मान,
करता निन्दा कभी न उनकी
और न करता बहस अजान।
वह ही प्रिय बनता स्वामी का
अपने गुण से उसको जीत,
इसीलिये मै कहता तुमसे
सेवा से होती है प्रीत।"

यह सुन कर करटक ने कहा, "तो तुम वहाँ जाकर पहले करोगे क्या? क्या कहोगे? यह तो बताओ?"

दमनक ने कहा, "सुनो—

निकला करती बात-बात से
यह ही है जगती की रीत,
ज्यो अच्छी वर्षा होने से
निकल बीज से आते बीज।
गलती करके हो विपत्तियाँ,
या उपाय सिद्धियाँ भरें,
बुद्धिमान इनको समान ही
मान हृदय मे सग धरे।
कुछ तोते से मिठबाले होते है
मन मे कपट भरे,
कुछ बोलते कठोर, किंतु
उनके मन होते प्यार भरे।
अरे वचन मत देखो केवल
सग-सग देखो मन को,

सार एक में नहीं मिलेगा
देखो वचन और मन को।

मै तो मौका देख कर बात करूँगा। जब मै पिता की गोद में था तभी मैने यह बात सुनी थी कि—

अरे देवताओं के गुरु भी
असमय जो कुछ बात कहें
उन तक को फल मिलता ऐसा
तिरस्कार अपमान सहें।"

करटक ने कहा : "यह तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन मेरी बात सुनो :

ऊँचे नीचे कठिन रास्ते,
सॉप और पशुओं वाले,
पर्वत से ही राजा होते
रहते जो कि दुष्ट पाले।
जैसे कठिन पहाड़ भयानक
होता है रस्ता चलते,
ऐसे ही होते ये राजा
नहीं प्यार से भी मिलते।

जैसे फनधारी, केंचली वाला, कुटिल, क्रूर काम करने वाला सर्प मत्र से हो बॅधता है, ऐसे ही छत्रधारी, सुदर वस्त्र पहनने वाले, कुटिल, क्रूर स्वभाव के राजा भी उनका मन जीतने पर ही काबू में आते हैं। दो जीभ वाले, क्षण-क्षण मे बात बदल जाने वाले, क्रूर काम करने वाले, सदा ही बुराई ढूँढते रहने वाले राजा सॉपों की तरह दूर ही से देखा करते हैं। जो राजा के प्रिय होकर राजा का थोडा-सा भी अनिष्ट करते हैं वे पापी आग में पतगे की तरह जल कर मर जाते हैं। राजा का पद बडी कठिनता से मिलता है। राजा की तो सब ही वदना करते हैं। जैसे ब्राह्मणत्व जरा से दोष से दूषित हो जाता है, वैसे ही जरासी भूल से राजा का पद भी दूषित हो जाता है। क्योंकि—

दुर्लभ होती राज्य लक्ष्मी
बड़ी कठिनता से मिलती,
किंतु पात्र मे सञ्चित जल-सी
बहुत दिनो तक है रहती।"

दमनक ने कहा "यह तो ठीक है लेकिन जिसका जो भाव है, उसी भाव से उसकी सेवा करने से बुद्धिमान शीघ्र ही राजा को वश मे कर लेता है। स्वामी के अनुकूल चलने से सेवक अच्छे माने जाते हैं। निरतर उनकी इच्छा के अनुसार चलने वाले मनुष्य राक्षसों को भी अपने वश मे कर लेते हैं। क्योंकि—

जब स्वामी हो क्रुद्ध उस समय
स्तुति के मीठे कहो वचन,
उसके प्रिय मे प्रेम दिखाओ
अपनी सच्चाई प्रतिक्षण।
उसके दुश्मन को मन मे लो
मानो कि है अपना दुश्मन,
करे दान वह करो प्रशसा
बिना मत्र यह वशीकरण।"

करटक ने कहा "यदि ऐसी बात है तो आपका मार्ग मगलमय हो। आप जाकर अभिलाषानुसार कार्य करें।"

दमनक करटक को प्रणाम करके पिगलक की तरफ चला।

बेंत हाथ मे लिये द्वारपाल खड़ा था।

जगल के राजा पिगलक ने कहा "बेंत हटा लो। यह हमारा पुराना मत्री-पुत्र है। इसको बेरोक-टोक हमारे पास आने का अधिकार है। यह हमारे बगल मे बैठने का अधिकारी है। इसे आने दो।"

द्वारपाल ने हट कर कहा. "जैसी महाराज की आज्ञा" और वह हट

को प्रणाम किया और राजा के बताये आसन पर

जो मणि सोने के गहने में
जड़ने लायक होता है,
उसे राँग के बीच जड़ा
जाय तो क्या वह रोता है ?

राँगे मे मणि नहीं सुहाता
मणि को दोष नहीं देते,
दर्शक तो जड़ने वाले की
बुद्धि देख हैं हँस लेते।

और आपने जो कहा कि बहुत दिनों बाद दिखाई दिये, तो उसका कारण यह है कि—

जहाँ दाहिने बाँये मे भी
नहीं किया जाता हो भेद,
बुद्धिमान किस भाँति टिकेगा
इसे आप ही सोचे देख।

जिनकी बुद्धि काँच नें मणि को
मणि मे काँच सोचती है,
उनके निकट रहे सेवक क्यो
किसकी बुद्धि डोलती है।

जहाँ पारखी नही वही पर
होता नहीं रत्न का मोल,
आभीरों मे चन्द्र कात मणि
बिकता दो कौडी के मोल।

लोहित मणि औ पद्मराग मणि
का न जहाँ मालूम हो भेद,
वहाँ रत्न क्या बिक सकते हैं
इसे आप ही सोचें देख ?

सभी सेवकों से जब स्वामी
करे एक सा ही व्यवहार,
तो उद्यम-समर्थ सेवक का
स्वय हृदय जाता है हार।

सेवक बिना न रह सकता प्रभु
प्रभु के बिना न सेवक ही,
एक दूसरे पर आश्रित हैं
यही रीति है इस जग की।

लोक मंगला किरणों से ज्यों
हीन सूर्य लगता है क्षीण,
बिना सेवकों के स्वामी भी
लगता है वैसा ही दीन।

अरे नाभी मे, नाभी अरों मे
पहिये में स्थिर रहते हैं,
स्वामी सेवक भी ऐसे ही
जडे हुए से रहते हैं।

सिर पर धारण किये हुए जो
बडे स्नेह से पलते हैं—
ऐसे सुन्दर केश तेल के
बिना न चिकने रहते हैं।

अपने सिर के बाल तेल के
बिना जभी रूखे होते,
फिर सेवक क्यो बने न रूखे ?
आखिर तो नीचे रहते।

राजा तो प्रसन्न होकर बस
देता उनको केवल धन,

किंतु मान के लिये जरा से
सेवक तो देते जीवन !

यह विचार करके राजाओं को ऐसे बुद्धिमान सेवकों को ही रखना चाहिये जो कुलीन हों, वीर, समर्थ, भक्त और कुल परम्परा से रहते आये हों। जो राजा की आज्ञा से बुरे काम करके भी लज्जा के कारण कुछ नहीं कहता, ऐसे ही सेवकों से राजा को सहायता वास्तव में मिलती है। जिस सेवक को राजा बिना हिचकिचाहट के काम देकर निश्चिंत हो जाता है, सेवक तो वही है। बाकी सेवक तो राजा के द्वारा स्त्री की भाँति पाले जाते हैं।

बिना बुलाये जो समीप
आये स्वामी के अपने आप,
सदा द्वार पर खड़ा रहे औ'
करे सत्य का ही आलाप।

आज्ञा बिना मिले ही होता
देखे यदि कोई नुकसान,
तो स्वामी के लिये निरन्तर
करे नाश उसका मतिमान।

जो राजा से पिटे, डाँट खा
किन्तु न उसकी हानि करे,
मान मिले पर गर्व न माने,
पिट कर कभी न ग्लानि करे।

नींद, भूख, जाड़े का भी जो
नहीं करे सेवा में ध्यान,
जो प्रसन्न हो मन में सुनकर
स्वामि करेंगे युद्ध महान।
ऐसा ही सेवक होता है
योग्य रहे राजा के पास,

ऐसे ही सेवक पर राजा
भी कर सकता है विश्वास।

जिस सेवक के नियुक्त होने पर राजा के राज्य की सीमा शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढती रहती है, वह राजा का सेवक होने के योग्य है और जिस सेवक को रखने पर राजा के राज्य की सीमा आग में पडे चमड़े की तरह सिकुड़ जाय तो जो राजा राज्य बढाना चाहता है उसे उसका त्याग कर देना ही ठीक है। अगर आप यह सोचें कि यह तो गीदड़ है, इसकी बात से क्या होता है, तो मेरी उपेक्षा करना भी आपको उचित नहीं है क्योंकि—

कीडे रेशम पैदा करते
पत्थर से सोना होता,
और गाय के रोमों में से
दूर्वा का दर्शन होता।
कमल सदा कीचड़ से आता
गोबर मे से नील कमल,
और साँप के काले फन से
निकला करता मणि उज्ज्वल।
आग काठ से निकला करती
धधका करती है प्रतिक्षण,
और गाय के पित्त आदि से
पैदा होता गोरोचन।
गुणी गुणों से शोभित होते
करते वही उजागर हैं,
जन्म न उनका देखा जाता
गुण उनके कुल हैं घर हैं।
घर में जन्मी चुहिया के
अपकार देख कर घबराते,
हितकारी बिलाव को घर में
लोग यत्न कर हैं लाते।

आक भिण्ड नल अंडी चाहे
यों कितनी भी उग आयें,
किन्तु काठ की जगह एक भी
नहीं काम में वे आयें।

इसीलिये नासमझ सेवक, असमर्थ भक्त और बुरा करने के वाले समर्थ सेवक से राजा को क्या लाभ? हे राजन्! आप मुझ भक्त और समर्थ की अवज्ञा मत करिये।"

पिंगलक ने कहा: "अच्छी बात है। तुम समर्थ हो या असमर्थ, पर तुम हमारे पुराने मन्त्री-पुत्र हो। जो कहना है निडर होकर हमसे कहो।"

दमनक ने कहा: "देव! मुझे कुछ कहना है।"

जंगल के राजा ने कहा: "तो कह डालो।"

तब दमनक ने कहा: "देव! बृहस्पति ने कहा है कि चाहे राजा का बहुत ही छोटा काम क्या न हो, लेकिन उसे सभा में नहीं कहना चाहिये। आप एकांत में मेरी बात सुनें, क्योंकि—

चार कान में रहने वाली बात
सदा स्थिर रहती है,
छह कानों में पड़ बात तो
जगह-जगह पर फिरती है।
बुद्धिमान सारे प्रयत्न कर
देखें यही कि उसकी बात,
छह कानों में पड़े न जाकर
रहे चार कानों की बात।

यह सुन कर पिंगलक ने अपने चारों ओर बैठे जानवरों की ओर देखा। सब जानवर उसका मतलब समझ गये और व्याघ्र, गैंडे, भेड़िये आदि उसी समय दूर हट गये।

दमनक ने कहा: "हे स्वामी! आप तो जल पीने आये थे, फिर यहाँ क्यों रुक कर बैठ गये?"

पिंगलक ने लज्जित-सा होकर मुस्करा कर कहा : "कुछ नहीं, यों ही।"

दमनक ने कहा . "यदि कहने के योग्य न हो तो जाने दीजिये। कुछ बातें स्त्रियो से, कुछ अपने आदमियों से, कुछ बंधुओं से और कुछ अपने पुत्रों से भी गुप्त रखनी चाहिए। परन्तु उचित और अनुचित का विचार करके विद्वान् किसी बड़े कारण को जान कर भले ही कोई गुप्त बात भी कह दे तो कोई हर्ज नहीं।"

पिंगलक ने सोचा कि यह गीदड़ है तो योग्य ही। क्यों न इसे अपनी बात बता दूँ? क्योंकि सुहृद मित्र, गुणवान सेवक, कहना मानने वाली स्त्री और स्नेह रखने वाले स्वामी से अपना दुख कहकर मनुष्य सुखी होता है। उसने कहा : "दमनक! क्या तू दूर से आने वाला वह घोर शब्द सुन रहा है?"

दमनक ने कहा : "सुन तो रहा हूँ, किन्तु उससे हुआ क्या?"

पिंगलक ने कहा : "भाई! मैं तो इस जगल से चले जाने की सोच रहा हूँ।"

दमनक ने पूछा . "क्यों?"

पिंगलक ने कहा : "इस वन मे कोई अपूर्व जीव आ गया लगता है, जिसका यह अपूर्व गर्जन सुनाई पड रहा है। जैसा उसका कठोर शब्द है उसका रूप भी ऐसा ही होगा।"

दमनक ने कहा ' "हे स्वामी? केवल आवाज को सुनकर डर जाना तो ठीक नहीं, क्योकि जैसे जल के वेग से पुल टूट जाता है इसी तरह जो बात गुप्त नहीं रखी जाती वह खुल जाती है। चुगली के कारण प्रेम और रूखी बात से दुखी प्राणी भी अलग हो जाते हैं। हे स्वामी! यह आपके कुल का पुराना वन है इसे छोड़ना क्या उचित है? भेरी वेणु, वीणा, मृदङ्ग, ताल, पतह, काहल इत्यादि बाजो के शब्द तरह-तरह के निकलते हैं। इसीलिये केवल शब्द से डर जाना तो ठीक नहीं। भयानक और बडे बलवान दुश्मन को सामने देखकर भी जिस राजा का धीरज नहीं टूटता, वह राजा कभी भी हारता नहीं है। विधाता के डराने पर भी धीर पुरुषो का धीरज नष्ट नहीं

आक भिण्ड नल अंडी चाहे
यों कितनी भी उग आयें,
किन्तु काठ की जगह एक भी
नहीं काम में वे आयें।

इसीलिये नासमझ सेवक, असमर्थ भक्त और बुरा करने के वाले समर्थ सेवक से राजा को क्या लाभ ? हे राजन् ! आप मुझ भक्त और समर्थ की अवज्ञा मत करिये।"

पिंगलक ने कहा : "अच्छी बात है। तुम समर्थ हो या असमर्थ, पर तुम हमारे पुराने मन्त्री-पुत्र हो। जो कहना है निडर होकर हमसे कहो।"

दमनक ने कहा : "देव ! मुझे कुछ कहना है।"

जंगल के राजा ने कहा : "तो कह डालो।"

तब दमनक ने कहा : "देव ! बृहस्पति ने कहा है कि चाहे राजा का बहुत ही छोटा काम क्या न हो, लेकिन उसे सभा में नहीं कहना चाहिये। आप एकांत में मेरी बात सुनें, क्योंकि—

चार कान में रहने वाली बात
सदा स्थिर रहती है,
छह कानों में पड़ बात तो
जगह-जगह पर फिरती है।
बुद्धिमान सारे प्रयत्न कर
देखे यही कि उसकी बात,
छह कानों में पड़े न जाकर
रहे चार कानों की बात।

यह सुन कर पिंगलक ने अपने चारों ओर बैठे जानवरों की ओर देखा। सब जानवर उसका मतलब समझ गये और व्याघ्र, गैंडे, भेड़िये आदि उसी समय दूर हट गये।

दमनक ने कहा : "हे स्वामी ! आप तो जल पीने आये थे, फिर यहीं क्यों रुक कर बैठ गये ?"

दमनक ने कहा : 'कहता हूँ सुनिये—

रे ! गोमायु नाम का गीदड भूखा-प्यासा
भटक रहा था इधर, उधर था गला सूखता,
चलते-चलते वह ऐसे जंगल में पहुँचा
जहाँ कभी था हुआ भयानक युद्ध जूझता।
हवा चली तो लता अचानक कोई हिल कर
पडी नगाडे पर फिर-फिर तो जो गूँजा स्वर,
गीदड मन में हुआ बहुत ही व्याकुल कातर
लगा सोचने हाय मरा मै भगूँ कहाँ पर ?
जब तक मै इस घोर शब्द तक पहुँचूँ, तब तक
क्यो न भाग जाऊँ मै जल्दी और कहीं पर,
पर पीढी दर पीढ़ी मेरे पूर्वज सारे
रहे घूमते-खाते, पीते नित्य यहीं पर !
भय या सुख मिलने पर जो भी सोचा करता
सोचे बिना न कर देता है काम जगत में,
वही चतुर कहलाता है, यह बात सत्य है
उसकी बात ठीक होती है सदा अंत मे।
सो पहले मै देखूँ तो यह कैसी ध्वनि है ?
मन में धर गोमायु नाम का गीदड़ धीरज—
धीरे-धीरे सरक बढा आगे को तब तो
और नगाडा देख लगा करने वह अचरज।
कभी नहीं देखा था उसने बडा नगाडा
और बज रहा था वह अब तो हिली लता से,
गीदड पहुँचा पास, देख कर स्वयं बजाया,
तब तो निर्भय हुआ हृदय में बजा-बजा के।
अरे हो न हो यह जरूर पशु ही है कोई
इसके भीतर चर्बी और खून ही होगा,

होता, क्योकि गर्मी मे जब सरोवर सूख जाते हैं, समुद्र तब भी बढता रहता है। कहा भी है—

दुख मे जिसे नही दुख होता
सुख मे होता हर्ष नही,
रण मे जो भयभीत न होता
खोता अपना धैर्य नही।
ऐसे त्रिभुवन तिलक यशस्वी
बिरले सुत को बिरली ही,
माता देती जन्म धरा पर,
जय जय होती उसकी ही।
जो झुक जाते शक्ति देख कर
सारहीन होते लघु दीन,
वे मानव होते तृण जैसे
होते हैं मर्यादा हीन।
शक्ति दूसरे की निहार कर
जो रहते दृढ वीर नहीं,
वे तो लाल लाख के गहने
भले रूप पर मोल नहीं।

आपको धैर्य रखना चाहिये। केवल आवाज से डरना ठीक नहीं। क्योंकि—

समझा चर्बी भरी मिलेगी
पर जब भीतर किया प्रवेश,
चमड़ा और काठ ही देखा
वह तो था ऊपर का वेश।"

पिंगलक ने कहा : "यह क्या ?"

दमनक ने कहा : "यह कथा है।"

पिंगलक ने कहा : "मुझे सुनाओ।"

यह सोच कर पिंगलक दूसरे स्थान पर चला गया गया और अकेला बैठ कर दमनक की प्रतीक्षा करने लगा।

दमनक ने पहुँचकर जब संजीवक को देखा तो पहचान गया, कि यह तो बैल है। जरूर इसके बहाने मैं पिंगलक पर असर डालूँगा क्योंकि विपत्तियों मे पड़ा राजा ही मन्त्रियों के लिये अच्छा होता है। तभी मन्त्री सदा राजा पर आपत्तियाँ बनाये रखना ठीक समझते हैं। जैसा बिना बीमारी का आदमी वैद्य की इच्छा नहीं करता, उसी तरह बिना आपत्ति का राजा मन्त्रियों की इच्छा नहीं करता।

पिंगलक के पास दमनक लौट आया और बोला : "स्वामी मै उस जीव को देख आया।"

"क्या यह सत्य है ?"

"देव मनु ने कहा है कि राजा में सब देवता रहते हैं। क्या मै कभी आप से झूठ कह सकता हूँ ?"

"क्या उस महान् ने आपको दीन समझ कर मारा नहीं ?"

'कहा भी है—

शीश झुकाती हरी दूब की
नही फेंकता पवन उखाड़,
बड़े बड़ों से ही लड़ते हैं
छोटों का करते न बिगाड़।
जिनकी कनपटियों के मद पर
भौंरे मारा करते लात,
वे गजराज न उनसे लड़ते
नहीं सोचते उनकी बात।"

दमनक ने कहा : "वह महात्मा ही सही, और हम तो दीन ही हैं पर यदि आप कहें, तो मै उस जीव को आपका सेवक बना दूँ ?"

पिंगलक ने ठंडी साँस लेकर कहा : "क्या आप ऐसा कर सकते हैं ?"

खाऊँ इसको बैठ चैन से धीरे-धीरे
बड़ा मजा आयेगा फिर तो मगल होगा।

ऐसा सोच दॉत अपना तब जोर लगा कर
गड़ा नगाडे पर उसने जो दाबा ऊपर,
टूट गई दाढें फिर भी वह रुका न पल भर
खाल नगाडे की फाडी यों काट-काट कर।

फिर प्रसन्न मन वह जब उसके भीतर उतरा
काठ और चमडा निहार उसका मुँह उतरा,
तब अपने अज्ञान लोभ पर बहुत खिसाया
उसने रोते से स्वर मे यह वचन सुनाया—

समझा चर्बी भरी मिलेगी
पर जब भीतर किया प्रवेश,
चमडा और काठ ही देखा
वह तो था ऊपर का वेश।"

पिगलक ने कहा "मै किस तरह धीरज रखूँ। मेरा तो सारा परिवार डरा हुआ है। सब ही भागने की इच्छा कर रहे हैं?"

दमनक ने कहा : "हे स्वामी! यह इनका दोप नही। यह तो वैसा ही करते हैं जैसा इनका स्वामी करता है। घोडा, शास्त्र, शस्त्र, वीणा, वाणी, नर और नारी यह लोग जैसा भी पुरुप पाते हैं उसी के अनुसार योग्य या अयोग्य हो जाते हैं। आप पुरुपार्थ को धारण करिये। मै जरा देख तो आऊँ। फिर आप जैसा ठीक समझें वैसा करें।"

दमनक के जाने पर पिंगलक सोचने लगा : 'अहो! मैने उससे भेद कह कर अच्छा नहीं किया। कौन जाने उसकी नीयत कैसी हो? फिर आजकल वह अधिकार हीन भी है। कसम देकर सधि करने वाले पर कभी विश्वास नही करना चाहिये क्योंकि विश्वास पाकर राज पाने के लिये तैयार हुए वृत्रासुर को इन्द्र ने कसम से ही मार डाला था।'

यह सोच कर पिंगलक दूसरे स्थान पर चला गया गया और अकेला बैठ कर दमनक की प्रतीक्षा करने लगा।

दमनक ने पहुँचकर जब संजीवक को देखा तो पहचान गया, कि यह तो बैल है। जरूर इसके बहाने में पिंगलक पर असर डालूँगा क्योंकि विपत्तियों मे पड़ा राजा ही मत्रियों के लिये अच्छा होता है। तभी मत्री सदा राजा पर आपत्तियाँ बनाये रखना ठीक समझते हैं। जैसा बिना बीमारी का आदमी वैद्य की इच्छा नहीं करता, उसी तरह बिना आपत्ति का राजा मत्रियों की इच्छा नहीं करता।

पिंगलक के पास दमनक लौट आया और बोला: "स्वामी मैं उस जीव को देख आया।"

"क्या यह सत्य है?"

"देव मनु ने कहा है कि राजा में सब देवता रहते हैं। क्या मै कभी आप से झूठ कह सकता हूँ?"

"क्या उस महान् ने आपको दीन समझ कर मारा नहीं?"

'कहा भी है—

शीश झुकाती हरी दूब की
नहीं फेंकता पवन उखाड़,
बड़े बड़ों से ही लड़ते हैं
छोटों का करते न बिगाड़।
जिनकी कनपटियों के मद पर
भौंरे मारा करते लात,
वे गजराज न उनसे लड़ते
नहीं सोचते उनकी बात।"

दमनक ने कहा. "वह महात्मा ही सही, और हम तो दीन ही हैं पर यदि आप कहें, तो मै उस जीव को आपका सेवक बना दूँ?"

पिंगलक ने ठंडी साँस लेकर कहा: "क्या आप ऐसा कर सकते हैं?"

दमनक ने कहा "हे स्वामी!

हाथी, घोडे पैदल सेना,
अस्त्र-शस्त्र सब होते व्यर्थ,
असल सफलता की कुञ्जी है
एक अकेली बुद्धि समर्थ।"

पिङ्गलक ने कहा: "मैने तुम्हे अमात्य पद पर नियुक्त किया।"

यह सुन दमनक सजीवक के पास जाकर बोला "अरे दुष्ट बैल! तू निडर होकर क्यो गरज रहा है? चल, स्वामी पिङ्गलक बुला रहे हैं।"

सजीवक ने डर कर पूछा: "वे कौन है?"

"वे जगल के राजा सिह है।"

सजीवक ने अपने को मुर्दा मान लिया। उसने कहा. "हे भद्र! आप बडे अच्छे जीव लगत है। बोलने म चतुर हैं। मुझे ले ही जाना चाहते हैं तो अपने राजा से अभयदान दिला कर उन्हे मुझ पर प्रसन्न कर दीजिये।"

दमनक ने कहा: "हे वृषभ! तुम ठीक कहते हो क्योकि—

पृथ्वी, सागर, पर्वत सब का
मानव पा लेते है अत,
राजा के मन को तो कोई
जान न पाता अत परत!

सो तू यही रुका रह। मै लौट कर तुझे ले चलूँगा। मौका आने दे।"

दमनक ने पिंगलक के पास जाकर कहा: "हे स्वामी! वह कोई मामूली जीव नही है। वह तो भगवान शिव का वाहन वृषभ है। मैने उससे पूछा, तो उसने कहा कि उसे शिव भगवान ने यमुना तीर पर हरी दूब चरने की आज्ञा दी है।"

पिंगलक ने डर कर कहा. "तभी वह इस भयानक वन मे ऐसा गरजता है। फिर तुमने क्या कहा?"

दमनक ने कहा: "देव! मैने कहा कि मेरे स्वामी भी भगवती चण्डी के वाहन है। सो आप अतिथि बन कर रहें तो चलिये एक ही जगह खाते-पीते सुख से रहिये। उसने कहा: तो हमे स्वामी से अभयदान दिलायें।"

पिंगलक ने कहा : "धन्य, बुद्धिमान धन्य! मैंने अभयदान दिया। अब उससे भी मुझे अभयदान दिला कर जल्दी उसे यहीं ले आओ।"

दमनक ने संजीवक से जाकर नम्रता से कहा : "मित्र! चलिये। डरें नहीं। राजा की कृपा तो आप पर हुई पर मुझसे भी अच्छी तरह निर्वाह करियेगा। कहीं आपको घमंड न हो जाय।

तब दोनो पिंगलक के पास गये।

पिंगलक प्रसन्न हुआ। उसने जल पिया। फिर दोनों में मित्रता हो गई। पिंगलक जैसे मूर्ख को शास्त्रों के जानकार बुद्धिमान संजीवक ने अपनी बातों से प्रभावित किया। वनधर्म से दूर करके संजीवक ने उसे ग्राम धर्म में लगा दिया। अब वे दोनों अलग रहते। बाकी जानवर अलग। यहाँ तक कि करटक और दमनक भी दूर रखे जाने लगे। सिंह ने शिकार छोडकर घास खाना शुरू कर दिया। सारे जानवर भूखे रहने लगे क्योंकि न वह शिकार करता न मांस खाता।

यह सोचकर एक दिन करटक और दमनक आपस में बातें करने लगे।

दमनक ने कहा : "आर्य करटक! अब तो हम लोग भी मामूली हो गये। सब नौकर-चाकर भी छोड गये।"

करटक ने कहा : "तुमने ही इस घास खाने वाले बैल को महाराज के पास पहुँचा कर आग लगाई है।"

दमनक ने कहा : "मैं संजीवक को राजा पिंगलक से दूर कर दूँगा। मैं इनमें छिपे तरीके से फूट डालूँगा।"

करटक ने कहा "जो उन दोनों में से कोई ताड गया तो हम मार डाले जायेंगे।"

दमनक ने कहा : "लेकिन—

भाग्य नहीं हो साथ मगर
धीरज का कभी न त्याग करो,
अरे न जाने सागर में भी
कौन तीर पर पाँव धरो!

देव दैव कायर कहते हैं,
　　जिनमें होती शक्ति नहीं,
लक्ष्मी सदा उन्हें मिलती है
　　जो तजते उद्योग नहीं।
त्यागो दैव दैव का रोना
　　करो शक्ति पर तुम पुरुषार्थ!
न हो सिद्धि तो क्या चिंता है,
　　तुम न रहे दोषी अपदार्थ!

मैं तो उन्हें ऐसे अलग करूँगा कि वे जान नहीं सकेंगे।"

करटक ने कहा: "भद्र! फिर भी मुझे डर लगता है। सजीवक बड़ा बुद्धिमान है और पिंगलक बड़ा क्रोधी है। मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इस काम को कर सकोगे।"

दमनक ने कहा "उपाय से जो काम होता है वह पराक्रम से भी नहीं होता। क्योंकि—

अरे बुद्धि होती है जिसमें
　　वह ही है जग में बलवान।
बिना बुद्धि बल कभी न होता,
　　जग में पुजते हैं मतिमान।"

करटक ने कहा. "तो जाओ! तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।"

दमनक ने पिङ्गलक को जाकर प्रणाम किया और आगे बैठ गया।

पिङ्गलक ने कहा: "बहुत दिन बाद दिखायी दिये?"

दमनक ने कहा. "श्रीमान् के चरणों को मेरी कोई आवश्यकता नहीं है, तभी मैं नहीं आता। परन्तु राजकार्य में गड़बड़ियाँ हो गई हैं, इसीलिए बड़ा व्याकुल होकर आया हूँ।"

"क्यों क्या बात हुई?" पिङ्गलक ने चौंककर पूछा।

"भला बताइये तो कि आपने सजीवक मे क्या गुण देख कर उसे पाला है ? क्या इसकी शारीरिक शक्ति से आप शत्रुओ को मार सकते है ? इसे तो आप मार ही डालिये ।"

पिङ्गलक ने कहा "नही । मैने उसे अभयदान दिया है । क्योकि

अच्छा तो है यही कि पहले
प्रेम किसी से करे नहीं,
सदा निबाहे अन्त समय तक
अगर प्रीत जुड जाय कही ।
करे प्रेम फिर उसको त्यागे
लज्जा का होता कारण,
गिरने का भय नही भूमि पर
रहने वाले का हर क्षण ।
उपकारी का भला कर दिया
इसमे क्या विशेषता बोल ?
करे बुरो से भला वही है
सदा महात्मा सत अमोल !

मै उसके विद्रोह पर भी बुरा नही करूँगा ।"

दमनक ने कहा "हे स्वामी ! यह तो राजधर्म नहीं है । क्योकि—

धन, सामर्थ्य, मर्म के ज्ञाता
उद्योगी कर्मठ विद्वान,
आधा राज्य छीनने वाले
सेवक को जो तजे निदान,
उस राजा का राज्य न रहता
हो जाता है आप विनष्ट,
वह राजा रहता है जीवित
जो न हारता देख अदृष्ट !

सारे सेवक छोड़ गये हैं। आपने राजधर्म छोड़ दिया है। यह तिनके खाता है, आप मांस खाने वाले हैं। हम सब आपके कुटुम्बी भी मांस खाते । पर अब वह भी आपकी शक्ति के बाहर हो गया। आपकी सङ्गत ही ऐसी है—

जैसे सेवक होते वैसे
ही कर देते राजा को,
सङ्गत बड़ा असर करती है
हो सेवक या राजा हो!

क्योंकि—

तपे हुए लोहे के ऊपर
शेष न रहता जल का नाम,
कमल पत्र पर वही बूँद है
मोती सी लगती अभिराम!
वही स्वाति नक्षत्र काल में
सीप बीच मोती बनती,
अरे अधम, मध्यम, उत्तम गुण
सङ्गत में सङ्गति मिलती!
गाय चुराने गये भीष्म भी
दुर्योधन का पाकर साथ,
सङ्गत में तो सत बदलते
जब नीचों का होता साथ!

तभी कहा भी है—

जिसका हो अज्ञात [illegible]
जिसका जाना नहीं स्वभाव,
उसे न देवे कोई आश्रय
यही बुद्धिमानों का भाव!

राजा और रक दोनों को
स्वाद जीभ का एक समान
औ इसी के लिये मनुज है
यत्न किया करता थकता न!
झूँठ बोलता है जो मानव
नीचो की सेवा करता
जाता है विदेश वह सब क्यों?
इसी पेट के हित करता।"

पिगलक ने कहा : "दमनक! क्या प्रमाण है कि वह मुझे मारेगा? वह मेरे विरुद्ध है?"

दमनक ने कहा . "हे स्वामी! आज ही मेरे सामने उसने निश्चय किया है कि प्रातःकाल मै पिंगलक को मारूँगा। बस यही प्रमाण है। प्रात काल वह जब आपसे मिलने आयेगा तब आप देख लीजिये कि उसका मुँह और आँखें लाल होंगी, उसके होंठ फड़क रहे होंगे, और इधर-उधर देखता हुआ वह क्रूर दृष्टि से देखता हुआ आपके पास नहीं बैठेगा। आप ऐसा देखें तो जो ठीक समझें, वही करे।"

दमनक यह कह कर अब सजीवक के पास गया और प्रणाम करके बैठ गया।

सजीवक ने कहा : "कहो मित्र अच्छे तो हो? बहुत दिन बाद तुम घर मे आये हो। जो कहोगे सो देना मै ठीक समझूँगा। क्योंकि

इस धरती मे वही सभ्य हैं
हैं मतिमान और हैं धन्य,
जिनके नित्य मित्र बार्प्पार्थी
ते लेकर भाव अनन्य।"

! सेवकों की कुशल), कहा भी है—

दमनक ने कहा : "मित्र ! मेरे कारण तुम राजकुल मे घुसे हो, इसलिये कहता हूँ कि तुम पर पिंगलक की आँख है। आज एकात मे उसने मुझसे कहा कि मै सजीवक को मार कर जानवरो को खिलाकर तृप्त करूँगा। "मैने कहा : "हे स्वामी यह ठीक नही है। क्योकि—

ब्राह्मण की हत्या करके भी
प्रायश्चित्त शुद्ध करता।
किंतु मित्र द्रोही को तो
सच कोई नही शुद्ध करता।

तब उसने क्रोध से मुझसे कहा "अरे नीच ! वह घसखाआ है, हम मॅसखावे हैं। वह तो हमारा स्वाभाविक शत्रु है, शिकार है। हम तो उसे फुसला रहे हैं। जो सहज न मारा जाय उसे तरकीब से मारना चाहिये।"

सजीवक ने सुना तो उसका हृदय ऐसा हो गया जैसे वज्र हो गया हो। उसने सोचा—

'सदा मित्रता करे उन्हा से
जो धन, कुल मे मिले समान,
सबल निर्बल के संबधो मे
होती है सदैव ही हानि।
मृग मृग के ही, गाय गाय के,
अश्व अश्व के रहते साथ,
मूर्ख मूर्ख के, बुद्धिमान जब
रहते हैं समान के साथ।
जो कारण से शत्रु बने तो
उसका तो है सदा उपाय,
किंतु अकारण शत्रु बने जो,
उससे मिलन सदा निरुपाय।'

दमनक ने कहा : "तुम चिंता क्यो करते हो ? उसे तुम जाकर मनाओ। या फिर कहीं चले जाओ।"

सत्य, झूठ, मिठबोली, ककश,
हिसा, दया, स्वार्थ से युक्त,
राजाओ को नीति जो कि है
दान, प्राप्ति, व्यय से सयुक्त,
उसे सदा वश्या-सा समझो
हर क्षण रूप बदलती है,
तरह तरह की बाधाओ मे
वह ऐसे ही पलती है।
बिना उपद्रव नहीं कभी
पाता महान भी ले सम्मान,
मनुज सर्प की पूजा करते
नही गरुड़ का करते मान।"

यह सुन कर पिगलक ने सजीवक के लिये हो रहे दुख को त्याग दिया और दमनक को मत्री बनाया और सुख से राज्य करने लगा।

"और", विष्णु शर्मा ने कहा "इस प्रकार मित्र भेद नामक तत्र समाप्त हुआ।"

इस कथा को सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुए और उनमे बुद्धि की पहली किरण भीतर ही भीतर उजाला करने लगी।

तब विष्णु शर्मा प्रसन्न हुआ और उसने कहा : "अब बाकी के चार तत्र मै तुम्हे और सुनाऊँगा। इस समय जाकर विश्राम करो।"

राजकुमार प्रणाम करके उठ गये।

— — —

सत्य, झूठ, मिठ
हिसा, दया
राजाओ की नीति
दान, प्राप्ति
उसे सदा वश्या
हर क्षण
तरह तरह की
वह ऐसे
बिना उपद्रव
पाता महान
मनुज सर्प की
नही गरुड़

यह सुन कर पिगलक ने सजीव और दमनक को मत्री बनाया और सुर

"और", विष्णु शर्मा ने कहा समाप्त हुआ।"

इस कथा को सुनकर राजकुमार पहली किरण भीतर ही भीतर उजाला

तब विष्णु शर्मा प्रसन्न हुआ और मे तुम्हे और सुनाऊँगा। इस समय ज

राजकुमार प्रणाम करके उठ गये

भयभीत नेत्रों से देखा कि पलक मारते ही नार्वे का एरिक और उसका साथी अजदहे के मुँह मे जाकर गायब हो गये। भय से इसका हाल बुरा था। अब एक पग भी आगे रखने का किसी को साहस न हुआ। डेनमार्क का एरिक स्वय भय से थर-थर कॉप रहा था। तत्पश्चात् अपने सब साथियो को लेकर वह वहॉ से लौट पड़ा। नार्वे के एरिक और उसके साथी की मृत्यु पर बहुत दुख और मातम मनाया गया। जिस रास्ते से गये थे उसी रास्ते से होकर खतरनाक जगलो और पहाडी दर्रो को पार करते हुए ओडेन-सेकर पहुँचने इरादा पूरी तरह से छोड कर यह लोग अपने देश वापस आ गये।

डेनमार्क का एरिक लौट कर पुन भोग-विलास मे लिप्त हो गया और उस कल्पित स्वर्ग के बारे मे कही गयी बातों को एकदम भूल गया।

परन्तु बहुत दिनो तक उसकी आज्ञा से डेनमार्क मे नार्वे के एरिक के लिये मातम मनाया जाता रहा। इन लोगों ने लौट कर नार्वे देश मे भी उनके शहजादे की मृत्यु का समाचार भेज दिया जिसे सुन कर वहॉ भी अपार दुख फैल गया।

कई वर्ष बीत गये। एक दिन प्रभात काल मे एक सुन्दर अजनबी अपने एक साथी को लेकर नार्वे के राजा के यहॉ पहुँचा। वह एरिक था। लोगों ने उसे देखा और भय से भागे। एरिक जो कि अजदेह के मुँह मे मर चुका था, अब निश्चय ही भूत बन कर आया है यही उनकी धारणा थी। चारों ओर भगदड मच गई परन्तु उसी समय ऐरिक ने एक ऊँचे टीले पर चढ कर चिल्ला कर कहा :

"मित्रो मै मरा नहीं हूॅ, मै भूत नही हूँ, देखो मै तुम्हारी ही भॉति हाड और मास का बना हुआ जीवित मनुष्य हूँ। मुझे अजदहे ने खाया नहीं था बल्कि अजदहे के मुख मे होकर ही मै ओडेन सेकर के अमर-ज्योति से प्रकाशित देश में जा पहुॅचा था।"

उसकी वाणी मे ऐसा प्रभाव था कि भागते हुऐ लोग उसे सुन कर ठहर गये और लौट कर उसकी ओर देखने लगे। एरिक के चारो ओर भीड़ लग गई और तब उन्होने बहुत खुशी के साथ उसका स्वागत किया। वह

यह लोग चलते-चलते भारतवर्ष से भी आगे निकल गये। तब एक ऐसे काले और अँधेरे जंगल में जा पहुँचे जहाँ कभी सूर्य नहीं उगता था। उस स्थान में दिन के समय आकाश में तारे चमकते थे। विकराल जीव जन्तु इनके सामने आते और इन्हें डराते परन्तु यह लोग उन सब से नहीं रुके और निरन्तर आगे बढ़ते ही गये। आखिरकार एक दिन अँधेरा खत्म हुआ और यह लोग ऐसे स्थान में पहुँचे जो सूर्य के प्रकाश से जगमगा रहा था। इन्होंने ईश्वर का स्मरण किया और आगे बढ़े। थोड़ी देर बाद एक नदी के किनारे पहुँचे। नदी का पाट काफी चौड़ा था, जिसे तैर कर पार करना असम्भव था। दूर पूर्व दिशा की ओर पत्थरों से बना हुआ एक पुल इन्हें दिखलाई दिया और यह लोग तब उसी तरफ चल पड़े। इस पुल के दोनों ओर हरियाली दूर-दूर तक फैली हुई थी। मनोरम दृश्य था। यह लोग पास आ गये। परन्तु उसी समय इन्होंने देखा कि पुल के बीच मे एक भयानक अजदहा अपने मृत्यु के समान भयानक जबड़े को खोल कर इनकी ओर ललचाई दृष्टि से देख रहा है। उसे देख कर सभी भयभीत हो उठे। डेनमार्क के एरिक ने उच्च स्वर से उस अजदहे से पूछा, "तू कौन है जो अपना मुँह खोले इस तरह हमारी ओर भयंकर अग्नि की ज्वाला और विषैला काला धुँआ छोड़ रहा है। क्या नहीं हमारे रास्ते से हटता ?"

परन्तु अजदहे ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया और उसी भाँति आग की लपटें छोड़ता रहा। तब डेनमार्क के एरिक ने अपने साथियों से कहा :

"मित्रो मेरी राय मे हम लोगों को यहाँ से वापस चल देना चाहिये क्योंकि इस अजदहे द्वारा इस सुदूर देश मे मारे जाने मे भला कौन सा यश प्राप्त हो सकता है।" अभी वह अपनी बात का उत्तर पाने की प्रतीक्षा कर ही रहा कि बड़े जोर से हुंकार भरता हुआ नोर्वे का एरिक नंगी तलवार लेकर झपटता हुआ आगे बढ़ गया। उसने अपने एक साथी का दाहिना हाथ पकड़ लिया और उसे घसीटता हुआ वह अजदहे की तरफ बढ़ा चला गया। जितने में कि यह लोग उन्हें वापस आने के लिये चिल्लाते या दौड़ कर रोकते इन्होंने

उससे गले मिले, उस पर फूलों की वर्षा की और महलों में ले गये। वहाँ स्नान, भोजन और विश्राम के बाद एरिक ने उन्हें अपनी यात्रा का पूरा वर्णन सुनाया। वह बोला :

"अजदहे के मुँह में घुसते ही घने धूँये के कारण हमारी आँखें बन्द हो गई परन्तु हमारे पैरों के सामने कोई रुकावट न होने के कारण हम बढ़ते ही चले गये। थोड़ी ही दूर जाने के बाद शीतल मन्द समीर हमारे शरीरों से लगने लगी और धीरे-धीरे धुआँ छिटक गया। हमने देखा कि पुल पार हो गया है और हम एक ऐसे स्थान में जा पहुँचे हैं जो स्वर्ग के प्रकाश से देदीप्यमान हो रहा है। चारों ओर सुन्दर हरियाली फैली हुई है जिसका दूर-दूर तक अन्त दिखाई नहीं देता। बेहतरीन फूल अपनी चटक और महक से वायुमंडल को मदहोश बना रहे हैं, उस देश में ठंड नहीं थी वहाँ हमेशा गर्मियों का-सा आनन्द छाया रहता था। हम लोग आगे बढ़ते ही चले गये। आश्चर्य की बात थी कि इतना प्रकाश रहते हुऐ भी वहाँ किसी वस्तु की छाया नहीं पड़ती थी। न पेड़, न फूल, न वहाँ के जीवित प्राणियों की किसी भी प्रकार की छाया हमने देखी। थोड़ी दूर जाने के उपरान्त हमने हवा में अधर में लटकी हुई एक सुन्दर और अद्भुत मीनार देखी। एक सोने की सीढ़ी वहाँ से नीचे लटक रही थी जिस पर चढ़ कर हम लोग ऊपर पहुँचे। द्वार खुला हुआ था। हम लोग धड़कते हुऐ हृदय से अन्दर घुसे। एक बहुत बड़े सोने के बने हुये कमरे में मोटी मखमल का फर्श बिछा हुआ था जिस पर गहरा सुनहरा काम हो रहा था। जवाहरातों से जड़ी हुई एक सुनहरी बड़ी मेज पर चाँदी की थालियों में बेहतरीन खाना परोसा हुआ रक्खा था। खाना गर्म था, जिसमें से भाप निकल रही थी। सोने की नक्काशीदार प्यालियों में पुरानी और मीठी शराब भरी रक्खी थी। मन्द-मन्द सुगन्ध से पूरा कमरा महक रहा था और अदृश्य मधुर संगीत सुनाई पड़ रहा था। मैंने और मेरे साथी ने भर पेट भोजन किया और इतनी शराब पी कि हम नशे में झूमने लगे। जब उठ कर चले तो सामने ही चाँदी की बनी सीढ़ियाँ नजर आईं। हम झूमते हुऐ आनन्द से विभोर होकर उन पर चढ़ कर ऊपर गये जहाँ एक अत्यन्त सुन्दर और सजे हुऐ कमरे में मणि-माणिक्यों से जड़े हुऐ सोने के दो पलंग पड़े थे, उन पर

नर्म परों के मोटे गद्दे बिछे हुऐ थे। हम उन पर लेट गये और तुरन्त सो गये। अपने मन में हम बहुत खुश हो रहे थे कि आखिरकार हम ओडेन सेकर में जा पहुँचे थे।"

सुनने वाले हैरान होकर एरिक की बातें सुन रहे थे। वह देर तक चुप रहा, तब उसकी स्त्री ने उससे पूछा "फिर क्या हुआ?"

वह जैसे तंद्रा से जाग उठा और बोला :

"तब मैं सो गया। स्वप्न में मेरे सामने दिव्य-ज्योति से चमकता हुआ एक सुन्दर युवक आकर खड़ा हुआ। पूछने पर उसने कहा कि वह मेरी आत्मा का रक्षक था। उसने मुझसे पूछा कि मैं वहीं रहना चाहता था अथवा अपने देश को वापस जाना चाहता हूँ। मैंने वापस आने के लिए ही उससे कहा। यह सुन कर उसने कहा कि मैं अभी ओडेन सेकर में नहीं पहुँचा क्योंकि वह स्थान अभी और दूर है। उसी की जुबानी मालूम हुआ कि उस स्थान की सुन्दरता का शब्दों द्वारा वर्णन करना कठिन था क्योंकि जो कुछ मैंने उस देश की भूमि पर और उस मीनार में देखा था वह सभी ओडेन सेकर की सुन्दरता के सामने तुच्छ थे। वहाँ जाकर कोई वापस नहीं आ सकता था। मेरी इच्छा पर तब मुझे वहीं से वापिस कर दिया गया जब मैं जगा तो मैंने अपने को नार्वे के बाहर एक बाग में लेटे हुऐ पाया। मेरे साथ ही मेरा साथी लेटा हुआ था। वहाँ से हम उठे और सीधे यहाँ चले आये।'

उसकी अद्भुत यात्रा के वर्णन को सुन कर सभी ने बहुत प्रसन्नता प्रगट की और उसे सफल यात्री की उपाधि देकर सभी ने उसकी प्रशंसा की।

डेनमार्क का एरिक जिसने नौर्वे के एरिक की लौटने की बात अब सुन ली थी उसकी सफलता पर जलने लगा। परन्तु यशस्वी नौर्वे के एरिक को ऐसी तुच्छ बातों की तनिक भी परवाह नहीं थी। अपने ज्ञान और शौर्य के कारण इज्जत पाता हुआ वह आनन्द से राज्य करने लगा।

वौडविल्ड का अमर प्रेम

इगलैएड मे वीलेन्ड सेक्सन प्रसिद्ध लुहार था। वह परियो के देश का शहजादा भी कहलाता था। सैक्सनी की स्त्रियाँ वीलेन्ड का नाम लेकर नाच-नाच कर उसकी जीवन गाथा गाती हैं। वीलेन्ड बड़ा पराक्रमी, सुन्दर और चतुर कारीगर था। अन्य स्थानो पर उसे यञ्जासे इत्यादि नामा से पुकारा जाता था। उसके पास अगाध धन था और यह बात प्रसिद्ध थी कि वह उसे पहाडो की भयकर गुफाओ मे कही छुपा कर रखता था परन्तु निश्चित स्थान किसी को मालूम नही था।

स्वीडन के राजा निथुड ने, जिसे अन्य देशो मे माईमर के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, जब सुना कि वीलेन्ड के पास बेशुमार दौलत है तो वह उसे पाने के लिए लालायित हो उठा परन्तु वह यह भी जानता था कि वीलेन्ड से साधारणतया कुछ भी प्राप्त कर लेना असम्भव था। इसलिए उस पर अचानक हमला बोल कर उसे पकड लेने के लिए उसने अपने कई सैनिक वहाँ भेजे। अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर चमचमाते लोहे के शिर-त्राण और कवच पहने वह सैनिक अपने ऊँचे और बलिष्ट घोडो को भगाते हुए खूँखार भेडियो से घिरी हुई उस पहाड की घाटी मे ऊबड खाबड जमीन को लाँघते हुए वीलेन्ड के भवन पर पहुँचे और बडे साहस के साथ नगी तलवारे घुमाते हुए अन्दर घुस गये। भाग्यवश वीलेन्ड उस समय घर पर नही था। वह प्रसिद्ध धनुधर उस समय दूर कही जगलो मे शिकार खेलने गया हुआ था। सैनिको ने उसकी अनुपस्थिति मे उसके भवन मे घुस कर उसके खजाने को ढूँढा। खजाना उन्हे नही मिला परन्तु उसकी लोहसारी के बडे कमरे मे दीवाल पर सोने के छल्लो से बनी एक बहुत बडी जजीर लटकती हुई अवश्य मिली। उसमे सात सौ एक सोने के छल्ले थे जिन्हे किसी समय वीलेन्ड ने बनाया था। उसकी वास्तविकता यह थी कि पहले वह एक ही छल्ला था परन्तु जादू और मन्त्रो से पूरित होने के कारण हर नवी

रात्रि को उसमें से वैसा ही एक नया छल्ला उत्पन्न हो जाता था। इसी प्रकार अब उसमें सात सौ छल्ले हो गये और वह एक बहुत बडी जंजीर बन गई थी। सैनिक उसे देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसमें से एक छल्ला निकाल कर रख लिया और बाकी जजीर वहीं दीवाल पर टाँग दी। तत्पश्चात् वह सब इधर उधर छिप गये। जब शाम हुई, पसीने से लथपथ घोडे को भगाता हुआ वीलेन्ड वापस आया। वह सीधा घोडे से उतर कर अपनी लोहसारी में पहुँचा उसकी तेज निगाहों ने दीवाल पर टँगी हुई उस सोने की जजीर म कुछ फर्क पाये और वह तुरन्त जजीर को नीचे उतार कर छल्ले गिनने लगा। शीघ्र ही उसे पता चल गया कि उनमे से एक छल्ला गायब था परन्तु उसी समय उसने सोचा कि शायद उसकी परी देश की रानी स्त्री घर लौट आई हो और उसने अपने लिये बनाया हुआ वह छल्ला निकाल लिया हो। थका-माँदा वह जाकर अपनी शैया पर लेट गया और देर तक उस परी की सुन्दरता के बारे मे सोचता रहा और मन में खुश होता रहा। तत्पश्चात् वह सो गया।

निथुड के सैनिकों ने अच्छा मौका देख कर सोते हुए वीलेन्ड के हाथ और पैर कस कर जजीरों से बाँध दिये। जब वह जागा तो उसके दुख का ठिकाना नहीं था। उसने बहुत हाथ-पैर फेंके और छूटने का प्रयत्न किया परन्तु वह छूट न सका। निथुड के सैनिकों ने उसे गैंडे की खाल से बने हुए कोडे से मारा और जब वह पीडा और अपमान से चिल्लाया तो अट्टहास करते हुये उन्होंने उसे बाँध कर घोड़े पर चढ़ा दिया और उसे अपने मालिक के पास ले चले।

निथुड ने वीलेन्ड को समुद्र के बीच एक छोटे टापू पर कैद कर दिया जहाँ उसको जबर्दस्ती बेहतरीन हथियार और आभूषण बनाने पडते थे। वीलेन्ड वहाँ रह कर क्षोभ से भर उठा और क्रोध से फुँफकार हुआ निथुड से बदला लेने का मौका देखने लगा। वह अकसर चिल्लाया करता :

"मेरी कला द्वारा निर्मित तलवार अब उस दुष्ट निथुड की कमर से लटकी रहती है हाय वह चमकती हुई तलवार अब मेरी नहीं रही।"

वौडविल्ड का अमर प्रम

इगलैण्ड मे वीलेन्ड सेक्सन प्रसिद्ध लुहार था। वह परियो के देश का शहजादा भी कहलाता था। सैक्सनी की स्त्रियाँ वीलेन्ड का नाम लेकर नाच-नाच कर उसकी जीवन गाथा गाती हैं। वीलेन्ड बड़ा पराक्रमी, सुन्दर और चतुर कारीगर था। अन्य स्थानो पर उसे थञ्जासे इत्यादि नामो से पुकारा जाता था। उसके पास अगाध धन था और यह बात प्रसिद्ध थी कि वह उसे पहाडो की भयकर गुफाओ मे कहीं छुपा कर रखता था परन्तु निश्चित स्थान किसी को मालूम नही था।

स्वीडन के राजा निथुड ने, जिसे अन्य देशो मे माईमर के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, जब सुना कि वीलेन्ड के पास बेशुमार दौलत है तो वह उसे पाने के लिए लालायित हो उठा परन्तु वह यह भी जानता था कि वीलेन्ड से साधारणतया कुछ भी प्राप्त कर लेना असम्भव था। इसलिए उस पर अचानक हमला बोल कर उसे पकड लेने के लिए उसने अपने कई सैनिक वहाँ भेजे। अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर चमचमाते लोहे के शिरस्त्राण और कवच पहने वह सैनिक अपने ऊँचे और बलिष्ट घोड़ो को भगाते हुए खूँख्वार भेडियो से घिरी हुई उस पहाड की घाटी मे ऊबड खाबड जमीन को लाँघते हुए वीलेन्ड के भवन पर पहुँचे और बडे साहस के साथ नगी तलवारे घुमाते हुए अन्दर घुस गये। भाग्यवश वीलेन्ड उस समय घर पर नहीं था। वह प्रसिद्ध धनुधर उस समय दूर कहीं जगलो मे शिकार खेलने गया हुआ था। सैनिकों ने उसकी अनुपस्थिति मे उसके भवन मे घुस कर उसके खजाने को ढूँढा। खजाना उन्हे नहीं मिला परन्तु उसकी लोहसारी के बडे कमरे मे दीवाल पर सोने के छल्लो से बनी एक बहुत बडी जजीर लटकती हुई अवश्य मिली। उसमे सात सौ एक सोने के छल्ले थे जिन्हे किसी समय वीलेन्ड ने बनाया था। उसकी वास्तविकता यह थी कि पहले वह एक ही छल्ला था परन्तु जादू और मन्त्रो से पूरित होने के कारण हर नगी

रात्रि को उसमें से वैसा ही एक नया छल्ला उत्पन्न हो जाता था। इसी प्रकार अब उसमें सात सौ छल्ले हो गये और वह एक बहुत बडी जंजीर बन गई थी। सैनिक उसे देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसमें से एक छल्ला निकाल कर रख लिया और बाकी जजीर वहीं दीवाल पर टाँग दी। तत्पश्चात् वह सब इधर-उधर छिप गये। जब शाम हुई, पसीने से लथपथ घोडे को भगाता हुआ वीलेन्ड वापस आया। वह सीधा घोडे से उतर कर अपनी लोहसारी में पहुँचा उसकी तेज निगाहों ने दीवाल पर टँगी हुई उस सोने की जजीर में कुछ फर्क पाये और वह तुरन्त जजीर को नीचे उतार कर छल्ले गिनने लगा। शीघ्र ही उसे पता चल गया कि उनमें से एक छल्ला गायब था परन्तु उसी समय उसने सोचा कि शायद उसकी परी देश की रानी स्त्री घर लौट आई हो और उसने अपने लिये बनाया हुआ वह छल्ला निकाल लिया हो। थका-माँदा वह जाकर अपनी शैया पर लेट गया और देर तक उस परी की सुन्दरता के बारे मे सोचता रहा और मन में खुश होता रहा। तत्पश्चात् वह सो गया।

निथुड के सैनिकों ने अच्छा मौका देख कर सोते हुए वीलेन्ड के हाथ और पैर कस कर जजीरों से बाँध दिये। जब वह जागा तो उसके दुख का ठिकाना नहीं था। उसने बहुत हाथ-पैर फेंके और छूटने का प्रयत्न किया परन्तु वह छूट न सका। निथुड के सैनिकों ने उसे गैंडे की खाल से बने हुए कोडे से मारा और जब वह पीडा और अपमान से चिल्लाया तो अट्टहास करते हुये उन्होने उसे बाँध कर घोड़े पर चढ़ा दिया और उसे अपने मालिक के पास ले चले।

निथुड ने वीलेन्ड को समुद्र के बीच एक छोटे टापू पर कैद कर दिया जहाँ उसको जबर्दस्ती बेहतरीन हथियार और आभूषण बनाने पडते थे। वीलेन्ड वहाँ रह कर क्षोभ से भर उठा और क्रोध से फुँफकार हुआ निथुड से बदला लेने का मौका देखने लगा। वह अकसर चिल्लाया करता :

"मेरी कला द्वारा निर्मित तलवार अब उस दुष्ट निथुड की कमर से लटकी रहती है हाय वह चमकती हुई तलवार अब मेरी नहीं रही।"

"उसकी रानी बोडविल्ड मेरी परी रानी की अँगूठी पहनती है मैं निश्चय ही ,उससे बदला लिये बिना चैन नहीं पा सकता पर कोई बात नहीं है उस अँगूठी को पहनने या बोडविल्ड मुझसे प्रेम किये बिना नहीं रह सकेगी। मेरे जादू का असर होना उस पर अवश्यभावी है।"

वह अपनी लोहसारी मे रात और दिन हथोड़ा चलाया करता था। न उसे दिन मे चैन आता था न वह रात को सोता था। निरन्तर हथोड़े की चोटों से विभिन्न अस्त्र उसकी लोहसारी मे से निकलते रहते थे। एक दिन प्रात काल राजा निथुड के दो छोटे लड़के कौतूहलवश उसकी लोहसारी मे नये नये औजारो और आभूषणों को बनते हुए देखने पहुँचे। उस समय उनके साथ और कोई नहीं था। वीलेन्ड ने मौका देखा और उन्हे काट डाला तत्पश्चात् उनके सिर उधेड कर अन्दर से उनकी खोपडियाँ निकाल लीं बाकी शरीरो को भट्टी मे झोक दिया। उन खोपडियो को खूब खूबसूरती से काट कर ऊपर से चँदवे से दो शराब पीने के प्याले बनाये और उनके किनारो को बेहतरीन काम की हुई सोने की बेंतो से मढ दिया। तत्पश्चात् एक सैनिक को बुलाकर उन दोनो प्यालो को राजा निथुड और रानी बाडविल्ड के पास बतौर तोहफे भेज दिया। राजा और रानी उन खूबसूरत प्यालो को देखकर बहुत खुश हुये और उनमे भर-भरकर मीठी शराब पीने लगे। उन्हे क्या मालूम था कि वह प्याले उन्ही के पुत्रों के सिरो से बने थे। उस अँगूठी के पहनने के शुरू से सुन्दरी रानी बोडविल्ड वीलेन्ड के प्रति आसक्त रहती थी। अब उस सुन्दर प्याले मे शराब पीकर वह ऐसी दीवानी हो गई कि राजा नियुड से निगाह बचा कर वह सीधी वीलेन्ड के पास उसकी लोहसारी मे जा पहुँची और उससे प्रेम प्रदर्शन करने लगी। वीलेन्ड ने बदले की भावना मन मे रखते हुए उससे अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर लिया और प्रत्यक्ष मे वह उसका सच्चा प्रेमी बन कर रहने लगा।

अब अक्सर बोडविल्ड उसके पास छिप-छिप कर आया करती थी। आखिर यह बात एक न एक दिन खुलनी ही थी। विश्वस्त दासो द्वारा नियुड को सारी बातों का पता चल गया। क्रोधपूर्वक उसने वीलेन्ड को मार डालने

के लिए कुछ सैनिक भेजे परन्तु जब वह लोहसारी में पहुँचे उस समय रानी बौडविल्ड वहीं थी। उसे देख कर वह अदब के साथ ठिठक कर खडे हो गये। रानी ने उन चारो सैनिक को बारी-बारी से अन्दर ले जाकर कृत्रिम प्रेम का उनसे अभिनय किया तथा उन्हें पीने के लिए शराब दी जिसे पीकर वह सभी बेहोश हो गये। तत्पश्चात् उसने उन सभी के सिर काट डाले जिन्हे उधेड कर वीलेन्ड ने पहले की भाँति शराब पीने के चार प्याले बना डाले परन्तु अबकी बार उनके किनारो को चाँदी के फूलों से मढा। पहरे वाले सब सैनिकों को बुला कर वह चारों प्याले पुनः राजा निथुड के पास भेज दिये गये। रानी बौडविल्ड उसके प्रेम मे ऐसी मदहोश हो गयी थी कि अब उसे अपने पति की इस प्रकार की हरकतें असह्य लगती थी। बल्कि वास्तविकता यहाँ तक पहुँच गई थी कि रानी बौडविल्ड को निथुड का जीवित रहना ही कंटक के समान मालूम होने लगा था। उसने अपने प्रेमी वीलेन्ड से मिल कर षडयन्त्र रचा। वह राजा के पास पहुँची और उसने वीलेन्ड के विरुद्ध बहुत सी बातें उससे कही और उसे उकसाया कि वह स्वय जाकर उसकी हत्या करे। जब निथुड नगी तलवार लेकर वीलेन्ड को मारने उसकी लोहसारी मे घुसा तो वह जो पहले से ही द्वार के पीछे छिपी खडी थी झपट कर निथुड के ऊपर पीछे से कूदी और विद्यु त गति से उसने अपने हाथ का लम्बा और तेज छुरा अपने पति की बगल मे मूठ तक घुसा दिया। चीख मार कर निथुड धरती पर गिर गया। वीलेन्ड जो सारा दृश्य दूर से देख रहा था। अब भाग कर गिरे हुए निथुड के पास आया। उसने बाघ-नख पहन कर निथुड का कलेजा फाड डाला। प्रतिहिंसा की भावना मे वह भयानक हो रहा था। रानी बौडविल्ड के देखते-देखते उसने निथुड का बहता हुआ गर्म लोहू चुल्लू मे भर कर पी लिया और फिर झटके के साथ उसका कलेजा तोड़ कर चबाकर उसे खा लिया। रानी बौडविल्ड उस समय उसके रूप को देख कर डर गई परन्तु दूसरे ही दिन उसका वह डर बिलकुल जाता रहा क्योकि वीलेन्ड अब बिलकुल स्वस्थ हो चुका था। अब रानी स्वच्छन्द और आनन्दपूर्वक उसके साथ विहार करने लगी परन्तु कभी कभी उसे अपने खोये हुये दोनो पुत्रो की याद सताती जिनके बारे मे वह अब भी अनभिज्ञ

थी। एकान्त में वह उनकी याद में रोती थी और जब दुख असह्य हो जाता तो वह अपने प्रेमी के पास दिल बहलाने चली जाती थी। उसे क्या मालूम था कि उसका वही प्रेमी उसके पुत्रों की मृत्यु का कारण था।

वीलेन्ड की लोहसारी अब भी चालू थी। एक दिन मजबूत लोहा गला कर उसने एक बाज के पंखों का विचित्र चोला बनाया और उसमें जादू फूँक दिया। जब वह बन कर तैयार हुआ तो उसे स्वयं पहन लिया। तत्पश्चात बिना किसी से कुछ कहे-सुने परों को तेजी से चलाते हुये वह वातायन से बाहर निकल गया। शीघ्र ही आकाश मार्ग से उड़ता हुआ वह परियों के देश में बने अपने भवन में जा पहुँचा।

रानी बाडविल्ड जो कि अब भी वीलेन्ड की दी हुई जादू की अँगूठी पहने रहती थी जब संध्या समय अपने प्रेमी के पास पहुँची तो वहाँ उसे वह न मिला। वह घबराई और उसे इधर-उधर ढूँढने लगी। लोहसारी के ठीक दाहिनी ओर काले लोहे पर चाँदी के अक्षरों से कुछ लिखा देख कर वह उसी ओर मुड़ी और झुक कर देखने व उसे पढ़ने लगी। जो कुछ उसने पढ़ा उससे उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी और वह गिर कर बेहोश हो गई। उस संदेश में वीलेन्ड ने निथुड और उसके पुत्रों का पूरा विवरण तथा बाडविल्ड के प्रति अपने कृत्रिम प्रेम का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया था। अन्त में यह भी लिखा था कि पूरा बदला लेकर मैं जा रहा हूँ।

रानी बाडविल्ड अपार दुख से भर उठी और अपने मरे हुए पुत्रों, अपने प्रेमी की याद और अपने पति के साथ विश्वासघात की बातें याद कर कर रोने लगी।

वीलेन्ड चला तो आया था परन्तु रह रह कर उसे बाडविल्ड की याद सताया करती थी। अब वह अपनी परी रानी के सहवास में सुख का अनुभव नहीं करता था परन्तु वह मजबूर था और लौट कर बाडविल्ड के पास नहीं जा सकता था। वह भी दुखी रहने लगा। उसके पास अपार धन था जिसकी रक्षा वह बड़ी तत्परता के साथ करता था।

इन असगार्ड देवताओं के विरुद्ध इवेल्डे और मुग्धुर, आरवेंडिल और गाहर्दी युद्ध करने के लिए गये तो जाने से उकता कर और अपने पिता की

सृष्टि की आयु

जब राजा रेगिस को गर्व हो गया कि उसके समान बुद्धिमान और अनुभवी मनुष्य ससार मे दूसरा नही था तो भरी सभा मे उसने स्वत कहा

"आह मै कितना पुराना हूँ।" उसी समय एक बहुत छोटी चिड़िया उड़ती हुई आई और उसके सामने बैठ गई। वह बोली :

"राजा जब मे पहले आई थी उस समय इस स्थान पर यह तेरा महल तो नही था। उस समय तो मुझे यहाँ एक साधु ईश्वर का भजन करता हुआ मिला था। शायद तेरा यह महल अभी नया ही बना है ?"

राजा ने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा और पूछा :

"तू पहले कब आई थी ? यह महल तो सैकड़ो वर्षों से यहीं खड़ा है।" और वह कुछ अविश्वास की दृष्टि से चिड़िया को देखने लगा। चिड़िया ने कहा

"हे रेगिस। विश्व की आयु और सृष्टि के आरम्भ के बारे मे शायद तू कुछ भी नहीं जानता। तू बिल्कुल ही बच्चा है और इतना अकिंचन और भुनगे के सदृश्य हल्का और कम उम्र वाला है कि इस ससार मे बीते हुए युगो के मुकाबले मे तेरी कोई गणना नहीं हो सकती।"

रेगिस ने विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखा, उसकी बातें उसकी समझ मे नहीं आई थीं। चिड़िया बोली

"रेगिस! मै तुझे कुछ उसका अन्दाज बताऊँ सुन सुदूर उत्तर मे एक देश है जिसका नाम स्विथजोड है। वहाँ एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा है जो कि सौ मील लम्बा और सौ मील ही ऊँचा है।

निश्चय कर लिया कि चाहे वह जीवित रहे या मर जाय, अवश्य ही वहाँ जाकर उस छिपे हुए रहस्य की खोज करेगा। और तब से उन्हीं विचारों में खोया हुआ वहाँ जाने के प्रयत्न करने लगा। गिगर के देश को पहुँचने के लिए भयंकर तूफानों में थपेड़े मारते हुए समुद्र को पार करना पड़ता था। समुद्र भयानक था और सारी पृथ्वी के चारों ओर फैला हुआ था। जहाज पर बैठ कर उसको पार करना कठिनतम कार्य था। इतनी विकट यात्रा थी कि उससे शायद ही कोई जीवित वापस लौटता। उस देश के पास पहुँचते पहुँचते गहनतम अन्धकार छा जाता था क्योंकि वहाँ सूर्य कभी उदय नहीं होता था। वहाँ न प्रकाश था, न गर्मी, केवल भयानक ठंड ही ठंड थी, जिससे वहाँ निरन्तर बर्फ पड़ा करती थी परन्तु गार्म नहीं डरा। वह उन कष्टों को ... के लिये तैयार था। हालाँकि उस देश में जहाँ हमेशा रात ही रात

आसानी से मार कर खाये जा सकते थे। उन पशुओं ने इससे पहले कभी मनुष्यों को न देखा था इसलिये उनसे बिना डरे वह उनके पास आ गये बल्कि उनके झुंड के झुंड उत्सुकता और आश्चर्य से भरे हुए इन नये प्राणियों को देखने के लिए उनके पास आ गये थे। गौर्म के आदमियों ने इसको बहुत शुभ लक्षण समझा। अपने-अपने हथियारों को निकाल कर वह लोग हत्या के लिये उद्यत हो गये परन्तु थौरकिल ने उन्हें ऐसा करने से मना किया क्योंकि वह जानता था कि उन पशुओं को मारना खतरे से खाली नहीं है परन्तु उस समय भूख मिटाना भी आवश्यक था इसलिये वह बोला :

"मेरे मित्रो इस स्थान पर जो पशु चर रहे हैं यह भयानक दानवों की सम्पत्ति हैं, इसलिये इन्हें जरूरत से ज्यादा न मारना। केवल एक समय में जितने मांस की हमें आवश्यकता हो उतने ही पशु मारे जायें। ज्यादा मारने का अर्थ दानवों को असंतुष्ट करना होगा। यदि वह आ गये तो निश्चय ही हमारे आगे जाने का विचार स्थगित हो जायगा।"

परन्तु लोगों ने थौरकिल की एक न सुनी और अपने जोश में सैकड़ों पशु मार डाले। उन्होंने इतनी हत्या की कि उस घाटी की भूमि उनके रक्त से लाल हो गई। तत्पश्चात् उन्होंने उनके शरीरों से मांस निकाल कर जहाजों में भर लिया। बड़े ठाट के साथ फिर उन्होंने दावत खाई और खूब शराब पी। खा-पी कर वह लोग सो गये। रात हो चुकी थी। अन्धकार चारों ओर फैल चुका था। आधी रात के समय वह जंगल भयंकरता से गूँज उठा। भयानक दानव समुद्र से उस तरफ चले आ रहे थे उनके हाथों में पेड़ों के समान मोटी काँटेदार गदाएँ थीं। वह गरजते चले आ रहे थे। उन्होंने आते ही जहाजों में भरे हुए मांस को बाहर निकाल कर फेंक दिया। उसमें से अच्छा-अच्छा छाँट कर उन्होंने खा भी लिया। अब वह पहाड़ों की सीधी चढ़ाई को तेजी के साथ पार करते चढ़े चले आ रहे थे। एक दानव तो उनमें इतना बड़ा था कि जब वह अतल समुद्र में से हो कर आया था तो वह घुटनों तक ही जल में डूब पाया था। दानवों की हुँकारों और गर्जन से वायुमंडल काँप रहा था

आशंका से भयभीत योद्धा लोग घबराने लगे। जहाज अपने असली रास्ते को छोड़कर जाने कहाँ के कहाँ पहुँच चुके थे परन्तु गनीमत यह थी कि वह तीनों जहाज एक दूसरे से बँधे हुए थे। उस अन्धकार मे भटकते-भटकते कई दिन हो गये और तब उन लोगों की दशा बहुत ही खतरनाक हो गई, जब उनका खाना खत्म हो गया। भूख से व्याकुल होकर तड़पते हुए वह मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे। इसी प्रकार कभी समुद्र से पकड़ी हुई एकाध मछली खाकर तो कभी भूखे रह कर बड़ी मुश्किलों से उन्होंने वह मुसीबत के दिन काटे और अन्त में जब रात्रि के भयानक अन्धकार मे उनके जहाज किनारे से जाकर लगे तो उन्हें उस अँधेरे मे भी नये-नये जीवन का सचार अनुभव होने लगा। जहाजों को किनारे से बाँध कर शीघ्रता के साथ वह तट पर कूद पड़े। समुद्र की लहरें अब भी भयानक थपेड़ों से आलोडित हो रही थीं। इतनी सरदी पड़ रही थी, ऐसा मालूम होता था मानो सारे शरीर का रक्त जम गया हो। गरजता हुआ तूफान अब भी समुद्र की लहरों से लड़ रहा था। भूख से व्याकुल परन्तु नये जीवन की आशा लिये हुए वह लोग उस अँधेरे समुद्र के किनारे सिकुड़ कर बैठे थे। उनके शरीर ठंड से टूट रहे थे।

जब भोर का क्षीण प्रकाश फैला तो उनमे से एक युवक जहाज के मस्तूल के ऊपर चढ़ गया और उसने उस नये स्थान का अन्वेषण करना चाहा। उसने देखा कि कुहरे से आच्छादित सामने ही ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की सीधी चढ़ाई के बीच गहरी घाटी है। चारों ओर प्रशान्त वातावरण है, निस्तब्धता छाई हुई है और वह स्थान एक दम जन शून्य है। वह नीचे उतर आया और उसने अपने साथियों से उस नये स्थान के बारे मे सब कुछ कहा जिसे सुन कर उन लोगों ने प्रसन्नता से किलकारियाँ भरीं और फिर ओस से भीगी और फिसलनी, उन गाढ़ी चट्टानों पर वह लोग धीरे-धीरे चढ़ने लगे। इतनी कठोर यात्रा करने के उपरान्त यह चढ़ाई उन्हें दारुण लग रही थी। हाँफते हुए और थक कर स्थान-स्थान पर बैठते हुए, बड़ी मुश्किलों से उस चढ़ाई को पार करने के बाद, वह लोग चारस घाटी में जा पहुँचे जहाँ मनोहारी घास उग रही थी। पास ही एक घना जंगल था जिसमें कुछ के कुछ पशु चर रहे थे। इन लोगों ने उन्हें देख कर बहुत खुशी प्रगट की क्योंकि वह बहु

आसानी से मार कर खाये जा सकते थे। उन पशुओं ने इससे पहले कभी मनुष्यों को न देखा था इसलिये उनसे बिना डरे वह उनके पास आ गये बल्कि उनके झुंड के झुंड उत्सुकता और आश्चर्य से भरे हुए इन नये प्राणियों को देखने के लिए उनके पास आ गये थे। गौर्म के आदमियों ने इसको बहुत शुभ लक्षण समझा। अपने-अपने हथियारों को निकाल कर वह लोग हत्या के लिये उद्यत हो गये परन्तु थौरकिल ने उन्हें ऐसा करने से मना किया क्योंकि वह जानता था कि उन पशुओं को मारना खतरे से खाली नहीं है परन्तु उस समय भूख मिटाना भी आवश्यक था इसलिये वह बोला :

"मेरे मित्रो इस स्थान पर जो पशु चर रहे हैं यह भयानक दानवों की सम्पत्ति हैं, इसलिये इन्हें जरूरत से ज्यादा न मारना। केवल एक समय में जितने मांस की हमें आवश्यकता हो उतने ही पशु मारे जायें। ज्यादा मारने का अर्थ दानवों को असंतुष्ट करना होगा। यदि वह आ गये तो निश्चय ही हमारे आगे जाने का विचार स्थगित हो जायगा।"

परन्तु लोगों ने थौरकिल की एक न सुनी और अपने जोश में सैकड़ों पशु मार डाले। उन्होंने इतनी हत्या की कि उस घाटी की भूमि उनके रक्त से लाल हो गई। तत्पश्चात् उन्होंने उनके शरीरों से मांस निकाल कर जहाजों में भर लिया। बड़े ठाट के साथ फिर उन्होंने दावत खाई और खूब शराब पी। खा-पी कर वह लोग सो गये। रात हो चुकी थी। अन्धकार चारों ओर फैल चुका था। आधी रात के समय वह जंगल भयंकरता से गूँज उठा। भयानक दानव समुद्र से उस तरफ चले आ रहे थे उनके हाथों में पेड़ों के समान मोटी काँटेदार गदाएँ थीं। वह गरजते चले आ रहे थे। उन्होंने आते ही जहाजों में भरे हुए मांस को बाहर निकाल कर फेंक दिया। उसमें से अच्छा-अच्छा छाँट कर उन्होंने खा भी लिया। अब वह पहाड़ों की सीधी चढ़ाई को तेजी के साथ पार करते चढ़े चले आ रहे थे। एक दानव तो उनमें इतना बड़ा था कि जब वह अतल समुद्र में से हो कर आया था तो वह घुटनों तक ही जल में डूब पाया था। दानवों की हुँकारों और गर्जन से वायुमंडल काँप रहा था

आशंका से भयभीत योद्धा लोग घबराने लगे। जहाज अपने असली रास्ते को छोड़कर जाने कहाँ के कहाँ पहुँच चुके थे परन्तु गनीमत यह थी कि वह तीनों जहाज एक दूसरे से बँधे हुए थे। उस अन्धकार में भटकते-भटकते कई दिन हो गये और तब उन लोगों की दशा बहुत ही खतरनाक हो गई, जब उनका खाना खत्म हो गया। भूख से व्याकुल होकर तड़पते हुए वह मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे। इसी प्रकार कभी समुद्र से पकड़ी हुई एकाध मछली खाकर तो कभी भूखे रह कर बड़ी मुश्किलों से उन्होंने वह मुसीबत के दिन काटे और अन्त में जब रात्रि के भयानक अन्धकार में उनके जहाज किनारे से जाकर लगे तो उन्हें उस अंधेरे में भी नये-नये जीवन का संचार अनुभव होने लगा। जहाजों को किनारे से बाँध कर शीघ्रता के साथ वह तट पर कूद पड़े। समुद्र की लहरें अब भी भयानक थपेड़ों से आलोडित हो रही थीं। इतनी सरदी पड़ रही थी, ऐसा मालूम होता था मानो सारे शरीर का रक्त जम गया हो। गरजता हुआ तूफान अब भी समुद्र की लहरों से लड़ रहा था। भूख से व्याकुल परन्तु नये जीवन की आशा लिये हुए वह लोग उस अँधेरे समुद्र के किनारे सिकुड़ कर बैठे थे। उनके शरीर ठंड से टूट रहे थे।

जब भोर का क्षीण प्रकाश फैला तो उनमें से एक युवक जहाज के मस्तूल के ऊपर चढ़ गया और उसने उस नये स्थान का अन्वेषण करना चाहा। उसने देखा कि कुहरे से आच्छादित सामने ही ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की सीधी चढ़ाई के बीच गहरी घाटी है। चारों ओर प्रशान्त वातावरण है, निस्तब्धता छाई हुई है और वह स्थान एक दम जन शून्य है। वह नीचे उतर आया और उसने अपने साथियों से उस नये स्थान के बारे में सब कुछ कहा जिसे सुन कर उन लोगों ने प्रसन्नता से किलकारियाँ भरीं और फिर ओस से भीगी और फिसलनी, उन खड़ी चट्टानों पर वह लोग धीरे-धीरे चढ़ने लगे। इतनी कठोर यात्रा करने के उपरान्त यह चढ़ाई उन्हें दारुण लग रही थी। हाँफते हुए और थक कर स्थान-स्थान पर बैठते हुए, बड़ी मुश्किलों से उस चढ़ाई को पार करने के बाद, वह लोग चारम घाटी में जा पहुँचे जहाँ मनोहारी घास उग रही थी। पास ही एक चरागाह था जिसमें झुंड के झुंड पशु चर रहे थे। इन लोगों ने उन्हें देख कर बहुत खुशी प्रगट की क्योंकि वह बड़ी

और भय सजीव होकर गोर्म के योद्धाओं के मुख पर नाच रहा था। दानव पास आ गये और उन्होंने उन मनुष्यों को घेर लिया। सब से बड़े दानव ने मेघ के समान गरज कर उन पर पशुओं की हत्या का आरोप लगाया और इसके बाद कहा :

"तुम लोगों ने हमारे पशुओं को मार कर हमारे टापू को अत्यन्त हानि पहुँचाई है। अब एक-एक जहाज में से हमें एक-एक आदमी दे दो, नहीं तो समझ लो कि हमारे हाथों से बच कर निकलना हर किसी की शक्ति के बाहर है।"

दानव की बात मान लेने के अतिरिक्त बचने का और कोई उपाय ही नहीं था। थोरकिल ने गोर्म की सम्मति से आँख बन्द करके तीन आदमी उस भीड़ में से पकड़ लिये, और सबों के प्राण बचाने के हेतु उन्हें उन दानवों को भेंट में दे दिया। दानव उन्हें पकड़ कर ले गये और पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ कर खा गये। थोरकिल के सभी साथी उनके मारे जाने से दुखी थे।

जब हवा अनुकूल चलने लगी और समुद्र का तूफान भी थम गया तब गोर्म और थोरकिल अपने साथियों सहित जहाजों पर चढ़ गये और उत्तर की ओर चले। अब जहाज पानी पर तीव्र गति से जा रहे थे। जैसे जैसे वह आगे बढ़ते जाते थे दिन छोटे और रात बड़ी होती जाती थी। यहाँ तक कि थोड़े दिनों बाद सूर्य का उगना ही बन्द हो गया और अब आगे आने वाले, तमाम स्थानों में अन्धकार ही अन्धकार व्याप्त था। उस निरंतर रात्रि के अन्धकार में न तारा उगता था, न चन्द्रमा ही चमकता था। जहाज अब किनारे से आ लगे थे। अनजान समुद्रों को पार करते हुए लोग जब उस स्थान के पास पहुँचे तब थोरकिल ने जहाज पर चढ़ कर पृथ्वी को देखा और पहचाना। वह लोग [illegible] की [illegible] सीमा के पास पहुँच चुके थे। यह एक भयानक अन्धकार से भरा और बर्फ के समान ठंडा मुल्क था जहाँ बर्फ कभी न गलती और रात्रि ही रात्रि हमेशा रहती थी। उस अन्धकार में भी काले-काले बड़े धब्बों के समान भयानक जीव घने जंगलों में घूमा करते। नदियाँ उफन-उफन कर समुद्र की ओर वहाँ तेजी से बहती थीं। थोरकिल ने वहाँ जहाजों को

नहीं रोका और किनारे किनारे ही आगे बढ़ता चला गया और अन्त मे उस स्थान पर जा पहुँचा जिसकी उसे तलाश थी। जहाज किनारे से बाँध दिये गये और योद्धा किनारे पर उतर पडे। देखते ही देखते समुद्र तट तने हुए तम्बूओं से भर गया। भयानक जाडा पड़ रहा था और आँधी साँय-साँय कर रही थी। थौरकिल ने कहा :

"अब वह स्थान आ गया है जहाँ मे गिरौड का निवास पास ही है।' अब शीघ्र ही हम लोग उस तरफ जायँगे। मै तुम लोगो को समय से ही आगाह कर देना चाहता हूँ कि यहाँ से आगे जाकर कोई भी आदमी अपना मुँह न खोले न किसी अजनबी आदमी से बोले ही। यदि कोई कुछ पूछे भी तो भी उत्तर न दो यदि ऐसा न किया और मुँह खोल दिया अथवा बोल पडे तो निश्चय समझो कि आने वाले दानव अवश्य तुम्हारा अहित करेंगे।"

थोड़ी दूर जाने पर उनकी ओर एक बहुत ऊँचा और बलवान दानवो आया। उसने आकर इनमे से प्रत्येक यात्री का नाम लेकर उन्हें पुकारा और वह उनसे खुल कर बात करते हुए सवाल करने लगा। उसको देख कर वह लोग डर से थर-थर काँपने लगे परन्तु किसी ने उसके सवालो का उत्तर न दिया। थौरकिल ने तब अपने लोगों को बताया कि वह दानव गिरौड का भाई गुडमन्ड था। उसने यह भी कहा कि वह उस देश का रखवाला था जो वहाँ के रहने वाले निवासियों की हर तरह की मुसीबतो से रक्षा किया करता था। किसी को उत्तर न देता देख कर गुडमन्ड ने थौरकिल से पूछा :

"हे थौरकिल! तेरे साथी लोग मेरे प्रश्नो का उत्तर क्यो नही देते क्या यह लोग गूँगे हैं?"

थौरकिल जानता था कि इस समय झूँठ बोल कर उन्हे गूँगे बताने से गुडमन्ड उन्हे सचमुच ही गूँगा बना देगा। इसलिये उसने सच बोलना ही मुनासिब समझा, वह बोला :

"मेरे साथी तुम्हारी बोली न समझते हैं न बोल ही सकते हैं, इसी कारण वह तुमसे तुम्हारी जबान बोलते हिचकते हैं।"

यह सुनकर गुडमन्ड हँसा और तब उसने उन सब को अपने यहाँ दावत पर बुलाया। आगे-आगे खुद चला और उसके पीछे गौर्म, थौरकिल और उनके साथी चले। नदी के किनारे-किनारे चलते हुए वे लोग एक सोने के पुल के पास पहुँचे। वह इतना सुन्दर पुल था कि सभी लोग उस पर चढ कर पार जाने को लालायित हो उठे, परन्तु उसी समय गुडमन्ड ने उन्हे ऐसा करने से रोका और कहा :

"इस पुल के ऊपर मृत्यु लोक के रहने वाले मानव चढ कर नही जा सकते। यह नदी मानवो की दुनियाँ और भयानक दृश्यो वाली दुनियाँ के बीच से बहती है। उस पार की भूमि पर पवित्र धर्म की आज्ञानुसार मानवो के कदम पडने की मुमानियत है। इसलिए इस पर कोई न चढे।"

यह कह कर वह एक दूसरे ही रास्ते से आगे बढा। ललचाई निगाहो से देखते हुये अपने मन की हूक को मार कर उन लोगो ने भी उसका अनुसरण किया। देर तक चलने के बाद वह लोग गुडमन्ड के निवास स्थान पर पहुँच गये जहाँ गुडमन्ड और उसके परिवार के लोगो ने उनका स्वागत किया। थारकिल ने चुपचाप अपने लोगो को सावधान कर दिया कि खाने की मेज पर परोसे हुये भोजन और शराब को तथा किसी भी नये आदमी को जो उस जगह हो वह भूल कर भी न छुयें। जब वह लोग खाने के बडे कमरे मे पहुँचे तो उन्होने देखा कि वह वैभव और ऐश्वर्य से जगमगा रहा है।

एक ओर गुडमन्ड अपने बारह लडको और बारह सुन्दरी लडकियो से घिरा बैठा है। उसके सभी लडके और लडकियाँ शानदार जडाऊ सोने के आभूषण पहने ठाट से बैठे थे। लडकियाँ इतनी सुन्दर और स्वस्थ थी कि अतिथियो की निगाहे उन पर पड कर हटती ही न थी। थारकिल और उसके साथी जाकर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और तब बेहतरीन भोजन और शराब उन्हे परोसी गई पर उन्होने उसे छुआ तक नही। भय से वह लोग व्याकुल हो रहे थे इसलिये उन्होने अपने ही पास से खाने का बचा हुआ पुराना खाना और सूखा खाना निकाल कर खाया और अपनी ही रही पानी मिलवा शराब पीया। गुडमन्ड ने जब उन्हे ऐसा करते देखा तो उसने एतराज किया और वह थारकिल से बोला

"यह हमारी मेहमाननेवाजी की तौहीन है जो हमारा परोसा हुआ खाना तुम लोग नही खाते। क्या कारण है कि इस तरह तुम लोग हमारा अपमान करते हो?"

थौरकिल जानता था कि असलियत कहने से वह नाराज होगा उसी के देश मे उसी को नाराज करना भी बुद्धिमानी का काम नहीं था। वह चतुर था कारन उसने सोच कर जवाब दिया और कहा :

"निरन्तर समुद्र पर यात्रा करते-करते मेरे साथियों को ऐसे उत्तम और गरिष्ठ भोजन करने की आदत छूट गई है, अब एकाएक उसे खा लेने से तबियत बिगड सकती है। इसलिये यह लोग तुम्हारे दिये हुये खाने और शराब को पीने से डरते हैं। तुम्हे इस बात के लिए बुरा न मानना चाहिए।"

गुडमन्ड यह सुन कर खुश नहीं हुआ था जिसे यदि वह लोग खा लेते तो वह निश्चय ही पिछली सारी बातो को भूल जाते और तब पागलों की तरह मजबूरन उन्हे इस अन्धकार और उदासी से पूर्ण देश मे ऐसे जीवों के साथ रहना पडता जो न मनुष्य ही थे और न पशु ही थे। गुडमन्ड की बात मन की मन मे ही रह गई। तब उसने दूसरी तरकीब चलाई। उसने गौर्म के रूप और पौरुष की प्रशसा करते हुए उसको अपनी सुन्दरी बेटी शादी में देनी चाही। इसके अतिरिक्त उसके सभी साथियों को उसने एक एक सुन्दर स्त्री विवाह मे देने के लिए कहा परन्तु थौरकिल ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। बाकी सब तो मान गये परन्तु चार आदमियों ने उसकी बात न मानी और वह लोग उन स्त्रियो की ओर लपके जैसे ही वह उनके शरीर से लिपटे वैसे ही पागल हो गये, •उन स्त्रियों ने तब उनका आधा शरीर बैल की भाँति बना दिया। अब वह लोग ऊपर से मनुष्य और नीचे से बैल जैसे हो गये। गुडमन्ड ने तब राजा गौर्म को साथियों सहित अपने सुन्दर उद्यान मे घूमने के लिये बुलाया। उसने उन्हें वहाँ ले जाकर जादू के फल खिलाने और फूल सुंघाने का जाल फैलाया परन्तु थोरकिल के कहने से गौर्म ने वहाँ जाने से साफ इन्कार कर दिया, वह बोला

"लम्बी यात्रा करने से हम इस समय थक गये हैं इसलिए घूमने न जा सकेंगे।" गुडमन्ड समझ गया कि वह लोग काफी सावधान है और साथ साथ

वहाँ के अमर मनुष्य बिना काम के ही वृथा इधर से उधर तेजी के साथ घूम रहे हैं। उन मनुष्यों की छायाएँ विकराल और भयावनी थीं। वह लोग भयकरता से एक दूसरे को घूर कर देखते हैं परन्तु उनकी पलकें नहीं चलतीं। उनकी बोली सुनकर ऐसा प्रतीत होता था मानो मृत्यु की वेदना से वह लोग चिल्ला रहे हों परन्तु वह मरते न थे। गौर्म ने देखा और थौरक्लि से चुपचाप उनके चिल्लाने का कारण पूछा। थौरक्लि ने कहा '

"यह लोग सहस्रों वर्ष से जीवित हैं और सदा जीते रहेंगे। इनका सबसे बडा दुख यही है कि यह मरते नहीं है। निरन्तर जीवन से उकता कर मृत्यु की कामना करते हुये यह लोग दुख से चिल्लाते हैं।'

सारे रास्ते और सडके घने कुहरे और धूल से भरे हुए थे। भयानक दुर्गन्ध फैल रही थी। मार्ग के दोनों ओर गन्दगी सड रही थी परन्तु जैसे इन सबका उन अमर मनुष्यों पर कोई असर न था। वह लोग सडको पर इतनी अधिक सख्या में घूम रहे थे कि दूर से उस अटूट भीड मे चिऊँटी जैसे लग रहे थे। उनमे से कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा था अथवा उसे क्या करना था। अनिश्चित उद्देश्य से बिना सोचे समझे वह निरन्तर घूमा करते थे। सडाँध इतनी जबरदस्त थी कि यदि उसमे मुरदे भी पटक दिये जाते तो वह उससे घबडा कर उठ कर भाग जाते परन्तु उन कभी न मरने वाला पर उसका कोई असर न था। थौरक्लि और उसके साथी उस बदबू से घबडा गये। गौर्म और सभी सैनिक भय से और उस विकराल दृश्य से भयभीत हो उठे परन्तु थौरक्लि उन्हें लेकर आगे बढ़ा। देर तक चलने के बाद वह एक ऊँचे पहाड की गहरी गुफा के पास पहुँचे। वह गिरोड का पहाडी मुकाम था जिसका द्वार काफी ऊँचाई पर था। उस पर चढने के लिये बर्फ के समान ठडे जीवित मनुष्यों के शरीरों से भय की सीढी बनी हुई थीं। वह मनुष्य हिल-डुल सकते थे क्योंकि उनकी लोथें सड गई थीं परन्तु वह तो अमर थे फिर भी मरते न थे। उन सीढ़ियों पर पकड कर चढने के लिये भी उन्हीं अमर मनुष्यों के शरीर एक पर एक चिने रक्खे हुऐ थे। द्वार के अन्दर भयानक अधकार था। गौर्म आगे-आगे चला जैसे ही उसने पहली सीढी पर

केवल एक, तरकीब बतलाता हूँ और वह यह कि चाहे जितनी तबियत करे, किसी चीज को भूल कर भी न छूना। यदि किसी ने किसी चीज पर हाथ रख दिया तो समझ लो कि वह वहीं चिपक कर रह जायगा, फिर वह हजार कोशिश करने पर भी छूट न सकेगा। रास्ता अँधेरा है और अन्दर से उबड-खाबड है इसलिये चार-चार आदमियो की टोलियाँ बना कर अन्दर घुसो।''

तत्पश्चात ब्रौडर और बुच्ची जो कि डेनमार्क के प्रसिद्ध धनुर्धर थे उन्हें और राजा गौर्म को साथ लेकर थौरकिल चार की टोली बना कर सब से पहले उन सडी लोथों पर चढता हुआ गुफा के अन्दर घुसा। बोझ के कारण उन जीवित मनुष्यों के शरीर के मास मे कमर-कमर तक घुस गये थे। बडे प्रयत्नो से उस प्राणो को सडा देने वाली दुर्गन्ध को झेलते और उस सडे मास की दलदल को पार करते वह लोग गुफा के अन्दर घुस गये, दरवाजे के चबूतरे और अन्दर की भूमि कलौच से काली हो रही थी। वह सैकडों वर्ष पुरानी और गहरी गुफा थी जिसमे चारों ओर गन्दगी ही गन्दगी फैली हुई थी। अगणित भयकर दानव द्वार पर पहरा दे रहे थे। वह आपस मे जोर-जोर से बोलते थे, और विचलित होकर इधर से उधर घूम रहे थे। कोई-कोई तो क्रोध मे भरा हुआ पागलो की भाँति वीभत्स कार्यो मे रत था परन्तु इनसे कोई न बोला, न ये ही किसी से बोले। गुफा के अन्दर से सडाँध से पूर्ण हवा आ रही थी जिसको सूँघ कर यह लोग अर्द्ध विक्षिप्तावस्था मे भय और घृणा से युक्त होकर अपने भाग्यों को कोसते हुऐ और थौरकिल और गौर्म को मन ही मन गालियाँ देते आगे बढे।

गुफा बहुत गहरी और काली थी, जिसके अन्दर इन्हे बहुत दूर तक चलना पड़ा। तत्पश्चात वह स्थान और भी गन्दा था। चारो ओर पत्थर फैले पडे थे। इमारत अत्यन्त भग्नावस्था मे पडी हुई थी। काली और गन्दी दीवालों पर बदबूदार कीडे रेंग रहे थे जिन पर बहुत ही क्षीण प्रकाश पड कर उनकी वीभत्सता को प्रदर्शित कर रहा था। छायाओ मे से डरावनी आत्माऐं झाँक रहीं थी। छत से नीचे की ओर तीर के समान जहरीले डक निकले हुऐ थे जिनमे से काला जहर बूँद-बूँद कर टपक रहा था। उस स्थान की भूमि दुर्धर्ष विषधरों से भरी हुई थी। वह सभी अमर थे परन्तु उनके शरीर वैसे ही गले

हुए और दुर्गन्ध से भरे हुए थे। बदबू से भेजा सडा जा रहा था। थौरकिल के साथी भय से काँपने लगे क्योंकि उसी समय जहर से भरी हुई भाप ने उन्हे चारो ओर से घेर लिया। आगे मृत्यु थी और पीछे मृत्यु थी, बच कर भाग जाने का कोई उपाय ही नही था। इतना सब कुछ होते हुये भी वह अपनी आँखे फिरा कर अपने चारो ओर देखने का लोभ दूर न कर सके। उन्होने देखा कि काले लोहे की लम्बी-लम्बी चौकिया पर अतिकाय और भयानक दानव लेटे हुये हैं। वह खामोशी से यातनाओ को भुगत रहे हैं। वह इतने निश्चल है कि मालूम होता है जैसे पत्थर की बनी प्रतिमा हो। थौरकिल पहाड की एक दरार मे होकर अपने साथियो को लेकर उस स्थान से आगे बढा और तब उन सबो ने देखा कि सामने ही एक गन्दी ऊँची चट्टान पर गिरोड बैठा था। एक बडे लोहे के भाले से उसका सीना आरपार छिदा हुआ था। भाला उसके शरीर मे निकल कर पीछे की चट्टान मे आधा घुस-गया था और इस तरह वह दीवाल मे उस भाले द्वारा टॅगा हुआ था। वह जीवित था परन्तु हिल-डुल न सकता था। भयानक पीडा से उसके मुँह से थूक बह रहा था जिसके निरतर बहते रहने से थूक की एक नदी बह रही थी। उसके सामने तीन दानवी कन्याये सिकुडी हुई पडी थी जिनकी रीढ की हड्डियाँ जगह-जगह से टूट गई थी। बहुत प्राचीन समय मे असगार्ड के राजा ओडन और उसकी पृथ्वी-पत्नी जौर्ड के पुत्र बिजलियो के देवता महाबली थौर ने इन दानविया को सिड्रे द्वारा बनाये गये मजौलनर हथौडे से इतना मारा था कि इनकी रीढ की हड्डियाँ टूट गई थी। क्योंकि उन्होने इवैल्डे के पुत्र थजासेवालैन्ड के कहने से उसे धोखे से मार डालना चाहा था। तब से, क्योंकि दानवियाँ अमर थी और गिरोड की प्रिय पात्री भी थी। अब यही गिरोड के सामने पडी पडी यातनाएँ झेला करती थी। उस भयानक दृश्य को देख कर थौरकिल और गार्म के अतिरिक्त बाकी सभी आदमी भय से पीले पड गये। थौरकिल अब उन्हे लेकर गुफा के बॉई ओर खुलने वाले एक छोटे दरवाजे से होकर एक ऐसे स्थान मे पहुँचा जहाँ जाकर सभी लोग आश्चर्य चकित और प्रसन्न हो गये। स्वप्न की भाँति सारी गन्दगी अन्धेरा और दुर्गन्ध आँखों के सामने से गायब हो गई। केवल एक ही दरवाजा बीच मे पड़ा

जिसे पार करते ही स्वच्छ और सुगन्धित प्रकाश से जगमगाते हुए स्थान मे वह जा पहुँचे। मन्द-मन्द सुगन्धित हवा उनके शरीरों से लग कर उन्हें पुलकित करने लगी। चारो ओर सब कुछ इतना स्वच्छ और साफ था जैसे अभी साफ किया गया हो। बडे-बडे सोने के हौज मीठी शराब से लबालब भरे थे जिनकी मोरियाँ चाँदी की थीं। अतुल धन राशि के ढेर स्थान-स्थान पर पड़े थे। एक स्थान पर पूरे हाथी दाँत स्वर्ण से मँढे रक्खे थे जिन पर बेहतरीन नक्काशी का काम हो रहा था। उसके बगल मे एक ठोस सोने का बाजूबन्द अपनी विचित्र बनावट और चमक के कारण दर्शकों का मन बरबस अपनी ओर खींच रहा था। इसके पास एक और कमाल की चीज थी। यह एक बहुत बडा शराब पीने का खूबसूरत पोला सींग था जिस पर सोना चढा हुआ था और सोने मे भाँति-भाँति के चित्र और चमचमाते हुए जवाहिरात जडे थे। उन्हें देख कर स्वर्ग के देवता भी उन्हें पीने का लालच नही छोड सकते थे। उसको पाने के लिए सभी ललचा उठे परन्तु तभी उन्हे थौरकिल के शब्द याद आये और बडी मुश्किल से उन्होने अपने आप पर काबू किया। उन्होंने उन चीजों पर से अपनी निगाहें हटा लीं और दूसरी ओर देखने लगे परन्तु उनमे से तीन आदमी ऐसे थे जो अब भी मुड-मुड कर देख रहे थे। एकाएक उनके दिल मे विचार हुआ कि थौरकिल तो मूर्ख है, भला ऐसी सुन्दर चीजों को किस तरह छोडा जा सकता है। झटके के साथ वह तीनो घूमे और जितनी देर मे कि थौरकिल उन्हे बढ़ कर रोके उन्होंने उन चीजों पर हाथ मार दिये—बस गजब हो गया। वह धडाके की आवाज हुई कि मालूम होने लगा जैसे आसमान फट गया हो और साथ ही साथ बिजली सी कौंध गई। वह हाथी दाँत छूते ही एक तेज और चमचमाती हुई तलवार बन गई और उस आदमी के कलेजे के आर-पार निकल गई। जिसने उसे छुआ था वह आदमी तुरन्त मर गया।

सोने का बाजूबन्द एक भयकर विषधर बन गया, जिसने अपने उठाने वाले को काट कर फौरन मार डाला। वह सींग आँखों के सामने से ओझल हो गया और उसके स्थान पर एक अत्यत विकराल और खूँख्वार अजदहा दिखाई देने लगा जिसने अपने पकडने वाले को दाँतो से फाड कर खा

लिया और तब वह बाकी आदमियों पर टूटा। अभी तो थोडी देर पहले ही उस अच्छे स्थान मे आकर वह लोग भय से मुक्त हुए थे और प्रसन्न मन से घूमने लगे थे। अब इस अज्ञात जादू के भयानक दृश्य को देख कर वह लोग भय से एक बार फिर चीत्कार कर उठे और अजदहे को अपनी ओर पंजे फैलाये आते देख कर भागे। थौरकिल उन्हे लेकर उत्तर दिशा की ओर बने हुए एक बडे दरवाजे मे से भागा परन्तु जितनी देर मे कि यह सभी उस स्थान से बाहर भाग जाते अजदहे ने उन मे से कईयो को पकड कर खा लिया। यह नया कमरा जहाँ यह लोग अब पहुँचे थे पहले वाले से भी अच्छा था। चारो ओर दीवालो पर चमकते हुए कवच और अस्त्र-शस्त्र टँगे थे। उनकी मूँठें सोने और चाँदी की और जडाऊ थीं। सामने ही दीवाल के मध्य भाग मे बादशाही पोशाक लटक रही थी, जिसकी जवाहरातो से जडी कमर की पेटी और वज्रखचित सोने का शिरस्त्राण प्रकाश मे विद्युत की भाँति दमक रहे थे। आज तक किसी ने ऐसी अद्भुत और अमूल्य पोशाक नहीं देखी थी। औरो से तो थौरकिल ने वहाँ की तमाम वस्तुओ को छूने के लिए मना कर दिया था परन्तु इस पोशाक को देखकर वह सारी सीख देना भूल कर खुद फिसल पड़ा। उसने लपक कर उसे उतार लिया भयानक अनर्थ हो गया। जबरदस्त भूकम्प से वह कमरा गेंद की तरह हिलने लगा जिसमे उन सब आदमियो के पैर उखड़ गये और वह एक दूसरे के ऊपर लुढक-लुढक कर गिरने लगे, भयानक शब्दो से सारा वातावरण काँप उठा। स्त्रियो का भयकर चीत्कार सुनाई देने लगा। कोहराम मच गया, गुस्से से भरे हुये अदृश्य दानव चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे :

"इन डाकुओ को हम तनिक बर्दाश्त नहीं करेंगे।" गिरोड की गुफा लम्बी-लम्बी लोहे की चोकियो पर जो दानव खामोश लोट रहे थे, सब वहाँ से उठ कर विद्युत गति से इनकी ओर झपटे। उनके साथ झुड के झुड भयानक छायाओं वाले विकराल दानव क्रोध से हुँकारते हुए इनकी ओर झपटे। मृत्यु का विकराल दृश्य उपस्थित हो गया। आकाश और वायुमडल उनकी हुँकारो मे गूँजने लगा। साँय-साँय कर तूफान चलने लगे और धूल के बवडरों से आकाश आच्छादित हो गया।

प्रति अपना सिर झुका लिया। अब मन्थर गति से जहाज समुद्र को छाती को चीरते हुये निस्तब्धता से चले जा रहे थे और जब जहाज डेनमार्क के बन्दर-गाह पर जाकर लगे तो गए तीन सौ योद्धाओं मे से १८ जो बाकी बचे थे उन्ह लेकर गोर्म और थोरकिल जहाज से उतरे। लोगों ने समुद्र तट पर घुटनो के बल गिर कर ईश्वर का स्मरण किया और मरे हुऐ २८० योद्धाओं के प्रति दुख प्रगट किया।

चतुर थौरकिल ने पलक मारते सारी परिस्थिति भाँप ली। भुवन विख्यात धनुर्धरो ब्रौडर और बुच्ची को लेकर वह एक ऊँचे सोने के सिंहासन पर चढ गया। ब्रौडर और बुच्ची ने धनुष गाड कर घुटना टेक कर प्रत्यचा को कान तक खींचा और शत्रुओं पर जादू के तीरो की वर्षा करने लगे। थोरकिल और गौर्म भाले और खन्जरो को शत्रुओं पर फेंकने लगे। वह अनेक थे परन्तु ब्रौडर और बुच्ची प्रचण्ड धनुर्धर थे, जिनके बाणो से निरन्तर टंकारती हुई मृत्यु निकल रही थी। बाकी के आदमी हाथा-हाथ भयानक अस्त्र-शस्त्रो से उन दानवो से लड़ रहे थे। खचाखच युद्ध हो रहा था। दानव और मनुष्य कट-कट कर गिर रहे थे। जिस ओर ब्रौडर और बुच्ची के तीर छूटते लाश पर लाश गिरने लगती। उसी समय थौरकिल ने एक मोटा लम्बा और तेज भाला खींच कर सामने आने वाले एक बहुत बडे दानवो की छाती मे मारा। भाला उसकी छाती के आर-पार होकर पीछे की दीवाल मे जा गडा और वह दानव जो गिरौड का पुत्र था अपने बाप की तरह दीवाल मे टँग गया। भारी गदा उठा कर तब राजा गौर्म ने तीन सो तैंतीस दानवो की रीढ की हड्डियाँ तोड दी और तब उन्हे गिरोड के उस दीवाल मे टँगे पुत्र को दोनो ओर पटक दिया और जो एक बाकी था उसका हृदय फाड डाला और उसके शरीर को छत से इस प्रकार लटकाया कि उसके फटे हुये हृदय से एक-एक बूँद रक्त गिरौड के पुत्र के मुँह मे गिरा करे। अपने सरदार की ऐसी दुर्दशा देख कर अब दानव भागे। थोरकिल ने मौका देखा और तब वह अपने आदमियो सहित उस अमर मनुष्यो के नगर को छोड कर बाहर भागा। उसके बहुत से साथी जो बुरी तरह घायल हो गये थे और भाग नहीं सकते थे उसके साथ न जा सके वह उठे

असगार्ड में बाल्डर

असगार्ड मे बाल्डर सबसे सुन्दर देवता था । उसके मुख से प्रकाश निकलता और वह सूर्य की भाँति चमका करता था । वह इतना सुन्दर था कि पृथ्वी से असगार्ड मे गई हुई सुन्दर स्त्रियो की आत्माएँ भी उसके पीछे पागल बनी घूमा करती थीं । वह बिल्लौर की भाँति स्वच्छ और सफेद फूल की भाँति बेदाग था । उसके केश सुनहले और नीले नेत्र चमकीले और समुद्र की भाँति गम्भीर थे । गुलाबी बर्फ की भाँति वह गोरा था और उसकी भौंहे कमान की भाँति गोलाकार थीं । सभी देवी-देवता मनुष्य और दानव-बौने और जानवर उसको जी जान से चाहते थे । वह जब बोलता था तो उसके मुख से गुलाबी फूल भरते जिन्हे दुनिया मे गुलाब का फूल कहा जाता है । सभी उसे प्रेम करते और उसके लिए अच्छी कामनाएँ करते थे । केवल दुष्ट लोक और उसके लोक के जगल मे रहने वाली चुड़ैल पत्नी गुल्मीगहोडर बस ये दोना ही उसका बुरा चाहते थे । आसा-देवता लोक हमेशा का बदमाश था और वह चाहता था कि किसी भी तरह बाल्डर मर जाय ।

बाल्डर गरमी की ऋतु का सूर्य देवता था और देवताओ के राजा ओडिन का सबसे सुन्दर पुत्र था । वाना देवता नजोर्ड की बहिन का नाम फ्रिग था और वही दुनियाँ मे खुशहाली रखती थी । इस फ्रिग से ओडिन ने जब शादी की तो यह सुन्दर देवता बाल्डर पैदा हुआ । बाल्डर के भाइ का नाम होडुर था पर वह अन्धा था । बाल्डर की जीभ मन्त्रो से भरी हुई थी और वह उनके द्वारा सभा के मध्य बहुत अच्छा भाषण देता था । चाँदी के चमकते हुए घोड़े पर जब वह निकलता तो बड़ी खिड़कियों से झाँकने जाने वाली बिना पहियें के रथ पर बैठी हुई परम सुन्दरी देवी फ्रियैजा उसकी ओर देखती और आह भरती थी । उसके जहाजो के नाम बिलापेतका थे जो सूर्य की किरणो की भाँति उफनते हुए बादलो के नीचे तैरते हुये निकल जाते थे । चन्द्रमा की कुमारी नाना उसकी सुन्दरी स्त्री थी जो एक सुन्दर घोड़े पर

"तुम लोग मेरी आज्ञा से इसी समय सारी दुनियाँ मे फैल जाओ और वहाँ जाकर प्रत्येक जीवित हिलने वाले और न हिलने वाले जितने भी पदार्थ हैं पेड, पौधे, धातु और पत्थर मनुष्य और दानव समुद्री जीव और दरिन्दे जितने भी वस्तुएँ हैं सभी से जाकर यह वचन बोलो कि वह कभी भी सुन्द बाल्डर का कोई अहित न करेंगे। लोहे से कहना कि तेरी तलवार और भाला तीर और चाकू कोई भी सुन्दर बाल्डर के शरीर मे न घुस सकेंगे।"

तुरन्त दासियाँ चल दी और कुछ समय बाद जब वह असगार्ड लौटी ते उन्होंने सभी से सौगन्ध ले ली थी और बाल्डर के जीवन को सुरक्षित क दिया था केवल एक सफेद फूलो वाली पतली बेल जो बहुत कमजोर थी र गई और उससे सोगन्ध नही ली गई, देखने मे वह इतनी पतली और नरम थी कि नौकरानियो ने उससे वचन लेना भी वृथा समझा। फ्रिग को जब य मालूम हुआ कि सारी पृथ्वी पर उसके पुत्र बाल्डर का अब कोई दुश्मन नह रहा है तो वह बहुत प्रसन्न हुई और उसके दिल से भय जाता रहा।

बाल्डर के पिता ओडिन का दिल इन सब बातो से नही भरा औ उसके दिल मे आशका बनी ही रही। फ्रिग को ये फिक्र देखकर भी वह अपने दिल म उठते हुए अज्ञात भय को दूर नहीं कर सका और आखिरकार ए दिन वह अपने घोडे स्लीपनर पर चढ कर उत्तर दिशा मे स्थित विफरौष का तरफ बिना किसी से कहे सुने चुपचाप चल दिया और आकाश मार्ग रे नीचे उतरता हुआ नीफल-दीम के अँधेरे की ओर चला जहाँ पर प्राचीन औ भयकर दानवो की आत्माएँ दुनियाँ की चक्की मे पीसी जाती थी। हैला वे किनारे होकर जब वह चला तो एक भयकर नस्ल का कुत्ता जिसका सीना खू से लथपथ और दाँत भाले की नोक की तरह तेज थे भयकरता से भौकत हुआ उस पर झपटा। ओडिन ने स्लीपनर के करारी एड लगाई और स्लीपन हवा से बातें करता हुआ आगे निकल गया। नरक का कुत्ता पीछे भागा प जब उसे न पकड़ सका तो जबडे फैला कर देर तक भौका किया। उसर्क चरचाहट से पूरा नीफल-दीम काँप गया और चक्की में पिसती हुई दानवो क आत्माएँ कराह उठी, अब ओडिन बहुत दूर निकल चुका था।

[illegible]

"[illegible] में बाल्डर का [illegible] है। [illegible] दुनिया में प्रसिद्ध है वह [illegible] और उसकी [illegible] प्रतीक्षा है। वह जब यहाँ आयगा तो पुरानी और मोटी शराब से उसका स्वागत किया जायगा। वह देखो सोने के कटोरों में मोटी शराब भरी हुई रक्खी है और वह चमकती हुई ढालों से ढकी हुई रक्खी है। [illegible]-लिफ और लिफथ-रेजर आतुरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जब वह आये और खुशियाँ मनाये ...... हाय तुमने मुझे बोलने को मजबूर किया ...... अब मुझे बोलने से चुप हो जाना चाहिये।"

"अभी खामोश नहीं हो सकती" ओडिन बोला, "अभी मेरे सवाल का और जवाब दे। मुझे यह बतला कि बाल्डर को कौन मारेगा? कौन है वह दुष्ट आत्मा जो ओडिन के सुन्दर पुत्र को मारेगी?"

कब्र में से फिर आवाज निकली और अब की बार वह आवाज पहले से भयंकर थी। वाला ने कहा : "बाल्डर को उसका भाई होडुर यहाँ भेजेगा। वह अंधा है पर वह अपने भाई को मार डालेगा और इस तरह ओडिन का सुन्दर पुत्र मारा जायगा ...... हाय तुमने मुझे बोलने को मजबूर किया ...... अब मुझे चुप रहना चाहिये।"

"तू खामोश नहीं हो सकती", झट ओडिन बोला, "पहले मेरे सवालों का जवाब दे। बाल्डर की मृत्यु का बदला कौन लेगा और होडर को चिता पर कौन चढ़ायेगा?"

[illegible]

[illegible]

कठोर [illegible] उस पर चोट न पहुँचा [illegible] वह लाग उसकी [illegible] ग्रार [illegible] औजारो से उसे चारा ग्रार [illegible] कर उस पर [illegible] करत ग्रार [illegible] हथियार उसके शरीर मे न घुसते ता वह लाग हॅसत ग्रार इस प्रकार ग्रानन्द मनाया करते। वह लाग उसे दूर खड़ा करके उस पर भाले फेका करते ग्रार कभी उसे तीरो से निशाना बनाया करत। बाल्डर भी उनके इस खेल मे हॅस-हॅस कर भाग लेता ग्रार इस प्रकार ग्रसगार्ड मे ग्रानन्द मनाया जाता था। ओडिन ने जब यह देखा तो ग्राशका से उसका हृदय भर गया [illegible] होडुर ग्रन्धा था ग्रोर इस तरह के खेलो मे भाग नही लेता था। यह सोच कर उसने चुप रहना ही उचित समझा।

दुष्ट लोक ने एक दिन बड़ा पत्थर इसी तरह खेल-खेल मे बाल्डर के सिर पर मारा ग्रार जब पत्थर बगल से होकर निकल गया ग्रोर बाल्डर के न लगा तो वह दुष्ट ग्रपने मन मे ग्रन्दर ही ग्रन्दर जल गया। किसी भी तरह वह बाल्डर का ग्रन्त कर देना चाहता था उसने ग्रपनी चुडैल पत्नी ग्रार बोड़ा से पूछा

"हे ग्रयगर-बोडा! हे लोहे के वन मे रहने वाली! तेरी शक्ति ग्रपार है। तीन दानवियो की ग्रात्माये मिला कर ग्रकेली तू बनी है। तेरा ज्ञान ग्रार तेरी बुद्धि प्रसिद्ध है। कोई ऐसी तरकीब बतला कि बाल्डर की हत्या हो सके। की कीर्ति मुझे तनिक भी नही भाती ग्रोर मै चाहता हूँ कि किसी न किसी प्रकार बाल्डर वह मारा जाय।"

लोक जो औरत बना हुआ था, हमदर्दी के स्वर मे बोला :

"हे ओडिन की सुन्दरी रानी फ्रिग ! तुम्हारी इस तरह की चिन्ता वृथा है। देवता लोग बाल्डर को बहुत चाहते है उसके ऊपर पत्थर भाले और तलवारे चला कर वह इसलिये खेल करते हैं कि वह जानते हैं कि हम सब से उसका कुछ बिगाड नही हो सकता।"

फ्रिग सतोष से बोली "धातु, लकडी, पत्थर किसी भी चीज से मेरे पुत्र का नुकशान नही हो सकता क्योंकि दुनियाँ की सभी वस्तुओ ने उसको न मारने का मुझे वचन दिया है।"

लोक यह सुन कर मीठी बोली मे चतुरता से बोला "हे फ्रिग तुम जितनी सुन्दर हो उतनी ही बुद्धिमान भी हो। मुझे यह सुन कर बहुत खुशी हुई है कि ससार की हर चीज से तुमने ऐसा वचन ले लिया है। मेरा विचार है कि मजबूत, कमजोर, कठोर और नरम सभी से तुमने ऐसा वचन ले लिया होगा।"

"हाँ सभी से", लापरवाही से फ्रिग ने हाथ हिला कर उत्तर दिया, "केवल एक पतली और नरम बेल रह गई थी और वह इतनी कमजोर थी कि मेरी नोकरानियो ने उससे वचन लेना वृथा समझा क्योकि ऐसी नाचीज बेल भला किसी का बिगाड भी क्या सकता है ?"

दुष्ट लोक यह सुन कर अपने मन मे बहुत खुश हुआ पर उसने अपनी खुशी को जाहिर नही होने दिया और भोलेपन से पूछा :

"भला उस बेल का नाम क्या है ?"

"उसका नाम मिसलन्टो है", उसी लापरवाही के साथ फ्रिग ने जवाब दिया।

तब लोक वहाँ से लौटा तो सीधा मनुष्यो की दुनिया मे गया और वहा से उसने मिसलन्टो की एक पतली बेल उखाड़ी। उसको लेकर वह एक बौने कारीगर हैलब्लाट के पास पहुँचा और जाते ही अपने जादू से उसकी बुद्धि और समझ पर काबू कर लिया। वह उससे बोला

"हे हैर्लब्लार्ट तेरे मुकाबले का कारीगर दुनियाँ भर मे कहीं नहीं है। इवेल्डे और उसके पुत्र सिन्डरे और उसके पुत्र यह सभी कारीगर तुझसे नीचे

"अरे लोक," चिढ कर होडुर बोला, "तू मुझसे क्यो छेडखानी करता है। ऐसा भोला बन कर पूछ रहा है कि जैसे जानता ही न हो। क्या तू नहीं जानता कि मै अन्धा हूँ और अपने सुन्दर भाई को नही देख सकता? फिर भला मै किस तरह ऐसा खेल खेल सकता हूँ।"

"भला यह भी कोई बात है", लोक ने चालाकी से जवाब दिया, "जब तक मै मोजूद हूँ, हे होडुर तुझे इसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। मै बाल्डर को बहुत चाहता हूँ और साथ-साथ मुझे तुझसे भी बहुत ज्यादा हमदर्दी है। ले देख मै तेरे लिये तीर कमान लाया हूँ। तू इसे अपने हाथो मे ले ले। मै तुझे दिशा और निशाना भी बतलाये देता हूँ। तू कमान पर तीर चढा और छोड दे। म नही चाहता कि जब सारा असगार्ड खेल मे खुशियाँ मनाता हो तब सुन्दर बाल्डर का अन्धा भाई एक ओर मनहूस बना खडा रहे।"

होडुर लोक की बाते सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने खुशी से लोक के हाथ चूम लिये। अब उसने अपने हाथो मे लोक का दिया हुआ धनुष और हैलीन्बार्ड का मिसिलन्टो से बनाया हुआ जादू का भयानक तीर ले लिया तीर को चढाकर उसने प्रत्यचा खींची और लोक से कहा कि वह उसे सही निशाना बता दे। लोक ने उसका बायाँ हाथ पकडकर उसे बाल्डर की ओर मोड दिया और जब होडुर उस दिशा मे धनुष ताने कुछ देर खडा रहा तो वह खुद इधर-उधर भटक गया। देवताओ ने जो अंधे होडुर को धनुष खींचे खड़े देखा तो सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये और अपना खेल बन्द करके सभी उसकी ओर देखने लगे। बाल्डर खुद अपनी जगह पर बैठा अपने अन्धे भाई की इस विचित्र सूझ पर हँस रहा था। उसने चिल्ला कर होडुर से कहा

'चला दे होडुर।'

उसी दम तीर छूट गया। वह जाकर बाल्डर की छाती मे लगा और उसके पार हो गया। एक बार बाल्डर का सुन्दर शरीर हिला और फिर उस मैदान मे लुढक गया। इस आकस्मिक घटना से देवताओ पर भयंकर आतंक छा गया। पहले तो उन्होंने समझा कि बाल्डर हँसी कर रहा है पर जब

देर हो गई और लुढका हुआ बाल्डर का शरीर न उठा तो उन्होंने पास जाकर देखा। बाल्डर खून से लथपथ मरा पडा था। सन्नाटा खिंच गया। देवताओं के शरीर का रक्त भय से जम गया। किसी के मुँह से आवाज नहीं निकलती थी, खेल का वह मैदान एकदम भयावना हो गया और जहाँ अभी-अभी कहकहे लग रहे थे वहाँ सर्वत्र दु:ख फैल गया। होडुर उस सन्नाटे का कारण न जान सका और अज्ञात आशका से कॉपता हुआ आश्चर्य से भरा चुपचाप खडा रहा। थोडी ही देर मे उस अंधे ने देवताओं के क्रोध से कॉपते स्वर सुने, "इसे मार डालो," "इसको कत्ल कर दो", "इसके टुकडे-टुकडे कर दो" ऐसी तरह-तरह की चिल्लाहट उसके कानों में आने लगी और तब वह बहुत घबराया। जब आसमान मे बडे जोरो से बिजली चमकी क्योंकि वह समझ गया था कि अब थौर आ गया है। देवताओं ने नगी तलवारे लेकर उस पर हमला किया और वह अपने प्यारे बाल्डर के हत्यारे को उसी स्थान पर मार डालने को तुल गये। पर जब हीमडल ने कहा कि वह स्थान जहाँ पर वह खडे हुये थे हत्याओं के लिये वर्जित था तो मजबूर होकर उन्होंने अपने तलवारे नीची कर लीं पर क्रोध उनका वैसा ही बना रहा।

उसी समय आसमान में बिजली कडकी और उसकी रौर से जौटन-हीम के ऊँचे-ऊँचे पहाड धडधडा कर गिर पड़े, समुद्रों मे भयकर तूफान आगये और उत्तुग-तरगे थर्रा उठीं, सारी पृथ्वी पर भय छा गया। जब रोर समाप्त हुई तो आकाश गूँजने लगा और भयंकरता से आकाशवाणी सुनाई दी।

"सुन्दर बाल्डर मारा गया।"

असगार्ड में रहने वाले सभी देवताओ के मुख पीले पड गये। सूर्य दुःख न काला हो गया और उसने चमकना छोड दिया। सूर्य कुमारी सुन्ना छाती पीट-पीटकर रोने लगी उसके रोने की आवाज जब आसमान में उठी तो असगार्ड मिडगार्ड जौटन हीम और मनुष्यो की दुनियाँ सभी मे हाहाकार मच गया। स्वर्ग मे दु ख की हिलोरें व्याप्त हो गई और देवता जोर-जोर से रोने लगे। सुन्दर बाल्डर मर गया था। उसकी माता फ्रिग और मौसी फुल्ला घुट-घुटकर चुपचाप रोने लगी। ओडिन का दुख असह्य था और वह उस अपार

दुख में भी इस चिन्ता में डूबा हुआ था कि बाल्डर के मरने से असगार्ड पर दुख के पहाड़ शीघ्र ही टूटने वाले थे। उसकी मृत्यु से आसा देवताओं पर आने वाले दुखों को वह सोच-सोचकर चिन्तित हो उठा था।

बाल्डर की उज्ज्वल आत्मा गजौल नदी पर बने ठोस सोने के पुल को पार करती हुई नीचे की दुनियाँ को चली गई। वहाँ सोने के चमकते भवन में ऐशमेगिर इत्यादि उसकी प्रतीक्षा करते थे। वह लोग चाहते थे कि बाल्डर उनका राजा बने जब तक सृष्टी दुबारा न रची जाय देवताओं का रो-रोकर बुरा हाल था किसी भी प्रकार उन्हें शान्ति नहीं मिलती थी और जब वह इसी तरह उदास बैठे थे तो उन्हें बाल्डर की दुखी माता फ्रिग ने बुलाया। फ्रिग यह नहीं चाहती थी कि उसके सुन्दर पुत्र की आत्मा हैला जैसी जगह में जाकर रहे। किसी भी प्रकार वह उसे वापस बुला लेना चाहती थी, बहुत सोचने के बाद उसने एक युक्ति निकाला। जब देवता लोग उसके पास आकर चुपचाप बैठ गये तो वह उनसे बोली

"ओ देवताओं जो काम आज मैं तुम लोगों से करने को कह रही हूँ उसे जो भी पूरा करेगा वह मेरे प्रेम का पात्र होगा और उसका एहसान मैं जीवन भर नहीं भूलूँगी। यह मेरे हृदय की इच्छा है कि मृत्यु की रानी उर्द को बहुत बड़ी कीमत देकर किसी भी प्रकार खुश कर लिया जाय और उससे आज्ञा प्राप्त कर ली जाय कि मेरा प्यारा बाल्डर वापस आ जाय और असगार्ड में रहे मेरा पूरा विश्वास है कि उर्द हमारी इस प्रार्थना को जरूर स्वीकार करेगी और जिसके बिना सारा असगार्ड सूना-सूना हो गया है, उस बाल्डर को वह जरूर वापस कर देगी। अब जो बहादुर घोड़े पर बैठ कर हैला जाने [illegible] आ जाय क्योंकि मैं उसे प्रेम करूँगी।"

फ्रिग बहुत सुन्दरी देवी थी और उसकी कृपा का पात्र बनना हर एक देवता चाहता था परन्तु नफ्ल-हीम के अँधेरे में होकर जहाँ मार्ग में [illegible] से हैला तक पहुँचना और [illegible] द्वारा रक्षित [illegible] भवन को पार करते हुये मृत्यु की रानी उर्द से साक्षात्कार करना [illegible] हँसी-खेल का काम न था।

रैग हत्या करने मे आनन्द लेती उसी प्रकार अयगर-बोडा भी अपनी बुराइयों के लिये प्रसिद्ध थी। इस समय जब वह आई उसका रूप अत्यत भयानक था। एक भयानक भेडिये पर बैठी हुई हलाहल विष उगलते हुये एक सॉप की लगाम पकडे मुँह से अग्नि की वर्षा करते वह आई।

समुद्र के किनारे आकर वह कूदकर भेड़िये से उतर पडी और उसने नफरत से देवताओ की ओर देखा। उसके साथ चार पहाड़ के समान शरीर वाले दानव भी आये थे जिनके हाथो मे भेडिये से उतरकर उसने उसकी लगाम वह विषैला सर्प पकडाया था। विजयी की फुर्ती के साथ वह जहाज पर गई और उसे एक ही झटके मे खीचकर समुद्र मे बहा दिया। जब उसने ऐसा किया तो भयानक शब्द हुआ जिससे पृथ्वी हिल उठी और समुद्र की लहरे टकोर मारती हुई बज उठी।

उसी समय आकाश मे बडी जोर से बिजली चमकी जिसकी चकाचौध मे सभी की आँखे मिच गई और जब आँखे फिर खुली तो देवताओ ने अपने बीच बिजलियों के देवता थौर को खडे पाया।

उस समय थौर क्रोध से कॉप रहा था और उसकी विशाल भुजाएँ रह-रहकर फड़क रही थी। वह उस चुडैल अयगर-बोडा के घमन्ड को चूर कर देना चाहता था। क्रोध से पागल होकर उसने अपना भारी हथौडा मजोलनर हवा मे घुमाया और अयगर बोडा की ओर बढा। पर तभी देवताओ ने उसे दौड़कर पकड़ लिया। वाना देवता फ्रे ने कहा '

"महाबली थौर तुम्हारा इस समय इतना क्रोध करना उचित नही है। वह देखो सामने जहाज के अन्दर ऊँचे मस्तूल तक चिनी बाल्डर की चिता दीख रही है अभी उसकी अन्तिम क्रिया करना बाकी है। इस बीच खून-खराबा करना अच्छा नही मालूम होता। यह घड़ी दुख की है शौर्य दिखाने की नहीं और फिर इस समय तो अयगर-बोडा हमारे बुलाने से ही आई है। अपने क्रोध को शान्त करो और प्यारे बाल्डर की अन्तिम क्रिया करो।" थौर यह सुनकर चुप हो गया और उसने अपना उठा हुआ मजोलनर नीचा कर लिया।

थी। असगार्ड की रानी फ्रिग के पीछे उसकी सखिय उदास मन से उसको सँभाले खड़ी थी। उनमे उसकी बहिन फुल्ला भी थी जो सुन्दरता मे फ्रग से कम न थी हलिन फ्रिग के पास दुनियाँ के मनुष्यो की प्रार्थनायें पहुँचाती थी, दुनियाँ मे इधर से उधर शीघ्र जाने वाली हर वस्तु को देखने वाली और उनको स्मृति मे रख कर फ्रिग को सब बातें बताने वाली उसकी सखी गूना भी वहाँ मोजूद थी। प्रमियो को मिलाने वाली और जिसके नाम पर शपथ ली जाती थी वह लफ्न देवी भी वहाँ मोजूद थी। शान्ति रखने वाली और झगडे मिटाने वालो वजोर्फ, बुद्धि मति द्वारपालिका सिन, और कन्याओ की रक्षा करने वाली गैफजोन जिसने विवाद नही किया था और आगे कभी नहीं करने की प्रतिज्ञा की थी यह सभी एक टक अपनी स्वामिनी फ्रिग की आर देख रही थी।

सफेद बौने और काले बौने बर्फीले दानव और पहाडी दानव ये भी झुँड के झुँड समुद्र के उस तीर पर दुख मनाने एकत्रित हो गये थे क्योकि सुन्दर बाल्डर मर गया था।

पृथ्वी और आकाश, पर्वत और समुद्र सभी दुख से हाहाकार कर रहे थे क्योकि बाल्डर मर गया था।

बाल्डर की सुन्दरी पत्नी इतनी दुखी थी कि बेचारी रोना चाह कर भी रो न सकी थी। उसके हृदय आर नेत्रा को दुख की दारुण अग्नि जलाये दे रही थी, वह कभी-कभी एक शब्द मुँह से निकालती थी, 'हाय सुन्दर बाल्डर मर गया।'

समुद्र तीर पर सबसे अलग प्रसन्न बदन से केवल एक देवता खड़ा था, वह दुखी नहीं था क्योकि सुन्दर बाल्डर मर गया था। उसकी आँखो मे आँसू नहीं थे, रह-रह कर उसके होठो पर मुसकराहट फूट पडती थी जो उसे बरबस दबा लेता था क्याकि उसको भय था कि काई उसकी खुशी को देख न ले। वह लाक था।

ओडिन अपने स्थान से हिला और गम्भीर चाल चलता बाल्डर की चिता पर चढ गया, सारी निगाहें उस पर ठहर गई, उसने वहाँ पहुँच कर बाल्डर के सीने पर सोने की विचित्र अँगूठी ड्रापनर छल्लो सहित रख दी और तब सबा के देखते झुक कर बाल्डर के कानो मे कुछ कहा, उस समय उसने जो

कुछ कहा उसे कभी कोई न जान सका। वही एक ऐसी विचित्र बात थी जिसे कभी भी देवता मनुष्य और यहाँ तक कि खुद भी न जान सका। ओडिन ने वह विचित्र बात एक ही बार मुरदा बाल्डर के कान मे कही थी, बाद मे कभी अपनी जुबान से उसे नहीं दुहराया। ओडिन तब लौट कर अपनी जगह आ खड़ा हुआ उसके लौटने पर थौर अपना हथौडा लेकर जहाज पर चढ गया और उसने अपने हथौडे से बाल्डर की चिता सजाई और बाल्डर को उस पर लिटा दिया। तत्पश्चात उसने चिता मे आग लगा दी। जब लकडियाँ धूँ-धूँ करके जलीं और चरचराहट की आवाज हुई तो उत्सुकता से एक बौना लुक-टुर था, 'चिता के पास देखने को भागा। थौर ने लकडियों के साथ-साथ अपने हथौडे से उसे भी समेट लिया और बाल्डर के साथ जला दिया। उसका चाँदी का घोडा अब तक ऊँची लपटों से जल चुका था। नाना उन ऊँची लपटों को देख कर एकदम दहाडे मार कर रो उठी। अब उसका दुख फूट पडा था। वह चिता की ओर चिल्लाती भागी और इससे पहले कि ओडिन और फ्रिग, फुल्ला और सुल्ला अन्य सखियो सहित उसे पकड़े वह गिर कर मर चुकी थी। दुखी मन से थौर ने उसे अपने शिर के ऊपर उठा लिया और सुन्दर बाल्डर के शरीर के साथ उसी चिता में उसे भी जला दिया।

ऊँची आग की लहटे आकाश की ओर लपलपा रही थीं। जब नजौर्ड ने अपनी भारी कुल्हाडी से उस जहाज का लगर काट दिया तो आसमान मे भयानक शब्द हुआ। तडतडाहट करती हुई बिजली चमकी जिससे सभी के नेत्र बन्द हो गये और जब सबों की आँखे खुलीं तो उन्होंने देखा कि थौर गायब हो चुका था। हेरिंगघोर्णी समुद्र के बीच मे जा चुका था जिसके मध्य भाग में चिता जल रही थी। देवता और दानव काले बौने और सफेद बौने सभी उदास हृदयो से अपने स्थान को लौट गये। अतिम क्रिया समाप्त हो चुकी थी। ससार दुख में डूब गया क्योंकि सुन्दर बाल्डर मर गया था।

× × ×

उधर जब हरमोड (हीमडल) नीफल-हीम के अँधेरे मे होता हुआ हैला के प्रकाश से जगमगाते मैदानो मे पहुँचा तो उसे काफी समय लग चुका था। नौ दिन और नौ रात्रि वह स्लीपनर पर सवार होकर बिजली की तेजी से गगन

चुम्बी पहाड़ो और भयानक मृत्यु को घाटियो को पार करता हुआ रक्त को भी जमा देने वाले जाडे और अँधकार से पूर्ण बादलो से घिरे मार्ग को चीरता हुआ जब वह हैला की सीमा पर पहुँचा तो वहाँ आफफोटीस दानव के खख्वार भेडिये की नश्ल के कुत्ते ने उस पर हमला किया। निकट ही था कि वह स्लीप्नर का माँस फाट खाता कि हीमडल ने उसे पृथ्वी से ऊपर आकाश की ओर उड़ा दिया और जब नीचे नदियाँ दिखाई दी तो वह फिर पृथ्वी पर उतर आया। करलोगर की यह दो नदियाँ कोरमठ और ओरमठ बहुत भयानक थी। उनकी सतह मे तेज छुरे ऊपर की ओर मुख किए गडे थे। कोई उन्हे पार नही कर सकता था। सारे देवताओ मे नीचे थिगस्टिड को जाते समय केवल थौर ही इन्हे पार कर सका थ। हीमडल ने उन्हे एक ही छलाग मे पार कर दिया। उसके बाद मार्ग मे उसे पवित्र नदी लीप्टर मिली जिसके जल को हाथ मे लेकर देवता लोग सागन्ध खाया करते थे। स्लीप्नर ने उस नदी को तैर कर पार किया। लीप्टर स्वर्ण की भाँति चमक रही थी और उसको पार करते समय चाँदी की सी चमक वाला हीमडल अपूर्व और अनोखा मालूम होता था।

आखिरश गजौल नदी के ऊपर बने सोने के ठास पुल पर हरमोड अब आ पहुँचा। पुल की रखवाली करने वाली बानी मोडगड ने जब उस निडर होकर जीवित अवस्था मे ही अपनी ओर आते देखा तो वह अचम्भे से भर गई। उसने उससे चिल्ला कर पूछा

"हे सवार तू कौन है जो बिना मरे ही यहाँ तक आ पहुँचा ?"

हरमोड ने उसके प्रश्न का उत्तर न देते हुये उतावलेपन से उल्टा उसी से प्रश्न किया।

"सुन्दरी बानी मुझे शीघ्र बता कि मेरे पहले इस पुल के ऊपर होकर अदर कौन गया है ?"

बानी ने उसकी ओर प्रशसा भरे नेत्रो से देखा पर वह शिकायत भरे स्वर से बोली।

"अभी केवल पाँच दिन पहले पाँच बडी सेनाओ के भरे हुए सैनिक यहाँ पर आये थे उनको ओडिन की वैलैकरी यहाँ लाई थी। इतनी आत्माओ के

ठोस सोने के बने हुये एक बहुत बड़े कमरे मे रत्नजटित ठोस सोने के सिहासन पर सामने बाल्डर बैठा था। उसका मुख उदास और चिन्ता से भरा हुआ था। मृत्यु के दुख को वह अभी भूला नही था। चिता पर रक्खे रङ्ग-बिरंगे फूलो के बड़े गुलदस्ते अब भी उसके सिर के पास झूम रहे थे परन्तु वह अब मुरझा चुके थे। उसके सीने पर सोने की विचित्र अँगूठी ड्रोपनर छल्लो की मालाओ सहित अब भी लटक रही थी।

वह तन्मय होकर ऐसा बैठा था जैसे ओडिन की कही हुई वह गुप्त बात अब भी सुन रहा हो। उसके सामने पुरानी मीठी शराब से भरा हुआ सोने का कटोरा रक्खा था, पर उसने उसे छुआ भी नही था। उसके बगल मे उसकी स्त्री नाना थी, जिसके गुलाबी गाल अब मुरझा कर पीले हो गये थे।

खामोश और अकेली पत्थर की प्रतिमा की भाँति सुन्दर पर कठोर हैला की रानी उर्द उनके सामने खड़ी थी। उसकी गहरी चमकती पोशाक पर सोने और जवाहरात के जेवर प्रकाश मे चमचमा रहे थे। हरमोड ने उसे देखा और भय से अपनी आँखें फेर लीं।

जब देर तक वह इसी प्रकार खड़ा रहा और बाल्डर या उर्द किसी ने उसके आने का कारण नही पूछा तो उसने साहस बटोर कर बाल्डर की ओर देखा जो अब भी उसी प्रकार चिन्तामग्न बैठा हुआ था। उसने ऊँचे स्वर से बाल्डर से कहा :

"हे मेरे भाई तू मुझे बहुत प्यारा है। असगार्ड मे तेरे बिना सब कुछ सूना मालूम होता है। चारो तरफ दुख ही दुख फैल गया है और सभी देवता तेरे बिना मृत्युप्राय हो गये हैं। तेरी माता रानी फ्रिग ने मुझे यहाँ भेजा है कि किसी भी प्रकार तू हैला को छोड़ कर असगार्ड वापस चला चले। हे सुन्दर बाल्डर जीवन तेरे बिना व्यर्थ है। असगार्ड के देवी-देवताओं पर रहम कर और मेरे साथ वहाँ चला चल, जिससे एक बार फिर जीवन मे आनन्द का स्रोत बहने लग जाय।"

बाल्डर के मुख का भाव यह सुन कर बिलकुल नही बदला। उसने सिर हिला कर मना कर दिया। जब हरमोड ने उसकी ओर याचना भरी निगाहें

जिनका प्रभाव मिडगार्ड जौटन हीम और मनुष्यो की दुनियाँ मे चारो तरफ फैल जायगा। वह इज्जत के साथ उर्द के सामने घुटने टेक कर बैठ गया और उसने उसकी सिजदा की। तत्पश्चात् वह उठा और बाल्डर और नाना के पास चला गया जो उसे छोड़ने दरवाजे तक आ गये थे। जब हरमोड विदाई लेकर चला तो खामोश बाल्डर ने विचित्र सोने की अँगूठी ड्रोपनर उसको दी और इशारा किया कि वह उसे ओडिन को दे दे क्योंकि उसकी पैदा करने की शक्ति हैला मे आकर खत्म हो चुकी थी। बहुत पुराने समय मे सिन्डरे द्वारा बनाई यह अँगूठी एक विचित्र वस्तु थी। इसमे पैदा करने की अनन्त शक्ति भरी हुई थी। हर तीसरी रात्रि को इसमे से इसी प्रकार की आठ अँगूठियाँ उत्पन्न होती थी, नई अँगूठियाँ बनती ही रहती थीं और की तरह असली ड्रोपनर से लिपटी रहती। हैला मृत्यु के बाद आत्माओ के रहने का स्थान था। यहाँ कोई चीज नये सिरे से पैदा नही होती थी। ड्रोपनर की उत्पादन शक्ति भी यहाँ इसी कारण बन्द हो चुकी थी। हरमोड को नाना ने अपनी झीनी ओढनी दी और कहा कि वह लेजाकर उसे फ्रिग को दे दे। उसने कहा :

"हैला मे मरी हुई आत्माएँ शरम नही करतीं इसलिये मुझे अब इसकी जरूरत नही है।"

फिर उसने अपनी उँगली से अपने विवाह पर पहनी हुई सोने की अँगूठी दी और कहा कि वह उसे फुल्ला को दे दे। वह बोली, "हैला मे शादी नही होती क्योंकि यह मरे हुओं का स्थान है मुझे इस अँगूठी की आवश्यकता नही है तू इसे ले जा।"

यह सब सुन कर हरमोड का कलेजा मुँह को आ रहा था और दुख के कारण वह जोर से रो देना चाहता था क्योंकि वह मजबूत था। हैला मे जाकर उसके आँसू सूख चुके थे उदास हृदय से वह स्लीपनर पर फिर चढा आर एक आशा उसको बढावा दे रही थी कि शायद बाल्डर वापस मिल जाय। जब स्लीपनर उसको लेकर हैला से बाहर निकला और वह गजाल नदी पर बने सोने के पुल पर पहुँचा तो हैला का असर उस पर से जाता रहा। उसके आँसू उसको वापस मिल गये और तब वह वहाँ बैठकर बाल्डर और नाना को याद करता हुआ जी भर के रोया उसके सारे वस्त्र आँसुओं से भीग

तब रोते-रोते हीमन्डल ने आडिन को डोपनर नाना की झीनी ओढ़नी और सोने की अगूठी दी और बाल्डर और नाना की उदासी का पूरा वृतान्त सबों से कहा। उसने कहा

"मै शपथपूर्वक कहता हूँ कि असगार्ड का यदि कोई भी देवता उन्हे उस हालत मे देख लेता तो अवश्य ही रोता परन्तु उस हेला मे जब उसके आँसू सूख जाते तो दुख उसके हृदय मे घुमड घुमड कर शायद उसका अन्त ही कर देता। गजोल नदी पर उस विचित्र और चमचमाते सोने के पुल पर जब मैं वापस आया तभी मुझे मेरे आँसू वापस मिले थे। वही बैठ कर मैने अपने हृदय मे उमडते दुख को आँखो से बहाया था वह याद मेरे दिमाग मे लाख कोशिश करने पर भी नही जा रही है और रह-रह कर मुझे रुला रही है परन्तु अब जो आशा की लहर सामने दिख रही है उसके लिये हमे निरन्तर और अथक् परिश्रम करना होगा। मै आशा करता हूँ कि सभी देवता अब कमर कस कर कार्य पूर्ण करने के लिये तैयार हो जायँगे।" फिर उसने खामोश बैठी हुई सुन्दरी फ्रिग की ओर देखा वह इस समय भी मातम के काले कपडे पहने हुई थी। जब आडिन ने उसे उसके बेटे बाल्डर की स्त्री नाना की भेजी हुई झीनी ओढनी और सोने की अँगूठी दी और उससे कहा कि इच्छानुसार वह उसे फुल्ला को दे दे तो वह फफक-फफक कर रो उठी। हीमन्डल उसको देख कर विचलित हो गया। मुश्किल से अपने को सँभालते हुऐ धीमे परन्तु दृढ स्वर से उससे कहा

"हे असगार्ड की सुन्दरी रानी तेरे दुख से आज सारा ससार दुखी है परन्तु अब और अधिक दुख करने का समय नही है। अब हमे काम करना चाहिये जिस प्रकार तूने पहले अपनी दासियाँ सारे ससार मे भेज कर सभी चल और अचल वस्तुओ से बाल्डर का अहित न करने की सौगन्ध ली थी उसी प्रकार अब फिर ससार के सभी प्राणियो के पास तू अपनी दासियाँ और सखियाँ को दुबारा भेज और उनसे कहलवा कि यदि वह सभी वास्तविकता मे बाल्डर की मृत्यु से दुखी हैं तो अब उसके लौटाने का भी उपक्रम करे और इसके लिए अपने दुख को रो कर दिखावें क्योकि उर्द की शर्त के अनुसार

तब रोते-रोते हीमन्डल ने आडिन को ड्रोप्नर नाना की झीनी ओढ़नी और सोने की अंगूठी दी और बाल्डर और नाना की उदासी का पूरा वृतान्त सबों से कहा। उसने कहा

"मै शपथपूर्वक कहता हूँ कि असगार्ड का यदि कोई भी देवता उन्हे उस हालत मे देख लेता तो अवश्य ही रोता परन्तु उस हेला में जब उसके आँसू सूख जाते तो दुख उसके हृदय मे घुमड घुमड कर शायद उसका अन्त ही कर देता। गजौल नदी पर उस विचित्र और चमचमाते सोने के पुल पर जब मे वापस आया तभी मुझे मेरे आँसू वापस मिले थे। वहीं बैठ कर मैने अपने हृदय मे उमडने दुख को आँखो से बहाया था वह याद मेरे दिमाग मे लाख कोशिश करने पर भी नही जा रही है और रह-रह कर मुझे रुला रही है परन्तु अब जो आशा की लहर सामने दिख रही है उसके लिये हमे निरन्तर और अथक् परिश्रम करना होगा। मे आशा करता हूँ कि सभी देवता अब कमर कस कर कार्य पूर्ण करने के लिये तैयार हो जायेंगे।" फिर उसने खामोश बैठा हुई सुन्दरी फ्रिग की ओर देखा वह इस समय भी मातम के काले कपड़े पहने हुई थी। जब ओडिन ने उसे उसके बेटे बाल्डर की स्त्री नाना की भेजी हुई झीनी ओढनी और सोने की अँगूठी दी और उससे कहा कि इच्छानुसार वह उसे फुल्ला को दे दे तो वह फफक-फफक कर रो उठी। हीमन्डल उसको देख कर विचलित हो गया। मुश्किल से अपने को सँभालते हुए धीमे परन्तु दृढ स्वर से उससे कहा

'हे असगार्ड की सुन्दरी रानी तेरे दुख से आज सारा ससार दुखी है परन्तु अब और अधिक दुख करने का समय नहीं है। अब हमे काम करना चाहिये जिस प्रकार तूने पहले अपनी दासियाँ सारे ससार मे भेज कर सभी चल और अचल वस्तुओ से बाल्डर का अहित न करने की सौगन्ध ली थी उसी प्रकार अब फिर ससार के सभी प्राणियो के पास तू अपनी दासिया और सखिया को दुबारा भेज और उनसे कहलवा कि यदि वह सभी वास्तविकता मे बाल्डर की मृत्यु से दुखी हैं तो अब उसके लौटाने का भी उपक्रम करें और इसके लिए अपने दुख को रो कर दिखावें क्योंकि उर्द की शर्त के अनुसार

"मूर्खो तुम यहाँ क्यो आये हो ? क्या तुम जानते नही कि जब म क्रोध करती हूँ ता पृथ्वी फट जाती है, समुद्र टॅकारे लेने लगता हे ? यदि अपना भला चाहो तो तुम लाग फोरन यहाँ से वापस चले जाओ।"

"लाहे के जगलो को आबाद करने वाली अयगर बोडा त इतना घमड न कर क्योकि घमड अच्छा नही होता। हम तुझसे लडने नही आये हें बल्कि तुझसे कुछ प्रार्थना करने को यहाँ आये ह यदि तू भी ओरो की भॉति रो दे ओर तेरा ऑखो से ऑसू बहने लग पडे तो निश्चय ही ससार की खोई निधि वापस आजाय। ऐसा ही हैला की रानी की शर्त हे।"

अयगर बोडा ने साश्चर्य उनसे पूछा कि वह कान सी निधि थी जिसे वह वापस बुलाना चाहते थे ओर तब दूतो ने विस्तारपूर्वक सारी बातें उससे कह सुनाई। सुन कर वह बडे जोर से हॅसी और बोली, 'मूर्खो मेरा नाम थौक है और मे अँधकार हूँ। बाल्डर ने कभी मेरी मदद नही की। वह सदा से मुझे भगाता रहा है। मै उसके लिए क्यो रोऊँ यदि रोऊँ ? भी तो मेरे नेत्रो से केवल आग के ऑसू ही निकलेंगे। तुम जाओ क्योकि मुझे बाल्डर की मृत्यु से कोई दुख नही है। हैला की रानी अपनी चीज को अपने पास रक्खे।"

दूत दुखी होकर वापस चले आये। उसी क्षण आसमान मे बडे जोर की गड़गडाहट हुई और जब गडगडाहट शान्त हुई तो मेघ गम्भीर ध्वनि मे आकाशवाणी हुई

"बाल्डर उर्द का है वह नही आवेगा।"

सारे असगार्ड मे मातम का गहरा अँधेरा छा गया। बाल्डर इतने पास आकर एक बार फिर उनके हाथ से छिन गया। अब उसके पाने की आ न रही। दुख से फ्रिग मूर्छित होकर गिर पडी। देवताओ को तब क्रोध चढा ओर लोक को देख कर जब उन्हे याद आया कि गुलवीग होटर उसी की स्त्री हे तो उन्होने उसको पकड लिया। पर वह चतुर और दुष्ट आसा देवता उनकी पकड से छूट कर भाग गया। ओर अपनी स्त्री अयगर बोडा के पास लोहे के बन मे चला गया। बाल्डर की मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग ओर पृथ्वी कहीं भी पहले सा उल्लास न रहा।

के महल की ओर चले। जब वह वहाँ पहुँच गये तो पेयीगर और उसकी पत्नी रैन ने उनका भव्य स्वागत किया। वृद्ध पेयीगर जिसकी लम्बी सफेद दाढ़ी सदा बर्फ से ढँकी रहती थी, आज उल्लसित होकर अपने मित्र का स्वागत कर रहा था। रैन बहुत खतरनाक औरत थी, जब पूर्व दिशा से भयानक तूफान छोड़ कर अयगर बोडा समुद्र मे तैरते हुए जहाजो को पेयीगर के मौत के जबडे की ओर जबरदस्ती ढकेल देती तो यही रैन उन्हें पकड़ कर समुद्र की अतल गहराइयो मे डुबा देती और सब से पहले डूबे हुए जहाजो की तलाशी लेकर उनमे भरे हुए सोने को निकाल लेती थी, आज वही रैन सौम्य स्त्री बनी हुई देवताओ का स्वागत कर रही थी।

रैन की नो पुत्रियाँ जो विशालकाय थीं और जिनके सिर बैठे ही बैठे आसमान मे बादलो के ऊपर निकले रहते थे, दुनियाँ की चक्की मे येमर और उसके पुत्र बलगर-मर के शरीरो को पीसा करती थीं। जब वह कभी-कभी खेलतीं तो पहाडो से बड़ी-बड़ी चट्टानो को उठा कर समुद्र मे फेंका करती थी जिससे समुद्रो मे भयानक ज्वार-भाटे उठते थे। आज असगार्ड के देवताओ का खडे होकर वह भी स्वागत कर रही थीं।

दावत शुरू हुई। पेयीगर का भवन प्रकाश से जगमगा रहा था। नये अनाज से बने पदार्थो को सभी लोग स्वाद ले-ले कर खा रहे थे। बडे-बडे पुष्ट बैलो को समूचा भून लिया गया था। ऐसे कई बैला को यात्रा से थका हुआ, भूख से व्याकुल और अकेला ही खा गया था। पुरानी मीठी शराब हाथों हाथ बह रही थी। आनन्द का स्रोत बह रहा था। कवि लोग नई-नई कविताएँ गा-गा कर सुना रहे थे।

कभी वह पेयीगर के गुणो की प्रशसा गाते थे तो कभी वह ओडिन के शौर्य की प्रशसा करते थे। जीवन हलचल बन कर थिरक रहा था। नशे मे चूर सभी लोग मस्त होकर बैठे थे।

उसी समय चोरी-चोरी खामोश कदमो से आगे बढते हुये लोक भवन के बाहर पहुँचा। वह उस दावत मे बुलाया तो नहीं गया था परन्तु आमा-देवता होने के नाते सभी देवताओ के साथ खाने का अपने आप को अधि-

"वह तेरी ही बातें कर रहे ह और तेरी दुष्टता का विस्तारपूर्वक वर्णन कर रहे ह।" ऐल्डर ने फ़ौरन जवाब दिया।

"तब तो मे अन्दर अवश्य ही जाऊँगा और म उनको एक-एक करके समझ लूँगा और इतना शरमिंदा करूँगा कि उनकी बोली बन्द हो जाय।"

लोक क्रोध से भनभनाता हुआ ऐल्डर की बगल से झपट कर भवन मे घुस गया। देवता लोगो ने जब उसे फिर आया हुआ देखा तो वे लोग बहुत नाखुश हुये और उनका क्रोध सीमा से बाहर हो गया। वे लोग उसी समय उसका सिर काट लेने को आतुर हो रहे थे परन्तु वह स्थान उनका अपना न था।

ऐईगर के यहाँ आपस का झगडा तब नही करना चाहते थे। दूसरी बात, यह थी कि किसी भी आसा-देवता का रुधिर ऐट्रीगर जैसे क्षुद्र राजा के भवन मे फैलाकर वह लोग स्वय अपना अपमान नही करना चाहते थे। क्रोध को पीकर वह खामोश बैठे रहे और लोक को घूर कर देखते रहे। उसी समय लोक ने हाथ उठाकर ऊँचे स्वर से तब प्रश्न किया :

'इस सुनहरी शराब को पाने का मे वास्तविक अधिकारी हूँ और इस लिये म लोक आज तुम्हे चुनौती देता हूँ कि शीघ्र मेरा बट मेरे सामने रख दो नहीं तो इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। ऐट्रीगर का निमत्रण नामवार किसी के लिये नही था। उसने सभी आसा-देवताओ को बुलाया था क्या मै आसा-देवता नहीं हूँ ?"

सगीत के देवता ब्रेग ने यह सुनकर उग्र स्वर मे उसका विनोद किया। वह चिल्लाकर बोला, "तू अपनी करतूतो से इतना नीचे गिर गया है कि अब तू आसा देवता नहीं कहा जा सकता न हमारी बराबरी ही कर सकता है। हमने तुझे तेरी दुष्टता के कारण अपनी जाति से निकाल दिया। ओ दुष्ट समझ ले कि शीघ्र ही हम तुझे ऐसा दण्ड देंगे कि फिर तू जीवन भर उपद्रव न कर सकेगा।"

लोक यह सुनकर ओडिन की ओर देख कर गला फाड कर चिल्लाया

तू गुलाम कहता है और यह भी अच्छी तरह जानता है कि यदि मुझे क्रोध आ गया और मैं अपनी भारी कुल्हाडी लेकर तेरे ऊपर टूट पडा तो तेरी हड्डी-हड्डी करके फेंक दूँगा।"

"ओ अयगर बोडा के प्रशित कुत्ते क्या तुझे अपने कन्धे पर सिर भारी लगने लग गया है ? याद रख मेरा नाम नजार्ड है अब यदि एक शब्द भी तू मेरी शान के खिलाफ कहेगा तो निश्चय ही मैं तुझे कुत्ते की मौत मार डालूँगा। मेरा पुत्र फ्रे जो सारे ससार का प्यारा है और जो पकी हुई फसलो का देवता है यदि तेरी बाते सुन पाया तो तुझे पृथ्वी पर पटक कर मानवो द्वारा साधारण लोहे के हलों से पृथ्वी के साथ-ही-साथ जुतवा डालेगा।"

तेल से चिकने हाथो पर जिस प्रकार पानी की बूँद नही ठहरती उसी प्रकार निर्लज्ज लोक पर किसी भी बात का कोई असर नही होता था। उसने अब नजौर्ड को तो छोडा और फ्रे को गालियाँ देने लगा। यह सुनकर युद्ध का देवता टायर बोला :

"अरे दुष्ट लोक तू साधारण शिष्टाचार भी नही जानता। नजौर्ड का दिव्य जोति वाला पुत्र फ्रे देवताओ मे श्रेष्ठ है। वह ससार की पकी हुई फसलों की रक्षा करता है और बडा दयालु है। सारा ससार उसे हृदय से चाहता है और तू नीच उसे व्यर्थ मे गाली देता है।"

लोक यह सुनकर बडे जोर से हँसा और टायर से बोला, "अरे टायर तू तो चुप रह मैं उच्च आसा-देवता ऐसे हथकटो से नही बोलता। एक हाथ तो फनरर भेडिये ने खा लिया अब मेरे मुँह लगेगा तो दूसरा भी तोड दूँगा।

टायर क्रोध से लाल हो गया और बोला "मेरा तो एक ही हाथ गया पर तेरी तो ओ दुष्ट सारी मर्यादा ही मिट्टी मे मिल चुकी है।"

तभी फ्रे क्रोध से चिल्ला उठा, 'हे लोक अब बहुत हो चुका एक शब्द भी यदि तूने अपने मुँह से अब निकाला तो पहले तो मारते मारते तुझे यही अधमरा कर दूँगा और फिर बँधवाकर तुझे भी तेरे बेटे फनरर भेडिये की बगल मे बँधवा दूँगा।"

पर आक्रमण करने को आगे बढे। उसी समय ऐईगर के भवन मे बिजली कड़की। दूसरे ही क्षण महाबली थोर हाथ मे मजोलनर लिये कमरे के मध्य भाग मे खडा दिखाई दिया। उसने मेघ गम्भीर ध्वनि से लोक से कहा : 'बुद्धिमान पुरुष अपनी मृत्यु को स्वय नही बुलाते, मुझे आश्चर्य है कि तेरा जैसा चालाक व्यक्ति आज मरने पर क्यो तुल गया है ?"

परन्तु लोक बडा चतुर था, वह जानता था कि चाहे जो कुछ भी हो ऐईगर के भवन मे उसका रक्त नही बहाया जा सकता था। थोर की बात सुनकर वह तनिक भी नही डरा, न देवताओ की धमकियो से ही वह चुप हुआ। थोर की ओर देख कर वह उपहास करता हुआ बोला "अरे थोर क्यो बढ-बढ कर बाते बनाता है। स्क्राइमर के दस्ताने मे अँगूठे के छेद मे जब रात भर डर से काँपता हुआ बैठा था तब तेरी वीरता कहाँ गई थी ऐसे बाते बनाया कर जो तेरी असलियत न जानता हो।"

थोर यह सुन कर क्रोध से गरजा, आकाश मे बिजलियाँ बडी देर तक कडकडाई, भयकर तूफानो से समुद्र थर्रा उठा, उसकी लहरे पहाडो से भी ऊँची उठ कर ऐईगर के महल पर थपेड मारने लगी, ऐसा मालूम होने लगा मानों दुनियाँ का अन्त ही आ गया हो थोर के नेत्र अग्नि की भाँति जलने लगे। अपनी घनी काली भौं को मिलाये फुरती के साथ उछल कर उसने लोक को पकड़ लिया और मजौलनर को घुमा कर ऊँचा तान लिया और गरज कर बोला, "खामोश हो जा नहीं तो मजौलनर के एक ही हाथ से तेरा सिर भुट्टे की तरह उड़ा दूँगा। अयगर बोडा के कुत्ते तेरा इतना साहस कि तू मुझसे ऐसे शब्द बोलता है।"

लोक सारी उद्दन्डता भूल कर और बहुत नरम बना हुआ बिल्कुल भोला बन कर खुशामद करते हुए थोर से बोला

"हे महाबली थोर इतना क्रोध क्यो करते हो ? मैने तुम्हारे अपमान करने की नियत से तो कुछ नहीं कहा, केवल कुछ पुरानी बाते मुझे इस समय याद आ गई थीं जो मैने सभा के मनोरजन के लिए इस समय कह डाली। अब तुम मुझसे चुप रहने को कहते हो तो लो मै चुप हुये जाता हूँ", और तब वह खमोश हो गया।

सिंहासन पर चढ़ा और वहाँ से उसने नौओं दुनियाँ देखी। अपनी पैनी एक आँख से उसने झरने के पीछे उस तंग गुफा में लोक को अकेले बैठा देखा। शीघ्र ही उसने देवताओं को बुला कर लोक के छिपने का स्थान उन्हें बतला दिया। वे लोग यह सुन कर बहुत खुश हुए और फिर शीघ्र ही उसे पकड़ने चल दिये। उस गुफा के पास पहुँच कर उन्होंने अपने चार दल बनाए और एक साथ चारों दरवाजों से उसे पकड़ने अन्दर घुसे इससे पहले कि वे लोग अन्दर घुसे, लोक ने पलक मारते अपने उस जाल को जला दिया।

जब देवता लोग उस लौ को देखने लगे इसी बीच फुरती के साथ वह एक बहुत छोटी मछली बन कर उस गहरी झील में कूद पड़ा। गहरे पानी में नीचे पड़े हुये दो पत्थरों के बीच में वह घुस कर छिप गया। जब देवता लोग उस गुफा में घुसे तो लोक उन्हें नहीं मिला। हीमन्डल के समान तेज निगाहों वाले नजार्ड के बेटे क्वेसिर ने वहीं पृथ्वी पर पड़े, जले हुये जाल को देखा और वह फुसफुसा कर अपने साथियों से बोला।

"जाल अभी जला मालूम होता है। जो लौ हमने अभी देखी थी इसी जाल की थी। निश्चय कहीं आस पास ही होगा।"

देवता लोग वहीं बैठ गये और जल्दी-जल्दी उसी तरह का एक और जाल उन्होंने बुन डाला। जब वह बन गया तो उसको जल में फेंक दिया और जब वह जल के अन्दर जाकर फैल गया तो उसे ऊपर खींचा। लोक बाल बाल बच गया और जाल की बगल में होकर कूद गया। अबकी बार देवताओं ने उस जाल में पत्थर बाँधे और उसे भारी कर दिया जिससे वह पानी की सतह में भी जाकर लोक को फँसा सके। पानी के अन्दर तैरते हुए लोक ने उनके आशय को समझ कर अब झरने के नीचे डुबकी लगाई पर देवता भी सतर्क थे। बगुला बन कर थार बीच धार में जा पहुँचा और झील के दोनों किनारों पर खड़े होकर प्रतिहिंसा की आग से जलते हुये देवताओं ने जल के अन्दर जाल को तान कर एक साथ ही दोनों ओर से खींचा लोक के पास बचने के केवल दो उपाय थे या तो वह जाल के ऊपर से पहले की भाँति एक बार फिर कूद जाता और या जल ही जल में होता हुआ अन्दर ही अन्दर समुद्र में पहुँच जाता।

सिर पर दे मारी और उसे मार डाला। देवताओं ने शीघ्र नार्वी की आँतो मे बट कर एक मजबूत रस्सा बनाया जो लोहे की जजीरो से भी ज्यादा पक्क था। अब तीन पैनी चट्टानो पर लोक का लिटा दिया गया और उस रस्से मजबूती के साथ उसे बाँध दिया गया। एक ओर फनरर बधा पडा था औ दूसरी ओर लोक उन दुष्टो को पास पास बाँध कर देवता लग बहु प्रसन्न हुए।

थजासे की पुत्री स्केड नजोर्ड को छोड कर बफ मे ढके हुए पहाडो जगली जानवरो का शिकार किया करती थी। नजोर्ड के साथ जब वह समुद्र किनारे रहती थी तब समुद्र की लहरा के शब्द से वह घबरा उठी थी औ रह रह कर अपने पिता थजासे के पहाडी देश की याद उसे सताया करती थी जब वाना और आसा देवताओ मे युद्व हुआ उस समय मौका देख कर व नजौर्ड को छोड भागी और ऊँचे-ऊँचे पहाडो के बीच अपने पिता के देश वह पुन. आकर बस गई थी। लोक पर उसे शुरू से ही क्रोध था क्यो उसी ने उसके पिता थजासे को मरवाया था और उसी कारण इतना दु भोगने के बाद अब उसे पहाड़ो मे अकेले ही मारे-मारे फिरना पडता था। अ उसको जब मालूम हुआ कि उसका परम शत्रु फनरर भेडिये की बगल बाँधा जा चुका है। तो खुशी से उछलती कूदती वह वहाँ पहुँची। लोक बँ पडा था। स्केड अपने साथ एक बहुत जहरीला साँप लाई थी। उस विषध को उसने लोक के सिर के ऊपर एक चट्टान से ऐसा बाँध दिया कि उस मुँह से निरन्तर गिरता हुआ हला ल विष ठीक लोक के माथे पर गिर लगा। असह्य पीडा से उस विष से लोक जल कर चिल्लाने लगा।

इसके पश्चात् सभी देवता असगार्ड को लौट गये। लोक के पास केव उसकी स्त्री सिगैन अपनी इच्छा से रुक गई। अपने पती की असह्य यात देख कर वह बहुत खुशी हुई और उसने उसकी रक्षा का एक उपाय सोचा साँप के मुँह से टपकने जहर को उसने लोक के सिर के ऊपर एक बडा कटो लेकर उस पर गिरने से रोका। लोक को इससे बहुत शान्ति मिली परन्तु ज कटोरा उस गिरते हुए जहर से भर गया तो उसे खाली करने के लिए हटा

ओडिन

असगार्ड का राजा ओडिन बुड्ढा हो गया था परन्तु शरीर से वह हृष्ट पुष्ट और बलिष्ठ था। अपने ज्ञान और बुद्धि के लिए तो वह प्रसिद्ध था ही, साथ ही साथ उसका पौरुष भी अपार था। लम्बी सफेद दाढी वाला ओडिन जब ड्वेल्डे द्वारा बनाये हुये गगनर भाले को हाथ मे लेकर स्लीपनर पर चढता तो उसके सामने पडने का साहस किसी का नही होता था। बाल्डर की मृत्यु के पश्चात् एक बार ओडिन घूमता हुआ बर्फ से ढके हुये विलिग के जगल मे जा पहुँचा। सुदूर पश्चिम मे यह जङ्गल सूरज और चन्द्रमा के छिपने का स्थान था। जब लोहे के जङ्गल मे रहने वाले भयानक भूखे भेडिये उनका पीछा करते तो वह यही आकर छिप जाते थे। कठोर भुजाओ वाले बार्न लोग इस जङ्गल मे विलिंग की छत्र छाया मे रहते। विलिंग की पुत्री का नाम सौल (सृन्द) था और वह कमनीय सुन्दरी थी। जब वह अपनी सोने की नरम शैय्या पर सोती थी तो चुनींदा बार्न योद्धा हाथो मे मशाल लेकर उसकी शैय्या के चारों ओर पहरा देते थे। वह दिन मे सोते थे और सध्या समय जब सोल अपने रथ को विलिग के किले की तरफ फिर भगा देती तो वह लोग जलती मशालों को लेकर उसका पीछा करते थे।

मशालों की लाल रोशनी उनके भागने मे फरफराती थी और तब ससार मे सध्या की लालिमा फैल जाती।

विलिग की पुत्री का नाम सृन्द था और वह बहुत सुन्दर थी। उसके सुगठित शरीर से उसका यौवन फूट-फूट कर निकलता था। ओडिन ने जब उसे देखा तो वह उसे पाने के लिये विचलित हो उठा। शीघ्र वह स्लीपनर पर चढ कर उसके पास गया और उसने उससे प्रणय की भिक्षा माँगी। वह बोला

"हे सुन्दरी असगार्ड का यह राजा तुझ से प्रेम की भीख माँगता है तू इसकी स्त्री बन कर इसे कृतार्थ कर।"

ऋृन्ड ने उसकी ओर यह सुन कर एक बार गौर से देखा और फिर वह बडे जोर से हँसी। उसने कहा, "हे ओडिन तू असगार्ड का राजा है, तेरी बुद्धि और ज्ञान ससार मे प्रसिद्ध है परन्तु इस वृद्ध अवस्था में तुझे एक जवान औरत से प्रणय की भिक्षा माँगते देख मुझे आश्चर्य होता है यह तेरे लिये शोभा नहीं देता। मै तुझसे विवाह नहीं कर सकती।"

ओडिन फिर भी चुप न रहा और अपना प्रेम प्रगट करता ही रहा। वह स्त्री जो स्वभाव से ही गम्भीर थी तब घृणा से उसकी ओर देखने लगी और उसने उसे फटकार दिया। पराक्रमी ओडिन के जीवन में यह पहली हार थी। उसे अपने आप पर ग्लानि होने लगी। वह बाँस के जङ्गलों मे जाकर विरह की अग्नि मे जलता हुआ अकेला बैठ गया और जादू के मत्र पढने लगा। वह किसी भी तरह ऋृन्ड के ठडे हृदय मे प्रेम की आग लगा देना चाहता था परन्तु देर तक प्रतीक्षा करने पर भी जब ऋृन्ड उसके पास नहीं आई तब वह हताश होकर उठा और अब की बार कुछ अमूल्य भेटें लेकर वह उस कठोर सुन्दरी के स्थान की ओर चला। उसने उसके सामने जाकर वज्र खचित सुवर्ण से बनी कमर की पेटी और हाथ की अगूठियाँ उसको भेंट मे दीं। सूर्य के प्रकाश मे शुद्ध सोना जगमगा रहा था और उनमे जडे मणि-माणिक्य ऋृन्ड की आँखों मे चकाचौंध पैदा कर रहे थे। सुन्दरी उन्हें देख कर प्रसन्न हो उठी परन्तु जब उसने आँख उठा कर ओडिन की ओर देखा तो वह घृणा से भर गई और उसकी क्षण मात्र की प्रसन्नता एकदम लोप हो गई।

उसने अपना मुँह फेर लिया और हाथ के सकेत से ओडिन को चले जाने को कहा। ओडिन उदास हृदय से लौट आया। तीसरी बार ओडिन उसके पास एक जवान योद्धा का रूप बना कर गया। उस समय उसका रूप अद्भुत था। उसके सिर पर सोने का सिरस्त्राण चमचमा रहा था और बगल में उसने सोने की मूँठ की तलवार लटका रक्खी थी। ग्रीष्म काल के समुद्री लुटेरे के समान वह प्रचड वीर और धनुर्धर मालूम होता था। उस समय सुन्दरी ऋृन्ड (सौल) अपनी सुवर्ण शय्या पर सो रही थी। बारह योद्धा हाथों में मशाल लेकर अपनी स्वामिनी की रक्षा कर रहे थे। प्रातःकाल जब सभी सो जाते थे तो भेडिये की नसल का एक कुत्ता उसकी रक्षा करता था। इस समय वह बाहरी

चोखट पर बैठा ऊँघ रहा था। ओडिन को देख कर अपने भयानक जबड़े को खोले वह उस पर लपका साथ ही साथ वह बुरी तरह भौकने लगा। उसके भौकने से ऋन्ड जाग गई और शय्या पर उठ बैठी उस समय उनीदे नेत्रो से जब उसने सामने खड़े हुए उस जवान योद्धा को देखा तब वह एक बार भ्रम में आ गई जब उसने हाथ उठा कर अगड़ाई ली तो ओडिन अपने को और अधिक न सँभाल सका। अस्त-व्यस्त वस्त्रो मे से ऋन्ड का यौवन बाहर झाँक रहा था उसके लम्बे सुनहरे बाल इस समय खुले हुये थे। इस समय वह अनुपम रूप सुन्दरी अपने सौन्दर्य से ओडिन को बुरी तरह घायल कर रही थी। वह अपने को और अधिक न रोक सका और साधारण पुरुषो की तरह वह उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गया और उसने उससे प्रणय की भीख माँगी और जैसे ही ओडिन ने उसके सामने अपने सिर झुकाया। एक बार उसने झट से कह दिया कि प्रणय का भिक्षुक और कोई नही बल्कि ओडिन ही था। यह सुनते ही वह पुनः कठोर बन गई और तीसरी बार उसने असगार्ड के राजा को फटकार कर भगा दिया। ओडिन अब उसकी ओर से हताश हो गया था।

ऋन्ड दुनियाँ के जाड़ा की रानी थी। उसी की साँसो से ससार मे ठण्डे तूफान चलते थे। एक बार जब वह बीमार पड़ी तो ससार की ऋतुओं की व्यवस्था बिगड़ गई तरह तरह के इलाज करवाये गये और बिलिग ने अपनी प्यारी बेटी को ठीक करने के लिये नौओं दुनियाँ मे सदेश भेजे और कहलवाया कि जो कोई भी उसे ठीक कर देगा उसका वह सदा कृतज्ञ रहेगा। असगार्ड मे जब यह समाचार पहुँचा तो ओडिन की खोई आसा एक बार फिर जाग्रत हो उठी। अपने विचित्र भाले को लेकर वह उछल कर स्लीपनर पर जा बैठा और वायु वेग से आकाश मार्ग मे तैरता हुआ शीघ्र ही वह बिलिंग के यहाँ जा पहुँचा। उसने जगल में अपना घोडा और अपने वस्त्र छिपा दिये और एक चुड़ैल का भेष धारण करके ऋन्ड के पास गया। ऋन्ड उस समय जागी हुई पड़ी थी। उसने जाकर उस पर अपना जादू किया और शीघ्र ही बिलिग की वह सुन्दर लड़की पागल होकर चिल्लाने लगी। उसी प्रकार उसके बाद ओडिन ने ऋन्ड पर और भी उल्टे जादू किये और उसको इतना पागल कर दिया कि वह भयकर रो उठी और मारने दौड़ी।

चमक उठा। पैदा होते ही वह पुत्र जिसका नाम वेल था एकदम उठ बैठा और तेजी के साथ चलता हुआ देवताओं के ऊँचे थिगस्टड में पहुँचा। उसको पार करता हुआ वह दो ही पग मे विजयी आत्माओ के आनन्द करने के स्थान बालहाला के पास जा पहुँचा। जब वह बालहाला के अन्दर जाने लगा तो दरबान ने उसे अन्दर जाने से रोका क्योकि माता के गर्भ से निकलने के बाद वह सीधा ही यहाँ चला आया था। उसके बाल बिना सुते हुये और हाथ बिना धुले हुये थे। वेल जिसका मुख बच्चो की भाँति और शरीर पराक्रमी योद्धा जैसा था इस अपमान को सहन नही कर सका। अपने मजबूत धनुष और भयानक तीन तीरों को शीघ्रता से सँभालते हुये उसने उस दरबान के कसकर एक लात मारी जिसकी चोट से वह दरबान बालहाला के उस पवित्र स्थान से लुढककर नीफल हीम के अँधेरे मे जा गिरा और जब वह सशरीर वहाँ जोर से गिरा तो नीफल-हीम के रखवाले भूखे और भयकर भेडियो ने उसको फाड़कर खा लिया।

ऊँचा सिर उठाये वेल तब बालहाला मे घुस गया। उसने देखा कि दावत हो रही है। दिव्य ज्योति चारो तरफ फैली हुई है। हीरे-मोतियो से जडे हुये बालहाला के ठोस सोने के खम्भे उस प्रकाश मे जगमगा रहे है। बीच मे ओडिन अपने सभी देवताओ के साथ सोने का ताज पहने अपने ऊँचे सुवर्ण के सिंहासन पर बैठा है। विश्व के युद्धो मे तलवार से मरे हुये वीरो की आत्माएँ देवताओं के साथ बैठे दावत खा रहे हैं। ओडिन की इच्छाओ पर चलने वाली और इन आत्माओ को युद्ध भूमि से छाँटकर लाने वाली कन्याये उनके चारों ओर सुवर्णमय भालो को पृथ्वी पर टेके सिर झुकाये खड़ी हैं। वेल यह सब देखकर भौचक्का सा रह गया परन्तु शीघ्र ही उसने अपने आप पर काबू किया और वीरतापूर्वक ऊँचा सिर किये आगे बढता चला गया। वह सीधे ओडिन के सामने जा पहुँचा जो उसे देखते ही खुशी से चिल्ला उठा और उसे बुलाकर अपने पास बिठा लिया। सभी देवता ओडिन के इस व्यवहार से आश्चर्यचकित रह गये। ओडिन ने वेल को पकड कर खड़ा करते हुये चिल्ला कर कहा

"ऐ देवताओ! सुन्दर बाल्डर अब नहीं है परन्तु उसके स्थान को पूरा करने वाला वेल तुम्हारे सामने खडा है। हे पवित्र आत्माओ उठो और इसका स्वागत करो क्योंकि यह ही वह है जिसकी प्रतीक्षा एक लम्बे समय से तुम कर रहे थे। यह बाल्डर की मृत्यु का बदला लेगा। रून्ड का यह पुत्र अजय है। सारे ससार मे इसे कोई नही जीत सकता।"

देवताओं ने ओडिन की आज्ञानुसार उसका भव्य स्वागत किया और उसे ऊँचे आसन पर बिठाकर पुरानी और मीठी शराब पिलाई। परन्तु जब उन्होंने उसका बच्चों का सा मुँह देखा तो उन्हें उस पर शक होने लगा तभी आकाश में तड़तड़ाकर बडे जोर से बिजली कडकी जिसके उज्वल प्रकाश से क्षण भर को वालहाला दिव्य ज्योति से चमक उठा। दूसरे ही क्षण प्रचड योद्धा थौर अपने भारी हथौडे मजौलनर को कधे पर रखे हुये वालहाला के मध्य भाग मे खडा दिखाई दिया। ओडिन ने हँस कर उसका स्वागत किया। थौर ने घुटने झुककर राजा को सलाम की और जब ओडिन ने उससे वेल का परिचय कराया तो वह उसके बच्चो के से मुख को देखकर अविश्वास से सिर हिलाता हुआ बडे जोर से हँसा। जब वह हँसा तो आसमान मे बादल गडगडाने लगे। उसके अट्टहास की धमक से जोटन हीम मे खडे ऊँचे-ऊँचे पहाड टूट टूटकर गिरने लगे जिनके नीचे सैकडो पहाड़ी दानव दब गये और बर्फीले दानवो ने जब यह विध्वस देखा तो भय से काँपते हुये सुदूर उत्तर दिशा मे स्थित अपनी निर्जन गुफाओ की ओर सर पर पैर रख कर भागे। समुद्र की अतल गहराईओ मे मुँह में पूँछ पकडे हुये मिडगाड के साँप ने उस भयकर अट्टहास को सुनकर डर से करवट ले ली। उसको इस प्रकार हँसता हुआ देख कर वेल ने क्रोध से तमतमाकर चिल्लाकर कहा, "हे थौर इतना घमण्ड न कर यदि तू इतना ही बली है तो क्यों नहीं तूने ही बाल्डर की मृत्यु का बदला होडुर से ले लिया।"

"मै वेल अभी एक ही रात्रि पहले पैदा हुआ हूँ परन्तु युद्ध मे मै अजय हूँ। शत्रुओ की बड़ी से बडी सेना को पलक मारते मौत के घाट उतार सकता हूँ। मेरे समान शक्तिशाली असगार्ड, मिडगार्ड, जौटन हीम और मनुष्यों की दुनिया मे कहीं भी कोई नही है। मेरे भय से समुद्र थर्राते हैं और मेरी भयकर

चमक उठा। पैदा होते ही वह पुत्र जिसका नाम वेल था एकदम उठ बैठा और तेजी के साथ चलता हुआ देवताओं के ऊँचे थिगस्टड में पहुँचा। उसको पार करता हुआ वह दो ही पग में विजयी आत्माओं के आनन्द कर के स्थान बालहाला के पास जा पहुँचा। जब वह बालहाला के अन्दर जाने लग ता दरबान ने उसे अन्दर जाने से रोका क्योंकि माता के गर्भ से निकलने बाद वह सीधा ही यहाँ चला आया था। उसके बाल बिना सुते हुये और हा बिना धुले हुये थे। वेल जिसका मुख बच्चों की भाँति और शरीर पराक्रम योद्धा जैसा था इस अपमान को सहन नहीं कर सका। अपने मजबूत धनु और भयानक तीन तीरों को शीघ्रता से सँभालते हुये उसने उस दरबान कसकर एक लात मारी जिसकी चोट से वह दरबान बालहाला के उस पवि स्थान से लुढककर नीफल हीम के अँधेरे में जा गिरा और जब वह सशरीर बह जोर से गिरा तो नीफल-हीम के रखवाले भूखे और भयंकर भेड़ियों ने उसक फाड़कर खा लिया।

ऊँचा सिर उठाये वेल तब बालहाला में घुस गया। उसने देखा दावत हो रही है। दिव्य ज्योति चारों तरफ फैली हुई है। हीरे मोतियों से ज हुये बालहाला के ठोस सोने के खम्भे उस प्रकाश में जगमगा रहे हैं। बीच ओडिन अपने सभी देवताओं के साथ सोने का ताज पहने अपने ऊँचे सुवर्ण सिंहासन पर बैठा है। विश्व के युद्धों में तलवार से मरे हुये वीरों आत्माएँ देवताओं के साथ बैठे दावत खा रहे हैं। ओडिन की इच्छाओं प चलने वाली और इन आत्माओं को युद्ध भूमि से छाँटकर लाने वाल कन्यायें उनके चारों ओर सुवर्णमय भालों को पृथ्वी पर टेके सिर झुका खड़ी हैं। वेल यह सब देखकर भौचक्का सा रह गया परन्तु शीघ्र ही उस अपने आप पर काबू किया और वीरतापूर्वक ऊँचा सिर किये आगे बढ़ता चला गया। वह सीधे ओडिन के सामने जा पहुँचा जो उसे देखते ह खुशी से चिल्ला उठा और उसे बुलाकर अपने पास बिठा लिया। सभी देवत ओडिन के इस व्यवहार से आश्चर्यचकित रह गये। ओडिन ने वेल को पकड़ कर खड़ा करते हुये चिल्ला कर कहा

"ऐ देवताओ! सुन्दर बाल्डर अब नहीं है परन्तु उसके स्थान को पूरा करने वाला वेल तुम्हारे सामने खड़ा है। हे पवित्र आत्माओ उठो और इसका स्वागत करो क्योंकि यह ही वह है जिसकी प्रतीक्षा एक लम्बे समय से तुम कर रहे थे। यह बाल्डर की मृत्यु का बदला लेगा। रून्ड का यह पुत्र अजय है। सारे ससार मे इसे कोई नहीं जीत सकता।"

देवताओं ने ओडिन की आज्ञानुसार उसका भव्य स्वागत किया और उसे ऊँचे आसन पर बिठाकर पुरानी और मीठी शराब पिलाई। परन्तु जब उन्होंने उसका बच्चों का सा मुँह देखा तो उन्हें उस पर शक होने लगा तभी आकाश में तडतडाकर बडे जोर से बिजली कडकी जिसके उज्वल प्रकाश से क्षण भर को बालहाला दिव्य ज्योति से चमक उठा। दूसरे ही क्षण प्रचड योद्धा थोर अपने भारी हथौडे मजौलनर को कधे पर रखे हुये बालहाला के मध्य भाग मे खडा दिखाई दिया। ओडिन ने हँस कर उसका स्वागत किया। थोर ने घुटने टेककर राजा को सलाम की और जब ओडिन ने उससे वेल का परिचय कराया तो वह उसके बच्चो के से मुख को देखकर अविश्वास से सिर हिलाता हुआ बडे जोर से हँसा। जब वह हँसा तो आसमान मे बादल गडगडाने लगे। उसके अट्टहास की धमक से जोटन-हीम मे खडे ऊँचे-ऊँचे पहाड टूट-टूटकर गिरने लगे जिनके नीचे सैकडों पहाडी दानव दब गये और बर्फीले दानवों ने जब यह विध्वस देखा तो भय से काँपते हुये सुदूर उत्तर दिशा मे स्थित अपनी निर्जन गुफाओ की ओर सर पर पैर रख कर भागे। समुद्र की अतल गहराईओ मे मुँह में पूँछ पकडे हुये मिडगाड के साँप ने उस भयकर अट्टहास को सुनकर डर से करवट ले ली। उसको इस प्रकार हँसता हुआ देख कर वेल ने क्रोध से तमतमाकर चिल्लाकर कहा, "हे थोर इतना घमण्ड न कर यदि तू इतना ही बली है तो क्यों नहीं तूने ही बाल्डर की मृत्यु का बदला होडुर से ले लिया।"

"मैं वेल अभी एक ही रात्रि पहले पैदा हुआ हूँ परन्तु युद्ध मे मै अजय हूँ। शत्रुओं की बडी से बडी सेना को पलक मारते मौत के घाट उतार सकता हूँ। मेरे समान शक्तिशाली असगार्ड, मिडगार्ड, जौटन हीम और मनुष्यों की दुनिया मे कहीं भी कोई नहा है। मेरे भय से समुद्र थर्राते हैं और मेरी भयकर

शोर सुनकर आकाश काँपता है। मेरे द्वारा मारा हुआ शत्रु सीधा नीफल-हैल के अँधेरे मे सशरीर जाकर गिर पडता है जहाँ भूखे भेड़िये उसको फाड कर खा लेते हैं। मै बालहाला के इस पवित्र स्थान को खून से नहीं भिगोना चाहता इसलिये हे थौर मेरा उपहास न कर। यह मौका न दे कि मुझे अपनी शक्ति का परिचय देने की आवश्यकता पडे।"

जब वह कह कर चुप हुआ तो देर तक बालहाला उसकी भयंकर रोर से गूँजता रहा और जब यह गूँज समाप्त हुई तो ओडिन ने ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा, "असगार्ड के देवताओ, बालहाला मे कभी कोई झूँठ नही बोल सकता। वेल का कथन सच है। उसका स्वागत करो क्योंकि निश्चय ही ऋन्ड का यह पुत्र बाल्डर की मृत्यु का बदला लेगा।"

देवता लोगो ने तब वेल की बार-बार जय बोली। उस जय जयकार से बालहाला गूँज उठा। उसके पश्चात् ओडिन का वह पुत्र तलवार से मारे गये वीर पुरुषो की आत्माओ और देवताओं के साथ बैठ कर दावत खाने लगा पवित्र बनैले सूअर सीहरिमनर को काट कर बनाए हुये उत्तम भोजन को उन सबों ने पेट भर कर खाया। इस सूअर को बालहाला मे वह लोग नित्य मार कर खाते थे और जब रात्रि होती और दावत समाप्त हो जाती तो वह सूअर फिर जीवित हो उठता और दूसरे दिन फिर मार कर खा लिया जाता वह सोने की तरह चमकने वाला सूअर इतना बड़ा था कि उसके मास को खाकर देवताओं और वीर आत्माओं सभी का पेट भर जाता। जब सभी खा चुकते तो भी बहुत सा बच रहता जो बालहाला के दासों द्वारा गजौल नदी पर बने सोने के पुल की रखवाली करने वाली बोनी को दे दिया जाता। वेल ने उस स्वादिष्ट भोजन को खाकर आत्म तृप्ति से प्रसन्न हो कर ओडिन को धन्य वाद दिया और तब वह शराब पीने लगा। उसके सिर के बाल अब भी बिना धुले हुये थे और उसने हाथ अब भी नहीं धोया था। केवल एक रात की आयु वाले ओडिन के उस पुत्र वेल ने इतना मास खाया कि थौर जो हाईम के यहाँ दो समूचे भुने हुये बैल खा गया था, उसको देखकर अचम्भे में रह गया।

पूरी दावत में ओडिन ने कुछ नहीं खाया। अपने भाग का मांस उसने अपने बड़े कुत्ते गेर और फ्रेग को खिला दिया। वह केवल शराब पीता रहा। ओडिन सदा ही कुछ न खाता और केवल शराब पीकर ही शक्ति सचित करता था।

वालहाला के ऊपर लीराथ एक बहुत बड़ा छायादार वृक्ष था। उसकी छाया से वालहाला में हमेशा ठंडक बनी रहती। सूर्य की तेज किरणों व उसकी पत्तियाँ वालहाला में चकाचौंध से पवित्र आत्माओं की रक्षा करती थीं।

उन स्वादिष्ट और मीठी पत्तियों को ओडिन की हमेशा जवान रहने वाली बकरी हीड्रुन खाती थी और उस के मीठे दूध को योद्धाओं की आत्माएँ दावत के समय स्वाद ले लेकर पीते थे आज सारे दूध को अकेला वेल ही पी गया था।

जब दावत समाप्त हुई तो योद्धा अपने-अपने स्थानों से अस्त्रों को सँभालते हुए बाहर निकले। वेल ने देखा कि उस समय प्रत्येक योद्धा क्रोध से तमतमा रहा था। हर एक के हाथ मे नंगी तलवारे चमक रहीं थी। वालहाला के ५४० दरवाजो मे से शीघ्रता के साथ वह योद्धा बाहर निकले। प्रत्येक दरवाजे से आठ-आठ सौ योद्धा अस्त्रों को खड़खड़ाते हुये निकल कर सामने के बड़े मैदान मे एकत्रित हो गये। शीघ्रता के साथ उनमें दो दल बन गये और जब ओडिन ने तुरही फूँकी और उसकी आवाज सुनकर वालहाला के द्वारपालों ने नरसिंहे फूँक कर रणभेरी का नाद किया तो मैदान में खड़े हुये योद्धा भयकर अस्त्रों को लेकर एक दूसरे पर टूट पड़े। भयानक युद्ध शुरू हो गया भीषण मारकाट से युद्धभूमि लाशों से पट गई और चारों तरफ खून ही खून दिखाई देने लगा। सृष्टि के अन्त में सुरथुर की विशाल सेना से युद्ध करते समय जिस प्रकार असगार्ड के देवता रैगनैरोक के समय प्रचड वीरता के साथ लड़ने वाले थे उसी वीरता के साथ वह योद्धा मार-काट कर रहे थे। बड़े-बड़े घोड़ो पर चढे हुये वह एक दूसरे के टुकड़े-टुकड़े कर डालते थे।

देर तक युद्ध होता रहा और जब युद्ध समाप्त हुआ तो एक भी योद्धा जीवित नही बचा था। बेल ने देखा कि वे सभी मर गये थे। उदास मन मे बेल युद्ध भूमि से लौटा और बालहाला मे वापस आया पर तब उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने उन्हीं मरे हुये योद्धाओ को वहाँ आराम से बैठे हुये शराब पीते देखा। योद्धाओ के अश्व भी जीवित होकर बालहाला के बाहर हिनहिना रहे थे। वह योद्धा रोज उसी तरह युद्ध करते थे और जब सभी मर जाते तो फिर जीवित होकर मौज करते थे, यही बालहाला का आनन्द था।

उधर असगार्ड मे खामोश चलने वाला अधा होडुर देवताओ से डर कर घने जगलो मे जा छिपा था। बहुत कोशिश करने पर भी वह उनके हाथ नही आता था। दिन के उजाले मे वह घने जगलो मे छिपा रहता और रात के अधेरे मे ही बाहर निकलता। होडुर परम ज्ञानी था और अपने भाग्य मे होने वाली वह सभी बातो को पहले से जानता था। उसको मालूम था कि सुन्दर बाल्डर की मौत का बदला लेने वाला एक न एक दिन आकर उसे मार डालेगा। सब कुछ जानते हुए भी प्राणो के मोह को वह नही छोड सका था। अधीर मन से घबराता हुआ चलने मे खामोश अधा होडुर जगल मे जगह-जगह भागा फिरता था। उसके पास एक जादू की तलवार और जादू की ही एक ढाल थी रातों को जब वह उन्हे लेकर निकलता तब किसी देवता की हिम्मत नहीं पडती कि वह उसके पास जा सके।

जब रात हुई और सोल (सूर्य) रिलिग के भवन मे अपनी सोने की शय्या पर सो गई उस समय निडर बेल अपने शत्रु से बदला लेने बालहाला से बाहर निकल पडा। चारो तरफ जगल मे उस समय घनघोर अधेरा छाया हुआ था परन्तु बेल को इसकी चिन्ता नही था। एक ही रात की आयु वाला बेल भय से परिचित नही था। वह होडुर से बाल्डर की मृत्यु का बदला लेने के लिए ही पैदा हुआ था इसलिए उसे खुद बखुद मालूम था कि होडुर जगल के किस हिस्से मे छिप कर रहता है। अपने प्रचड टकारो वाले तीर कमान को मजबूती से हाथ मे पकड़ हुए वह होडुर की ओर बढा। उसको अपनी ओर आता हुआ जानकर होडुर ने अपनी जादू की ढाल से अपनी रक्षा करते हुए

नगी तलवार हाथ मे लेकर खामोश कदमों से उस दिशा की ओर अपने कदम बढाये जिधर से वेल के पैरो के नीचे दब कर जगल मे पडे हुए सूखे पत्ते चरचरा रहे थे। वेल ने अब उसको देख लिया। उसने एक तीर धनुष पर चढा कर डोरी को कान तक खींच कर उसकी ओर छोडा और वह तीर हवा मे सनसनाता हुआ होडुर की बगल से निकल गया। दूसरा तीर बैल ने साधकर चलाया साथ ही एक बडा शब्द ठन से हुआ जो उस अँधेरे जगल मे गूँज गया। यह तीर होडुर की ढाल से टकरा गया था। क्रोधित होकर वेल ने तब अपना आखिरी तीर उस प्रचन्ड धनुष पर चढाया और जो कान तक खींच कर टकार मारती हुई प्रत्यचा को छोडा तो बिजली की फुरती के साथ वह तीर होडुर के हृदय को फाड़ कर उसके शरीर के आरपार निकल गया। होडुर का शरीर थरथराया और वह मर गया।

बाल्डर की मृत्यु का बदला ग्रीष्म ऋतु के देवता ओडिन और ऋन्ड के पुत्र ने ले लिया—*वह जो बच्चो की सी सूरत वाला था और जिसका शरीर प्रचड* योद्धा जैसा था इसके पश्चात् उसने एक ऊँची चिता बनाई और होडुर को उस पर लिटा कर जला दिया। असगार्ड मे देवताओं ने होडुर की मृत्यु पर खुशी के उत्सव मनाये क्योंकि सुन्दर बाल्डर को मारने वाला अब मारा जा चुका था। परन्तु जब होडुर की आत्मा हैला मे पहुँची तो बाल्डर ने उठ कर उसको अपने हृदय से लगा लिया और जब वह उर्द के बिछ्ये हुये उस बडे और सुन्दर सोने के सिंहासन पर बैठा तो उसने होडुर को प्यार से अपने पास बगल मे बैठा लिया

दवताओं के वंशज

असगार्ड मे आसा वश के देवता लोग सुखपूर्वक रहते थे और मौज उड़ाते थे। खूब पैदा होती थी और सभी हमेशा आनन्द से हँसते, नाचते, गाते और बेफ़िक्री के साथ रहते थे। बिजलियों का महाबली देवता थौर भी आराम से रहता था, पर उसका यह आराम अधिक दिनो तक नही रह सका।

जौटन-हीम नामक जगह से बर्फ के दानव के बराबर कण वाले ठडे तूफान दुनिया मे भेजे जाते जिसमे उनकी फसलें बर्फ से ढँक जाती और मर जातीं और ठड भी इतनी फैलती कि आदमी मर जाते। हर तरह से जब आदमी उन ठडे तूफानों से मुकाबला करके हार गया तब उसने बिजलियों के देवता थौर से घुटने टेक कर प्रार्थना की कि वह आकर उन तूफानों से दुनिया की रक्षा करे।

थौर तो आदमियो का हमेशा से दोस्त था और जब उसने वह प्रार्थना सुनी तो फौरन अपने सोने के रथ को तैयार किया और उसमे अपने तेज चलने वाले दो बकरे जोत दिये जो उसके रथ को लेकर जमीन, हवा और पानी सभी जगह तेज भाग सकते थे बल्कि यो कहा जाय कि उड़ सकते थे। थौर ने अपने मन में यह बात पक्की करली कि वह जरूर जौटनहीम जाकर जौटन दानवों को सजा देगा क्योंकि वह अपने को बहुत ताकतवर समझने लगे थे और बार बार आदमियों को तग करते थे। उसने सोचा कि इतनी बार [illegible] भी यह दानव मानते नहीं हैं इसलिये अबकी बार वह उन्हे कड़ी सजा देगा। और उसने अपनी कमर कस ली और उसमे अपना मशहूर और भारी हथौड़ा मजौलनर बाँध लिया।

अब जब वह अपने रथ मे चढ गया और जाने को निकला तो लोक उसके पास आया और उसकी खुशामद करते हुए उसने उसकी बड़ी तारीफें की। उसने घुटने टेक कर थौर से कहा :

'हे बिजलियों के पराक्रमी देवता, तेरी ताकत को भला कौन नहीं जानता, और तेरे सामने जो आता है वही तेरे मजबूत हथौड़े मजौलनर से मारा जाता है। तू जब वार करता है तो बिजलियाँ कड़कने लगती हैं और दुनिया मे बड़े-बड़े, पहाड़ हिल जाते हैं और बड़े बड़े समुद्र भी थर्रा जाते हैं, यह जो जोटन-हीम के दानव हैं, जिन्हें तू अब सजा देने निकला है, तेरे सामने ऐसे खत्म हो जायेंगे जैसे तेज हवा से सूखा पत्ता उड़ जाता है। तेरा काम हमेशा ही बहुत नेक होता है और तू सदा दूसरों की भलाई के ही लिये अपने आपको खतरे में डालता है क्योंकि तेरा दिल बहुत अच्छा है। मैं लोक तेरा भक्त हूँ इसलिये तू मुझे भी अपने साथ ले चल क्योंकि मैं तेरे साथ रह कर तेरी बहादुर देखना चाहता हूँ।"

थौर ने उसे साथ चलने की आज्ञा फौरन दे दी क्योंकि इस तारीफ से वह खुश हो गया था और दूसरी बात यह भी थी कि लोक को उत्तर के बर्फीले रास्ते सब मालूम थे जिन्हें थौर खुद नहीं जानता था। उसने उसे पथ-दिखाने वाले के रूप में अपने साथ ले लिया और उसे भी अपने रथ में बिठा लिया।

जब थौर चला तो रथ को बकरे लेकर उड़े और तेजी के साथ रास्ता तय करने लगे। पूरे दिन उन्होंने सफर किया और जब रात आई तो थौर अपने दोस्त ओरवैंडिल-ईगिल के यहाँ जाकर ठहरा। वह ऐलिवैगर के किनारे रहता था जहाँ से जौटन हीम जाने का रास्ता सीधा पड़ता था। इस जगह से बहुत दूर पर जौटन-हीम को जाने वाले रास्ते पर बर्फ बिछी हुई दिखाई भी देती थी।

ओरवैंडिल-ईगिल ने अपने दोस्त का बहुत स्वागत किया और उसे घर के अन्दर ले जाकर बिठाया और उसकी सेवा करने लगा। उसके लड़के और लड़की ने भी थौर का बहुत सम्मान किया और उसे अच्छी कुर्सी पर बिठाया। आग जलाकर कमरे में गर्मी पैदा की जिससे रास्ते की सारी थकान दूर हो गई। थौर तो थका नहीं था पर लोक जरूर थक गया था और उसे इस वक्त बड़ा अच्छा लगा।

जब खाने का वक्त आया तो ओरवैडिल ने उसके सामने जो कुछ उसके पास खाने को था, सब लाकर रख दिया। पर वह खाना बहुत कम था और इतने लोगों का पेट नही भर सकता था। थौर ने अपने मित्र से पूछा

"मेरे दोस्त क्या वजह है कि तुम्हारे पास खाने के लिये इतना कम सामान है। इससे तो अकेले एक आदमी का भी पेट नहीं भर सकता, फिर हम तो पाँच हैं। अगर हम न भी आते तब भी तुम तीनों कैसे इससे अपना पेट भरते हो? बताओ क्या मुसीबत है जो तुम्हारे पास खाने को नहीं है?"

ओरवैडिल-ईगिल यह सुनकर पहले तो अपनी गरीबी पर सकुचाया फिर रोने लगा। वह खूब रोया और उसके साथ-साथ उसके लड़के-लड़की भी रोने लगे तब थौर ने दुखी होकर अपने दोस्त से उसके रोने का कारण पूछा।

ओरवैडिल बोला :

"हमारे पास खाने की कमी है क्योंकि जो कुछ हम लाते ह उसे अक्सर जाटन-हीम के दानव बलपूर्वक लूट कर ले जाते हे। हमने उनसे बचने की सब तरकीबें कर ली हैं और खाने और दूसरी चीजों को काफी छिपाकर भी देख लिया है, पर वह आते हैं, और सारे घर को उलट कर जो मिलता है उसे उठा कर चल देते हैं। मजबूरी के कारण अब जो हमारे लिये बच जाता है उसी पर हम गुजर करते हैं और हम कर भी क्या सकते हैं क्योंकि उन दोनों से लड कर जीत तो सकते नहीं हैं।"

थौर ने उन्हे दिलासा दिया और बोला

"घबराओ मत, मे उन सब को कडी सजा दूँगा और तुम्हे उनकी लूट से बचाऊँगा। मै उन्हें मार डालूँगा, जिससे फिर तुम्हे कोई लूटने वाला ही न बचे।"

उसके बाद उसने अपने दोस्त से एक बड़ा बर्तन मँगाया और फिर अपने दोनों बकरों को तलवार से काट दिया। उनका गोश्त निकाल कर उस बर्तन मे डाल दिया और उनकी खालें अलग रख लीं, फिर उस बर्तन

दूसरे दिन सुबह थौर उठा और उसने अपने मोटे तगड़े हथौड़े को बकरों की खालों के ऊपर फेरा, जिनमें हड्डियाँ अलग अलग भरी रखी थीं और मजोल्नर से कहा कि वह बकरों को जिला दे।

फौरन दोनों बड़े बकरे जीवित होकर खड़े हो गए। पर जब चले तो थौर ने देखा कि एक बकरा लँगड़ा कर चलता है। उसका एक पिछला पैर बेकार है जिसकी हड्डी टूट गई है। वह गुस्से से आग बबूला हो गया और उसका शरीर थर-थर काँपने लग गया। रह रहकर उसके हाथ पैर फड़कने लगे और आँखें लाल हो गईं और उसकी घनी काली भौं चढ़ गई और उसकी उँगलियों में मजोल्नर कस गया जिससे वह सफेद पड़ गई। उसका रूप बहुत भयानक हो गया। वह मजोल्नर को लेकर ओरवैंडिल की तरफ मुड़ा जिसे देखकर वह डर कर पीछे हट गया और घबरा गया। तब थौर चिल्लाकर बोला :

"मेरे बकरे की टाँग क्यों तोड़ दी जब कि मैंने पहिले ही मना कर दिया था कि खबरदार कोई हड्डी टूटने न पावे ?"

लोक अन्दर ही अन्दर खुश हो रहा था कि उसकी चाल चल गई और दोनों दोस्त लड़ गये।

ओरवैंडिल ईगिल भय से काँपता हुआ बोला

"हे बिजलियों के देवता, तू बड़ा बली है। तुझे कौन नहीं जानता ? तूने ही हमें भर पेट खाना रात को खिलाया था और क्यों हम पर ही अब इतना क्रोध कर रहा है। सुन और समझ ले कि मैंने तेरे बकरे की कोई हड्डी नहीं तोड़ी, भला मैं तेरा दोस्त होकर तेरा कहना क्यों न मानता ? तू विश्वास कर कि मैंने कोई गलती नहीं की।"

तब थौर बोला "तो फिर बकरे की टाँग कैसे टूट गई ?"

अब थजाल्फे आगे आया और बोला

"गलती मुझसे हो गई है देवता ! क्योंकि मैंने हड्डी तोड़कर उसके अन्दर का रस पिया था, तू मुझे सजा दे ले।"

और वह घुटने टेक कर उसके सामने बैठ गया।

तब थौर बोला :

"ओरवैंडल ! देख तेरे लडके ने मेरे बकरे की टॉग तोड दी है और वह लगड़ा रहा है । अब तू मुझे इसी लडके को मेरा नोकर बना कर दे दे क्योकि मै जानता हूँ कि यह बहुत तेज भागता है और इससे तेज और कोई नही भाग सकता । इसके साथ इसकी बहिन रोसक्वा को भी मुझे दे दे जो कि बहुत अधिक खूबसूरत है । अगर इन दोनो को मुझे हरजाने मे देगा तो मै तुझे छोड दूँगा ।"

ओरवैंडिल झट राजी हो गया और उसने अपने लडके-लडकी को दे दिया, अब तो थौर बहुत खुश हुआ और वह ओरवैंडिल का और भी पक्का दोस्त बन गया क्योंकि अब तो उसको उसके लडके-लड़की भी मिल गये थे । लोक देखता ही रह गया पर उसने कहा कुछ नहीं क्योंकि वह थौर के गुस्से से डरता था ।

अपने सोने के रथ और बकरों को वहीं छोड़ कर अब आगे बढा, उसके साथ लोक, थजाल्फे और रोसक्वा भी चले । सभी पैदल थे और तेजी से कदम बढाये जौटन-हीम की तरफ उत्तर दिशा में बढे चले जा रहे थे । दिन भर उन्होने तेज सफर किया और बिना रुके चलते चले गये । शाम तक भयानक पहाडों के घने जगलों मे जाकर भटकने लगे । तेज चलने वाले थजाल्फे ने जाकर फौरन थोर को उसका गोश्त रखने का थैला ला दिया पर जगल इतना घना था कि शिकार हो ही नहीं सका क्योंकि अधेरा भी हो चला था । थैला खाली का खाली ही रह गया गया । उस अन्धेरे और भूलभुलैया वाले जगल में उस समय हिरन तो पकडा नहीं जा सकता था ।

अब जब अन्धेरा खूब फैल गया तो सबो ने रात बिताने के लिये जगह ढूँढना शुरू किया, जहॉ सोया जा सके । थोडी देर के बाद ही उन्हे एक जगह मिल गई । यह एक इमारत थी जिसका दरवाजा इतना बड़ा था कि जब वह खुलता तो उस तरफ की पूरी दीवाल ही खुल जाती थी । थौर सबों को लेकर उसके अदर घुसा । यह एक बहुत ही बड़ा कमरा था जिसकी छत इतनी ऊँची थी कि इन्हें दिखलाई भी नहीं पड़ती थी । इन्होने अदर

जाकर उस बडे दर्वाजे को बन्द कर लिया जिससे अन्दर अब ठडी हवा के झोके लगने बन्द हो गये। अब इन्होंने देखा कि उस बडे कमरे मे से पहाडी गुफाओ की तरह पॉच कमरे अदर ओर चले गए हैं पर उनमे अधेरा इतना घना था कि यह लोग उनमे नहीं घुसे। वह लोग उसी बाहर वाले बडे कमरे मे अपने बिछौने बिछाने लगे और फिर सो गये।

जब आधी रात हुई तो सारा जङ्गल कॉपने लग गया और इतनी जोर से आवाज हुई कि जमीन फट गई हो। वह मकान जिसमे ये लोग सो रहे थे पत्ते की तरह कॉपने लगा। थौर उठा। उसने अपने डरे हुए साथियो को अब अदर की पॉच गुफाओ मे से ज्यादा जो चोड़ी थी उसमे सुला दिया क्योंकि यह बहुत बन्दोबस्त की जगह थी और खुद अपना हथौडा लेकर पहरे पर उस गुफा के दरवाजे पर खड़ा हो गया। वह तैयार होकर खडा था कि यदि कोई भी दानव हमला करता हुआ अदर आवे तो उसे वह अपने हथोडे से मार दे। उसके सभी साथी डर के मारे उस गुफा के बिल्कुल अदर चले गये और कॉपते हुये उन्होने वहॉ अपने बिछोने फैलाकर सोने का प्रयत्न किया।

थोडी देर बाद जङ्गल फिर गूँज उठा और बादलो की सी गरज सुनाई दी। ऐसा मालूम हुआ जैसे पहाड लुढक रहे हो और इसी प्रकार देर तक भयानक आवाज आती रही फिर थोड़ी देर को रुक गई और फिर शुरू हो गई। बाहर रात घनघोर थी और अधेरा इतना था कि हाथ को हाथ नहीं दिखता था और भय सभी जगह फैला हुआ था।

जब भोर भी नहीं हुई थी और अभी रात काफी बाकी थी, तब थौर उस मकान से बाहर आ गया और उस आवाज की तरफ चला क्योंकि अभी तक वह भयानक शब्द हो ही रहा था। थौर ने आगे जाकर जो देखा तो देखता ही रह गया क्योकि घने जगल के बीच मे जमीन पर पड़ा हुआ एक बहुत बडा दानव सो रहा था। वह इतनी जोरो से खर्राटे ले रहा था कि ऐसा लगता था जैसे समुद्र के किनारे ज्वार-भाटे आ रहे हैं और बडे जोर का शब्द हो रहा हो। उसकी सॉस नाक से ऐसी निकलती जैसे हवा के तेज तूफान छूट रहे हैं। चारो तरफ के पेड उखड-उखड़ कर उस तेज हवा से भूमि पर गिर

रहे थे। तब थौर को पता चला कि वह भयानक आवाज कहाँ से आ रही थी जो उस अंधेरी रात में इतनी भयावनी मालूम हो रही थी।

थौर ने अब चुपचाप सोचा कि क्यों न वह उस दानव को मार डाले जिससे सारे शोर और तूफान बन्द हो जाँय और रात आराम से काटी जा सके। बस उसने तय कर लिया और अपनी कमर की पेटी को कसा जिससे उसकी ताकत बढ़ गई क्योंकि उसकी यह पेटी जादू की बनी थी और जब-जब वह कसी जाती वह थौर को ज्यादा-ज्यादा ताकत देती थी। जब पेटी कस गई तो थौर ने अपना बडा और मोटा हथौडा मजौलनर सँभाला कि दानव के सिर में मार दे और जैसे ही उसने उसे हवा मे दो बार घुमाया तभी वह विशाल शरीर वाला विकराल दानव जाग उठा और उठ कर एक दम खडा हो गया। वह इतना ऊँचा खडा था कि बिजलियों के देवता ने देखा कि वह तो उससे कई गुना बडा और बडे शरीर वाला था। मीनार की तरह वह थौर के सामने खडा हो गया और थौर आश्चर्य से उसकी तरफ देखने लग गया और अपने हथौड़े से उस पर हमला करना भूल गया। दानव ने हाथ फैला कर एक अँगडाई ली जिससे जगल के कई बड़े-बडे पेड़ चरचराकर ऐसे टूट गये जैसे मिट्टी के बने हुए थे।

उसको देख कर थौर ने पूछा :

"हे दानव तेरा नाम क्या है ?"

आसमान में दानव बोला, "मेरा नाम स्क्रैमर है" उसकी आवाज इतनी भारी थी जैसे बादल गरज रहे हों। फिर वह हँसा और बोला :

"और तुम्हारा नाम पूछना बेकार है क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम बिजलियों के देवता और आशा वश के थौर हो।"

थौर उसके बोलने से पैदा हुई गडगड़ाहट को जोर से सुनता रहा और उसके बडे कद को देख कर अभी आश्चर्य में पडा हुआ था कि दानव फिर बोला .

"लेकिन तुमने मेरे हाथ का दस्ताना कहाँ फेक दिया। उसकी तो मुझे जरूरत है।" फिर अपने चारों तरफ देखा और हाथ बढा कर पेड़ों के नीचे से अपना दस्ताना उठा कर पहन लिया।

इसके पहले कि थौर जवाब देता कि उसे उसके दस्ताने के बारे मे कुछ भी मालूम नही था, दानव ने यह सब कर दिया और अब तो थोर बडे आश्चर्य मे भर गया जब उसने देखा कि वह जो बडा मकान पूरे दरवाजे वाला था जिसमे एक बडा कमरा और पॉच गहरी गुफाऐं नजर आती थीं और जिसमे उसने अपने साथियो सहित रात को शरण ली थी, इस दानव के हाथ का दस्ताना था और वह अन्दर की चौडी गुफा जिसमे वह सब लोग आधी रात बाद सिमट कर सो गये थे उस दानव के दस्ताने मे अँगूठे की जगह थी। अब तो थौर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा और वह बरबश दानव को ऊपर से नीचे तक देखने लगा। पर फिर भी वह उससे डरा नहीं।

स्क्रैमर ने अब मेघ की गम्भीर आवाज मे कहा

"हे बिजलियो के देवता! तू जो जौटन-हीम जा रहा है तो सुन कि वह रास्ता अभी बहुत दूर है और बीच मे अनेक पहाड और घने जङ्गल हैं। तुझे उस जगह पहुँचने के लिये अवश्य ही रास्ता बताने वाला कोई आदमी चाहिये इसलिये आदमी तो यहाँ नही है तू मुझे ही साथ ले चल और तू मुझे साथ रखेगा तो तुझे रास्ते मे कोई कठिनाई नही होगी और मै तुझे तेरे ठिकाने पर ठीक तरह से पहुँचा दूँगा।"

थौर ने उसे इजाजत दे दी और वह भयानक दानव उनके साथ हो गया। अब सवेरा हो गया था और चारो तरफ उजाला फैल गया था पर अभी सूरज नही उगा था। आसमान मे बादल भी छा रहे थे। दानव ने अपना चमडे का बना हुआ बहुत बडा गोश्त का थैला खोला और जमीन पर बैठकर कच्चा गोश्त चबाने लग गया। यह उसका सवेरे का खाना था। उसको देखते ही थोर और उसके साथी लोगो ने भी एक दूसरी जगह बैठकर अपना नाश्ता शुरू किया। वह भी गोश्त खाने लगे। देर तक वह लोग खाते रहे। और जब खाकर उनका पेट भर गया तब स्क्रैमर बोला

"दोस्तो खाना तो खा लिया, अब चलना चाहिये, क्योकि रास्ता अभी बाकी है जो पार करना है पर चलने से पहले मेरी राय है कि कुल गोश्त को एक ही थैले मे रख लिया जाय क्योकि अब तो सब साथ-ही साथ चल रहे हैं और म उस थैले को उठाकर चलूँगा।"

थौर ने फौरन रजामन्दी दे दी क्योंकि वह भी चाहता था कि वह उस बोझ को खुद ढोता हुआ न चले। स्क्रैमर ने सब थैलो से गोश्त निकालकर अपने थैले मे भर लिया और थैले को बन्द करके उसे अपनी पीठ पर पटक लिया।

जब वह चले तो स्क्रैमर के कहने से उन्होंने पूर्व दिशा की तरफ चलना शुरू किया और तेजी के साथ आगे बढ़ते चले गए। उनकी रफ्तार बहुत तेज थी क्योंकि उन लोगों को स्क्रैमर के लम्बे-लम्बे डगों के साथ-साथ भाग-भागकर चलना पडता था। आसमान में बादल अब भी छा रहे थे और स्क्रैमर का सिर कभी-कभी तो उनसे भी ऊपर निकल जाता था। बादल उसके कधे तक आते थे और जब साँस लेता तो बडे-बडे पेड उखड कर उड़ जाते थे। उसका एक-एक डग कोसों का होता और उसका साथ देते-देते थौर और लोक और थौर के नौकरों को एक तरह से भागना पड रहा था। वह दिन भर चलते रहे और जब रात हो गई। अधेरा छा गया तो वह एक बहुत पुराने और बडे ओक के पेड़ की घनी छाया के नीचे लेट गये। स्क्रैमर ने जँभाई ली और ऐसी आवाज हुई मानो किसी बडी गुफा में से तूफान बाहर निकला हो। फिर वह बोला :

"मुझे तो बड़े जोरों से नींद आ रही है इसलिये मैं तो फौरन सोता हूँ। तुम लोग खाना खा लो मुझे तो इस वक्त खाने की भी फुर्सत नहीं है क्योंकि नीद मुझे दबाये ले रही है। उसने गोश्त का बडा थैला थौर की तरफ फेंक दिया और लम्बा होकर सीधा सो गया। जब थौर ने उस थैले को खोला तो वह उससे नही खुला, तब उसने उसे खोलने को जोर लगाया पर उसकी गाँठ उससे टस से-मस भी न हुई। थैला इस मजबूती से बँधा हुआ था कि उसकी गाँठे खुलती ही नहीं थी। थौर ने खूब जोर लगाया और खूब कोशिश की पर उससे गाँठ भी नहीं खुली और न उसका धागा ही थोडा-सा भी ढीला हुआ। थैला गोश्त से भरा हुआ था पर उसका मुँह खुलता ही नहीं था और थौर को लग रही थी बडी भूख। अब वह क्या करता? फिर थैला खोलने की कोशिश की पर जब बिल्कुल ही पेश नहीं गई तो गुस्से से उसे दूर फेंक दिया और चिढ़कर एक तरफ जा बैठा। आसा-

देवता को इतना क्रोध उस दानव की धोखेबाजी के कारण आ रहा था कि वह बार-बार अपने दाँत किटकिटाने लगा। तब तक स्क्रैमर सो गया था।

थोर को जोश चढ़ा और मोके को काम मे लाने की सोची। अपनी कमर से फारन मजौलनर को खोला और चुपके-चुपके सोते हुए दैत्य की तरफ बढ़ा। जब बिल्कुल पास पहुँच गया तो उसने मजौलनर को हवा मे दो बार घुमाया और सारी ताकत लगा कर खुर्राटा लेते हुए दानव के सिर पर दे मारा और उसने अपने मन मे समझा कि दानव खतम हो गया।

पर फौरन वह दानव उठ बैठा और उनींदा होकर आँखे मलता हुआ बोला :

"क्या मेरे ऊपर ओक का कोई पत्ता गिर गया था ?" फिर उसने चारो तरफ देख कर थोर से पूछा :

"क्य तुमने खाना खा लिया और सोने की तैयारी कर रहे हो ?"

थोर ने भारी स्वर से जवाब दिया :

'हाँ मै अब सोने वाला हूँ" और वह एक दूसरे पेड की तरफ चला गया।

वहाँ जाकर उसने सोने की कोशिश की और चुपचाप लेट गया वह देर तक करवटें बदलता रहा पर भूख के कारण उसको नींद नहीं आ रही थी। इसके अतिरिक्त स्क्रैमर इतनी जोर से खुर्राटे ले रहा था कि सारा जङ्गल उस आवाज से काँप रहा था और पहाड़ो से वह आवाज टकराकर और भी खतरनाक मालूम होती थी। उसकी साँसो से आँधियाँ छूट रही थी और जमीन से गर्द के गुबार उठ रहे थे जिनके साथ बर्फ भी उडती और हर जगह छा जाती, एक तो प्राण लेवा भूख और दूसरे यह बुरी आवाज। बस थोर का फिर गुस्सा चढ़ आया और वह चुपचाप फिर उठा और दानव के पास पहुँचा। उसने अपने हथौडे को घुमाकर सीधा उसके माथे पर दे मारा, इतनी जोर से मजौलनर दानव के सिर मे लगा कि हत्थे तक वह उसके माथे मे गड गया और थोर ने पूर्ण विश्वास से उसे सोचा कि दानव तो मर ही गया होगा।

पर स्क्रैमर एकदम उठ बैठा और गुर्राया

"अब मेरी नींद कैसे फिर बिगड गई ? क्या अबकी बार मेरे सिर पर इस पेड़ का कोई छोटा सा फल या उसका दाना गिर गया था ? जाने इस पेड के नीचे मै क्यों सोया, जो कभी पत्ता गिरता है तो कभी फल ?"

और फिर थौर को जब उसने पास खड़े देखा तो पूछा :

"थौर ! क्या तुमने मुझसे कोई मार-पीट तो नहीं की ? तुम इस रात मे खडे खडे क्या कर रहे हो ? कहीं तुमने ही तो मुझे नहीं जगाया है ?"

'मैने तुम्हें नहीं जगाया !' थौर ने उत्तर दिया । वह बोला :

"मै तो खुद अभी जागा हूँ और यह देखने को कि तुम सही सलामत सो रहे हो कि नही इधर चला आया था ।"

फिर वह अपने उसी ओक के पेड़ के नीचे साकर लेट गया । स्क्रैमर फिर सो गया और उसी तरह जोर-जोर से खुर्राटे लेने गया ।

पर थौर को नींद न आती थी और न आई । उसकी भूख रह-रह कर उसे तग करती और उसे स्क्रैमर पर बेहद गुस्सा चढता कि उसने थैले मे ऐसी गाँठ धोखे की खातिर लगाई थी जो उससे खुलती नहीं थी । जब पडे-पडे देर हो गई तो उसने अपने मन मे फिर यही सोचा कि स्क्रैमर को एक बार फिर मजोलनर से मारना चाहिये क्योंकि उसे इस बात का विश्वास अपने दिल मे हो गया था कि इस आखिरी चोट से वह जरूर मर जायगा, बचेगा नहीं, तो वह खामोश होकर पडा रहा और मौका देखने लगा कि कब स्क्रैमर बेखबर होकर सो जाता है और तभी वह उसे मार डालेगा ।

भोर होने से थोडी देर पहले थौर चुपचाप फिर उठा और उसने अपनी कमर की जादू की पेटी फिर कसी जिससे उसकी ताकत अब चौगुनी हो गई । फिर उसने अपने हाथो मे लोहे के मोटे दस्ताने पहिन लिये और फिर अपने बलिष्ठ हाथों मे वह भारी हथौड़ा लिया । तब वह चुपचाप उस दानव के पास जा पहुँचा और सारी शक्ति लगा कर उसने वह हथौड़ा दानव के सिर पर तीसरी बार मारा । वह इतने जोर का लगा कि दानव की कनपटी मे पूरा घुस गया जिसे थौर ने खींच कर बाहर निकाला ।

उसी समय दानो आँखे मलता हुआ फिर उठ बैठा और थौर के आश्चर्य का कोई ठिकाना नही रहा क्योंकि उसे तो पूरा भरोसा था कि अबकी बार तो

वह दानव को जरूर ही मार डालेगा। दानव ने अलसाई आँखों से देखते हुए अपनी ठोडी को अपने हाथ से दो-चार बार सहलाया फिर शून्य की तरफ देखता हुआ बोला :

"इस पेड की डालो पर जरूर चिडियाँ बैठती होगी क्योकि मेरा खयाल है कि उनके घोसलो मे से कोई काई का टुकडा खिसककर मेरे सिर पडा होगा जभी मेरी नीद उचट गई। इस पेड़ के पत्ते, दानो और चिडियो ने मुझे आज रात भर कई बार जगाया, सारी रात बिगड गई।" और वह फिर चुप हो थोड़ी देर बाद बोला :

"तो थौर, तुम भी जाग रहे हो ? अब सुबह हो गई और अब देर नहीं करनी चाहिये और चल देना चाहिये क्योकि अभी तुम्हारा रास्ता काफी लबा है। जहाँ तुम जाना चाहते हो उस जगह को 'उटगार्ड का किला' कहते हैं और वह अभी यहाँ से बहुत दूर है। अब देर करना व्यर्थ है।"

थौर चुप रहा तो वह फिर बोला .

"मैने तुम लोगो को चुपके-चुपके बात करते हुए सुना है जब तुम मेरी ऊँचाई और कद के बारे मे बात करते हो। मै जानता हूँ कि तुम मेरे कद को बहुत मानते हो पर यह भी सुन लो कि जब तुम उटगार्ड के किले मे पहुँचोगे तो तुम्हे मुझसे भी ज्यादा ऊँचे और तगडे आदमी मिलेंगे मेरा विचार है कि तुम्हें यह चाहिये कि मुझसे वहाँ के बारे मे जाँच कर लो और सलाहें कर लो जिससे तुम्हें वहाँ पहुँचने के पहले वहाँ के रिवाज व रहन सहन के सब तरीके मालूम हो जायँ। जब तुम उटगार्ड पहुँचो तो अपने बारे मे या किसी अपने साथी के बारे म डीग मत हाँकना। उटगार्ड लोक के देश मे तुम्हारे या तुम्हारे साथियो जैसे कमजोर और छोटे से नाचीज लोगो की डीगों को नहीं झेलेगा। और अगर मेरी सलाह, हे बिजलियो के देवता ! तुम्हें पसद नहीं है तो अच्छा इसी मे है कि तुम अपने देश यही से लोट जाओ क्योकि आगे बढने मे तुम्हारे लिये खतरा है। यदि तुम थोडे से भी बुद्धि मान हो तो बस यहीं से वापस चले जाओ। और अगर तुम्हे वहाँ जाना ही है तो भले ही जाओ, भला मेरा क्या नुकसान हो सकता है ? उस हालत मे

वह दानव को जरूर ही मार डालेगा। दानव ने अलसाई आँखों से देखते हुए अपनी ठोडी को अपने हाथ से दो-चार बार सहलाया फिर शून्य की तरफ देखता हुआ बोला .

"इस पेड की डालो पर जरूर चिडियाँ बैठती होगी क्योंकि मेरा खयाल है कि उनके घोसलो मे से कोई काई का टुकडा खिसककर मेरे सिर पडा होगा जभी मेरी नींद उचट गई। इस पेड के पत्ते, दानो और चिडियो ने मुझे आज रात भर कई बार जगाया, सारी रात बिगड गई।" और वह फिर चुप हो थोडी देर बाद बोला

"तो थौर, तुम भी जाग रहे हो ? अब सुबह हो गई और अब देर नहीं करनी चाहिये और चल देना चाहिये क्योंकि अभी तुम्हारा रास्ता काफी लम्बा है। जहाँ तुम जाना चाहते हो उस जगह को 'उटगार्ड का किला' कहते हैं और वह अभी यहाँ से बहुत दूर है। अब देर करना व्यर्थ है।"

थोर चुप रहा तो वह फिर बोला

"मैने तुम लोगा को चुपके-चुपके बात करते हुए सुना है जब तुम मेरी ऊँचाई और कद के बारे मे बात करते हो। मै जानता हू कि तुम मेरे कद को बहुत मानते हो पर यह भी सुन लो कि जब तुम उटगार्ड के किले मे पहुँचोगे तो तुम्हे मुझसे भी ज्यादा ऊँचे और तगडे आदमी मिलेंगे मेरा विचार है कि तुम्हें यह चाहिये कि मुझसे वहाँ के बारे मे जाँच कर लो और सलाहें कर लो जिससे तुम्हे वहाँ पहुँचने के पहले वहाँ के रिवाज व रहन सहन के सब तरीके मालूम हो जायँ। जब तुम उटगार्ड पहुँचो तो अपने बारे मे या किसी अपने साथी के बारे म डींग मत हाँकना। उटगार्ड लोक के देश मे तुम्हारे या तुम्हारे साथियो जैसे कमजोर और छोटे से नाचीज लोगो की डींगों को नहीं झेलेगा। और अगर मेरी सलाह, हे बिजलियो के देवता ! तुम्हें पसद नहीं है तो अच्छा इसी मे है कि तुम अपने देश यही से लौट जाओ क्योंकि आगे बढने मे तुम्हारे लिये खतरा है। यदि तुम थोडे से भी बुद्धि मान हो तो बस यहीं से वापस चले जाओ। और अगर तुम्हे वहाँ जाना ही है तो भले ही जाओ, भला मेरा क्या नुकसान हो सकता है ? उस हालत मे

लोग भीतर चले और उन्होने देखा कि अदर महल का दर्वाजा खुला था, वह बेधडक होकर अदर चले गये, कई सीढियाँ चढ कर वह एक बहुत बडे कमरे मे पहुँचे जिसकी छत इतनी ऊँची थी कि साफ दिखाई भी नही देती थी। कमरा बहुत लम्बा और चौडा था जिसके दो तरफ बडी-बडी चोकियाँ पडी थी और उन पर आसमान के बराबर ऊँचे दैत्याकार दानव बैठे थे। यह लोग आगे बढे पर न तो किसी ने इनसे कुछ कहा न रोका ही, और न वे ही उनसे कुछ बोले, न दुआ सलाम ही आपस मे हुई। जिस तरह व बिल्कुल चुपचाप बैठे थे वैसे ही थौर और उसके साथी चुप रहे और आगे बढते गये। वह उन दानवो के बीच मे होकर आगे निकल गये और दूसरे कमरे मे पहुँचे जो इस कमरे से जरा छोटा था। इस कमरे की सजावट बहुत अच्छी थी और उसके बीच मे पीछे की तरफ एक बहुत बडा तख्त रखा था जो बहुत ऊँचा और बडा था। यह तख्त सोने का बना हुआ था और उस पर दानवो का बादशाह उटगार्ड-लोक सिरपर सोने का बहुत बड़ा ताज पहने हुए बैठा था। बादशाह का कद सभी दानवो से ज्यादा बडा था और वह बहुत ही ज्यादा बली मालूम होता था, उसकी पोशाक बडी कामती थी और उसकी तलवार की मूँठ सोने की थी।

थौर व उसके साथियो ने तख्त के सामने जाकर खडे होकर सलाम किया फिर घुटने टेक कर उस बादशाह को सिजदा किया। बादशाह ने उन्हे पैनी निगाहो से चुपचाप देखा पर वह बोला कुछ भी नही। उसने इनकी सलामियो का भी जवाब नही दिया। बडी देर बाद वह बोला और उसकी आवाज मे इनके प्रति नीचता भरी हुई थी। उसने धीरे से कहा

'तुम लोग दूर से आ रहे हो और तुम्हारा थकना वाजिन ही है क्योकि तुम लोग बहुत छोटे और कमजोर हो।" फिर उसने थौर को देख कर उससे कहा

"अगर मेरा खयाल ठीक है तो शायद तुम ही आसा-देवता थौर हो आ बढते हुए जवानो मे सबसे अच्छे समझे जाते हो।"

वह देर तक थोर को घूरता रहा। थौर ने कोई उत्तर नही दिया प मन ही मन वह दानवों के बादशाह की बोली सुनकर नाराज हो रहा था दानव फिर बोला :

"तुम देखने में तो बहुत छोटे मालूम होते हो पर मुमकिन है कि तुम अपने कद से ज्यादा ताकतवर हो। जो कुछ भी हो, पर तुम कौन-कौन से विचित्र काम कर सकते हो? मै तुमको यह बतला देना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ ऐसा कोई भी आदमी नहीं रह सकता जो और सब लोगों से अधिक कोई खास काम करके नहीं दिखा देता, इसलिये अब जब कि तुम यहाँ आ ही गये हो तो तुम्हारे लिये यह बात जरूरी हो गई है कि नये-नये करतब दिखलाओ।"

पर थौर तो गुस्से से बेहाल हो रहा था इसलिये बोला कुछ नहीं। तब लोक बोला: "मै एक अजीब करतब जानता हूँ और यदि तुम कहो तो फौरन करके दिखाढूँ। मै बहुत जल्दी खाना खा सकता हूँ और मेरी जैसी जल्दी और कोई नहीं कर सकता। मैं खाना भी इतना खा सकता हूँ कि जितना कोई दूसरा नहीं खा सकता और क्योंकि इस वक्त मै भूख से परेशान हो रहा हूँ। मै अभी सबूत देने को तैयार हूँ। जो भी मुझसे मुकाबला करना चाहे सामने आ जाय।"

और तब उटगार्ड-लोक बादशाह ने कहा:

"अगर तुम ऐसा कर सकते हो जैसा कि तुम कहते हो तो सचमुच ही तुम बहुत बडा काम कर सकते हो। मुझे तो तुम्हे देख कर विश्वास नहीं होता। पर खैर जब कहते हो तो मै यही चाहता हूँ कि फौरन तुम खा कर अपना सबूत दो।"

बादशाह ने ताली बजाई, फौरन एक दरबान खिदमत मे हाजिर हुआ। बादशाह ने उससे कहा·

"जाकर लोग को बुला कर ला और रसोई में से कह कर एक बडी नॉद भर कर गोश्त पकाने को कह। और देख, खाना जल्दी से जल्दी तैयार होना चाहिये।"

दरबान एकदम फुर्ती के साथ महल के अन्दर चला गया। थोडी देर बाद एक दानव आया और उसने आकर अपने मालिक को घुटने टेक कर सलाम किया। यह लोग था जो खाने की होड के लिये बुलाया गया था। बादशाह ने उससे कहा:

दौड फिर शुरू हुई। थजाल्फे अबकी बार गजब की फुर्ती के साथ तीर की तरह भागा पर ह्यूज उससे भी तेज निकला और जब दौड समाप्त हुई तो जब ह्यूज ने रास्ता पूरा तय भी कर लिया तब थजाल्फे अभी आधे मैदान के बीच मे ही था।

इस तरह थजाल्फे तीनो बार ह्यूज से हार गया और शर्मिन्दा हुआ तब बादशाह बोला :

"लोक और थजाल्फे दोनो ही हार गये हैं। अब आयन्दा इन दोनो को चाहिये कि यह लोग अपने आपको सबसे बढिया खाने वाला और भागने वाला न कहा करे। हमारे देश मे झूठी डीग नही चलती।"

लोक और थजाल्फे शर्म से नीचे देखने लगे थे, और तभी ओरवैडिल की सुन्दर लडकी रोक्सवा बोली :

"हे बादशाह मै भी कुछ कमाल दिखाना चाहती हूँ।" पर बादशाह बीच मे ही बोल उठा। उसने कहा

"लडकी सुन! हमारे देश मे मरदों के ही कमाल देखे जाते हैं औरतो के नही। इसलिये तू चुप रह।"

रोक्सवा का सिर नीचा हो गया और वह चुप हो गई।

जब सभी उस दर्बार के कमरे मे वापस आ गये तो बादशाह ने थोर की तरफ मुड़कर पूछा :

"क्या तुम आज कोई अपना अजीब काम दिखाने को तैयार हो?" आसा-देवता थौर ने फौरन जवाब दिया :

"मै पीने की शर्त रखता हूँ और तुम जिसे चाहो मेरे मुकाम पर लेकर खडा कर सकते हो।"

बादशाह यह सुनकर खुश हुआ और बोला :

"पर पहले तुम्हारी पीने की शक्ति का अदाज करना चाहता हूँ।"

थोर इस बात के लिये फौरन तैयार हो गया। तब बादशाह ने इशारा किया और फौरन एक साकी एक बहुत ही बड़े सोने से मॅढे हुये पीने के

उसने पीना शुरू किया और देर तक पीता रहा। पर जब उसने सींग झुकाया तो उसका दिल बहुत छोटा हो गया जब उसने देखा कि अबकी बार तो उसने पहली बार से भी कम पिया क्योंकि सींग मे पानी ज्या-का त्यो था। परन्तु बात असलियत मे वैसी नही थी क्योकि पानी उस सींग मे इतना तो कम हो ही गया था कि वह सीग हिलाकर ले जाया जा सकता था और उसमे से पानी की एक बूँद भी नही झलकती थी।

"तुम अपने आपसे इतना गुस्सा मत करो", बादशाह उसके भाव देख कर बोला, "यह सच है कि तुम खतरे मे नही पडना चाहते हो, पर यदि तुम इस सोग को खाली करना ही चाहते हो तो तीसरी बार तुम्हे अधिक बल लगाकर पानी पीना पड़ेगा। और अगर अबकी बार भी तुमने अपने पीने की शक्ति नही। दिखलाई और सोग को खाली नहीं कर सके तो मैं समझ लूँगा कि तुम उतने ताकतवर नही हो जितना कि तुम्हें असगार्ड के देवता लोग मानते हैं। उस हालत मे तो मै तुम्हें साधारण आदमी की तरह ही मानूँगा।"

इन बातो को सुनकर थौर उटगार्ड लोक से बहुत नाराज हुआ क्योकि वह बिजलियों का पराक्रमी देवता था। भला वह मामूली आदमी की तरह कमजोर होना क्यो पसन्द करता ? उसने क्रोध मे भर कर उस सोग को तीसरो बार पीने को मुँह से लगाया और अबकी बार उसने उसके पीने मे अपनी सारी ताकत लगा दी। लेकिन सींग मे पानी अब भी वैसा ही था हालाँकि वि उसने अपने हिसाब से काफी गहरी घूँटें ली थी। उसने अब सींग दूर रख दिया और चिढकर बोला

"अब मै आर नही पीऊँगा।"

तब बादशाह हँसा और बोला

"हे आशा-देवता थौर, जितना बलवान हम तुम्हें समझते थे, उतने त तुम नही निकले।"

और वह उसे देख कर हिकारत को निगाहो से मुस्कुराने लगा। थौ क्रोध से लाल हो गया पर उसे चुप रहना पडा। बादशाह फिर बोला .

"खैर इसमे न सही पर मुमकिन है कि तुम हमे कोई दूसरा कमाल का काम करके दिखाओ पर मुझे तो तुम्हे देख कर अब यह भी विश्वास. ाही होता।"

पर थोर तैयार था। वह बोला :

"मै वही काम करने को तैयार हूँ जो भी तुम मुझसे करने को कहो क्योंकि ुझे विश्वास है कि मै हर किसी काम को कमाल के साथ कर सकता हूँ। ालॉकि सीग मुझसे खाली नही हुआ है पर तुम मेरा यकीन मानो कि जेतना पानी मैने अभी पिया है उतना असगार्ड मे कम नही समझा नाता है।"

कुछ सोच कर दानवो का बादशाह बोला :

"एक छोटा सा खेल है तो जरूर, पर वह इतना हल्का काम है कि हमारे देश के बच्चे उसे खेला करते हैं। बड़े-बड़े तो उसे कभी नही खेलते और शायद मै तुमसे भी उसे करने को कभी न कहता पर जब कि मै देख रहा हूँ कि तुम कोई इतने ज्यादा तगडे नही हो, तो शायद यह खेल तुम्हारे लिये ठीक रहे। तुम्हारे कमजोर होने की वजह से ही यह छोटा खेल तुमसे खेलने को कहा जा रहा है। अब तक जितना तुम्हारे बल का शोर हमने सुन रखा था उस हिसाब से तो यह खेल खेलने को हम तुमसे कभी न कहते। जो भी हो अब तुम यह छोटा सा काम करके दिखाओ क्योंकि हम देखना चाहते हैं कि तुम हमारे यहाँ के बच्चो से भी अधिक ताकतवर हो या नही। खेल कोई खास नहीं है। सिर्फ मेरी पालतू बिल्ली को जमीन से ऊपर उठाना पड़ेगा।"

जैसे ही उसने कहा वैसे ही एक बहुत बड़ी भूरी बिल्ली छलॉग मारती हुई आगे आई और बादशाह के तख्त के सामने जमीन पर बैठ गई। थोर ने उसे देखा तो मन ही मन मुस्कुराया कि इसे उठाना तो उसके बॉये हाथ का खेल है। वह आगे बढा और बिल्ली के बिल्कुल पास जा पहुँचा। उसने उसे दोनो हाथों से उठाना चाहा क्योंकि उसने सोचा, मुमकिन हो कि, यह एक हाथ से न उठे और नीचा देखना पड जाय। उसने अपने दोनो

हाथ बिल्ली के शरीर के नीचे घुसा दिये और उसे बड़ी मजबूती के साथ पकड़ लिया और जमीन पर अपने पैर जमाकर गड़ा लिये और बिल्ली को उठा लेने को जोर लगाया पर बिल्ली ने अपनी पीठ अन्दर की तरफ झुका ली और जरा भी नही हिली। इस पर थोर ने अपनी सारी शक्ति लगाकर उसे जमीन से ऊपर खीचा पर इतने पर भी वह उस बिल्ली का एक पंजा ही जमीन से ऊपर उठा सका और जब जोर लगा लगाकर थौर को विश्वास हो गया कि अब वह सचमुच ही उसे और न उठा सकेगा तो उसने उसे छोड दिया और अलग खडा हो गया। शर्म के मारे उसका चेहरा लाल हो गया था क्योंकि इस देश मे वह हर बात मे हारता चला जा रहा था। वह बिजलियो का पराक्रमी देवता यहाँ कमजोर माना जा रहा था। पर वह करता भी क्या? शर्म से उसकी गर्दन नीची हो गई और वह चुपचाप खडा रहा।

बादशाह ने फैसला दे दिया। वह बोला

"थौर तुम हार गये हो। यहाँ यह तुम्हारी दूसरी हार है। मै तो पहले ही समझ गया था कि तुमसे ताकत के ऐसे कोई काम सफलतापूर्वक नही हो सकेंगे," और वह चुप हो गया।

फिर थोड़ी देर बाद वह बोला .

"यह बिल्ली आसा-देवता-थौर-बिजलियो के देवता थौर के लिये सचमुच बहुत बडी है और उससे उठ नही सकती। हमारे वश के लोगो के मुकाबले मे तुम कितने दुबले-पतले और कमजोर हो यह तो अभी पता लगा।"

तब थोर गुस्से से और ज्यादा ताने नही सुन सका और चिल्लाकर बोला:- "तुम चाहे जो कुछ कहो पर मै भी तुमसे साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि अगर कोई बहादुर और ताकतवर, तुम्हारे खानदान मे, या तुम्हारे देश मे हो तो आ जाय, और ताल ठोककर मुझसे कुश्ती लड ले। मै, जिसे तुमने छोटा और कमजोर कहा है, दिखा दूँगा कि मेरा सामना कोई कर नही सकेगा।" और वह बड़ी जोर से प्रतिहिंसा मे चिल्लाया जिससे वह बर्फीला किला देर तक गूँजा किया।

उटगार्ड-लोक उसे देखकर सिर्फ मुस्कुराया और फिर गभीर हो गया। ताना मारते हुए उसने कहा :

"मेरे देश मे और मेरे खानदान में कोई भी ऐसा नही है जो थौर जैसे कमजोर आदमी से कुश्ती लड़ने को तैयार हो और अपना नाम बदनाम करे • "

फिर वह सोच कर बोला :

"लेकिन जब तुम लडना ही चाहते हो तो ठहरो मै तुमसे लड़ने के लिये अपनी बूढी दाई को बुलाता हूँ जो कि यहाँ 'इली' के नाम से प्रसिद्ध है। तुम उससे लडकर अपना पराक्रम दिखलाओ। कोई जवान आदमी तो तुमसे लडना पसन्द करेगा ही नहीं इसलिये तुम इस बूढी औरत से ही लडकर अपना काम पूरा करो। इली ने तुमसे भी तगडे आदमियों को कुश्ती मे मारा है और अब भी मुझे विश्वास है कि वह तुम्हारे लिये काफी है। अब तुम इसी से जीतकर अपने बल का परिचय दो।"

थौर ने विरोध-किया और बोला :

"मै बूढी औरत से क्यों लडूँ, क्योकि उसमे तो मेरी बडी तौहीन है। मै तो किसी जवान से लडूँगा।"

तब बादशाह ने जवाब दिया :

"पहले तुम उस बूढी दाई से लडकर अपनी ताकत दिखलाओ, फिर यदि तुम जीत जाओगे तब कहीं तुमसे कोई लडने को खडा होगा।"

इतना कह कर बादशाह ने अपनी बूढी दाई इली को बुलवाया।

थोडी देर बाद उस दरबार के बडे कमरे मे एक बुढिया आई जिसके एक भी दाँत नहीं था और जिसके शरीर और चेहरे पर बुरी तरह झुर्रियाँ पडी थीं, उसकी कमर झुकी हुई थी और वह बहुत धीरे-धीरे चल पाती थी। उटगार्ड-लोक ने उसे आज्ञा दी कि वह थौर से लडे।

कुश्ती शुरू हुई और पहले तो थौर बडे अनमने ढग से लडा पर जब उसने देखा कि बुढिया भी कम नहीं थी तो उसने जोर लगाकर लडना शुरू किया। पर थौर अब घबराने लगा क्योंकि वह जितना ही जोर लगाता था बुढिया उतनी ही तगडी होती जाती थी, थौर ने उसे उठाकर नीचे पटक देना

चाहा तो उसने थौर को ऊपर उठाकर इतना दबाया कि उसकी पकड़ छूट गई और वह गिर गया। उसने बुढ़िया को बगल मे पटकना चाहा तो बुढ़िया ने उसे अपनी पीठ पर उठाकर दूर फेंक दिया। अब वह अपने मन में समझ गया था कि वह बुढ़िया से जीत नही सकेगा। देर तक दोनों मे कुश्ती होती रही और दोनों तरफ से बहुत जोर लगाया गया थौर अब उससे अपना बचाव कर रहा था कि वह उसे हरा न दे वरना उसकी तो बड़ी तोहीन हो जायगी, पर वह उसके सामने अब ठहर नही सका और बुढ़िया ने उसे घुटनो पर झुकाकर उठा कर फेंक दिया। हाँफता हुआ थौर दूर जा गिरा और कुश्ती हार गया। वह शर्म से गड़ा जा रहा था और बादशाह की तरफ देखने मे भी उसे अब शर्म आती थी। बुढ़िया अब भी लड़ने को तत्पर होकर खड़ी थी।

बादशाह ने उसे रोका और चले जाने को कहा। फिर वह थौर से बोला "तुम, जैसा कि मैने पहले ही कहा था हार गये और अब तुम किसी और से लड़ना चाहो, सो भी तुम नही लड़ सकोगे क्योंकि पहली बात तो यह है कि तुम हार गये हो और तुमसे कोई जवान लड़ना पसद नही करेगा। फिर दूसरे अब बहुत देर हो गई है, और रात होने को आ गई है ऐसी सूरत मे तुम्हें और कोई मौका नहीं दिया जा सकता।"

उसके बाद उसने यह भी कोशिश नही की कि थौर के और किसी तरह के करतब देखे। बल्कि उसने उसकी तरफ को अपना रुख ही बदल दिया। जब रात हो गई तो उन लोगों को सोने की जगह बतला दी गई और फिर उनसे किसी तरह की छेड़ छाड़ किसी ने नही की। बादशाह अपने महल मे मे सोने चला गया।

जब दूसरे दिन भोर हुई तो थौर और उसके सभी साथी उठ बैठे और उस बर्फीले किले मे चलने की तैयारी करने लगे। तभी एक दानव ने आकर उनके सामने खाने और पीने का बहुत सा सामान रख दिया और उन्होंने खूब पेट भर कर दावत खाई। खाना खाने के बाद वह लोग उटगार्ड-लोक बादशाह से विदा लेने के लिए उसके महल पर गये। बादशाह फौरन बाहर आया और उसने उन्हें प्रेमपूर्वक विदा दी और उनके साथ साथ शहर से

बाहर तक चलकर आया। जब शहर के फाटक बंद हो गये और वह शहर से भी बहुत दूर पहुँच गये तब उटगार्ड-लोक ने उससे पूछा :

"क्या तुम अपनी यात्रा से खुश हुए हो? और जो कुछ भी नतीजा तुम्हें इतनी तकलीफों के बाद मिला क्या वह तुम्हें संतोष दे सकेगा? और हाँ एक बात और बतलाओ। तुम्हारे आसा-देवताओं में तुमसे बढ़कर भी बलवान कोई देवता है या तुम ही सब से अधिक बली माने जाते हो?"

थौर शर्म से लाल हो उठा और बोला :

"मेरी हार की वजह से मुझसे आँख से आँख मिलाकर बोला भी नहीं जाता है। यह सच है कि मैं सभी बातों में हार गया था और मैं कभी इससे इन्कार भी नहीं कर सकता पर मुझे इस बात का बहुत दुख है कि तुम मुझे एक मामूली आदमी कहते हो। मैं ऐसा गिरा हुआ तो नहीं हूँ जो इतना नीचे गिना जाऊँ।"

तब बादशाह ने उसकी तरफ इज्जत से देखा और कहा :

"अपने आपको धोखा मत दो। थौर अपना दिल छोटा न करो क्योंकि तुम वास्तव में बड़े बली हो। हमारी निगाहों में तुम बहुत जबर्दस्त और महाबली हो। तुम शायद सोच भी नहीं पाते होगे कि हम लोग तुम से कितना डरते और इज्जत करते हैं क्योंकि हम तुम्हें तुम्हारे सोचने से भी कहीं ज्यादा ताकतवर मानते हैं। अब जब कि सब बातें खत्म हो चुकी हैं और तुम हमारे शहर से बाहर निकल आये हो तो सच सच बातें भी तुम्हें बतला देनी चाहिये क्योंकि अब कोई डर की बात नहीं है, क्योंकि जहाँ तक मेरी चलेगी और जहाँ तक वाजिब बात है अब तुम इस शहर के अन्दर कभी घुस भी नहीं सकोगे। हम तुमसे अब कुछ छिपाना नहीं चाहते हैं। मैं तुमसे सौगंध खाकर कहता हूँ कि अगर मुझे यह मालूम होता कि तुम इतने गजब के ताकतवर हो तो मैं तुम्हें किले के दरवाजे के अन्दर होकर कभी न आने देता। किसी न किसी तर्कीब से जरूर ही रोक देता। तुमने तो अन्दर घुसकर मेरे ऊपर एक भारी मुसीबत खड़ी कर दी थी।"

उसने लम्बी साँस ली। फिर वह देर तक चुप खड़ा रहा। तब थौर ने उसकी तरफ देखकर आश्चर्य से पूछा :

चाहा तो उसने थौर को ऊपर उठाकर इतना दबाया कि उसकी पकड़ छूट गई और वह गिर गया। उसने बुढ़िया को बगल में पटकना चाहा तो बुढ़िया ने उसे अपनी पीठ पर उठाकर दूर फेंक दिया। अब वह अपने मन में समझ गया था कि वह बुढ़िया से जीत नहीं सकेगा। देर तक दोनों में कुश्ती होती रही और दोनों तरफ से बहुत जोर लगाया गया थौर अब उससे अपना बचाव कर रहा था कि वह उसे हरा न दे वरना उसकी तो बड़ी तौहीन हो जायगी, पर वह उसके सामने अब ठहर नहीं सका और बुढ़िया ने उसे घुटनों पर झुकाकर उठा कर फेंक दिया। हाँफता हुआ थौर दूर जा गिरा और कुश्ती हार गया। वह शर्म से गड़ा जा रहा था और बादशाह की तरफ देखने में भी उसे अब शर्म आती थी। बुढ़िया अब भी लड़ने को तत्पर होकर खड़ी थी।

बादशाह ने उसे रोका और चले जाने को कहा। फिर वह थौर से बोला "तुम, जैसा कि मैंने पहले ही कहा था हार गये और अब तुम किसी और से लड़ना चाहो, सो भी तुम नहीं लड़ सकोगे क्योंकि पहली बात तो यह है कि तुम हार गये हो और तुमसे कोई जवान लड़ना पसंद नहीं करेगा। फिर दूसरे अब बहुत देर हो गई है, और रात होने को आ गई है ऐसी सूरत में तुम्हें और कोई मौका नहीं दिया जा सकता।"

उसके बाद उसने यह भी कोशिश नहीं की कि थौर के और किसी तरह के करतब देखे। बल्कि उसने उसकी तरफ को अपना रुख ही बदल दिया। जब रात हो गई तो उन लोगों को सोने की जगह बतला दी गई और फिर उनसे किसी तरह की छेड़ छाड़ किसी ने नहीं की। बादशाह अपने महल में में सोने चला गया।

जब दूसरे दिन भोर हुई तो थौर और उसके सभी साथी उठ बैठे और उस बर्फीले किले में चलने की तैयारी करने लगे। तभी एक दानव ने आकर उनके सामने खाने और पीने का बहुत सा सामान रख दिया और उन्होंने खूब पेट भर कर दावत खाई। खाना खाने के बाद वह लोग उटगार्ड-लोक बादशाह से बिदा लेने के लिए उसके महल पर गये। बादशाह फौरन बाहर आया और उसने उन्हें प्रेमपूर्वक बिदा दी और उनके साथ साथ शहर से

"तुम क्या कह रहे हो, मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा है। जरा साफ-साफ सब बातें समझाओ।" तब दानव बोला :

"मेरा मतलब यह है अगर मै तुम्हे जादू से भ्रम मे न डाले रखता तो निश्चय ही तुम हमारा बहुत नुकसान करते पर वह तो अच्छा हुआ जो हमने जादू कर दिया और हारी आँखो मे धूल डाल दी कि जो असली बात हो वह तुम्हे दिखे नही और हर बात छोटी ही नजर आवे।"

थोर धम्म से एक पत्थर पर बैठ गया और अधीर होकर बोला

"मुझे जल्दी बतलाओ कैसे-कैसे क्या बात हुई और क्या-क्या जादू तुमने किया? देर मत मरो क्योकि मै अब ज्यादा देर यहाँ नही ठहर सकता और मुझे असगार्ड वापस जाना है।"

दानव बोला

"सबसे पहले जो बड़ा दानव तुम्हे जगल मे मिला था वह मै ही था। मैने जो तुम्हारा और अपना सब के खाने का गोश्त अपने थैले मे बन्द कर दिया था तो यह भी एक चाल थी। जब तुमने उसे खोलना चाहा तो तुम उसे खोल नही सके जिससे तुम्हे अपने ऊपर बडी ग्लानि हुई थी। बस तभी से तुम समझने लगे थे कि तुमसे भी ज्यादा ताकतवर दुनियाँ मे और है। सच तो यह है कि उसी दिन से तुम्हारी अकड कम हुई थी क्योकि उससे पहले तुम हर जगह हर बात मे हमेशा जीत जाते थे। ताकत के काम, युद्ध और भागने, बोझा उठाने और हिम्मत व बहादुरी के सभी कामो मे तुम प्रथम रहते थे इसलिये तुम्हारे हौसले हमेशा बढे रहते थे जिसके कारण तुम्हारे खिलाफ जो होता था, हमेशा बहुत नुकसान उठाता था। जब तुम जौटन हीम म मारपीट करने के विचार से चले थे तभी से मैने यह निश्चय किया था कि जैसे भी होगा वैसे तुम्हे बल के मामलो मे नीचा दिखा कर शर्मिन्दा करूँगा और इसीलिए मैने जादू किया जो सफलतापूर्वक तुम्हारे ऊपर चल गया।

"उसकी असलियत यह था कि थैले की रस्सी मे मैने चुपचाप छिपाकर अदर की तरफ लोहे का मोटा तार रख दिया था। और उसमे जान जान कर

गुरगाँठे लगा दी थी कि यह तुमसे न खुल सके और जब तुम उसे खोलने का प्रयत्न करने लगे तो तुम्हे यह सब पता ही न चला और तुम अपने आप को मुझसे बहुत कमजोर समझने लग गये और इसीलिए तुमने मुझ पर सोते समय हमला किया। मै सोया नही था और पहले से जानता था कि भूख से नाराज होकर तुम मुझे जरूर मारने को आवोगे इसलिये मैने उसका पहले से प्रबंध कर लिया था। तुमने तीन बार अपने भारी मजौलनर से मुझे मारा था और इतनी जोर से मार था कि यदि मै जादू से तुम्हे चकमा न देता तो तीन चोट तो क्या एक ही चोट मे हमेशा के लिए सो जाता। मैने तुम्हे भ्रम मे डाल कर अपने सिर और तुम्हारे बीच मे हर बार एक-एक पहाड की बड़ी चट्टानों को रख लिया था।

"जब तुमने हवा मे घुमा कर हथौडा मेरे सिर पर मारा था तो वह तीनो बार मेरे न लग कर उन पहाडों मे लगा थ जिससे वह चूर-चूर हो गये थे, और उनमें अब इतने चौडे-चोडे दर्रे बन गये हैं जिन्हे तुम लौटते समय देखोगे। पर तुम यह सब नहीं देख सके थे क्याकि यह सब मैंने अदृश्य कर दिये थे।

"जब तुम मेरे महल मे अ   तब भी मैने तुम सब पर जादू कर दिया था। आसा-लोक ने इतनी जल्दी इतना खाना खुद मूर्त्तिमान भूख की ही तरह खाया था कि सचमुच ही इतनी जल्दी और कोई नही खा सकता। पर वह जो उसका प्रतिद्वद्वी लोग था उसने तो माम-हड्डी सभी कुछ खा डाला था तो वह बात यह थी कि लोग कोई आदमी नहा था वह तो खुद आग थी जिसे हमने लोग बना कर दिखा दिया था और आग तो सभी कुछ खा जाती है उससे तो खाने मे कोई जीत ही नहीं सकता—इसलिये आसा-लोक हारा नही माना जा सकता खाने मे आदमियो मे वही सबसे श्रेष्ठ है।"

थॉर बडे आश्चर्य से उटगार्ड-लोक की विचित्र बातें सुन रहा था। उटगार्ड-लोक कहता गया।

"ह्यूज नाम का बौना भी कोई आदमी नही था। हमने 'विचार' को ह्यूज का रूप देकर थजाल्फे के साथ दोड़ा दिया था। निश्चय हा थजाल्फे के

समान कोई दूसरा भागने वाला नहीं है पर 'विचारों' के मुकाबले में भला कौन जीत सकता है ?

"और जब हे थार ! तुमने अपने पराक्रम दिखाये तो हम सभी चकित रह गये थे। जब तुमने सींग से तीन बार पानी की गहरी घूँटें ली थीं तो सभी ताज्जुब में ठगे से रह गये थे और यदि मैं उस अद्भुत पीने को खुद आँखों से न देखता और केवल किसी और से सुनता कि थोर ने इतना पानी पिया है तो कभी विश्वास न करता। तुमने तीनों बार सींग तो क्या हजारों मन पानी पी लिया था। पर जो चालाकी तुम्हारे साथ की गई थी वह तुम्हें पता न चली। वह सींग इतना ज्यादा लंबा था कि उसके पीछे का हिस्सा समुद्र में जाकर टिकता था और जितना ही तुम उसमें से पीते थे उतना ही पानी समुद्र में से उसमें भर जाता था अब जब तुम लौटोगे और समुद्र को प्राय सूखा हुआ देखोगे तब तुम्हें मालूम होगा कि तुमने उसका कितना पानी पी लिया। तुमने समुद्र को इतना सुखा दिया है कि आगे आने वाली पीढ़ियाँ इसे तुम्हारे द्वारा 'शोषण' कहा करेंगी।

"और जब तुम मेरी बूढ़ी दाई 'इलो' से लड़े थे तो ऐसा लड़े कि जैसे कोई और इली से लड़ नहीं सकता। इलो से लड़ कर न अभी तक कोई जीता है न कभी जीत ही सकेगा क्योंकि 'इली' तो बूढ़ी-उम्र है। वह कोई औरत या बूढ़ी दाई थोड़े ही थी, वह तो तुम्हें ऐसे ही दिखलाई दी थी। बुढ़ापे से कोई नहीं जीत सकता क्योंकि वह तो आगे-पीछे सभी पर छा जाता है। पर तुमने जो इतनी देर तक उसे अपने ऊपर जीतने नहीं दिया तो यह एक बहुत बड़े पराक्रम का काम है। जब तुमने कहा था कि तुम उससे न लड़ कर किसी जवान से लड़ना चाहते हो तो सच मानो कि मैं और हमारे सभी दानव यह सुनकर भय से व्याकुल हो गये थे, क्योंकि जो तुम्हारे सामने आता वही मारा जाता फिर जब तुम्हें बुढ़ापे ने आखिर धर दबाया तब भी मुझे डर लगा हुआ था कि कहीं तुम और किसी से लड़ने की बात न कह दो। इसीलिए मैंने अँधेरा और रात का बहाना लगाकर लड़ाई और आगे रोक दी थी।'

थार सब सुन रहा था और भौंचक्का होकर देख रहा था पर बिल्कुल

शहर मे फिर जाकर उस किले व उन लोगो को मार कर तहस-नहस करेगा और इसीलिये वह उस शहर की तरफ मुड़ कर आगे चला, पर यह क्या ? उसने जो ऊपर देखा तो न तो वहां कोई शहर ही था न कोई किला—सामने एक बहुत लम्बा-चौडा मैदान पडा था, जनशून्य और वहाँ कुछ भी नहीं था। निदान थौर लौटा और [illegible]नने रास्ते वापस चला। पर उस वक्त उसने यह प्रतिज्ञा की कि वह मिडगार्ड के सांप से उसके इस धोखे का बदला कभी न कभी जरूर लेगा। जाते-जाते वह चिल्लाया ''उटगार्ड-लोक! सुनले-सुनले! अब कभी पृथ्वी पर बर्फीले तूफान भेज कर फसलो का मत बिगाडना। ''यह मेरी चेतावनी है।'' और थौर अपने साथियो सहित मजौलनर को कन्धे पर रखे असगार्ड को लौट गया।

रैन की खास लडकियाँ नौ थी और इन सब के पुत्र का नाम हीमडल था जो बिफरोस्ट नामक स्थान का चमकता हुआ सिपाही था। जब वे कहीं बाहर जाती तो सभी नीली पोशाक पहन कर जाती, उनके सिर की ओढनी फेन जैसी सफेद होती और उनके बाल पीले होते। वह नौ लड़कियाँ जो समुद्र कन्याएँ कहलाती अपने पिता ऐईगिर के कहने मे रहतीं और जब वह जहाजो को डुबा देता तो यह सब उसकी धज्जियाँ उडा देतीं और उनको पहाड़ो को तोड तोड कर समुद्र मे फेंकने मे बडा मजा आता था।

इसी तरह रहते हुए एक दिन ऐईगिर ने सोचा कि चल कर देवता ओडिन और उसके आसा-वश के देवताओ से मिलना चाहिये क्योंकि उसने सुना था कि वह सब बहुत बली है। बस वह चल पडा और चलते-चलते असगार्ड मे जा पहुँचा जहाँ ओडिन और सभी देवता रहते थे।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसका शानदार स्वागत किया गया और देवता लोग उससे पूरी शान और वैभव के साथ मिले। सभी के शरीरो पर सोना चमचमा रहा था और सभी बहुत खुश थे। देवताओ का बड़ा कमरा जो वालहाल के नाम से प्रसिद्ध था उस दिन सजाया गया और चमकती ढालो और नगी तलवारो से उसकी दीवालें मढ दी गई जिनकी चमक से वह चमक रहा था। देवता लोग ऊँचे ऊँचे तख्तो पर बैठे और उन्होने बहुत भडकीली पोशाके पहन रक्खी थी। देवता ब्रागी की बगल मे ऐईगिर बिठाया गया और तब सुरीले कठ में दैवी कवि ने गाना गाया था। उसने पुरानी कथाएँ गाकर सुनाई। उसने ईडुन और जवानी के सेवो की कथा गाई और थजासे की मौत पर वह रोया। उसने गा-गाकर ऊँचे स्वर मे य[illegible] सुनाया कि किस तरह इवैल्डे के पास से ओडिन ने चोरी किया हुआ स्कैल्डिक-मीट छडाया और इवैल्डे को मारा। गाना बहुत सुरीला और अच्छा था और सभी बहुत खुश हुए। ऐईगिर यह सब सुन कर इतना खुश हुआ कि उसने सभी देवताओ को अपने समुद्री राज्य के बीच स्थित अपने घर फसल कटने के वक्त दावत पर बुला लिया। बाद मे बहुत खातिर तवज्जह के बाद वह देवताओं से विदा लेकर अपने घर चला आया।

इसे सुनते ही प्रसन्नता की लहर सब पर फैल गई पर साथ ही उस खतर-नाक दैत्य का नाम सुनकर सभी कॉप उठे। तब थौर बोला '

"हे टायर! क्या तुम समझते हो कि वह बर्तन कब्जे मे किया जा सकता है ?"

' हाँ किया तो जा सकता है पर उसके लिये बल और तरकीब दोनो ही काम मे लानी होगी।" टायर ने थोर के सवाल का जवाब दिया।

बस थौर जोश के साथ चिल्लाया .

"हे देवताओ! हे आसा और वाना वश के देवताओ! मै अब टायर को साथ लेकर उस बडे बर्तन को लाने जा रहा हूँ जिसके बिना दावत का मजा बिगड रहा है। तुम सब लोग यही रहना और देखना कि मै अभी आता हूँ।"

थौर और टायर ने अपना-अपना भेष जवान आदमियो का सा बनाया और चल पडे। थौर बिजलियो का राजा था। वह बहुत बली था, वह बादलो मे कड़कता और चमचमाता था। उससे सभी डरते थे। वह कूद कर टायर के साथ अपने रथ पर जा चढा जिसे दो मजबूत बकरे खींचते थे। बकरो का नाम टैगन् जोस्टर और टैगराईजनर था और वे उस रथ समेत समुद्र और हवा मे सभी जगह जा सकते थे। जैसे ही दोनो रथ पर चढे कि बडे बकरे उन्हे लेकर बिजली की फुर्ती के साथ ले उडे और भागते चले गये। बकरो के सीग बहुत पैने और मजबूत थे।

जब पूरे दिन उन्हे सफर करते हो गया तो उन्हे ओरवैडिल-ईगिल दानव का मकान दिखने लगा। बस वही उन्होंने अपना रथ छोड़ दिया और पैदल आगे बढे क्योंकि उसके मकान से आगे रथ या कोई सवारी तो जा ही नही सकती थी।

ऐलिवैगर नदी के किनारे होते हुए वे आगे बढे और उस जगह आ पहुँचे जहाँ हाईमर अपने बडे-बडे कॉटो से ह्वेल मछलियाँ पकडा करता था। पर हाईमर उस वक्त वहाँ नही था। उन्होने उसके बड़े-बडे कॉटो को देखकर ताज्जुब किया क्योंकि वह बहुत ही ज्यादा बड़े थे।

वह आगे चलते गये और इसी तरह उन देवताओं ने एक बहुत लम्बा रास्ता पैदल ही पार किया। वह घने जगलों, ऊँचे घने पहाडों और अँधेरी गुफाओं मे होकर आगे बढे चले जा रहे थे। इन्ही खतरनाक जगहों मे भयानक दैत्य और दानव रहा करते थे और वह सभी हाईमर के खान्दान के लोग थे। पर उन्हें उस वक्त कोई भी नहीं मिला और वे सीधे हाईमर के स्थान पर पहुँच गये। यह एक बहुत बडी गुफा थी जो हर तरह से चारों तरफ से पूरी हिफाजत की जगह थी और मजबूत थी। यहीं दानवो का राजा हाईमर रहा करता था। वह इस समय भी घर पर मौजूद नही था। थौर और टायर दोनों निधड़क होकर उसकी बडी गुफा मे घुस गये। वहाँ सामने ही टायर ने अपनी दादी को देखा और पहचाना। उसके कई सिर थे और वह बहुत ही लम्बी-चौडी और बलिष्ठ थी। उसको देखते ही डर लगता था। उसको देख कर टायर कुछ हिचकिचाया पर थौर तो डरना जानता ही न था। उसी समय टायर की माँ आ गई जो अत्यन्त सुन्दरी थी। उसने इन्हे देखा तो प्यार से उन्हे बिठाया और पीने को सीड शराब दी। फिर देर तक वह इनको वहाँ की सब बाते बताती रही और जब यह बिल्कुल सुस्ता कर थकान से दूर ताजा हो गये तब उसने इन्हे हाईमर के अपने बडे बर्तनों के नीचे छिपा दिया और बोली :

'मै तुम्हे इसलिये छिपाती हूँ क्योंकि हाईमर अपने मकान मे बिना बुलाये लोगो के साथ बहुत बुरा बर्त्ताव करता है।'

जब रात हुई तब थौर और टायर ने बाहर बहुत जोर की आवाज सुनी। दानवों नौकर चिल्लाकर कह रहे थे कि मालिक, दानवो का राजा हाईमर आ रहा था।

थोडी देर बाद हाईमर आ गया। उसके कन्धो पर ह्वेल मछलियाँ लटकी हुई थीं जिन्हें वह मार कर लाया था। उसकी दाढी बर्फ से सफेद हो रही थी। वह बहुत विकराल लगता था। वह पहाड से भी ऊँचा और बडा भयानक लगता था। उसका सिर कुत्ते के सिर की तरह था जिसमें उसके दाँत बाहर निकले हुए और पैने थे। वह जब चलता तो आस पास के पेड़ उसकी टक्कर से टूट जाते थे।

उसके देखते ही उसकी स्त्री ने उससे कहा

"हे दानवों के राजा ! हे मेरे प्यारे पति ! मै तेरा स्वागत करती हूँ क्योंकि तू स्वागत करने के लायक है । तेरी बहादुरी से सभी डरते हैं क्योंकि तेरे जैसा शूरवीर और कोई नहीं है । आज मेरा लड़का टायर तेरे इस बड़े कमरे वाले मकान मे आया हुआ है जिसकी मुझे एक लम्बे अर्से से प्रतीक्षा थी । उसके साथ एक और आदमी आया है जो आदमियों का दोस्त और दानवों का दुश्मन है । वह देख तेरे सामने बर्तनों के ढेर के पीछे वह दोनो छिपे हुए है और अपने मन मे तेरे खिलाफ साजिश कर रहे हैं ।"

थोर और टायर ने जब यह सुना तो उन्हे उस औरत की हरकत पर बहुत गुस्सा आया क्योंकि खुद ही तो उसने उन्हें वहाँ छिपाया था और खुद ही चालाकी से सब बात उस दानव से कह दी ।

हाईमर यह सब सुन कर खफा हुआ और उस जगह की तरफ, जहाँ वह छिपे हुए थे, लपका और जो उसने आँखें भर कर उस जगह को घूर कर देखा तो बर्तनों का ढेर खुल कर बिखर गया और पास का पत्थर टुकडे-टुकडे होकर गिर गया । बर्तन जो लुढक कर गिरे तो उनमे से सात तो वहीं टूट गये और एक जो सबसे ज्यादा मजबूत था नही टूटा । पर उसकी निगाह के दबाव के मारे धरती मे भीतर घुस गया । थोर और टायर बाहर निकल आये । हाईमर ने उन्हे देख कर बिल्कुल खुशी जाहिर नहीं की और गुर्राता ही रहा । पर बाद मे अपनी स्त्री के कहने से उसने उन्हें अपनी मेज पर खाना खाने के लिये बैठने को कहा । मेज के चारों तरफ हाईमर, उसकी स्त्री, थोर और टायर बैठ गये ।

उसके खाने के लिये बहुत खाना बनाया गया था । वह सभी सामने लाया गया । तीन बैल मार कर आग पर भून लिये गये थे और वह सभी परोस दिये गये । साथ मे बहुत सा और भी सामान था जो इनके साथ ही परोस दिया गया । थोर को बड़ी भूख लग रही थी, उसने खाने पर फौरन हाथ मारा और दो समूचे भुने हुए बैल उसने अकेले ही खा लिये । बाकी एक बैल मे से आधा टायर खा गया और उन पति-पत्नी अर्थात् हाईमर

और उसकी स्त्री के लिए केवल आधा बैल रह गया। हाईमर इस हरकत से बौखला गया क्योंकि उसने जो सोचा था वह भी नहीं हुआ और साथ ही साथ उसे उस रात भूखा ही रहना पड़ा, उसने सोचा था कि जब सभी खाना खाने बैठेंगे तब वह थौर और टायर से अपने बराबर खाने को कहेगा क्योंकि उसे विश्वास था कि वह उसके बराबर नही खा सकेंगे तब वह उन्हें मार देगा। पर यहाँ तो उलटी हो गई और थौर ने तो पूरे दो बैल ही खा डाले। हाईमर झल्ला गया पर उसे चुप रहना पड़ गया। पर गुस्सा उसे रह-रह कर आ रहा था। वह बोला

"हमारी दावत अच्छी नहीं रही, कल हमें मछली लानी पड़ेगी और उसे हम लोग कल खायेंगे।"

सब उठ कर सोने चले गये, रात भर कोई वारदात नहीं हुई बल्कि उनके खुर्राटो से पूरी गुफा गूँजा की। जब हाईमर खुर्राटे लेता तो किवाड़ उसको साँस के साथ खुलता और बन्द होता था। पर थौर भी कम नही था। वह कुछ ज्यादा ही था। वह जब खुर्राटे लेता तो ऐसा मालूम पड़ता मानों बादल गरज रहे हैं और बिजली कड़क रही हो क्योंकि वह बिजली का देवता था ऐसा होना तो उसके साथ जरूरी ही था। टायर को इन दानवो के खुर्राटो के मारे नींद नहीं आई और वह अपनी माँ से रात भर बाते करता रहा।

जब भोर हुई तो थौर जागा और उसने खिड़की मे से देखा कि हाईमर मछली पकड़ने की तैयारी मे अपनी नाव ठीक कर रहा है। बस वह झटपट अपने कपड़े पहनने लग गया और शीघ्र ही तैयार होकर उसने अपनी कमर में अपना भयानक और बड़ा हथौड़ा रख लिया फिर तेजी के साथ वह समुद्र के किनारे जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि दानवो ने नाव पर बैठ कर जाने की पूरी तैयारी कर ली थी। वह उससे बोला .

"मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैं भी तुम्हारे साथ पतवार खेऊँगा"। हाईमर ने उसको नीची निगाहों से देख कर लापरवाही से कहा :

"तुम मेरी क्या मदद कर सकते हो? तुम बहुत छोटे और कमजोर हो और इतनी बड़ी नाव को नहीं चला सकते। इसके अलावा तुम मेरा साथ

"अब नाव रोक देनी चाहिये और चपटी मछली पकड़नी चाहिये", पर थौर ने चिल्ला कर डाँट दिया

"अभी नहा रुकेंगे, अभो समुद्र के अन्दर हम लोग बहुत कम दूर आये हैं।"

हाईमर यह तो कह नहा सकता था कि वह थक गया था क्योंकि इसमे तो उसकी बात नीची हा जाती। हारकर चुपचाप नाव चलाने लगा। पर उसका हाल बुरा था और साँसे फूल रही थीं।

नाव को तेजी से थार खेता चला जा रहा था और हाईमर का साथ देना पड रहा था। अब नाव समुद्र के अन्दर काफी दूर चली गई थी जहाँ कि वायु भी ठंडी और सर्द थी और खारा जल उछल-उछलकर इनके शरीर मे लग रहा था। पर थोर तो जैसे रुकना ही नही चाहता था क्योंकि न तो वह थका था न उसकी रफ्तार ही कम हुई थी। एकदम कुछ याद करके हाईमर का ठडा हृदय डर से घबरा गया और वह बोला

"अब तो रुक ही जाना चाहिये क्योकि और आगे जाने से हमे मिडगार्ड के भयकर साँप से मुठभेड़ हो जाने का खतरा हा जायगा।"

पर थौर कब रुकने वाला था। उसने और भी जोर से पतवार चलाया और नाव पहले से भी तेज आगे बढी। जब हाईमर ने फिर कहा तो उसने उसे डपट कर चुप कर दिया और बोला

"चुप रहो, बको मत और चुपचाप मेरे साथ नाव चलाये जाओ, तुम तो किनारे पर मुझसे कह रहे थे कि म तुम्हारे साथ समुद्र के अन्दर नहीं आ सकूँगा और अब खुद ही डर कर भाग रहे हो। यह क्या बहादुरी है? अभी हमे समुद्र के अन्दर तक और जाना है। भला इतनी सी दूरी को ही तुम बहुत दूर कहते हो? क्या यह शर्म की बात नहीं है?"

और वह नाव वैसे ही चलाता रहा। हाईमर मे अब दम नहीं रहा था उसकी यह हालत हो गई थी कि थोर के साथ एक-दो बार भी डॉड नहीं चला सकता था पर मजबूर था। रुक तो सकता ही न था और थार थपेडे पर थपेड़ मारता हुआ बढा चला जा रहा था। नाव तीर की तरह चली

जा रही थी और कमाल यह था कि वह जग भी नहीं थका था बल्कि हर घड़ी उसका जोश बढ़ता ही जाता था।

आखिर वह किनारे से कई मील समुद्र के अन्दर जा पहुँचे जहाँ अथाह पानी था। थौर ने वहाँ नाव रोक दी और कहा:

"यह जगह ठीक है, बस अब यहीं मछलियाँ हम लोग पकड़ेंगे।" हाईमर भी खड़ा हो गया और उसने अपने काँटे में गोश्त का बड़ा टुकड़ा बाँधकर रस्सी जल में छोड़ दी और ढील देता चला गया क्योंकि उस गोश्त पर झपटने वाली एक मछली उस काँटे में फँस गई थी। देर तक रस्सी ढीली की गई फिर जब उसने ऊपर खींचा तो एक बड़ी ह्वेल मछली ऊपर खिंची चली आई। इसी तरह उसने एक और ह्वेल मारकर दोनों विशाल मछलियाँ नाव में रखते हुए बड़े गर्व से कहा:

"तुम भी ऐसी बड़ी मछलियाँ मारकर दिखाओ तो जानूँ तुम्हारी बहादुरी।" और उसकी आँखें खुशी से चमकने लग गई थीं।

बिजलियों के देवता ने अपना शिकार करने का सामान तैयार किया जो कि बड़ा मजबूत और भारी था। एक बहुत बड़े काँटे में उसने हाईमर के साँड का कटा हुआ सिर अटका कर उसे बड़े जोर के साथ समुद्र के गहरे जल में फेंक दिया जिससे ऊँची-ऊँची लहरें उठीं और नाव डगमगा गई। उसने काँटे को तब तक नीचे जाने दिया जब तक कि वह तह में नहीं पहुँच गया। अब थौर ऊपर से अपनी रस्सी इधर से उधर हिलाने लगा जिससे वह काँटा उस सिर के साथ साथ समुद्र की तह में हिलने लग गया। हाईमर उसका विचित्र मछली पकड़ने का तरीका देख कर हैरान हो रहा था और उसे अब डर भी बहुत लग रहा था पर वह फिर भी अपने ऊपर काबू कर रहा था और चुपचाप देख रहा था। थौर ने उसे देखा भी नहीं और अपने काम में लगा रहा। हाईमर को एक डर और लग रहा था जिसकी याद करके वह अपने दिल ही दिल में काँप उठता था। और वह था मिडगार्ड का साँप—वह सोचता:

'कहीं, वह मिल न जाय' और मनौती मना रहा था कि वह न मिले तो कितना अच्छा हो, पर थौर को कोई डर नहीं था। वह काँटा हिलाता रहा।

"अब नाव रोक देनी चाहिये और चपटी मछली पकड़नी चाहिये", पर थौर ने चिल्ला कर डॉट दिया.

"अभी नहीं रुकेंगे, अभी समुद्र के अन्दर हम लोग बहुत कम दूर आये हैं।"

हाईमर यह तो कह नहीं सकता था कि वह थक गया था क्योंकि इसमें तो उसकी बात नीची हो जाती। हारकर चुपचाप नाव चलाने लगा। पर उसका हाल बुरा था और साँसे फूल रही थीं।

नाव को तेजी से थार खेता चला जा रहा था और हाईमर का साथ देना पड़ रहा था। अब नाव समुद्र के अन्दर काफी दूर चली गई थी जहाँ कि वायु भी ठंडी और सर्द थी और खारा जल उछल-उछलकर इनके शरीर में लग रहा था। पर थौर तो जैसे रुकना ही नहीं चाहता था क्योंकि न तो वह थका था न उसकी रफ्तार ही कम हुई थी। एकदम कुछ याद करके हाईमर का ठडा हृदय डर से घबरा गया और वह बोला

"अब तो रुक ही जाना चाहिये क्योंकि और आगे जाने से हमें मिडगार्ड के भयकर साँप से मुठभेड़ हो जाने का खतरा हो जायगा।"

पर थौर कब रुकने वाला था। उसने और भी जोर से पतवार चलाया और नाव पहले से भी तेज आगे बढ़ी। जब हाईमर ने फिर कहा तो उसने उसे डपट कर चुप कर दिया और बोला

"चुप रहो, बको मत और चुपचाप मेरे साथ नाव चलाये जाओ, तुम तो किनारे पर मुझसे कह रहे थे कि मैं तुम्हारे साथ समुद्र के अन्दर नहीं सकूँगा और अब खुद ही डर कर भाग रहे हो। यह क्या बहादुरी है? अभी हमें समुद्र के अन्दर तक और जाना है। भला इतनी सी दूरी को ही तुम बहुत दूर कहते हो? क्या यह शर्म की बात नहीं है?"

और वह नाव वैसे ही चलाता रहा। हाईमर में अब दम नहीं रहा था उसकी यह हालत हो गई थी कि थौर के साथ एक-दो बार भी डाँड नहीं चला सकता था पर मजबूर था। रुक तो सकता ही न था और थौर थपेड़े पर थपेड़े मारता हुआ बढ़ा चला जा रहा था। नाव तीर की तरह चल

जा रही थी और कमाल यह था कि वह जरा भी नहीं थका था बल्कि हर घड़ी उसका जोश बढ़ता ही जाता था।

आखिर वह किनारे से कई मील समुद्र के अन्दर जा पहुँचे जहाँ अथाह पानी था। थौर ने वहाँ नाव रोक दी और कहा :

"यह जगह ठीक है, बस अब यहीं मछलियाँ हम लोग पकड़ेंगे।" हाईमर भी खड़ा हो गया और उसने अपने काँटे में गोश्त का बड़ा टुकड़ा बाँधकर रस्सी जल में छोड़ दी और ढील देता चला गया क्योंकि उस गोश्त पर झपटने वाली एक मछली उस काँटे में फँस गई थी। देर तक रस्सी ढीली की गई फिर जब उसने ऊपर खींचा तो एक बड़ी ह्वेल मछली ऊपर खिंची चली आई। इसी तरह उसने एक और ह्वेल मारकर दोनों विशाल मछलियाँ नाव में रखते हुए बड़े गर्व से कहा :

"तुम भी ऐसी बड़ी मछलियाँ मारकर दिखाओ तो जानूँ तुम्हारी बहादुरी!" और उसकी आँखें खुशी से चमकने लग गई थीं।

बिजलियों के देवता ने अपना शिकार करने का सामान तैयार किया जो कि बड़ा मजबूत और भारी था। एक बहुत बड़े काँटे में उसने हाईमर के साँड का कटा हुआ सिर अटका कर उसे बड़े जोर के साथ समुद्र के गहरे जल में फेंक दिया जिससे ऊँची-ऊँची लहरें उठीं और नाव डगमगा गई। उसने काँटे को तब तक नीचे जाने दिया जब तक कि वह तह में नहीं पहुँच गया। अब थौर ऊपर से अपनी रस्सी इधर से उधर हिलाने लगा जिससे वह काँटा उस सिर के साथ साथ समुद्र की तह में हिलने लग गया। हाईमर उसका विचित्र मछली पकड़ने का तरीका देख कर हैरान हो रहा था और उसे अब डर भी बहुत लग रहा था पर वह फिर भी अपने ऊपर काबू कर रहा था और चुपचाप देख रहा था। थौर ने उसे देखा भी नहीं और अपने काम में लगा रहा। हाईमर को एक डर और लग रहा था जिसकी याद करके वह अपने दिल ही दिल में काँप उठता था। और वह था मिडगार्ड का साँप—वह सोचता :

'कहीं, वह मिल न जाय' और मनौती मना रहा था कि वह न मिले तो कितना अच्छा हो, पर थौर को कोई डर नहीं था। वह काँटा हिलाता रहा।

जहॉ हाईमर की बड़ी नाव खड़ी तैर रही थी। ठीक उसके नीचे वहीं इगार्ड का भयकर सॉप समुद्र की तह मे पड़ा था और वह विकराल डॉडें गाता था। वह लुबलुबा, घिसलना और देखने मे अति भयानक लगता था। अपने मुँह मे पूँछ पकडे कुडली बनाये अपने लबे पृष्ठ शरीर का गोल ये पड़ा था। उसका शरीर इतना लबा था कि सारी दुनिया को वह उससे टि सकता था। उसने जो बैल का सिर इधर-उधर घूमता देखा तो वह खे मे आ गया और वह उसे ललचाई निगाहो से देखता हुआ आगे बढा। को थौर का कॉटा तो दिखा नहीं और उसने बढकर बैल के सिर को पकड़ या और फिर उसे एक ही निवाले मे निगल जाना चाहा। जैसे ही उसने गा किया बैल का सिर तो वह मुँह मे खा गया पर वह गले मे अटक गया र साथ ही साथ थौर का जबर्दस्त कॉटा उसके हलक मे आर-पार छिद अटक गया। मिडगार्ड का सॉप अब बहुत छटपटाया क्योंकि उसे बहुत हो रहा था और उसने बहुत तरह से झटके दिये कि वह उस फदे से ट जाय पर कॉटा उल्टे और मजबूती के साथ गड गया और उसके सभी टने के उपाय बेकार हो गये। अब तो वह दर्द से चिल्लाने लगा और साथ साथ उसे गुस्सा भी बुरी तरह चढ रहा था। हर तरह कोशिश करने के र भी जब कॉटे को अपने हलक से नही निकाल सका तो उसने उसे जोर से वे खीचा कि नाव और शिकारी सभी को पानी मे डुबो दे और झटके पर टके देने लगा।

पर जैसे ही कॉटा उसके हलक मे फसा था वैसे ही ऊपर थौर को मालूम गया था और उसने रस्सी मजबूती से पकड ली थी। जब वह छटपटाया तो थौर ने उसको कॉटे के झटके खूब दिये थे और अब जब कि वह व सहित उसे पानी म खींच लेना चाहता था तो थौर ने उसे ऊपर चा। सॉप की कोशिश बेकार होती जा रही थी क्योंकि थौर उससे ज्यादा वान था।

दोनो हाथो से थौर ने रस्सी पकड कर जोर से ऊपर खीचा और नाव की ला म अपने पैर मजबूती के साथ जमा लिये और जैसे जैसे वह रस्सी को

ऊपर खींचता वह उसे पतवारों की मूठों पर लपेटता जाता और कड़ा करता जाता था।

नाव बड़ी जोर से डगमगाई और लहरें ऊपर तक उठ कर फैल गई और मिडगार्ड के भयंकर सर्प ने जी जान लड़ा कर बिजलियों के देवता के पंजे से छूटने की कोशिश की और इतना बल लगाया कि नाव बार बार डगमगाने लगी।

पर तभी थौर ने अपनी सारी दैवी शक्ति लगाई और उसे ऊपर खींचा।

जैसे-जैसे वह ताकत लगाता गया वैसे ही वैसे उसका कद भी बढ़ता गया यहाँ तक कि वह बहुत बड़े आकार का हो गया। जब इस भयानक खींचा-तानी में नाव बहुत ज्यादा डगमगाने लगी तो उसने नाव की बगल से अपने पाँव नीचे पानी में चलाये और चलाता गया। आखिरकार अब वह समुद्र की तह पर खड़ा था उसके पैर बहुत लम्बे हो गये। वह जोर-जोर से खींच रहा था और वह साँप न चाहते हुए भी ऊपर खिंचा चला आ रहा था और दर्द से बेहाल था। वह समुद्र की गहराईयों में कराहने लगा था जिसकी गूँज ने सारा समुद्र थर्रा रहा था। हाईमर ने जब वह आवाज तो वह काँपने लग गया और डर कर भाग जाना चाहता था पर भागने का रास्ता न पाकर वह नाव के एक कोने में दबका हुआ खड़ा देख रहा था। तब थौर ने पूरा जोर लगाया और साँप को ऊपर खींच लिया और उस भयंकर साँप का सिर अब ऊपर आ गया जो बहुत ही खतरनाक और बुरा था।

हाईमर उस सिर को देखते ही डर कर थर थर काँपने लग गया और उसे उस ठंडी जगह में भी पसीना आ गया जिससे वह बिल्कुल भीग गया। उसकी जीभ तालू से चिपट गई और उसके मुँह से चीख भी नहीं निकल सकी। वह सिकुड़ा हुआ नाव के कोने में और भी दुबक गया। उसका दिल डर के मारे बड़े जोरों से धड़क रहा था और उसके सिर के बाल तन कर खड़े हो गये थे। उसकी ऐसी हालत हो गई थी कि जिसे बयान भी नहीं किया जा सकता।

बिजलियों का पराक्रमी देवता उस साँप को क्रोध में भर कर ऐसे देखने लगा था जैसे निगाहों से ही उसे जला डालेगा और साँप छूटने के लिए बहुत बुरी तरह उछल रहा था और अपने सिर को ऊपर उठा कर थौर पर जहर के फव्वारे मुँह खोल कर फेंक रहा था। पर उस जहर का थौर पर कोई असर ही नहीं होता था।

हाईमर बड़ी जोर से चिल्लाया और भाग कर नाव के मस्तूल पर चढ़ गया। उसका चेहरा डर के मारे बर्फ की तरह सफेद हो रहा था और साँसें फूल रही थीं। जब साँप जहर उगलने लगा तो उसे इतना भय हुआ कि प्राण ही निकलने को हो गये। जब नाव हिलती थी तो पानी गजों ऊँचा बिखर जाता और हाईमर को डर लग रहा था कि कहीं नाव डूब न जाय क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो फिर उस साँप के चंगुल से बचना असम्भव हो जायगा। वह खूब जानता था कि उस हालत में मिडगार्ड का वह बली सर्प उन सब को मार कर खा जायगा।

पर थौर था कि साँप से युद्ध करने में जुटा हुआ था और उसने उसके मोटे सिर को खींच-खींच कर नाव के सिरे के किनारे कर लिया। तब उसने रस्सों को और भी खींचा और नाव के सिरे पर लपेटता गया यहाँ तक कि अब साँप का सिर नाव के उठे हुए मुँह से जा भिड़ा और जब वह अपने सिर को हिला-डुला नहीं सका तभी थौर ने अपना भारी और महा भयानक हथौड़ा उठाया और उसे हवा में घुमा कर साँप के सिर पर दे मारा। बिजलियाँ कड़कने लगीं, सारी दुनियाँ हिल गई। पहाड़ उस गूँज से हिलने लग गये और गुफाओं में से देर तक भयानक गूँज निकलती रही और सारा समुद्र थर्राने लग गया। पृथ्वी डर कर सिकुड़ गई और छोटी हो गई पर वह साँप अभी मरा नहीं था। वह जीवित था और प्रतिहिंसा में फुँकार भर रहा था। जहर उसने इतना फैलाया कि सारा समुद्र जहरीला हो गया था, पानी का रंग काला हो गया था और उसने इतनी जहरीली हवा फैलाई कि सारी जगह काले धुएँ में ढक गई। अब पराक्रमी थौर ने अपना हथौड़ा फिर उठाया कि उसे दूसरी बार मारे कि उसी वक्त जब कि उसने उसे हवा में घुमाया तो इधर भय से काँपते हाईमर ने नाव के ऊँचे मुँह से बँधी रस्सी काट डाली। बस रस्सी का कटना

था कि तड़फड़ाता हुआ वह भयानक साँप पलक मारते मे डूब कर छिप गया। और थौर का उठा हुआ हाथ ऊपर ही रह गया। जब साँप गायब हो गया तो थौर को इतना क्रोध आया कि वह लाल पीला हो गया और उसे हाईमर पर इतना गुस्सा आया कि उसने जोर का एक थप्पड हाईमर के मुँह पर खींच कर दे मारा। जिससे हाईमर सिर के बल समुद्र मे दूर जा कर गिरा और समुद्र की तरगें जोर-जोर से ऊपर उठने लगीं। पहले जब साँप गिरा था तब तरगे ऊपर उठी थी पर हाईमर के गिरने से और भी ऊपर उठी। पर हाईमर को जब होश आया तो वह भाग कर नाव पर फिर चढ गया क्योंकि पानी मे उसे मिडगार्ड के उस भयकर साँप का डर था कि कही वह उसे पकड कर खा न जाय। इधर जब वह नाव पर फिर चढ़ गया तो अब उसे थौर से उतना ही डर लगने लगा कि कही अब यह गुस्से से उसे मार न डाले। सिर नीचा लटकाये काँपते-काँपते धीरे से वह एक तरफ जा कर धम्म से बैठ गया और उसे अपनी जिन्दगी बचाने की राह नहीं सूझ रही थी। उसने आँखे मीच ली थीं और प्रतिक्षण उसे अब ऐसा लग रहा था कि थौर ने अब अपना बड़ा हथौडा उसके सर पर मारा और देर तक वह वैसे ही बैठा रहा।

पर थौर ने उसे नही मारा उसके कुछ देर बाद वह पतवार उठा कर नाव के आगे की तरफ जा बैठा और बोला

"हाईमर, अब हम लौटेंगे क्योंकि काफी देर हो गई है।"

उसका कहना ऐसा लगता था कि जैसे वह हुक्म दे रहा हो। हाईमर ने फौरन उसका हुक्म उठाया और दूसरी पतवार लेकर नाव की दूसरी तरफ बैठ कर नाव को वापस खेने लगा। अब नाव वापस जाने लगी।

थौर ने डाँड़ जोर से चलाया और हाईमर ने उसका साथ दिया और नाव फिर तेजी से चलने लगी। पानी उमसे ऐसा कटता था जैसे रेती से कटा जा रहा हो और उसकी तेजी से बगलो में ऊँची लहरे बनती चली जातीं। थौर चुपचाप खे रहा था और बिल्कुल नहीं बोला। उसका गुस्सा हद दर्जे का हो रहा था कि वह उस मिडगार्ड के साँप को मार नहीं सका। उसे साँप से बड़ी दुश्मनी थी क्योंकि वह असगार्ड के रहने वाले आसा-देवताओं को मौत

की धमकी दिया करता था। उसने सोचा कि यदि यह डरपोक हाईमर उस रस्सी को उस वक्त न काटता तो वह जरूर ही अपने हथौड़े के दूसरे वार से उसे मार डालता। पर अब सिवा गुस्से के और बाकी ही क्या था क्योंकि साँप तो जा चुका था। सामने हाईमर जरूर बैठा था जिस पर वह अपना गुस्सा उतार सकता था और उसे मार सकता था पर अभी उससे उसे काम जो था इसलिये वह चुप ही रहा और उसने हाईमर से कोई छेड़-छाड़ नहीं की। दोनों चुपचाप नाव चलाते रहे।

इसी तरह चलते-चलते किनारा आ गया और हाईमर झट से कूद कर जमीन पर खड़ा हो गया। अब जब उसे पानी का डर जाता रहा और मिडगार्ड का साँप भी दूर हो गया और उसने अपने घर के पास अपना पैर रक्खा तो वह फिर से अकड़ गया और अपनी शेखियाँ बघारने लग गया। थौर मन ही मन हँसा पर उसने कहा कुछ भी नहीं। हाईमर ने बड़ी शान के साथ दोनों ह्वेल मछलियों को उठाकर अपने कन्धे पर डाल लिया और अपने घर की तरफ चला। थौर ने उस दानव की वह जो विशाल भारी नाव थी उसको उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया और दानव के गढ़ की तरफ वह भी चल दिया।

जब वे उस बड़े किले में पहुँच गये तो दाना उसकी राह देखते हुए बैठे टायर को देख कर बहुत खुश हुए और जाकर उसी की बगल में बैठ गये। टायर ने जो दो ह्वेल देखी तो खुश हुआ और बोला

"यह बहुत अच्छा रहा कि शिकार अच्छा हाथ लग गया, अब शाम को खूब खायँगे'।" फिर उसने थोर से पूछा

"क्या क्या हुआ, मुझे तो सब बतलाओ ?"

पर थोर ने उसे इशारे से चुप करा दिया और कुछ भी नहीं कहा। हाईमर ने डींगे मारते हुए अपनी ह्वेलों के शिकार के बारे में बहुत लम्बी बातें सुनाईं जिसमें अपनी बहादुरी भी खूब जताई। बस मिडगार्ड के सर्प की पूरी बात वह छिपा गया और उसकी बात कतई नहीं की। पर मन में वह डर जरूर रहा था कि कहीं थोर वह जिक्र भी न कर बैठे, पर थोर ने कुछ भी नहीं कहा।

हाईमर मन में थौर से बहुत ही ज्यादा नाराज था पर साथ ही डरने भी बहुत लगा था। उसके कारनामे देख कर वह उसे पसन्द नहीं आ रहा था और मौका ढूँढ रहा था कि किसी न किसी तरह तो थौर को नीचा दिखाना चाहिये। वह चुपचाप उठा और गुफा के अन्दर चला गया। इस बीच मे थौर ने टायर का समुद्र के बीच शिकार की तथा उसकी और सॉप की लडाई की सारी बाते झटपट सुना दी। उसने यह भी कह दिया कि किस तरह दानव का राजा डर के मारे थरथर कॉपता हुआ नाव के मस्तूल पर चढ़ गया था और जब थौर सॉप को मारने ही वाला था तो इसी डरपोक ने उसकी रस्सी काट कर उस दुश्मन को भाग जाने दिया था। टायर उसकी सारी बाते सुन कर बडी जोर से हँसा और इसी वक्त माथे मे बल डाले बेहद नाराजगी के साथ हाईमर वापस आ गया और शराब पीने का एक बडा कटोरा थौर के हाथ मे देकर उसे ताना दिया कि देखें वह उसे तोड सकता है या नहीं। थौर ने बिना उठे बैठे ही बैठे उसे एक पत्थर के खम्भे से दे मारा। खम्भा चूर-चूर हो गया पर वह कटोरा ज्यों का त्यों ही रहा और जरा सा मुडा भी नहीं। दानव ने उसे जमीन से उठा कर थौर की ओर गर्व के साथ देखा और मुस्कराया क्योंकि थौर उसे तोड नहीं सका था।

जब टायर की मॉ ने थौर के कान मे फुसफुसा कर कहा :

"इसे उठाकर हाईमर के माथे से दे मारो क्योंकि उससे सख्त चीज यहॉ और कोई नहीं है जो इस कटोरे को तोड सके।"

थौर ने कटोरा हाईमर से छीन लिया और जितने मे कि वह सॅभले उसे उसके माथे से बडी जोर से दे मारा। कटोरा उसके माथे में ऑखो के ठीक बीच मे लगा और झनझना कर मेज पर टुकडे-टुकडे होकर गिर गया। हाईमर के सिर को कुछ नहीं हुआ और उसे चोट जरा भी नहीं लगी, न खून ही आया। पर जब कटोरा टूट कर बिखर गया तो हाईमर बडे अफसोस मे चिल्ला कर बोला :

"हाय आज मेरा एक बडा खजाना लुट गया। ऐसा कटोरा तो अब दुनिया मे दूसरा नहीं है। इसमे से हमेशा गर्म गर्म शराब पीने को मिलती थी।"

दानव का हृदय अब क्रोध से जलने लग गया था और वह रह रह कर चाह रहा था कि किसी भी तरह से हो उस थोर को शर्मिन्दा जरूर करे। उसने सोचा और फिर बोला

"थोर तुम अपने को वीर समझते हो और शायद हो भी ? मैं तो तुम्हें अभी बहादुर मान नहीं सकता क्योंकि अभी तुम्हारी ताकत मुझे और देखनी बाकी है। तुम ऊँचे खानदान के हो पर इसी से मैं तुम्हारा लोहा नहीं मान सकता क्योंकि मैं खुद भी दानवों का राजा हूँ और सभी मुझसे डरते हैं। तुम शेखी खोर तो हो पर मैं तो तब जानूँ जब तुम मेरा यह बड़ा बर्तन, जो सामने रखा है, उठा कर मेरे घर से बाहर ले जाओ।"

थोर ने उस बर्तन की तरफ देखा और तब टायर ने आँखों के इशारे से उसे समझा दिया कि यही वह बर्तन है जिसकी तलाश में वह लोग निकले थे।

टायर लपक कर उस बर्तन के पास पहुँचा जो बहुत बड़ा और भारी था। उसका घेरा मीलों का था और वह बहुत ही ज्यादा मोटे लोहे का बना था। वह अन्दर एक मील गहरा था। टायर उसे देख कर खुश हो गया। उसने उसे उठाने की कोशिश की पर वह उससे नहीं उठा। उसने दुबारा फिर कोशिश की पर अबकी बार भी वह उससे नहीं उठा।

जब टायर निराश होकर लौटा तो थोर आगे बढ़ा और उसने जाकर उस बर्तन को एक तरफ से पकड़ लिया और जोर से हिलाया। बर्तन के अन्दर से गूँज निकलने लगी। तब थोर ने दोनों हाथों से उसे पकड़ कर जोर लगा कर उठाया। बर्तन बहुत भारी था पर थोर की ताकत भी बहुत ज्यादा थी और उसने उसे उठा कर हवा में अधर में तान दिया। उसने इतना जोर लगाया कि उसके पैर जमीन में गड़ गये।

हाईमर उसे गुस्से से लाल आँखों से देख रहा था और डर रहा था कि कहीं सचमुच ही वह उसके इतने अनमोल बर्तन को लेकर चला न जाय। और थोर अब उस बर्तन को सिर पर रखकर बाहर चल दिया। उसके पैर इतने तन गये थे कि उनमें से उसके कड़े उतर कर नीचे गिर गये पर उसने उनकी परवाह नहीं की। वह बढ़ता गया और टायर भी उसके साथ चल दिया। उसने हाईमर की प्रतीक्षा भी नहीं की न उससे विदा ले कर जाना ही जरूरी

समझा बल्कि चलते-चलते उसने उसकी उस बड़ी नाव को भी उठा लिया और तेज रफ्तार से आगे बढ़ा ।

हाईमर क्रोध से पागल हो गया और उसी वक्त थौर पर टूट पड़ना चाहता पर जब उसे थौर की शक्ति को याद आई तो वह हिम्मत हार गया और उससे अकेले लड़ने के सारे मसूबे उसने छोड़ दिये । उसे यह भी डर था कि कहीं थौर उस बर्तन को लड़ते समय उसी पर न दे मारे । वह अपना मन बहलाने की कोशिश करने लगा कि जैसे कोई बात नहीं, ले गया तो जाने भी दो, पर रह-रह कर उसे खजाने के उस अनमोल बर्तन की याद सताने लगी और बदले की भावना जोर पकड़ती गई । वह उठा और जगलों की तरफ भागा । उस तरफ जहाँ उसके बर्फ के दानव रहते थे जो सभी उसके नीचे रहते थे और जिनका वह राजा था । वह उन सभी भयकर दानवों को इकट्ठा करने चल दिया ।

जब बिजलियो का पराक्रमी देवता टायर को साथ मे लेकर बहुत दूर पहाड़ों की गहरी और खतरनाक घाटियो मे होता हुआ चला जा रहा था तो उसने अपने पीछे दूर बढ़ता हुआ शोर-गुल सुना । तब तक वह हाईमर के स्थान से बहुत दूरी पर आ गया था पर हाईमर ने भी तब तक अपने दानव तैयार कर लिये थे और हवा की चाल से उसका पीछा किया था । थौर ने देखा कि पहाड़ों की ओर से और अधेरी गुफाओ से अजीब-अजीब सिर वाले विकराल और भयानक दानव बहुत बड़े-बड़े और ताकतवर उसकी तरफ चिल्लाते और मिट्टी उठाते चले आ रहे हैं । सभी थौर की तरफ बढ़ रहे थे और अजब शोर हो रहा था । जब वह चिल्लाते तो ऐसा लगता जैसे जाड़ों के तूफान चल रहे हैं और पहाड़ो की चोटी से चोटी तक बस उनकी ही आवाज गूँजने लग गई थी । उनके चलने से बड़े-बड़े पेड़ झुक जाते थे और टूट जाते थे । पृथ्वी काँप उठी थीं । शाम हो चुकी थी और टायर ने देखा कि हवा मे भयानकता फैल गई । वह घबराया पर थौर नहीं डरा । उसने मुड़ कर देखा और जब उसे अपने शत्रु पीछा करते हुए नजर पड़े तो उसने धीरे से अपने सिर से उस भारी बर्तन और भारी नाव को नीचे उतार कर रख दिया और अपनी कमर से अपना भारी और मशहूर हथौड़ा निकाल लिया ।

उस हथोड़े का नाम मजानगर था। अब वह नम कर एक बड़ी चट्टान पर खड़ा हो गया और दानवों को उस फौज का इतजार करने लगा।

आँधी की तरह दानव आये और उन्होने थोर को चारों तरफ से घेर कर मार डालना चाहा। वह अपनी ताकत के घमड में थे और थोर को कुचल डालना मामूली बात समझे थे। उन्होंने उसे घेर कर पकड़ने की कोशिश की। हाईमर ने नारा लगाया :

"जाने न पाये, इसे फौरन मार डालो और मेरा विचित्र बर्तन इसके हाथों से छुड़ा लो।"

इधर थौर ने जो देखा कि मौका ठीक है और सभी दानव उसके बिल्कुल पास आ गये हैं तो हथोड़ा लेकर उन पर टूट पड़ा। वह पूरे वेग से अपने हथियार को हवा मे घुमाता और उनके दे मारता। उसकी एक-एक चोट से कई-कई दानव ढेर हो जाते और मर जाते। वह बिजली की तरह चारो तरफ घूमने लगा और जिधर वह जा भिड़ता उधर से ही मैदान साफ होने लगा। एक-एक हथौड़े के साथ मे वह दस दस दानवों को इकट्ठा मार देता था और फिर उनकी लाशो पर चढकर औरो को मारता। उसकी मार से दानवो मे भगदड़ मच गई पर हाईमर ने उन्हे बढ़ावा दिया और सबो ने मिलकर फिर उस पर हमला बोल दिया। उन्होने उसकी तरफ उखाड कर कई पेड फेके और पहाड़ की बडी चट्टानें भी लुढकाई पर थोर के कुछ भी नहीं लगी। अब तो हाईमर घबराया और जब उसने देखा कि थौर उसकी तरफ आ रहा है तो उसके पैर उखड़ गये और वह चिल्लाता हुआ पीछे की तरफ बड़ी जोर से भागा। उसका भागना था कि सभी दानव उसके पीछे जान तोड कर भागे, पर थोर ने भाग कर पहाडी मुहाना बद कर दिया और दानवो को घेर-घेर कर मारने लगा। उसके हथोडे के नीचे दानव ऐसे मर रहे थे जैसे हँसिये के नीचे पका खेत कटता है। उसने हाईमर को पकड कर इतना दबाया कि वह बीच मे से दो टुकडे हो गया और मर गया। उसने सभी दानवो को मार डाला और फिर भी जो थोडे से दानव पहाडो पर चढकर भाग रहे थे उन्हे चला

जाने दिया। वह सिर पर पैर रख कर ऐसे भागे कि उन्होंने मुड़ने का नाम ही न लिया।

जब मैदान साफ हो गया तो उसने दानव की लाशो को हटा कर एक तरफ किया और एक के ऊपर एक उन्हें पहाड के सहारे पटक दिया। इतने सारे दानव मर गये थे कि उनकी लाशो का एक बड़ा पहाड बन गया था।

अब थोर ने उस बडे बर्तन और नाव को उठा कर फिर कँधे पर रख लिया और टायर को साथ में लेकर अपने रास्ते चल दिया।

जब वह ऐलिवैगर के किनारे आये तो उन्होंने देखा कि उसका गहरा पानी उबल रहा था और लहरे ऊँची-ऊँची उठ कर ज्वार-भाटे बना रही हैं। थौर ने नाव पानी मे डाल दी और उस पर टायर को चढाया फिर खुद भी उस बर्तन को लेकर चढ गया और शीघ्र ही उन्होंने समुद्र का वह हिस्सा पार कर लिया। मिडगार्ड का भयकर साँप जो काँटे से घायल हो गया था और जो हथौडे की चोट के दर्द से कराह रहा था, समुद्र के इस हिस्से मे अब ऊबड-खाबड सतह पर पड़ा हुआ गुस्से से फुफकार रहा था और उसी के बदन के तडफडाने से ज्वार-भाटे आ रहे थे और उसके विष से सारा पानी उबल रहा था। थोर को बडी खुशी हुई कि वह इतनी आसानी से उस समुद्र को पार कर सका क्योंकि नाव तो वैसे ही उठा लाया था। उसने मन में सोचा कि यदि नाव वह नही लाता तो इस आसानी से ऐलिवैगर पार नहीं कया जा सकता था।

ठीक समय पर थौर इस बडे बर्तन को लेकर ऐईगिर जो समुद्री तूफानों का देवता था उसके यहाँ पहुँच गया और जब वहाँ उसे बर्तन को लेकर उन लोगो ने देखा तो खुशी से सभी चिल्लाने लगे। ऐईगिर और उसकी स्त्री रैन इतने खुश हुए कि उन्होंने बढ कर थोर को चूम लिया। आसा-वश के देवताओ ने थौर का सम्मान किया।

फौरन उस बडे बर्तन मे शराब भर कर बनाई गई और उसे सभी ने खूब पिया और इस तरह फसल कटने की दावत सफल हुई। मेहमानों ने और मेज़-बानो ने सभी ने मिलकर थौर द्वारा सुनाई गई सभी बातों को सुना कि उस

समुद्र का निर्माण

डेनमार्क का राजा फ्रोड बहुत बुद्धिमान और न्यायप्रिय था। उसके राज्य में सर्वत्र शान्ति और आनन्द फैला हुआ था। भूमि अन्न उगलती थी और खजाने स्वर्ण और रत्नों से भरे रहते थे। उसके राज्य मे इतना अच्छा प्रबन्ध था कि खजानो मे ताले नहीं लगाये जाते थे वह रात-दिन खुले रहते क्योकि उसके राज्य मे चोरी होती ही न थी। अतिथियों का सत्कार किया जाता और यात्रियो के लिये विशेष सुव्यवस्था थी। राजा फ्रोड बहुत बली व्यक्ति था और सुन्दर रानियों से उसका महल चहका करता।

फ्रोड के पास एक विचित्र चक्की था जिसे वह अपनी इच्छा मात्र से घुमाया करता था। वह जिस वस्तु को चाहता उसी का नाम लेकर उस चक्की के पाटो को घूमने की आज्ञा देता। सुवर्ण की इच्छा हृदय में रखते हुए जब वह उसका उच्चारण करता तो वह चमकती हुई धातु उन पाटो के बीच मे गिरने लगती और तब तक गिरती रहती जब तक कि वह उसे रुकने का आदेश नहीं देता। इसी प्रकार चाँदी और चमचमाते हुए मणि-माणिक्य और वज्र इत्यादि उसमे से निकलते थे। राजा अपनी इच्छा से उन्हीं पाटो को आज्ञा देकर सुख, शान्ति और समृद्धि का भी सृजन किया करता था। उसके समय मे डेनमार्क एक अत्यन्त समृद्धशाली और बल-वान देश था।

कुछ समय पश्चात् उस चक्की ने केवल आज्ञाओं से घूमना बन्द कर दिया तब राजा को बडी चिन्ता हुई। पाट इतने भारी थे कि उन्हें घुमाना साधारण मनुष्य की शक्ति के बाहर था। और चक्की का यह हाल था कि बिना घुमाये वह अब कोई भी वस्तु नहीं देती थी। बहुत दिनों तक राजा बलिष्ठ व्यक्तियो द्वारा उसे फिराने का निष्फल प्रयत्न करता रहा। तत्पश्चात् एक दिन उसे मालूम हुआ कि स्वीडन और जीलैंड के राजा के यहाँ दो ऐसी दासियाँ हैं जो अत्यन्त भीमकाय और बलिष्ठ हैं। उससे यह कहा गया

कि वह दासियाँ वास्तविकता मे दानवियाँ ह जिनके समान शक्तिशाली सारे ससार मे और कोई नही है। आठ-आठ हाथ ऊँची वह दानवियाँ डेनमार्क के सबसे बलिष्ठ योद्धा को भी केवल हाथो से पकड कर इस प्रकार उठा सकती थी जैसे कोई बालको को उठा लेता हो। उनका शरीर लोहे के समान कठोर था। राजा फ्रोड ने स्वीडन के राजा से उन दासियो को बहुत मूल्य देकर खरीद लिया। उनका नाम मेञ्जा और फेञ्जा था। जब वह उस भारी चक्की पर बिठाई गई तो जाता से उन्होने चिल्ला कर पूछा ' "हम क्या पीसें ?"

राजा ने उत्तर दिया, "ठोस सोना पीसो, क्योकि मुझे बहुत धन चाहिये" और तब मेञ्जा और फेञ्जा ने शीघ्र ही इतना सोना पीसा कि राजा फ्रोड का खजाना शीघ्र ही सोने से भर गया। तत्पश्चात् उन्होने उसकी भलाई के हेतु चक्की के पाटो को घुमा कर शान्ति और समृद्धि सारे राज्य मे फैल दी। भूमि ने इतना अन्न उगला कि देश मे कोई भूखा नही रह गया। उर चक्की के चलने से डेनमार्क की नहरें सदा जल से भरी रहती और व्यापार जहाज अन्य देशो से सदा असख्य धन राशि लेकर लौटते थे। चक्क अथक दिन और रात निरतर चलती रही जिससे डेनमार्क मे धन और वैभ बढता चला गया।

अब मेञ्जा और फेञ्जा उकता गई थी। उन्होने राजा से प्रार्थना की ि वह अब उन्हे विश्राम करने की आज्ञा दे।

राजा बोला : "वसन्त ऋतु मे जितनी देर कोयल चुप रहे और कूके उतनी देर तुम विश्राम कर सकती हो।" 'यह सुन कर मेञ्जा औ फेञ्जा बोली "हे राजा इतनी चतुरता भी अच्छी नही होती, क्योकि सभी जान हैं उस ऋतु मे कोयल कभी कूकना बन्द नही करती। यदि कभी करती है तो केवल एक दो ही क्षणों के लिए। तू जो इतना बड़ा न्यायप्रिय राजा है तुझे चाहिये कि हमे कुछ और अधिक समय तक विश्राम करने की आज्ञा दे।"

राजा बोला : "जितनी देर में गाने की एक कडी गाई जाती है उतनी देर तुम आराम कर सकती हो।"

चक्की चलती रही और सोना बरसा किया। अटूट धन को पाकर भी फ्रोड की तृष्णा नहीं मरी। सोने के पहाडो को देख कर भी उसके हृदय में चाह बढती ही गई। मेञ्जा और फ्रेञ्जा को कठोर आज्ञाएँ दे कर उस पत्थर की भारी चक्की को वह निरन्तर चलवाता ही रहा। दानव-कन्याएँ फ्रोड के इस व्यवहार से बहुत असतुष्ट हुई।

मेञ्जा ने फ्रेञ्जा से कहा. "मुझे आश्चर्य है कि इतना बल होते हुए भी हम लोग फ्रोड जैसे तुच्छ मनुष्य की गुलाम है। भयकर और पहाडी दानवों की हम बेटियाँ हैं जिन्हें आज तक ससार में कोई नही जीत सका। हमारा वश फ्रोड के वश से बहुत ऊँचा है। पहिले समय मे दानवों की छत्रछाया मे जब हम चक्की के भारी पाटो को चलाया करती थी तब पृथ्वी और पर्वत कॉप उठते थे और गहरी गुफाएँ भयकर शब्द से गूँज उठती थी। हमारा पराक्रम अजेय है। फ्रोड बुद्धिमानी के साथ हम से काम नहीं ले रहा है। निश्चय ही इस का नाश अब शीघ्र ही होने वाला है।"

इसके बाद मेञ्जा और फ्रेञ्जा पीसते-पीसते थकी हुई अवस्था मे बडबड़ाती हुई राजा के नाश का उपक्रम करने लगी और आपस में यह निश्चय किया कि भविष्य मे उस चक्की को पीस कर वह राजा के लिए कोई भलाई का काम नहीं करेंगी। फ्रेञ्जा ने उसी क्षण चक्की को उल्टा घुमाना शुरू कर दिया और मेञ्जा ने जादू का एक ऐसा गाना गाया कि शीघ्र ही समुद्र पर तेज जहाजो मे चढे हुए भयकर समुद्री लुटेरे नगी तलवारो को चमकाते हुए फ्रोड के राज्य की ओर आते दिखाई दिये। फ्रेञ्जा उठी और फ्रोड के पास गई जो उस समय अपनी सुन्दर रानियो के साथ सो रहा था। आने वाले खतरे की फ्रेञ्जा ने उसे सूचना दी, परन्तु धन-वैभव और स्त्री मे मत्त हो कर उसने फ्रेञ्जा को डॉटा और भगा दिया। कठोर स्वर मे उसने उसे जाकर चक्की चलाने की आज्ञा दी। उदास हृदय से फ्रेञ्जा लौट आई। उसी समय समुद्री लुटेरो का वह जहाज किनारे पर आ पहुँचा। उनकी प्रचड हुँकारो से समुद्र-तीर कॉप उठा। पलक मारते ही वह लोग अपने बलिष्ठ और तेज घोड़ों

पर चढ गये और रक्त की प्यासी लम्बी तलवारो को लेकर फ्रोड के नगर पर टूट पडे। इस अचानक आक्रमण से फ्रोड की सेना भी तैयार न हो पाई और जब तक कि उनका सेनापति सो कर भी नहीं उठा था आने वालो ने रहने वालो की लाशो से पृथ्वी को पाट दिया।

भयानक कोहराम मच गया और कोलाहल से वायुमडल व्याप्त हो गया। लुटेरे अब राजा के महल मे घुस चुके थे। फ्रोड ने जो अपने सिर पर खडी मृत्यु देखी तो वह भागा। सैनिक उसके पीछे भागे। फ्रोड खिड़की से नीचे कूद गया, परन्तु जैसे ही वह नीचे गिरा उन समुद्री लुटेरो का सरदार माइसिगर ने खींच कर ऊपर से ही उस पर एक छुरा फेंका जो उसके हृदय मे घुस गया और वह तुरन्त मर गया।

फ्रोड का राज्य और उसके भरे हुए खजाने सब लूट लिये गये। सारे नगर और राजमहल मे सूखी घास भर कर आग लगा दी गई। फ्रोड के सम्बन्धियो और वशजो को तलवार के घाट उतार दिया गया। और उसकी सुन्दरी रानियाँ माइसिगर की दासियाँ बना ली गई। असख्य धन राशि से जहाज भर लिये गये। चलते समय माइसिगर ने वह विचित्र चक्की और उन दानवी कन्याओ को भी अपने साथ ले लिया। जहाज पर चढ कर माइसिगर ने फ्राड के राज्य को जब जलते हुए देखा तो उसने भयानक अट्टहास किया। इसके बाद लगर उठा लिये गये और उसका जगी वेडा समुद्री लहरा को काटता हुआ चल दिया।

उस समय तक समुद्र खारी न थे, जल मीठा था। रात्रि का भोजन करते समय जब मास फीका लगा तो उसने अपने दासो से उसका कारण पूछा। उन्होने उत्तर दिया कि जहाज पर का सारा नमक खर्च हो चुका है अतएव वह मास नमकीन न किया जा सका। माइसिगर ने यह सुन कर क्रोधपूर्वक उन दोनो दानवी कन्याओ को आज्ञा दी कि शीघ्र चक्की चला कर नमक पैदा करे। मेञा और फेञा ने शीघ्र चक्की चलाना प्रारम्भ कर दिया। जब नमक के ढेर लग गये तो उन्होने उससे कहा "अब काफी नमक पैदा किया जा चुका है जितना पिस गया है वह एक वर्ष के लिए पर्याप्त है, यदि आज्ञा हो तो अब हम और पीसना बन्द करदे।"

परन्तु माइसिंगर भी राजा फ्रोड की भाँति वज्र मूर्ख था उसने उन्हें डाँटा और कहा · "पीसे जाओ, खबरदार जो रुकीं।"

निदान मेञ्जा और फ्रेञ्जा पीसती रहीं। नमक इतना पिस गया था कि उसकी ढेरियों से जहाज भर गया परन्तु मूर्ख माइसिगर का इस ओर ध्यान ही नहीं था। पुरानी और मीठी शराब पीकर वह राजा फ्रोड की रानियों को छेड़ने मे व्यस्त था। चक्की चलती चली जा रही थी ओर नमक की मात्रा प्रति क्षण बढ रही थी। अन्त में इतना अधिक नमक हो गया कि उसके बोझ से जहाज समुद्र मे डूब गया और सभी डूब कर मर गये। माइसिंगर को एक विशाल मछली ने खा लिया। परन्तु वह दानवियाँ न मरी। उस चक्की को लेकर वह समुद्र के पेंदे में पहुँच गईं और निरन्तर पीसती रहीं।

क्योंकि माइसिगर तो मर चुका था भला उन्हे रुकने का आदेश कौन देता। वह पीसतीं रहीं। नमक गिरता रहा और समुद्र के पानी मे घुलता रहा। इस तरह सारे समुद्र खारी हो गये। मेञ्जा और फ्रेञ्जा अब भी उस चक्की को चला रही हैं जिससे समुद्र का खार दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता ही जाता है।

संगीत का अन्त

रात्रि का नीरव सन्नाटा चारो ओर छाया हुआ था। ऐसा प्रशात वाता-
रण था, कि वायु भी स्तब्ध थी। कहीं किसी प्रकार का कोई शब्द नहीं हो
रा था, रात अँधेरी थी जिसमे हाथ-को-हाथ दिखाई नही देता था। उस
मय असगार्ड मे सभी देवी और देवता सो रहे थे। सौक्वैबैक की गहरी
तली जल की धारा के किनारे एक बड़ी चट्टान पर उस घने अँधकार मे
वल आडिन बैठा हुआ कुछ सोच रहा था, पानी की धारा कलकल शब्द
रती हुई बह रही थी पर ओडिन का शायद उस ओर ध्यान नही था। वह
। अपने ही गहरे विचारों मे मग्न था और दाढी पर हाथ रखकर ससार के
न्त मे होने वाली घटनाओ के बारे मे सोच रहा था, जब वह युवक था
भी माईमर ने उसे भविष्य की सारी बाते बतला रखी थी। उसके बाद जब
सने अपनी एक आँख देकर माईमर से उसके फव्वारे से निकलने वाली बुद्धि-
र्धक शराब पी थी तब तो वह ससार के आदि और अन्त सभी बातो का
ाता हो गया था। अब जब वह वृद्ध हो चुका था और ससार की तरक्की
ौर भलाई के लिये सब कुछ कर चुका था उसे अपने किये हुए एक-एक
ाम याद आ रहे थे, उसे मालूम था कि आखिरी युद्ध बहुत निकट आ चुका
ै और उसमे वह खुद मारा जायगा। वह यह भी जानता था कि सभी देवता
लोग मारे जायँगे और उसके बाद सुरथुर द्वारा सारी दुनिया जलाकर भस्म
कर दी जायगी। सृष्टि के अन्त के इतने निकट आकर भी और खासकर
अपनी मौत के इतने पास आने पर भी ओडिन डरता न था। यही उसकी
वीरता और महानता थी।

उसी समय उस नीरवता को छेदती हुई उसे एक स्त्री का स्वर सुनाई
दया। वह गौर से सुनने लगा। आकाश म अन्तर मे लटके हुए एक 'बाला'
(स्त्री नजूमी) सुरीले कंठ से गा रही थी। ओडिन ने अपना सारा ध्यान

उस पर जमा दिया। बाला स्पष्ट और उच्च स्वर से गा रही थी। उसको सुनकर ओडिन खुश हुआ, क्योंकि उस समय वह भी सृष्टि के अन्त की कथा ही गा-गाकर सुना रही थी, वह जो बाला थी भविष्य के बारे मे सब कुछ जानती थी और उस समय जो कुछ उसने कहा वह सब ओडिन के हृदय मे गड़ता चला गया। विभोर होकर वह सुनने लगा।

बाला ने गाया ·

'सारे ससार को शैतान ने अपने घृणित पजो मे कस लिया है—स्थान-स्थान पर हत्याएँ इतनी निर्ममता के साथ हो रही हैं कि मालूम होता है कि ससार से न्याय और धर्म उठ गया हो। बलवान, कमजोर को और झगडालू अपने शातिप्रिय पडोसी की हत्या करने से नहीं हिचकता है। भाई-भाई का खून कर रहा है और उनकी बहिने अपने बच्चों की निर्ममता से बोटी-बोटी काटकर फेक रही हैं। चारों ओर खून ही खून दिखाई देता है और हाहाकार से पृथ्वी कॉप रही है। पाप इतना बढ गया है कि सजीव होकर सब जगह नाचता फिर रहा है। ऐयाशी इतनी बढ गई है कि स्त्री-पुरुषो ने साधारण लज्जा को भी बिल्कुल छोड दिया है। हैला की रानी उर्द परेशान है 'क्योंकि इतनी आत्माएँ वहाँ इकट्ठी पहुँच गई हैं कि उन्हें अलग-अलग छॉटते-छॉटते ही थक गई है। मरे हुए अगणित हैं और उनकी बुरी आत्माओं ने हैला मे जाकर वहाँ की सारी व्यवस्था ही बिगाड़ दी है। उर्द प्राणपण मे उन्हें सॅभालने का पूरा प्रयत्न कर रही है पर फिर भी उनकी भीड कम नहीं होती है। इस समय ससार और हैला में एक सा कोलाहल हो रहा है और दोनों ही स्थानों में शासन लोप हो चुका है। मरे हुए इतने अधिक हैं कि हैला का फाटक उन्हें अन्दर लेने के लिये रात और दिन खुला रहता है। अब पहली-सी सुव्यवस्था नहीं रही है। देवता लोग दुराचारी हो गये हैं और मिडगार्ड में भी अनुशासन का अन्त हो चुका है।

"वह देखो उत्तर से बर्फ के भयानक तूफान छूट पडे हैं। आकाश अन्धकार से भर गया है। सारी सृष्टि ही अँधकार में लुप्त है। तेज ठडे तूफान सोच-सोच करके मनुष्यों को मौत के विकराल जबडे मे ढकेल रहा है। पहाडो, जङ्गलो और गुफाओं मे से भगकर जीव-जन्तु निकल पडे हैं और

है। लो वह पुल बीच से टूट गया। दानव चारो ओर भाग रहे हैं। जो पुल के बीच मे थे वह नीचे गिरकर कुचल गये हैं। उनकी कराहो मे वायुमडल कॉप रहा है। पुल बिखर कर गिरते ही फैल गया है, उसके धमाके मे पास ही खडा पृथ्वी का कल्पवृक्ष यागड्रैसिल बडे जोरो से हिल उठा है। उसकी गहरी जडे भी ढीली होकर हिलने लग गई हैं और उनमे जमी हुई राख उडकर आकाश मे सर्वत्र फैल गई है, चारो ओर उससे अन्धकार छा गया है। पृथ्वी मे इतना जबर्दस्त भूकम्प आ गया है कि सभी कुछ उलट-पुलट गया है। सृष्टि के आदि से लोहे की मोटी शृखलाओ से बँधे हुए दानव अब एकदम मुक्त हो गये हैं क्योकि उनके बधन उस झटके के साथ टूटकर गिर गये हैं। अब वह भयानक अट्टहास करते हुए निर्मम हत्याएँ करने लग गये हैं। आकाश मरने वालो की चीत्कारो से व्याप्त है — चारो तरफ हाहाकार मच रहा है। पर वह दानव हत्या करते नही थकते। हीमडल अब क्रोधित हो उठा है, उसने ताक कर एक काले दुष्ट दानव के पेट मे अपना तेज भाला घुसा दिया है। दानव छटपटा कर मर गया है और अन्दर से भी उसका काला पेट उसके दुर्गुणो और नीचता का प्रदर्शन कर रहा है। देवताओ ने उस पर थूक दिया है।

"घोर यातनाओ से पूर्ण अधेरे समुद्र के बीच मे स्थित पथरीले टापू पर वह देखो बडी जोर से ओडिन का कुत्ता गार्म भोकने लग गया है। उसके भौकने की तेज ध्वनि से आकाश व्याप्त है। गार्म इसलिये भौंका है क्योकि फनरर भेड़िया अपने बधन को तुडाकर मुक्त हो गया है। उसकी माता ऐगरबोडा आज प्रसन्न चित्त है। उसका पति लोक भी देखो अपने बधन तोड़कर मुक्त हो गया है। समुद्र-तीर से बँधे हुए नैगलिफर नामक मृत्यु के जहाज क लगर उठ गया है और प्रचड समुद्र के थपेडो से उसके बधन टूट गये हैं। अब वह समुद्र के गहरे जल मे बहने लग गया है।

"परन्तु देवता लोग निर्भय हैं अपने ऊँचे सुवर्णमय भवन मे बैठे हुए आने वाले युद्ध के सम्बन्ध मे ध्यानपूर्वक विचार कर रहे हैं। सुरथुर और सुतुग की भयानक सेनाएँ असगार्ड की ओर चढी चली आ रही हैं क्योकि सुत्तुङ्ग ओडिन से बदला लेने आ रहा है। वह उसका परम शत्रु है और

तलवार देकर उसने उसे प्राप्त किया था। तब से वह अब तक उसी के पास थी।

"वह देखो मायावी फजालर-सुत्तुङ्ग हैला के लाल मुर्गे की तरह रूप धारण करके गायमर के पास जा पहुँचा है और उसके माँगने पर गायमर ने देवताओ के वध करने के लिये उसे वही विश्वविजयी तलवार दे दी है। सुत्तुङ्ग उसे लेकर प्रसन्न हृदय से अपने पिता सुरथुर से मिलने चल दिया है।

"अँधेरी गुफाओ मे छिपे हुए बौने काँप रहे हैं क्योंकि वहाँ जो कुछ हो रहा है उसे सहन करने मे वे बिल्कुल असक्त हे। गुफाओ की भीतर की दीवाला मे चट्टानो के बीच वे छिपने का निष्फल प्रयत्न कर रहे हैं।

"उधर जौटन-हीम के बर्फ मे ढँके पहाड़ो मे भयकर दानव उत्सव मना कर नाच रहे हैं। हत्या करने का ऐसा सुन्दर अवसर पाकर वह नाच-नाचकर खुशियाँ मना रहे ह। उनके गाने का समवेत स्वर ऊँचा उठ कर असगार्ड का कँपा रहा है। उनके वज्र घाप से कँदराएँ गूँज रही हैं औ समुद्र मे भयकर ज्वार-भाटे आ गये हैं। मिडगार्ड मे आतक छा गया है और हैला ने भी आत्माएँ त्रास से कपित हो उठा हे। अज्ञात भय से सभी वे मुख सफेद हो गये हैं। माईमर के साता पुत्र हाथ मे लम्बी और नगी तलवा लेकर हैला के द्वार की रक्षा पर सतर्क खडे हे। वह निडर हैं क्योंकि इतन लम्बे समय तक सोने से अब उन्हें थकावट नही सताती। माईमर का कट सिर उन्हे सुदूर स्थित असगार्ड से ही देखकर प्रसन्नता से मुस्कुरा उठा है। ओडिन के प्रश्न का उत्तर देना भग्न कर वह इस समय अपने प्रचड योद्धा पुत्रो को निहार रहा है। ओडिन अपनी अवहेलना से क्रुद्ध हो उठा है परन्तु अभी उसे भविष्य का और काफी ज्ञान उससे सीखना है इसलिये वह चुप है।

"पूर्व दिशा से हाईमर तूफानो को आगे-आगे हाँकते हुए भयकरता के साथ असगार्ड पर आक्रमण करने चल पड़ा है। उसकी चपेट मे पृथ्वी कुचली जाकर आर्त स्वर से कराह उठी है। नदियो का प्रवाह बदल गया है।

रानी का बाँधा हुआ ताँबे का ताबीज है जिसमे से मृत्यु के दूत चिनगारियो की भाँति निकल कर आगे-आगे सभी वस्तुओ का नाश करते हुए चल रहे हैं। चारो ओर आग लग गई है . ।

"पहाड़ अर्रा कर टूट रहे हैं और भारी-भारी चट्टानें लुढक रही हैं। उनके नीचे दब कर असख्य पहाड़ी दानव मर गये हैं। उनकी स्त्रियाँ और पुत्रियाँ क्रन्दन कर उठी हैं। वह भयभीत है क्योकि ऐसा समय उन्होने पहले कभी नही देखा ।

"मिडगार्ड मे रहने वाले मानव भय से मर चुके हैं। अब उनकी आत्माएँ हैला की ओर भीड़ बना कर जा रही हैं। हैला का मार्ग उनकी छायाओं से अँधेरा हो गया है। स्वर्ग मे आग लग गई है उसके विशाल भवनो के ऊँचे-ऊँचे बिल्लौर के खम्भे अर्रा कर टूट रहे है और नीचे गिर कर बिखर जाते है। सोने के बने भवनो मे भीषण आग लग गई है और सब कुछ उसमे जल रहा है। अब बचने की कोई आशा बाकी नही रह गई है ।

"वह लो, नजोर्ड को असगार्ड से भाग आने का फल मिल गया है। उसने तो समझा था कि सुरथुर और सुत्तुङ्ग केवल आशा-देवताओ का ही विनाश करेंगे, पर यह क्या ? सारा वाना-हीम आग की ऊँची लपटो के बीच धू-धू कर जल रहा है। नजोर्ड का सुवर्णमय भवन उसमे जल रहा है। वह देख रहा है पर असहाय है क्योंकि वह आग सुरथुर ने लगाई है और अब बुझाये बुझ नहीं सकती, वाना-देवताओ की सेना अब सुगठित होकर सुरथुर से युद्ध के लिये निकल पड़ी है और आगे-आगे अपनी भारी कुल्हाडी लिये स्वय सेनापति नजोर्ड ही चल रहा है ।

"ऊँची लहरो के थपेड़ो से मृत्यु का जहाज समुद्र के बीच थिरक-थिरक कर आगे बढ रहा है। उसके अन्दर से यात्रियो की प्रतिशोध की हुँकारें उठ रही हैं। मुसपल के पुत्र और जोटन हीम के भीमकाय दानव अपने बन्धन तुडा कर उसमे आ चढे हैं और अब भयानक अट्टहास करते हुए कर्कश स्वरो से गीत गा रहे हैं। गार्म कुत्ता और फनरर भेड़िया भी इसी जहाज पर है। कभी-कभी अपनी विकराल चीत्कार मे जहाज को कँपा देते है।

लोक इस जहाज का चालक है और भारी डॉड़ लेकर वह ही इसे खे रहा है। इस समय वह लोहे के जगलों की ओर जहाज बढ़ाये ले जा रहा है और वहाँ पहुँच कर अपनी और गायमर की चुडैल पत्नी ऐंगरबोडा से सलाह करेगा। तत्पश्चात बडी सेना लेकर देवताओ के विरुद्ध विगरिड के मैदान की ओर जायगा . . ।

"वह देखो, विगरिड के बडे मैदान मे भयकर युद्ध छिड़ गया है। यह अन्तिम युद्ध है। इसके बाद फिर कभी युद्ध न होगा। इसी मे सारी सृष्टि का अन्त हो जायगा। यह युद्ध सभी युद्धो से भिन्न है। ऐसा भयानक युद्ध आज तक कभी नहीं हुआ है। यह सौ मील लम्बे और सौ मील चौडे मैदान मे हो रहा है। खामोश रहने वाले महाबली विडार का जगल भी इस युद्ध-भूमि मे सम्मिलित है और यही वह निश्चित स्थान है जहाँ ओडिन मारा जायगा ।

"एक ओर सुरथुर की दानवी सेना है और दूसरी ओर असगार्ड के देवता हैं। दुष्ट लोक सुरथुर से मिल कर देवताओं पर आक्रमण कर रहा है। उसकी दुष्टता अब पराकाष्ठा को पहुँच चुकी है क्योंकि अब वह बुरी-बुरी गालियाँ भी देवताओं को दे रहा है। उसके मन की बात को सुरथुर भी नहीं जानता। वह देवताओ और सुरथुर दोनो का नाश चाहता है। वह चाहता है कि दोनो ही पक्ष एक दूसरे से लड कर मर जायँ और तब वह स्वय राज्य करे। यही इच्छा ऐंगरबोडा की है. उन दोनों के अतिरिक्त इस बात को और कोई नहीं जानता। परन्तु ऐंगरबोडा अपने दूसरे पति गायमर को भी मरने देना नहीं चाहती। वह चाहती है कि लोक भी रहे और गायमर भी. पर इस बात को उसने लोक से भी नही कहा है। गायमर लोक का अन्त चाहता है और लोक गायमर का। विचित्र परिस्थिति है . ।

"वालहाला मे अस्त्र-शस्त्रों की खडखडाहट होने लगी है। दिव्य प्रकाश से चमकने वाला सुन्दर देवता फ्रे वहाँ से उन सभी वीरों की आत्माओं को साथ लेकर विगरिड की ओर आ रहा है। नित्य की भाँति आज भी वालहाला के पाँच सौ चालीस ऊँचे दरवाजों मे से हजारो योद्धाओ की आत्माएँ सशस्त्र निकल पडी हैं। प्रत्येक द्वार से आठ-आठ हजार सैनिक निकले हैं।

आज वह वही मैदान मे नही लडेंगे, आज रेगनैरोक का दिन है, आज वह विगरिड के मैदान मे सुरथुर के वीभत्स सैनिको से घोर युद्ध करेंगे ।

"वह देखो! पृथ्वी भयकर विस्फोट कर काले धुँए से आकाश को आच्छादित करने लगी है। वीर फ्रे निहत्थे ही काले सुरथुर मे जा भिडा है। कितना विकराल युद्ध हो रहा है? फ्रे ने सुरथुर को पकड़ कर ऊँचा उठा लिया है, कितने अदम्य साहस से वह भर उठा है। सुरथुर की सेना मे हाहाकार मच उठा है। देवताओ ने उसी समय जय घोष से आकाश गुँजा दिया है। अब सुरथुर फ्रे की पकड़ से निकल गया है और अपनी विश्व-विजयी-तलवार उठा कर फ्रे मारी है। फ्रे निडर है। वह हुँकार कर उसे मार डालने को उसकी ओर भाग रहा है। सुरथुर ने उसके पेट मे अपनी तलवार घुसा दी है। आह! फ्रे मर गया। उसके पेट से गर्म-गर्म लाल लहू निकल कर पृथ्वी पर फैल रहा है।

"सुरथुर की सेना ने भीषण जयनाद से शत्रु को डरा दिया है। देवता लोग फ्रे की मृत्यु से उतने ही दुखी हैं जितने अपने प्राणो के भय से। पर यह समय चुप रहने का नही है। चुप रहकर वह बच तो सकते नही हैं फिर लड़ कर ही क्या न आपत्ति का सामना करें तीव्र गति से युद्ध का देवता टायर भयकरता से गरजता हुआ आगे आ गया है।

"वह देखो टायर की तलवार के सामने कोई बाकी नही बचता। कितनी वीरता से वह लड़ रहा है। वह जिस तरफ निकल जाता है उसी तरफ मैदान साफ हो जाता है। अद्भुत है उसका पराक्रम, परन्तु सुरथुर को वह तनिक भी नहीं भाता। उसने गार्म को टायर से युद्ध करने की आज्ञा दी है। भयकर कुत्ता अगारे के समान नेत्रो वाला, झपट कर टायर के ऊपर कूद पडा है। दोनो गुँथ गये हैं – टायर भी भिड गया है और दोनो पृथ्वी पर पडे लुढक रहे हैं। उनकी रगड़ से बिजली निकल रही है। चारो ओर धूल से मैदान भर गया है। उनके पास से अन्य सैनिक डर कर पीछे हट गये हैं। भयानक युद्ध हो रहा है। गार्म प्रबल है परन्तु टायर कम नहीं है। पर गार्म को अब मौका मिल गया है उसने टायर के शरीर को अपने विकराल जबड़े से

पकड़ कर चबा डाला है। टायर असहाय हो गया है परन्तु अन्तिम प्रयत्न से उसने अपनी तलवार उस कुत्ते के हृदय मे घुसा दी है। गार्म विकरालता से भौंकता हुआ गिर पड़ा है और दोनों ही मर गये हैं। नीचे गार्म पड़ा है और उसके ऊपर टायर मरा पड़ा है।

"वह देखो दुष्ट लोक कितनी भयकरता के साथ दिव्य ज्योति से चमकने वाले हीमडल-रति से लड रहा है परन्तु हीमडल के सामने उसकी चल नहीं रही है। वह धोखे से हीमडल को मार डालना चाहता है पर हीमडल सतर्क है। तलवार पर तलवार बज रही है। ढाल पर जब चाट बैठती है तो लोहे की रगड से अग्नि निकलती है जो उन्हें जलाये देती है। इतने समय तक यातना मे रहने से लोक के केश और दाढी-मूँछ बुरी तरह से बढ गये हैं। पर वह बाल नहीं हैं बल्कि सींग उगे हैं। लोक अब पराक्रमी भी पहले से अधिक हो गया है। .. वह लोक झुका और उसने नीचे से बेईमानी करते हुए हीमडल पर भाला चलाया पर वाह रे हीमडल! क्या पैतरा बदल कर उस वार को बचाया है। आर लो हीमडल ने उसका सिर एक ही तलवार के हाथ से उड़ा दिया है। लोक मर गया पर वह मर कर भी हीमडल को ले मरा, उसका सिर कट कर बडी जार से हीमडल के शरीर से टकराया और तब उसके कठोर सीग हीमडल के शरीर मे घुस गये जिससे वह भी मर गया। नीचे लोक की निमुडी देह पडी है और ऊपर हीमडल रति मरा हुआ पड़ा है पर अब भी वह दिव्य ज्योति से चमक रहा है।

"लोक की मृत्यु से सर्वत्र आनन्द फैल गया है। हैला मे अब कोई डर नही रह गया। माईमर के सातो पुत्र खुशियाँ मना कर मीठी शराब पी रहे हैं। उनके शरीर पर इस समय भी दिव्य वस्त्र और लम्बी लम्बी भारी तलवारें लटक रही हैं। ऐंगरबोडा उसकी मृत्यु से दुखी होकर रो रही है। उसके मन की बात पूरी न हो सकी है अब गायमर के साथ साथ वह एक और पति की तलाश में है, क्योंकि वह बुरी स्त्री है और एक पति से तुष्ट नहीं होती, गायमर तो है पर लोक के रिक्त स्थान को वह शीघ्र ही पूरा करना चाह रही है। ओडिन खुश है, थॉर खुश है, फ्रेजा खुश है और फ्रिग भी खुश है क्योंकि दुष्ट लोक अब मर गया है।

आज वह वही मैदान मे नही लड़ेंगे, आज रेगन्
वह विगरिड के मैदान मे सुरथुर के वीभत्स सैनिकों

"वह देखो! पृथ्वी भयकर विस्फोट कर काले धुँए
दित करने लगी है। वीर फ्रे निहत्थे ही काले सु
कितना विकराल युद्ध हो रहा है? फ्रे ने सुरथुर
उठा लिया है, कितने अदम्य साहस से वह भर उठा
हाहाकार मच उठा है। देवताओ ने उसी समय जय घोष
है। अब सुरथुर फ्रे की पकड़ से निकल गया ह
विजयी-तलवार उठा कर फ्रे मारी है। फ्रे नि
कर उसे मार डालने को उसकी ओर भाग रहा है। सुर
अपनी तलवार घुसा दी है। आह! फ्रे मर गया।
गर्म लाल लहू निकल कर पृथ्वी पर फैल रहा है।

"सुरथुर की सेना ने भीषण जयनाद से शत्रु को डरा
लोग फ्रे की मृत्यु से उतने ही दुखी हैं जितने अपने प्राण
यह समय चुप रहने का नही है। चुप रहकर वह बच तो
लड़ कर ही क्या न आपत्ति का सामना करें तीव्र
देवता टायर भयकरता से गरजता हुआ आगे आ गया है।

"वह देखो टायर की तलवार के सामने कोई बाकी नहीं
वीरता से वह लड रहा है। वह जिस तरफ निकल जाता है
साफ हो जाता है। अद्भुत है उसका पराक्रम, परन्तु सुरथु
भी नहीं भाता। उसने गार्म को टायर से युद्ध करने की आज्ञा
कुत्ता अगारे के समान नेत्रो वाला, झपट कर टायर के ऊ
दोनो गुँथ गये हैं—टायर भी भिड गया है और दोनो पृ
रहे हैं। उनकी रगड़ मे बिजली निकल रही है। चारो ओ
भर गया है। उनके पास से अन्य सैनिक डर कर पीछे हट
युद्ध हो रहा है। गार्म प्रबल है परन्तु टायर कम नहीं है
अब मौका मिल गया है उसने टायर के शरीर को अपने

वह अर्ध चेतनावस्था मे ढीला पड़ गया है। घोर युद्ध हो रहा है। कभी साँप लिपटता है तो कभी ढीला पड जाता है। आकाश में थौर की प्रत्येक मार पर विजलियाँ कडकती हैं। युद्ध करते दोनों ही नहीं थकते। कई दिन उन्हे लडते हो गये हैं परन्तु अभी जीत हार नहीं हुआ है। थौर क्रुद्ध है, साँप भी घायल है और विष उगल रहा है.. .. ..

"पर थौर विजलियो का पराक्रमी देवता है, वह देखो उसने साँप को अपने पैरों के नीचे दबा लिया है। अब वह हिल-डुल भी नहीं सकता। थौर घुमा-घुमाकर मजालनर से प्रहार कर रहा है। एक दो, तीन .. और फिर अनगिनती बार उसने उसे उस हथोडे से मारा है। चोट बहुत करारी लगी है। मिडगार्ड का साँप अब कभी नहीं हिले डुलेगा। उसकी हड्डियाँ टूट गई हैं अब वह मरने वाला है। थौर खुश है। वह अब उन्मत्त होकर नाचने लग गया है वह विजयी हुआ है और अब सारे ससार मे उसकी ख्याति शीघ्र फैल जायगी क्योंकि उसने उस भयकर साँप को मार डाला है। विजय के उल्लास में थौर ने भयानक गर्जना की है। और वह सुनो! आसमान में बादल गड़गड़ाने लग गये हैं और विजलियाँ पूरे क्षितिज में चमक रही हैं थौर जीत गया है ...

"परन्तु मरते हुये उस दुष्ट साँप ने थौर से बदला ले लिया है। उसने आखिरी बार सारा बल एकत्रित करके विष की काली भाप अपने मुख से थौर के ऊपर छोड दी है। इतनी विषैली भाप कि थौर हकबका गया और नौ कदम पीछे हट कर उससे बचने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु विष तो अपना काम कर गुजरा है। उसकी नाकों से होकर वह उसके सिर और शरीर में व्याप्त हो गया है। थौर अब नशे में झूम रहा है। मजौल-नर उसके हाथ से नीचे गिर गया है। वह गिरा! अब थौर गिर गया वह मर गया है। नीचे मिडगार्ड का साँप मरा पडा है और ऊपर थौर का शरीर पडा है। . .

'महाबली थौर मर गया है। आसमान मे सहस्त्रों विजलियों ने एक साथ मिल कर विस्फोट किया है जिसकी रोर से पहाड हिलहिल कर गिर गये

"समुद्र की अतल गहराई से, विष की नदियाँ बहाता हुआ मिडगार्ड का साँप बाहर आ गया है। अब उसके मुँह में उसकी पूँछ नहीं है। कितना भयकर और भीमकाय है वह कि उसे देख कर ही देवता और दानव काँपने लग गये हैं। उसकी विकराल डाँडो से हलाहल विष नीचे गिर रहा है जिससे नदी बह उठी है। उसके मुँह से विष से भरी हुई काली भाप भी बडी जोरो से निकल कर चारो तरफ छा रही है। गिलगिले शरीर वाला वह जगह-जगह विष और कीचड से सना हुआ है। उसके सामने जाना मृत्यु के जबडो मे जाना है। उसे देखकर सभी भाग रहे हैं और वह फुँफकार मारता बढा चला आ रहा है। आज के दिन के लिये वह इतने लम्बे समय से उत्कट प्रतीक्षा कर रहा था। अब विनाश की उस घडी मे वह ध्वस करने चला आ रहा है। उसका पिता लोक अभी-अभी मर चुका है और वह क्रुद्ध होकर उसका बदला देवताओ को मारकर लेना चाहता है।

"वह देखो वज्र कडकने लगा है! आकाश और पृथ्वी काँप गई है। वह कौन प्रचण्ड योद्धा मिडगार्ड के साँप की ओर छाती फुलाये जा रहा है। निश्चय ही वह बिजलियो का राजा है क्योकि वह देखो उसके बाँये कधे पर मजोलनर चमचमा रहा है। उन्मत्त सिंह के समान वह कितना निडर होकर प्रहार करने को उतावला हो रहा है। उसने अपनी कमर की पेटी कस ली है जिससे अब उसकी शक्ति कई गुनी हो गई है और हाथो मे मोटे लोहे के दस्ताने पहने वह अब अपने भारी हथौडे मजौलनर को घुमाने लग गया है।

"उफ क्या तेजी से दाडकर मिडगार्ड के साँप पर हमला बोल दिया है वह देखो मजोलनर उठा और बिजली की तेजी से मिडगार्ड के साँप के सिर पर लगा मिडगार्ड का साँप उस भयकर चोट से विचलित हो उठा है। लहू-लुहान होकर वह क्रोध से फुँफकार रहा है परन्तु अभी मरा नहीं है। उसने थार के शरीर को लपेट लिया है और अब वह उसे दबा रहा है। थार घुट रहा है शायद अब मर जाय परन्तु नहीं वह भी अदम्य साहस वाला है। उसने मजोलनर से इतना भीषण प्रहार साँप के फन पर किया है कि

वह अर्ध चेतनावस्था मे ढीला पड़ गया है। घोर युद्ध हो रहा है। कभी सॉप लिपटता है तो कभी ढीला पड जाता है। आकाश मे थौर की प्रत्येक ार पर बिजलियॉ कडकती हैं। युद्ध करते दोनो ही नहीं थकते। कई दिन न्हे लडते हो गये हैं परन्तु अभी जीत हार नही हुआ है। थौर क्रुद्ध , सॉप भी घायल है और विष उगल रहा है . . ..

"पर थोर बिजलियो का पराक्रमी देवता है, वह देखो उसने सॉप को अपने पैरो के नीचे दबा लिया है। अब वह हिल-डुल भी नही सकता। थौर ,मा-घुमाकर मजौलनर से प्रहार कर रहा है। एक दो, तीन आर फिर अनगिनती बार उसने उसे उस हथोडे से मारा है। चोट बहुत करारी लगी । मिडगार्ड का सॉप अब कभो नहीं हिले डुलेगा। उसकी हड्डियॉ टूट गई अब वह मरने वाला है। थार खुश है। वह अब उन्मत्त होकर नाचने ाग गया है वह विजयी हुआ है ओर अब सारे ससार मे उसकी ख्याति शीघ्र ैल जायगी क्योकि उसने उस भयकर सॉप को मार डाला है। विजय के ल्लास में थौर ने भयानक गर्जना की है। और वह सुनो! आसमान मे ादल गड़गड़ाने लग गये हैं और बिजलियॉ पूरे क्षितिज में चमक रही हैं ौर जीत गया है ...

"परन्तु मरते हुये उस दुष्ट सॉप ने थौर से बदला ले लिया है। उसने आखिरी बार सारा बल एकत्रित करके विष की काली भाप अपने मुख से थौर के ऊपर छोड दी है। इतनी विषैली भाप कि थौर हकबका गया और नौ कदम पीछे हट कर उससे बचने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु विष ो अपना काम कर गुजरा है। उसकी नाकों से होकर वह उसके सिर और शरीर मे व्याप्त हो गया है। थौर अब नशे मे झूम रहा है। मजौल-र उसके हाथ से नीचे गिर गया है। वह गिरा! अब थोर गिर गया वह र गया है। नीचे मिडगार्ड का सॉप मरा पडा है ओर ऊपर थौर का ारीर पडा है। . .

"महाबली थौर मर गया है। आसमान मे सहस्रो बिजलियो ने एक ाथ मिल कर विस्फोट किया है जिसकी रोर से पहाड़ हिलहिल कर गिर गये

"समुद्र की अतल गहराई से, विष की नदियाँ बहाता हुआ मिडगार्ड का साँप बाहर आ गया है। अब उसके मुँह मे उसको पूँछ नही है। कितना भयकर और भीमकाय है वह कि उसे देख कर ही देवता और दानव काँपने लग गये हैं। उसकी विकराल डाँडो से हलाहल विष नीचे गिर रहा है जिससे नदी बह उठी है। उसके मुँह से विष से भरी हुई काली भाप भी बडी जोरो से निकल कर चारो तरफ छा रही है। गिलबिले शरीर वाला वह जगह-जगह विष और कीचड से सना हुआ है। उसके सामने जाना मृत्यु के जबडो मे जाना है। उसे देखकर सभी भाग रहे हैं और वह फुँफकार मारता बढा चला आ रहा है। आज के दिन के लिये वह इतने लम्बे समय से उत्कट प्रतीक्षा कर रहा था। अब विनाश की उस घडी मे वह ध्वस करने चला आ रहा है। उसका पिता लोक अभी-अभी मर चुका है और वह क्रुद्ध होकर उसका बदला देवताओ को मारकर लेना चाहता है।

"वह देखो वज्र कड़कने लगा है। आकाश और पृथ्वी काँप गई हैं। वह कौन प्रचण्ड योद्धा मिडगार्ड के साँप की ओर छाती फुलाये जा रहा है। निश्चय ही वह बिजलियो का राजा है क्योकि वह देखो उसके बाँये कधे पर मजोल्नर चमचमा रहा है। उन्मत्त सिंह के समान वह कितना निडर होकर प्रहार करने को उतावला हो रहा है। उसने अपनी कमर की पेटी कस ली है जिससे अब उसकी शक्ति कई गुनी हो गई है और हाथो मे मोटे लोहे के दस्ताने पहने वह अब अपने भारी हथौडे मजोल्नर को घुमाने लग गया है।

"उफ क्या तेजी से दौडकर मिडगार्ड के साँप पर हमला बोल दिया है वह देखो मजोलनर उठा और बिजली की तेजी से मिडगार्ड के साँप के सिर पर लगा मिडगार्ड का साँप उस भयकर चोट से विचलित हो उठा है। लहू-लुहान होकर वह क्रोध से फुँफकार रहा है परन्तु अभी मरा नहीं है। उसने थार के शरीर को लपेट लिया है और अब वह उसे दबा रहा है। थार घुट रहा है शायद अब मर जाय परन्तु नहीं वह भी अदम्य साहस वाला है। उसने मजोलनर से इतना भीषण प्रहार साँप के फन पर किया है कि

वह अर्ध चेतनावस्था मे ढीला पड़ गया है। घोर युद्ध हो रहा है। कभी सॉप लिपटता है तो कभी ढीला पड जाता है। आकाश में थौर की प्रत्येक मार पर बिजलियॉ कडकतो हैं। युद्ध करते दोनो ही नहीं थकते। कई दिन उन्हे लडते हो गये हैं परन्तु अभी जीत हार नहीं हुआ है। थौर क्रुद्ध है, सॉप भी घायल है और विष उगल रहा है . . .. ..

"पर थोर बिजलियो का पराक्रमी देवता है, वह देखो उसने सॉप को अपने पैरों के नीचे दबा लिया है। अब वह हिल-डुल भी नहीं सक्ता। थौर घुमा-घुमाकर मजोलनर से प्रहार कर रहा है। एक. दो, तीन . आर फिर अनगिनती बार उसने उसे उस हथौडे से मारा है। चोट बहुत करारी लगी है। मिडगार्ड का सॉप अब कभी नहीं हिले डुलेगा। उसको हड्डियॉ टूट गई हें अब वह मरने वाला है। थार खुश है। वह अब उन्मत्त होकर नाचने लग गया है वह विजयी हुआ है और अब सारे ससार मे उसकी ख्याति शीघ्र फैल जायगी क्योंकि उसने उस भयकर सॉप को मार डाला है। विजय के उल्लास में थॉर ने भयानक गर्जना की है। और वह सुनो! आसमान में बादल गडगड़ाने लग गये हैं और बिजलियॉ पूरे क्षितिज में चमक रही हैं थोर जीत गया है ...

"परन्तु मरते हुये उस दुष्ट सॉप ने थौर से बदला ले लिया है। उसने आखिरी बार सारा बल एकत्रित करके विष की काली भाप अपने मुख मे थौर के ऊपर छोड दी है। इतनी विषैली भाप कि थौर हकबका गया और नौ कदम पीछे हट कर उससे बचने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु विष तो अपना काम कर गुजरा है। उसकी नाकों से होकर वह उसके सिर और शरीर मे व्याप्त हो गया है। थौर अब नशे मे झूम रहा है। मजौलनर उसके हाथ से नीचे गिर गया है। वह गिरा! अब थौर गिर गया वह मर गया है। नीचे मिडगार्ड का सॉप मरा पडा है और ऊपर थोर का शरीर पडा है।.. .. .

"महाबली थौर मर गया है। आसमान में सहस्रों बिजलियो ने एक साथ मिल कर विस्फोट किया है जिसकी रोर से पहाड़ हिलहिल कर गिर गये

हैं, समुद्र थपेड़े ले उठा है। सारी पृथ्वी पर आसमान से अग्नि और गर्म-गर्म राख गिर रही है क्योंकि बिजलियाँ जल गई हैं। उनका स्वामी थोर जो मारा गया है।"

बाला का गाना चल रहा था। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। ओडिन तन्मय होकर आने वाले युद्ध का पूरा वृतांत सुन रहा था। उसने एक बार आँख उठाकर असगार्ड के पूर्वी भाग में खड़े थोर के विशाल महल की ओर देखा। महल चमचमा रहा था। उसकी ठोस चाँदी की छत झिलमिला रही थी। पाँच सौ चालीस बड़े कमरों वाला वह महल इस समय विचित्र प्रकाशों से युक्त था। ओडिन ने सोचा निश्चय ही वह इस समय विलास क्रीड़ा कर रहा होगा — उसे क्या मालूम कि उसका अंत कितना भयंकर होने वाला है।

बाला ने गाया :

"अब असगार्ड का राजा युद्ध के बीच आ रहा है। कितना विराट् और महान वह इस समय लग रहा है। उसकी प्रत्येक चाल ढाल से वह राजाओं का राजा मालूम होता है। वह कितना निडर और वीर है जो सब कुछ जानते हुए भी शांत है। अपनी मृत्यु निश्चित जानकर भी वह विचलित नहीं होता। अपने विचित्र आठ पैरों के घोड़े स्लीपनर पर चढ़ा हुआ इस समय वह दीप्ति और तेज से चमक रहा है। भयानक अस्त्र-शस्त्रों से वह सुसज्जित है और उसके दाहिने हाथ में गगनर भाला है जो किसी समय मित्रों ने उसे बनाकर भेंट दिया था। उसके सिर पर सुवर्ण का मुकुट चमचमा रहा है और उसके रंग-बिरंगे वस्त्रों का पिछला भाग हवा में उड़ रहा है। नीले रंग से रंगी हुई उसके घोड़े की लटकती हुई झूल हवा में फरफरा रही है।

"और वह, उसके सामने ही आकर उसका परम शत्रु फनरर भेड़िया खड़ा हो गया है। इतने वर्षों तक बँधे रहने से वह बहुत ही भयानक और विकराल हो गया है। आकाश के बराबर वह ऊँचा है और पहाड़ के समान भीमकाय है। वह खूँखार है और किसी से नहीं डरता। उसने अपना जबड़ा पृथ्वी से आकाश तक खोल दिया है और अब वह ओडिन पर झपटने वाला

है। उसके क्रोधोन्मत्त नेत्रों से और नथुनों से भयकर आग की लपटे निकल रही हैं। ओडिन स्लीपनर पर बैठा अपराजित लग रहा है। वह आज विलक्षण शोभा को प्राप्त होकर फनरर की हत्या करने को लालायित हो उठा है।
वह देखो स्लीपनर आगे के पैरों से फनरर पर प्रहार कर रहा है और उसी समय ओडिन ने ताक कर गंगनर से भेडिये की आँख पर हमला किया है। भाला फनरर के लग गया है और उसके शरीर मे घुस गया है। वह लहूलुहान होकर क्रोध से हुँकार कर, वह देखो ओडिन पर कूद पड़ा।

"फनरर ने ओडिन को स्लीपनर सहित अपने मृत्यु के जबड़े में लेकर चबा डाला और निगल गया है। अब ओडिन का अस्तित्व ही नष्ट हो गया। असगार्ड का राजा अब मर गया है। चारों ओर उसके मारे जाने से हाहाकार मच गया है पर दानवों और सुरथुर के दल में प्रसन्नता की लहर छा गई है। काले दानवों ने भयकर हुँकारो से आकाश को गुँजा दिया है। फनरर गर्व से फूला नहीं समाता क्योंकि उसने अपना काम पूरा कर दिखाया है। ओडिन के खून से अब भी उसका मुँह लाल हो रहा है जिसे वह अपनी विशाल जीभ से बार-बार चाटकर साफ कर रहा है। वह प्रफुल्लित है क्योंकि ओडिन को खाते ही उसकी माँ ऐंगरबोडा ने आकर उसे थपकी देकर प्यार किया है और सुरथुर और उसके वीर पुत्र सुत्तुङ्ग ने उसके शरीर पर हाथ फेर कर उसे शाबाशी दी है और गंगनर भाले को खींच कर बाहर निकाला है। घाव मे उसके पीडा अवश्य है पर अपनी जीत की खुशी मे वह उसे बिल्कुल ही भूला हुआ है।

"वह कौन है जो गभीरतापूर्वक धीमे पर दृढ़ कदमों से आगे बढ़ रहा है। वह बिल्कुल भी तो नहीं बोल रहा है परन्तु उसे देखने मे प्रत्यक्ष मृत्यु का सा आभास होता है! कितनी कठोर है उसकी भुजाएँ! .. ..

"अब उस पर दिव्य प्रकाश छा रहा है वह सदा चुप रहने वाला वीडार है जो अब तक जगलों में छिपा रहता था। वह आज ही के दिन के लिए अब तक जीवित है वह ओडिन का बदला लेने के लिए बढा चला जा रहा है। लो वह फनरर पर टूट बैठा है पर फनरर भी कम नहीं है

उसने अपने विकराल जबडे मे उसे ओडिन की भॉति पकड़ने के लिये मुँह खोल दिया है पर यह तो वीडार है जो थोर से भी बल मे कही अधिक है। अपने लोहे के जूतो को पहिने उसने अपना मजबूत पैर उसके जबडे पर रख दिया है। कितना बलवान है वह कि अब फनरर से हिला-डुला भी नहीं जाता। अब बीडार ने हाथों से फनरर का तालू पकड़कर ऊपर को खीचा है भयानक चरचराहट का शब्द आने लगा है जैसे सूखी लकडी टूट रही है जैसे वृक्ष टूट-टूटकर गिर रहे हैं—लो बीडार ने उसका जबडा फाड डाला है भेड़िया मर कर लुढक गया है और बीडार उसके गर्म लहू से नहा गया है। तडफडाते भेडिये के हृदय मे उसने अपना भाला मूँट तक घुसा दिया है। देवता दानव सभी स्तब्ध हैं। भयानक युद्ध देखकर सभी के रोंगटे खड़े हो गये हें। बीडार ने विजय की दहाड से युद्ध स्थल कँपा दिया है। उसने अपने पिता ओडिन का बदला ले लिया है।

'वालहाला की पवित्र और शूरवीर आत्माएँ चारो ओर युद्ध भूमि मे छितरी फैली हें ओर जगह-जगह भयानक युद्ध कर रही हें। दानवो के झुड के झुड काट डाले गये हें ओर इनकी लाशो से युद्ध भूमि पटी हुई है। सब तरफ रक्त ही रक्त दिखाई दे रहा है। काला अजदहा निडहोग अपने भयानक काले परो को फटफटा कर युद्ध भूमि पर मॅडरा रहा है। वह लोथो को पकड पकडकर निगल रहा है। उसने इतनी लाशें खा ली हैं पर अभी तक वह भूखा ही है और चिल्ला रहा है। उसकी चिल्लाहट से कर्कश शब्द ऊँचा उठकर सभी को डरा रहा है। वह बीच बीच मे खून भी पीता जाता है। सुरथुर जीवित है . वह काला दानव भयकरता से गरज रहा है।

"स्वर्ग का नाश हो चुका है। सुन्दर इमारतो की जगह अब खडहरो को ढ़ह पडे हें। हवा सॉय-सॉय चल रही है और थोर का चॉदी की छत वाला विशाल महल धराशायी हो गया है। दुष्ट सुरथुर के दानवो ने उसे जला डाला है। चारो ओर धू-धू करके अग्नि जल रही है। राख के ढेर के ढेर स्थान-स्थान पर पड़े हें। भयकर भेड़िया स्काल तीव्र गति से भागता हुआ सूर्य के बहुत पास जा पहुँचा है—वहाँ उसने अपना भयानक जबड़ा खोला और

सूरज को निगल गया है। सर्वत्र अंधकार छा गया है। हाथी-माना-गार्म ने लपककर चाँद को खा लिया है। अब न दिन है न रात है। अंधेरा-ही-अंधेरा फैला हुआ है। आकाश में चमकने वाले तारे भी अब नहीं चमक-ते क्योंकि सुरथुर ने उनका भी अन्त कर दिया है। स्वर्ग और पृथ्वी खून की भाँति लाल हो उठी है और देवताओं के ऊँचे सिंहासन टूट-टूट कर बिखर गये हैं। उनका प्रत्येक टूटा हुआ भाग खून से सन रहा है और ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्हें किसी ने खून के सरोवर में डुबाकर वहाँ रख दिया हो।

"वह सुरथुर सृष्टि का ही अन्त करने लगा है—उसने अपनी धधकती ज्वालाओं से सब कुछ भस्म कर दिया है। जो आसा-देवता अब तक बचे हुए हैं उन्हें वह अब भस्मीभूत किये दे रहा है। वह अत्यन्त निर्दयी है और विनाश करते दुखी नहीं होता। मिडगार्ड भी असगार्ड की भाँति भस्म हो चुका है। काला धुआँ घुमड-घुमडकर पहाडों की ऊँची चोटियों से भी ऊँचा आकाश की ओर उठ रहा है। सभी कुछ जल चुका है। कहीं जीवन नहीं बचा है—सभी जीव जन्तु, पशु-पक्षी, मानव-दानव, बौने और देवता मर चुके हैं अब कहीं कुछ भी नहीं है भयकर समय है... ।

"असगार्ड धू-धूकर जल रहा है। अरां कर उसके सुन्दर भवन गिर रहे हैं। आग की भयानक लपटों ने पृथ्वी के कल्पवृक्ष यागड्रैसिल के तने को घेर लिया है, पृथ्वी जल जाने से काली हो गई है और अब उसे महासमुद्र ने अपने गर्भ मे छिपा लिया है। उसकी भीम लहरों ने सब कुछ अपने अन्दर समेट लिया है ... ।

"केवल थोडे से व्यक्तियों पर ही इस प्रलय का कोई असर नहीं हुआ है उन्हें सुरथुर की भयानक आग भी नहीं जला सकी है। ओडिन और फ्रन्डा का पुत्र वेल और वीडार, और थौर के पुत्र मोदी और माग्नी बस यह ही चार अमर हैं, इन पर किसी का वश नहीं है—यह जीवित हैं और अब भी उनका पराक्रम नहीं घटा है। परन्तु वे इस समय अपना शौर्य नहीं दिखला रहे हैं। वह खामोश हैं.. ।

"अब सर्वत्र सन्नाटा छा गया है। सभी कुछ खत्म हो चुका है। न अब जीवन है न प्राणी, न पृथ्वी है और न स्वर्ग, बस जल ही जल चारो ओर हेलोरे ले रहा है—सर्वत्र घनघोर अधकार छा गया है। रेग्नैरौक आ गया है—देवताओ का, सृष्टि का नाश हो गया है। केवल जल है, सन्नाटा है और गहनतम अधकार है।

"लोहे के वन की चुडैल ऐंगरबोडा भी अब नही रही है क्योंकि सृष्टि के साथ अच्छाइयो के साथ ही बुराइयो का भी नाश हो चुका है ।

"परन्तु हैला अछूती है। देवताओ के रैग्नैरौक का वहाँ कोई असर नही हुआ है ।"

× × ×

बुलबुल चहकते चहकते जब थक जाती है तो चुप हो जाती है। बाला गाते गाते थक गई थी। अब वह चुप हो गई थी। अब ओडिन अपने स्थान से हटकर अपने महलो मे चला गया था। वह अपने ऊँचे सोने के सिहासन पर चढा और उसने नौओ दुनियाओ का वहाँ से निरीक्षण किया। उसने देखा, नीचे की दुनिया से भी नीचे गहरी घाटियो के बीच बैठा हुआ भयकर सुरथुर अपना छूरा पहाड की बड़ी चट्टान पर घिसकर तेज कर रहा है। वह उसे देख कर डरा नही बल्कि खुश हुआ कि किस प्रकार वह आने वाले युद्ध के प्रति सतर्क है। भोर होने मे अभी थोडी देर बाकी है, उसकी प्रथम किरण क्षितिज के उस पार फटकर अपनी लालिमा से पृथ्वी को ढँक देना चाहती है। प्रभजन हरहरा कर झूम रहा है ओडिन के लम्बे बाल उड रहे हैं। वह विभोर होकर बैठा है। उस मनोरम वेला मे मालती कुञ्ज पर बुलबुल फिर चहक उठी है। अभी वह थकी नहीं है और उसका स्वर मधुर है। उसी समय पतले और सुरीले स्वर से आकाश मे अधर मे लटकी, उस बाला ने अपना गाना प्रारम्भ किया। मधुर स्वर लहरियाँ समीरण के साथ चारो ओर फैलने लगी— ओडिन तन्मय होकर सुनने लगा।

बाला ने गाया

"प्रलय हो चुका है। उसमे सब कुछ स्वाहा हो गया है। कुछ कुछ नहीं बचा है।

खम्भो पर हीरे-मोती चमक रहे हैं और स्थान-स्थान पर अगाध धन सपत्ति भर दी गई है। ऊँचे सोने के सिहासन पर बाल्डर आकर बैठेगा क्योंकि वही नया राजा होगा।

"देवता आ रहे हैं। उनके दिव्य शरीरो से प्रकाश निकल रहा है। वे अत्यन्त सुन्दर हे और दिव्य वस्त्रो से आच्छादित हैं। उनके अस्त्र-शस्त्र उन्हीं की ज्योति से चमक रहे हैं। आगे-आगे सुन्दर बाल्डर है--वही जा सारे विश्व का प्यारा है वही असगार्ड का नया राजा बनेगा। ओडिन की जगह उसी के राज्य का झडा सभी जगह फहराया जायगा। इसी दिन के लिये उसने हैला मे रहकर प्रतीक्षा की थी। उसका शरीर पहले से भी अधिक सुन्दर है और वह अपने चाँदी के घोड पर सवार है। उसके साथ उसका भाई होडुर है परन्तु अब वह अधा नही है। ओडिन और रून्ड का पुत्र वेल भी साथ है और ओडिन का खामोश रहने वाला पुत्र वीडार अब भी चुपचाप चल रहा है। उसने फनरर को मारकर अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया था। थोर के पुत्र मोदी और मैग्नी अपने पिता के भारी हथौड मजौलनर को उठाये चल रहे हे। होनर सबके मध्य मे है और भविष्य मे होने वाली बातें कहता जा रहा है। वह अच्छा नजूमी है और सभी बातो का उसे पूरा ज्ञान है। राजा बाल्डर के गुणों का और उज्जवल भविष्य का वह गुण गान भी करता चल रहा है। बाल्डर सुन-सुनकर खुश हो रहा है क्योंकि उसे अपनी प्रशसा बहुत ही प्रिय है। होनर जानता है कि राजा को प्रसन्न रखने से ही उसकी भलाई हो सकती है।

" प्राची समय मे आई हुई मुसीबता और उस समय के दुष्टो के बारे मे देवता लोग आपस मे बातें कर रहे हैं। कितना भयानक समय था वह जब ऐंगरबोटा की सतानो ने पृथ्वी पर आतक फैला रखा था। कितना भयकर था वह मिडगार्ड का साँप और उसका भाई फनरर भेड़िया! वीडार अब भी खमोश हे और फनरर को मार कर भी एक शब्द उसके बारे मे या अपनी प्रशसा मे नहीं कहता। बाल्डर उसकी वीरता से खुश है। राजा के

"पहले प्रचलित न्यायो को देवता लोग भूले नहीं हैं। उन्हें पुरानी सभी बातें याद हैं। पिछले रहस्यो को कह कर वह आपस में धीमे-धीमे बाते कर रहे हैं। ओडिन के द्वारा मन्त्रों और जादू-टोनो का भी उन्हें पूरा ध्यान है। वह उनके गुणो को जानते हैं और उनकी इज्जत करते हैं। . सामने ही हरी घास पर सोने के तावीज पडे हैं जिनसे "स्वर्ण-काल मे किसी समय देवताओं ने आपस मे खेल-खेले थे। उन्हें वाल्डर ने उठा लिया है। देवता लोग उन्हे पाकर बहुत खुश हैं। असगार्ड मे इस समय सुख ही सुख है और चहुँ ओर आनन्द वह रहा है क्योंकि अभी उसमें दूषित भावनाये फैलाने वाली चुडैले उत्पन्न नहीं हुई हैं. ......।

"पृथ्वी वसुन्धरा बन कर लहलहा रही है. खेतों मे बिना बोये ही स्वतः फसले खडी हैं। दुष्टता और पाप कहीं दिखाई नहीं देता। वह देखो ! वाल्डर अपने भाई होडुर के साथ अपने विशाल महल मे चला गया है। पहिले यहाँ ओडिन के पवित्र महल थे। अब वह यहीं रहेगा और यहीं से सारी दुनियाँ पर राज्य करेगा ।

"आकाश मे बादलों से अच्छादित स्वर्णिम स्थान में हवाओं के थपेडे खाते हुए दोनो भाईयो के पुत्र क्रीडा कर रहे हैं। उन पर दिव्य प्रकाश जगमगा रहा है। वायु मधुर सगीतो से कपित है। समीरण बह रहा है. ...सूर्य्य के रथ पर अब उसकी पुत्री सोल आरूढ होकर नीले स्वर्ग को अपनी किरणो से आलोकित कर रही है। पर्वतों पर हिम पिघल रहा है। उन पर किरणे पड कर फूट-फूट कर रग-बिरगे रगों से जगमगा रही हैं। थिरकते जल पर किरणे थिरक रही हैं। सौल अपने पिता से कहीं अधिक ज्योतिर्मयी है . . ।

"माईमर के पुराने साम्राज्य से लिफ और लिफथरेजर अपने कुटुम्बियों और वशजों सहित मिडगार्ड मे आकर बस गये हैं। वह पवित्र हैं। उनके शरीर और मन पवित्र हैं। पाप से तनिक भी वह कलुषित नहीं हैं। उनका भोजन शहद के समान मीठा और पवित्र हैं। यही हैं वह जिनकी सतानो से पृथ्वी फिर भर जायेगी—सृष्टि के इस नये प्रभात मे उनका आगमन अत्यन्त शोभनीय है ।

दो भाई

डेनमार्क में, बहुत पहिले समय की बात है, दो भाई रहते थे। एक भाई बहुत धनवान था और दूसरा उतना ही दरिद्र था। छोटा भाई जो गरीब था बेचारा कई-कई दिन भूखा रहता था जब कि उसका बड़ा भाई अच्छे-अच्छे पकवान और मांसों को खाकर झुँझला जाता था और उन्हें फिकवा देता था। फेंके हुए उन स्वादिष्ट मांस के टुकड़ों पर कुत्ते झपटते थे। छोटा भाई भी निगाह बचा कर कुत्तों के साथ साथ उन टुकड़ों को ले आता था और उनसे अपनी और अपनी स्त्री की भूख मिटाया करता था।

क्रिसमस की पहली शाम वह देर तक बड़े भाई की भव्य अट्टालिका के पीछे छिप कर इसलिये बैठा था कि जब बचा हुआ भोजन फेंका जायगा तो वह उसे बीन कर अपने कुटुंब का काम चलायेगा, पर दुर्भाग्यवश उस दिन कोई भोजन नहीं फेंका गया। वह बहुत निराश हुआ और तब साहस बटोर कर बड़े भाई के सामने जाकर खड़ा हुआ जो उस समय आराम से लेटा हुआ तली हुई सुगंधित मछलियाँ खा रहा था। उसको देख कर वह प्रसन्न नहीं हुआ क्योंकि वह गंदा था और देखने में ही घृणित मालूम होता था। छोटे भाई ने आह भर कर उससे कहा

"परमात्मा के नाम पर मुझे कुछ खाने को दो क्योंकि मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं और मेरी स्त्री भूखों मर रहे हैं।" यह कह कर अशक्त होने के कारण वह वहीं पृथ्वी पर लोट गया। आई हुई बला को टालने के लिए बड़ा भाई उठा और युक्तिपूर्वक उससे बोला

"तेरे कहे अनुसार मैं तुझे सूअर का अच्छा, नमक लगा हुआ गोश्त देने को तैयार हूँ परन्तु शर्त यह है कि तू भी मेरा कहा करे।" और उसने उसकी ओर उत्तर की प्रतीक्षा में टेढ़ी निगाहों से देखा। यह सुन कर वह भूखा आदमी जो भोजन पाने के लिए तड़प रहा था उसे हर तरह की शर्त मंजूर थी, बोला

"मैं तुम्हारी हर शर्त पूरी करने को तैयार हूँ पहले तुम मुझे कुछ भी खाने को दे दो जिससे मेरे निकलते प्राण तो ठहर जायँ ...।"

बड़ा भाई भी चतुर था। उसने फौरन संदूक खोला और उसमें से सुखाया और नमक लगा हुआ सूअर का गोश्त निकाल कर उसे दे दिया और जब देखा कि भोजन देखकर अब वह खा जाने के लिये बुरी तरह छटपटा रहा है तभी वह बोला :

"इसे अभी तू न खा सकेगा क्योंकि मेरी शर्त के अनुसार पहले इसे लेकर तू नरक को जा। वहाँ से लौटकर जब तू आ जाय तभी इसे खाना।"

यह कहकर उसने उसे अपने घर से निकाल दिया। अब वह गरीब आदमी बेचारा वचन पूरा करने के लिये अनजान मार्गों से होता हुआ नरक की ओर चलने लगा परन्तु वह वहाँ का मार्ग न जानने के कारण जटिल मार्गों मे भटकाता हुआ अँधेरे मे दिशा का ज्ञान भी भूल गया। अब वह घनघोर अधकार पूर्ण अनजान मार्गों मे घबरा कर ठोकरें खाता हुआ आगे बढ़ा। वह निराशा से पूर्ण होकर मृत्यु को अपने बहुत ही निकट अनुभव करने लग गया था। उसी समय उसे सुदूर दक्षिण दिशा में एक रोशनी दिखाई दी। शायद वहाँ कोई छोटा सा चिराग जल रहा था जिसकी मद्धिम रोशनी इतनी दूर से छोटी सी दिखाई दे रही थी। उस प्रकाश को देखकर उसे नये साहस का अनुभव होने लगा और वह उसी ओर बढ़ा।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि एक वृद्ध पुरुष कुल्हाड़ी से क्रिसमस की पहली शाम को होने वाले उत्सव के लिये सूखी लकड़ियाँ फाड़ रहा है। वह वृद्ध लम्बे चौड़े डीलडौल का था और उसकी लम्बी दाढ़ी जो बर्फ की भाँति सफेद थी, उसकी कमर से भी नीचे लटक रही थी, उसने जब इसको देखा तो वह बोला :

"शाम ढल चुकी है और रात्रि छा गई है। चारों ओर अधकार फैल चुका है, इस कुसमय मे तुम अकेले ही कहाँ जा रहे हो?"

"मै नरक की ओर जा रहा हूँ।" उस दरिद्र पुरुष ने उत्तर दिया। "परन्तु मुझे वहाँ जाने का मार्ग नहीं मालूम है इसीलिये इस अधकार में भटक रहा हूँ।"

"तब तुम्हे और आगे बढने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योकि यह जो सामने बडी इमारत दिख रही है, वही नरक है। अब तुम अपने स्थान पर आ पहुँचे हो।" इस वृद्ध ने तुरन्त उत्तर दिया। फिर उस आदमी के हाथो मे उस सूखे हुये मास को देख कर वह फिर बोला

"शायद तुम इसे बेचने के लिए ही इतनी दूर आये हो। ठीक है यह तुमने अच्छा किया कि यहाँ आ गये क्योकि निश्चय ही इसे बेच कर यहाँ से तुम अच्छा मूल्य पा सकते हो। तुम अपना सारा साहस एकत्रित करके नरक के अन्दर घुस जाओ और जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम्हारे इस मास को तुमसे खरीदने को कई ग्राहक तुम्हे घेर लेंगे। पर तुम शीघ्र ही इसे मत बेच देना, जब तक कि वह लोग तुम्हें द्वार के पीछे रखी हुई पत्थर की चक्की इसके मूल्य मे न दे दें। "

इतना सुनकर वह आदमी क्रोध से झल्ला उठा और बीच मे ही बोल उठा :

"पत्थर की चक्की से क्या मै अपना सिर फाडूँ या तेरा सिर फोडूँ? हे वृद्ध क्या मुझ गरीब को देखकर उपहास करता है?"

वह बुड्ढा यह सुनकर तनिक भी क्रोधित नहीं हुआ। उल्टे उसने उसकी ओर दया से देखा और धीरे-धीरे मुस्कुराता हुआ बोला

"गरीबी ने तुझे मूर्ख ही नहीं वरन् उद्दड भी बना दिया है। परन्तु मै तेरी बातो का बुरा नहीं मानता। ले सुनले कि जिस पत्थर की चक्की के बारे मे मै तुझसे कह रहा हूँ, वह यदि तुझे मिल जायगी, तो तू ससार का सब से अधिक धनी और भाग्यवान मनुष्य बन जायगा। मै तुझे उसके हत्थे को पकड़ कर चलाने और रोकने की विधि बतला दूँगा। उस चक्की द्वारा तेरी मन चाही मुराद पूरी हो जाया करेगी। जो भी तू उससे माँगेगा वही वस्तु फौरन तेरे सामने उपस्थित हो जायगी अब तू देर मत कर क्योंकि बुद्धिमान पुरुष व्यर्थ ही अपना समय नष्ट नहीं किया करते।"

इन विचित्र बातो को सुनकर वह गरीब आदमी आश्चर्यचकित रह गया और तब उस वृद्ध के कहे अनुसार वह धीरे-धीरे उस भवन की ओर बढा। द्वार अन्दर से बन्द था। इसलिये उसने वहाँ जाकर खटखटाया।

तुरन्त द्वार खुल गया और तब अपनी सारी हिम्मत और शक्ति लगाकर वह नरक में घुस गया। वह स्थान भूखे दानवों और भूतों से भरा हुआ था जो इसे देखते ही इसके चारो ओर झुड बनाकर खड़े हो गये और जब उनकी निगाह इसके हाथ के मास पर पडी तब वह लोग विचलित होकर नाचते हुये उससे घिघिया कर उसे मॉगने लगे। परन्तु उनमे से किसी ने झपट कर बलपूर्वक वह मास इससे नहीं लिया न लेने का उपक्रम ही किया। नरक के निवासियों को छीनकर खाने का अधिकार ही प्राप्त न था। जब उस आदमी ने कहा कि वह उस मास को बेचने के लिये लाया है तो सभी उसका मूल्य लगाने लगे।

उस मास का मूल्य बढता ही जाता था परन्तु उस आदमी ने उसे किसी भी मूल्य पर नही बेचा। उकता कर भूतों ने उससे पूछा :

"तब तुम आखिर चाहते क्या हो?"

यह सुन कर वह बोला :

"मै इसे तभी बेचूँगा जब तुम इसके बदले मे मुझे द्वार के पीछे रखी हुई पत्थर की चक्की दे दोगे ।"

भूत यह सुन कर एक बार तो घबरा कर पीछे हट गये परन्तु शीघ्र उनमें से एक ने आगे बढ कर बडी जोर से हॅस कर कहा :

"तुम भी बडे मूर्ख मालूम होते हो जो इतना मूल्य जो हम तुम्हें दे रहे हैं उसे तो तुम ठुकरा रहे हो और माग रहे हो क्या, कि एक पत्थर की लम्बी सी चक्की! मेरी राय में तुम अब भी अपना निश्चय बदल दो क्योंकि भला पत्थर की इस चक्की का तुम करोगे ही क्या?" इस तरह उसने उसे बहकाना चाहा। परन्तु वृद्ध ने जो उसे पहले से ही पक्का कर दिया था, इसलिये वह अपने इरादे से नहीं डिगा और फिर-फिर उसने वही बात दोहराई :

"... ...मुझे बदले मे पत्थर की चक्की ही चाहिये, चाहे वह व्यर्थ की ही क्यो न हो। वह चक्की द्वार के पीछे रखी है .. ..।"

तब सभी भूत उस पर गुर्राने लगे। उन्होंने उससे साफ-साफ इन्कार कर दिया कि किसी भी हालत में वह उसको चक्की नहीं दे सकेंगे चाहे वह अपना मांस लेकर वापस ही क्यों न चला जाय। पर वह आदमी भी पक्का था, और इन धमकियों से भी नहीं दबा। अपना मांस का टुकड़ा लेकर वह वापस मुड़ा और द्वार के बाहर जाने लगा। भूतों ने समझा कि अब वह गया। चिल्ला कर वह उसके पास आये और बोले

"इस प्रकार भोजन को सामने से वापस हम नहीं ले जाने देंगे, तुम्हें चक्की चाहिये तो ले जाओ पर इस मांस को हमें अवश्य दे दो।" और तब सौदा पूरा हो गया। उन्होंने उसे वह चक्की द्वार के पीछे से उठा कर दे दी और उससे वह गोश्त ले लिया। चक्की को लेकर शीघ्रता के साथ वह आदमी नरक से बाहर आ गया और तेजी से चल कर उस वृद्ध के पास जा पहुँचा जो अब भी उसी स्थान पर सूखी लकड़ियाँ फाड़ रहा था। उसने उसे देख कर कुल्हाड़ी फेंक दी और तब उस चक्की को उससे लेकर पृथ्वी पर रख दिया। वह आदमी भी उत्सुकता से वहीं बैठ गया और तब उसने उससे कहा

"अब शीघ्र तुम मुझे इसके चलाने की विधि बतला दो।"

वृद्ध उसकी अधीरता देख कर हँसा और तब उसने उसके हत्थे को पकड़ कर उसके चलाने और रोकने की विधि उसको बतला दी। उसने उस आदमी से कहा :

"अब तुम जिस चीज को चाहते हो उसका नाम लो और इस चक्की को घुमाओ।"

उस आदमी ने स्वादिष्ट भोजन का तुरन्त नाम लिया और चक्की के हत्थे को वृद्ध की बताई हुई विधि से घुमाया। शीघ्र ही उसने देखा कि सामने बहुत अच्छा पका हुआ भोजन इकट्ठा होने लगा। वह ढेर बढ़ता ही जाता था। तब वृद्ध ने उसे इशारा किया कि वह उसको रोक दे। विधि से चक्की को रोकते ही भोजन का और आना बन्द हो गया। वह दरिद्र आदमी अब बहुत खुश हुआ और तब उस वृद्ध से विदा होकर उस चक्की को लेकर अपने घर की ओर चला।

जब वह घर पहुँचा तब काफी रात जा चुकी थी। उसकी पत्नी ने उसे देखते ही बकना शुरू कर दिया :

"इतनी देर से घर आये हो, यहाँ दाने भी नहीं हैं, भूखों मर रही हूँ। न खाना है और न ईंधन है इससे तो मर जाना ही अच्छा है" ... वह बड़बड़ाती रही, पर उस आदमी ने कुछ नहीं कहा। जब वह काफी बक-झक ली तत्पश्चात् वह बोला :

"कई आवश्यक कार्यों से मै बाहर गया था और वहाँ मुझे देर भी लग गई। जो कुछ भी हो, अब मैं वापस आ गया हूँ और अब जो होना होगा या जो मुझे करना चाहिये वही करूँगा।"

इसके बाद बिना बोले हुए उसने उस पत्थर की चक्की को मेज पर रख दिया, फिर उसे युक्ति से घुमा कर कहा :

"अग्नि और भोजन और पुरानी शराब लाओ।"

उसकी स्त्री समझी कि वह पागल हो गया है जो एक पत्थर की चक्की से बोल रहा है। परन्तु शीघ्र ही जब चक्की अपने आप चलने लगी तब तो वह भी ताज्जुब से देखने लगी और तब तो हैरानी से मुँह फाड़ती और फटी आँखों से देखती ही रह गई। जब उसने देखा कि पलक मारते उस स्थान पर अपने आप ही सूखी लकड़ियाँ न जाने कहाँ से आकर जलने लग गई हैं और क्रिसमस के त्योहार की तैयारी में प्रकाश फैला रही हैं, ठंडी रात में वह आग बहुत भली मालूम हो रही है... . .. ..।

इन सबसे अधिक सुखकर बात जो उसने देखी वह था स्वादिष्ट भोजन और पुरानी मीठी शराब जो सामने ही थालियों में सजा रखा था। वह उसकी महक से पागल हुई जा रही थी। उसने अपने पति की ओर देखा और आश्चर्य से पूछा :

"यह वस्तुएँ दिखावटी हैं या हम इन्हें खा भी सकते हैं?"

"क्यों नहीं खा सकते हैं?" उसके पति ने भौं उठा कर प्रश्न किया और तब थाली में से एक पका हुआ गोश्त का टुकड़ा उठा कर अपनी स्त्री के मुँह

मे दे दिया। वह उसे चबाकर प्रसन्नचित्त होकर खाने लगी, तत्पश्चात् उन्होने खूब शराब पी और डट कर भोजन किया। ऐसा सुन्दर और स्वादिष्ट भोजन उन्होने आज तक नही किया था। वास्तव मे भर पेट खाना उन्होने आज ही खाया था। जब खाना खा कर वह लाग उस गर्म कमरे मे सोने का उपक्रम करने लगे तो उस आदमी ने उस चक्की से फिर कहा :

"एक बडा चॉदी का पलग और मुलायम गद्दे वगैरह व तकिया चाहिये।"

फौरन एक बहुत बडा चॉदी का सुन्दर पलग आ गया जिस पर बहुत ही सुन्दर और मुलायम गद्दे बिछे हुए थे। उसकी स्त्री यह देख कर बहुत खुश हुई और तब वह दोनो उस पर लेट गये और सुखपूर्वक बाते करने लगे।

इतने आराम से वह आज तक कभी न सोये थे।

दूसरे दिन सुबह उठ कर उसने चक्की को घुमाया, अपने रहने के लिये उसने एक बहुत आलीशान मकान बनवा लिया, खाने पीने की चीजे और सोना-चॉदी से घर भर लिया और तब वह आराम के साथ अमीरी के सुख भोगने लगा। उसी शाम को उसने अपने सब दोस्तो को दावत दी जिसम उसने अपने बडे भाई को भी बुलाया। बडी शान के साथ दावत दी गई और सब ने उसकी प्रशसा की। उसका भाई यह सब देख कर हैरान हो गया था। उसने उससे पूछा :

"कल ही शाम को तुम परमात्मा के नाम पर मुझसे खाना मॉगने आये थे। आज इतनी जल्दी इतने मालदार कैसे बन गये? इतनी दौलत कहॉ से पा गये? यह नया और इतना बडा मकान, यह सब सुन्दर और बहुमूल्य सामान, इतना अच्छा भोजन, यह सब देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। बताओ तो सही कि आखिर इस सब जादू जैसे परिवर्तन का कारण क्या है?"

यह सुनकर वह आदमी बोला :

"यह सब मने द्वार के पीछे से पाया है" और उसने असली बात उसे

मे दे दिया । वह उसे चबाकर प्रसन्नचित्त होकर खाने लगी, तत्पश्चात् उन्होने खूब शराब पी और डट कर भोजन किया । ऐसा सुन्दर और स्वादिष्ट भोजन उन्होने आज तक नही किया था । वास्तव मे भर पेट खाना उन्होंने आज ही खाया था । जब खाना खा कर वह लाग उस गर्म कमरे मे सोने का उपक्रम करने लगे तो उस आदमी ने उस चक्की मे फिर कहा :

"एक बडा चाँदी का पलग और मुलायम गद्दे वगैरह व तकिया चाहिये ।"

फौरन एक बहुत बडा चाँदी का सुन्दर पलग आ गया जिस पर बहुत ही सुन्दर और मुलायम गद्दे बिछे हुए थे । उसकी स्त्री यह देख कर बहुत खुश हुई और तब वह दोनो उस पर लेट गये और सुखपूर्वक बाते करने लगे ।

इतने आराम से वह आज तक कभी न सोये थे ।

दूसरे दिन सुबह उठ कर उसने चक्की को घुमाया, अपने रहने के लिये उसने एक बहुत आलीशान मकान बनवा लिया, खाने पीने की चीजे और सोना-चाँदी से घर भर लिया और तब वह आराम के साथ अमीरी के सुख भोगने लगा । उसी शाम को उसने अपने सब दोस्तो को दावत दी जिसम उसने अपने बडे भाई को भी बुलाया । बडी शान के साथ दावत दी गई और सब ने उसकी प्रशसा की । उसका भाई यह सब देख कर हैरान हो गया था । उसने उससे पूछा :

"कल ही शाम को तुम परमात्मा के नाम पर मुझसे खाना माँगने गये थे । आज इतनी जल्दी इतने मालदार कैसे बन गये ? इतनी दौलत कहाँ से पा गये ? यह नया और इतना बडा मकान, यह सब सुन्दर और बहुमूल्य सामान, इतना अच्छा भोजन, यह सब देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है । बताओ तो सही कि आखिर इस सब जादू जैसे परिवर्तन का कारण क्या है ?"

यह सुनकर वह आदमी बोला :

"यह सब मैने द्वार के पीछे मे पाया है" और उसने असली बात उसे

कुछ नहीं बतलाई। बड़ा भाई कुछ भी नहीं जान सकने के कारण भन्नाकर रह गया।

परन्तु वह बड़ा चतुर था। जब सब लोग शराब पीने लगे तब व अपना बट चुपचाप इधर-उधर फेंक देता था। उन लोगों ने इतनी अधि शराब पी ली कि सभी नशे में झूमने लग गये। बड़े भाई ने ठीक मौक देखकर अपने छोटे भाई से जो उस समय नशे में चूर होकर बकने लग गय था, उस समय कहा :

"वह देखो द्वार के पीछे तो गजब हो गया" और इस तरह बात छेड़क असलियत जानने के हेतु उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

वह यह सुनकर उठा और उसने मेज पर रखी हुई चक्की को उठा लिय और फिर कहा : "क्या गजब हो गया द्वार के पीछे ? कुछ भी तो नहीं हुआ द्वार के पीछे की करामात तो यह मेरे पास है।"

"भला इसमें क्या करामात हो सकती है" बड़े भाई ने फिर कुरेदा।

"अरे यही तो है जो कुछ है। इसी की बदौलत तो यह सब कुछ हो रह है।" और इसी समय छोटे भाई ने चक्की को चलाकर चाँदी की कई कटोरियों पैदा की और हर एक अतिथि को एक-एक कटोरी भेंट में दी। वह नशे मे सब बात कह गया था।

बड़े भाई ने अब उससे कहा '

"तो यह चक्की मुझे दे दो।"

"हर्गिज नहीं", छोटे ने उत्तर दिया।

"अच्छा बेच दो", बड़े भाई ने फिर कहा।

"नहीं बेचता". छोटा बोला फिर उनमें बहस होने लगी।

बड़ा बोला ' "ठोस सोना दूँगा।"

"कितना ?"

"दो सौ सुवर्ण मुद्राएँ।"

"थोड़ी हैं।"

"ढाई सौ "

"नही तीन सौ लूँगा "

"अच्छा मजूर ।"

"तो लाओ कीमत ..?"

"यह लो" कहकर बडे ने उसे शीघ्र अपने घर से तीन सौ सुवर्ण मुद्राएँ मँगवा दी । मूल्य लेकर छोटा भाई जो अब प्रकृतिस्थ हो चुका था बोला '

"अच्छा, जिस दिन घास कटें उस दिन आना और यह चक्की ले जाना ।"

सौदा पक्का हो गया । बडा भाई बहुत खुश हुआ । दूसरे दिन छोटे भाई ने उस चक्की को चलाकर बहुत अनाज और शराब इकट्ठी कर ली—इतनी जितनी कि वह और उसकी स्त्री सुखपूर्वक पूरे जीवन खा-पीकर भी समाप्त न कर सकते थे । और जब धन-धान्य से घर भर गया तब घास कटने के दिन उसे बड़े भाई को दे दिया । पर उसे विधिपूर्वक चलाना और रोकना नही बतलाया । बड़ा भाई उस चक्की को लेकर खुशी-खुशी अपने घर आ गया । रात को वह किसी से कुछ न बोला और चक्की को हिफाजत से रखकर सो गया ।

उन दिनों फसलें तो कट ही रही थीं और इसलिये नित्य प्रात'काल वह आदमी अपने साथ दासों को लेकर खेत पर चला जाता था और दिन भर वहाँ रहकर उनसे काम करवाता था । दूसरे दिन वह सुबह काम पर नही गया और अपनी स्त्री से बोला .

"आज तुम खेत पर चली जाओ और मजदूरो से काम कराओ । मै घर पर रहूँगा और सब के लिये भोजन तैयार करूँगा । तुम भी देखोगी कि मै कितना अच्छा खाना बनाता हूँ ?"

उसकी स्त्री यह सुनकर हँसी और बोली

"क्यों आज यह क्या नई बात सूझी है ? क्या हमे भूखे मारने की ही सोची है ?"

तो वह बोला "अभी से फैसला देने लग गई। पहले एक दिन मेरा बनाया हुआ भोजन खाकर देखो, तब अपनी राय जाहिर करना।"

उसकी स्त्री उस दिन सचमुच ही हँसी करने की नीयत से मजदूरों को साथ लेकर खेत पर चली गई।

उसके जाने के पश्चात् वह आदमी आराम से उठा और उसने वह चक्की मेज पर रखी और उसमे कहा :

"तू चल!" तो वह चल पडी। फिर वह बोला :

"एक बडी दावत के लिये अच्छा-अच्छा भोजन बना—स्वादिष्ट मास और चावल बनना चाहिये।"

फौरन भोजन बनने लग गया। पहले गोश्त आया और फिर चावल उस चक्की से गिरने लगा। वह आदमी आश्चर्यचकित होकर खडे-खडे उसे देखता रहा। जब नीचे लगा हुआ पात्र चावल से भर गया तो उसने दौडकर उसे हटाकर दूसरा पात्र लगा दिया। जब वह भी भर गया तो तीसरा लगा दिया। इसी प्रकार जब कुछ ही देर में उसके सभी पात्र भर गये तो वह घबराया। उसने उस चक्की को रुकने के लिये आदेश दिया, पर वह कहने से थोडे ही रुकती थी। वह तो युक्ति द्वारा रुकती थी और युक्ति छोटे भाई ने उसे बतलाई नही थी। आगे-आगे तब बडे भाई ने उसके नीचे स्नान करने के बडे-बडे पात्र लगा दिये परन्तु थोड़ी देर बाद वह भी भर गये। अब तो वह बहुत घबराया और चक्की को ऊपर से जगह-जगह दबाकर उसकी गति रोकने की कोशिश करने लगा पर वह न रुकती थी न रुकी। ढेर का ढेर चावल अब कमरे की भूमि पर गिरने लगा और शीघ्र ही उसे भी भर दिया, इसी प्रकार सारा घर भर गया और चावल था कि बढता ही जाता था। देखते ही देखते भूमि पर उसकी तह बढने लगी और भूमि का दिखना भी बन्द हो गया .।

बडे भाई ने अब घबराकर भागने की सोची। वह तेजी से दरवाजे की ओर भागा पर चावल ने उसके सामने भी मोटी तह जमा दी थी। वह खुलता न था। उसने अपना सारा बल लगाकर उसे खोला और घर से

बाहर भागा। गर्म चावल की भाप से वह जगह जगह जल भी गया था। परन्तु घर से बाहर भी चावल ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और वह उसके पीछे ढेर का ढेर चला। आदमी तेजी से भागा चला जा रहा था और चावल के ढेरी उसके पीछे पहाड़ी झरने के समान घोर शब्द करती हुई बढ़ी चला आ रही थी। आदमी को अब अपनी जान बचाने की सूझी। वह अपने खेतों की ओर भागा परन्तु मास और चावल ने उसका पीछा न छोड़ा।

इतनी देर हो जाने पर भी जब भोजन का कोई समाचार उस स्त्री को खेत पर नही मिला और उसको और दासो को बहुत भूख लगने लगी तो वह काम रोक कर आश्चर्य करती हुई सबो को साथ लेकर घर की ओर चली। उसी समय सामने से, उसने देखा कि, उसका पति जिसका नाम पैल-मैल था, भागा चला आ रहा है और उसके पीछे चावल और मास के ढेर के ढेर चले आ रहे है। इस अजीब दृश्य को देख कर वह खड़ी की खड़ी रह गई और इतनी घबराई कि उसकी जबान से एक शब्द भी नही निकला। पैल-मैल जब पास आया तो चिल्लाया ·

"इतना भोजन तैयार है कि तुम मे से हर एक सो-सो हलक लगा लो तब भी उसे नही खा सकोगे .. भागो वह देखो उबलता हुआ चावल चला आ रहा है " और वह भागता हुआ चला गया। खाना उसके पीछे अब भी पीछे-पीछे चला जा रहा था।

अब पैल-मैल को उस खतरे से बचने का केवल एक उपाय सूझा। वह अपने छोटे भाई के घर की ओर भागा और शीघ्र ही उससे जा कर घबराया हुआ बोला :

"भाई अपनी चक्की वापस ले लो मुझे नही चाहिये मैने अपनी तीन सा सोने की अशर्फी छोड़ी। तुम इसे वापस ले लो " पर छोटे भाई ने मना कर दिया और कहा कि वह तो उसे एक बार बेच चुका था। इसलिये वापस नहीं ले सकता था।

तब पैल-मैल चिल्लाया और बोला ·

"अरे जल्दी उसका चलना रोको नहीं तो सारा गाँव ही चावल के ढेर में दब जायगा यदि एक घंटे और यह चक्की चलती रही तो निश्चय ही सब कुछ चावलो के नीचे दब जायगा .. . "

यह सुन कर छोटा बोला :

"तो मै क्या करूँ, चावल तो तुम्हारे पीछे पड रहा है। मेरे पीछे थोड़े ही पडा है।"

बड़ा चिल्लाया : "अरे बचा ले.. मुझे बचा ले . .. "

वह बोला : "क्या देगा ?"

बडा : "क्या लेगा ?"

छोटा : "तीन सौ अशर्फी लेकर चक्की वापस ले सकता हूँ ।"

बडा : "दुष्ट मुझे लूटता है ?"

छोटा : "तो रख अपनी चक्की अपने पास ।"

बड़ा : "अरे गाँव तबाह हो जायगा . ।"

छोटा . "तू मरेगा, गाँव क्यों मरने लगा, तेरे बाद वह रुक जायगी ।"

बडा : "तो दूँगा तीन सौ मुहरे, चक्की को तो रोक ।"

छोटा . 'पहले ला ।"

बडा : 'वहीं चल, चक्की भी रोक दे और रकम भी ले आ ।"

छोटा भाई उठा और उसके घर गया। मुश्किल से किवाड खोल वह मास और चावल मे चलता हुआ उस चलती चक्की के पास पहुँचा और उसने उसे जानी हुई तरकीब से रोक दिया। बडा भाई बाहर ही रह गया था। उसको उस तरकीब का कुछ भी पता नहीं चल पाया।

तत्पश्चात् ठहरी हुई सोने की मुहरें लेकर छोटा भाई चक्की को भी लेकर अपने घर वापस आ गया। इस तरह छै सौ मुहरें उसने कमा लीं और चक्की फिर उसी की हो गई। उसकी स्त्री चक्की वापस आने पर बहुत खुश हुई।

इसके बाद छोटे भाई ने उस चक्की द्वारा एक बडा बाग तैयार किया और तब समुद्र तीर पर एक बहुत आलीशान महल बना कर रहने लगा।

ओडिन की यात्रा

एक बार ओडिन अपने घोड़े स्लीपनर पर चढ कर यात्रा को निकला। चलते-चलते उत्तर दिशा मे ऐलीवेगर नदी को पार करता हुआ वह उस थान पर पहुँचा जहाँ किसी समय इवैल्डे और उसके बाद उसका पुत्र ओरवैन्डिल पहरा दिया करते थे। ओडिन को याद आया कि चन्द्रमा का वध करके उसे ऊँची चिता पर जला कर और उससे अमृत का पात्र छीन कर इवैल्डे देवताओ के शत्रु सुरथुर की गहरी घाटियो की ओर भाग गया था। इवैल्डे के साथ-साथ उसे सुत्तुग को सुन्दरी बहन गनलैड की भी याद आई जिससे इवैल्डे का रूप धर कर उसने छल से विवाह किया था। इस याद ने ओडिन को उदास कर दिया, क्योंकि जब वह उसे अकेली छोड कर हीमडल रति द्वारा बनाये गये मोटे पहाड़ के बीच पतले छेद मे होकर अपने पजो मे अमृत का घड़ा दबाये बाज का रूप धारण करके सुत्तुग के उस पोले पहाड मे से निकल भागा था तो गनलैड जो उसके साथ केवल एक ही रात रह सकी थी, उससे बिछुड़ कर फफक फफक कर रोई थी। ओडिन को बाद मे मालूम हुआ था कि वह अपने कठोर पिता और भाई से जब इस बात को कह कर लड़ी थी कि वह अपने पति के पास असगार्ड जाना चाहती है तो क्रोध से उन्मत्त होकर उन लोगों ने उसे एक अँधेरी और तग गुफा मे जादू की मोटी लोहे की जजीरो से बाँध कर कैद कर दिया था। ओडिन को ग्लानि हुई कि उसके बाद वह गनलैड को बिल्कुल भूल गया था। देर तक घोडा नदी के किनारे खड़ा रहा और ओडिन चुपचाप पुरानी बातें सोचता रहा। दिन ढल गया और तारो से भरी रात खिल आई। ठडी हवा के झोके चले। चिन्ता मे मग्न ओडिन चमक उठा। इस वृद्धावस्था मे आज रह-रहकर सुरथुर की पुत्री की याद कचोट रही थी। उसी समय उसने अपना सिर उठा कर आकाश मे जगमगाते हुए तारो की ओर देखा। इवैल्डे के

ओडिन उससे नही डरा और उसके पास जाकर बोला · "हे दानव के राजा मेरा नाम गगराड है और मैं मनुष्यो की दुनिया से यह जॉच करने को तेरे पास आया हूँ कि जैसा कि सभी कहते हैं क्या तू वास्तव मे ही इतना ज्ञानी है कि पुराने समय की सभी बातें याद रखता है।"

दानव यह सुनकर बहुत नाराज हुआ। क्रोध के आवेश मे दानव उठकर खडा हो गया और अपने हाथ की उँगली गगराड की ओर दिखाता हुआ क्रोध से चिल्लाया ·

"आ अदने आदमी ! क्या तुझे शामत ने घेरा है ? पर जब तू यहाँ तक आ गया है और मेरे सामने तूने अपनी बुद्धि का अहकार जताया है तो कान खोलकर सुन ले कि तेरी कही हुई शर्तें मुझे मजूर है परन्तु उनसे आगे मेरी और भी कुछ शर्तें हैं जो तुझे माननी ही पडेगी। यदि बुद्धि मे तू मुझसे कम साबित हुआ और तेरी विद्या मुझसे कम निकली तो यह देख ।" दानव ने तलवार का फलक दिखाते हुए कहा, "इस तलवार से तेरा सिर काट लिया जायगा।"

"और यदि मैं जीत गया तो ?" ओडिन ने प्रश्न किया।

"तो अपना सिर भी मैने दाव पर चढा दिया है। तू उसे काट लेना।"

अब ओडिन और वेफथ्रडनर आमने-सामने दो बडी चट्टानो पर बैठ कर ज्ञान का युद्ध करने लगे। पहला सवाल दानव ने किया। उसने पूछा—"रात और दिन मे उगने वाले चॉद और सूरज के रथो को कौन हॉकता है ? दुनियॉ को कौन-सी नदियॉ हिस्सो मे बॉटती हैं ?"

ओडिन ने फौरन जवाब दिया। वह धीमे परन्तु दृढ स्वर से बोला, "लोहे के जगल मे रहने वाली चुडैल के पास उसके पालतू भेडिये की नस्ल के भयानक कुत्ते सूरज और चॉद को निगल जाने के लिये विकराल स्वर से भौंकते हुए जब उन पर झपटते है तो अपने प्राणों की रक्षा के हेतु वह अपने रथो को भगाते हैं। ऐलीवैगर और हैबर गलमर यहा दो बडी नदियॉ हैं जो दुनियॉ को हिस्सो मे बॉटती हैं ?"

दानव ने दूसरा सवाल किया। अब वह पहले की भॉति चिल्ला कर नही

ओडिन उससे नही डरा और उसके पास जाकर बोला . "हे दानव के राजा मेरा नाम गगराड है और मै मनुष्यो की दुनिया से यह जाँच करने को तेरे पास आया हूँ कि जैसा कि सभी कहते हैं क्या तू वास्तव मे ही इतना ज्ञानी है कि पुराने समय की सभी बातें याद रखता है।"

दानव यह सुनकर बहुत नाराज हुआ। क्रोध के आवेश मे दानव उठकर खडा हो गया और अपने हाथ की उँगली गगराड की ओर दिखाता हुआ क्रोध से चिल्लाया :

"ओ अदने आदमी! क्या तुझे शामत ने घेरा है? पर जब तू यहाँ तक आ गया है और मेरे सामने तूने अपनी बुद्धि का अहकार जताया है तो कान खोलकर सुन ले कि तेरी कही हुई शर्तें मुझे मजूर है परन्तु उनसे आगे मेरी और भी कुछ शर्तें हैं जो तुझे माननी ही पडेगी। यदि बुद्धि मे तू मुझसे कम साबित हुआ और तेरी विद्या मुझसे कम निकली तो यह देख ।" दानव ने तलवार का फलक दिखाते हुए कहा, "इस तलवार से तेरा सिर काट लिया जायगा।"

"और यदि मैं जीत गया तो?" ओडिन ने प्रश्न किया।

"तो अपना सिर भी मैने दाव पर चढा दिया है। तू उसे काट लेना।"

अब ओडिन और वेफथ्रड्नर आमने-सामने दो बडी चट्टानो पर बैठ कर ज्ञान का युद्ध करने लगे। पहला सवाल दानव ने किया। उसने पूछा—"रात और दिन मे उगने वाले चाँद और सूरज के रथो को कौन हाँकता है? दुनियाँ को कौन-सी नदियाँ हिस्सो मे बाँटती हैं?"

ओडिन ने फौरन जवाब दिया। वह धीमे परन्तु दृढ स्वर से बोला, "लोहे के जगल मे रहने वाली चुडैल के पास उसके पालतू भेडिये की नस्ल के भयानक कुत्ते सूरज और चाँद को निगल जाने के लिये विकराल स्वर से भोंकते हुए जब उन पर झपटते हैं तो अपने प्राणो की रक्षा के हेतु वह अपने रथो को भगाते हैं। ऐलीवैगर और हैवर गलमर यही दो बडी नदियाँ हैं जो दुनियाँ को हिस्सो मे बाँटती हैं?"

दानव ने दूसरा सवाल किया। अब वह पहले की भाँति चिल्ला कर नहीं

एक के बाद एक कई प्रश्न किये जिन सभी का उसने उपयुक्त उत्तर दिया। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे वह नहीं जानता हो। तब ओडिन बोला, "हे वेफ्थड्नर, अब मैं तुझसे अन्तिम प्रश्न करूँगा और यदि इसका भी तूने उत्तर दे दिया तो शर्त खत्म हो जायगी और तब तुझे तेरे सिर का धोखा नहीं रहेगा।"

दानव निडर था। गम्भीर मुद्रा लिये वह चुपचाप बैठा रहा। उसे देखकर ऐसा मालूम होता था जैसे वह हर एक प्रश्न का उत्तर दे सकता हो। ओडिन ने तब उससे पूछा: "हे पहेलियों के बूझने वाले मुझे तू यह बता कि मरे हुये बाल्डर के कान में ओडिन ने क्या कहा था?"

यह एक ऐसी बात थी जिसे सिवा ओडिन और बाल्डर की आत्मा के सारे विश्व में कोई नहीं जानता था। वह इतना बड़ा रहस्य था कि उसे सब से बड़ा खुदा भी नहीं जानता था। वेफ्थड्नर यह सुनकर भय से काँपने लगा और तब उसे अपने दिव्य चक्षुओं द्वारा यह मालूम हो गया कि पूछने वाला गगराड मानव नहीं था बल्कि स्वयं सारे विश्व का सम्राट ओडिन था। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसने स्वीकार किया कि वह हार गया है। वह जिसकी तलवार से सैकड़ों प्रश्नकर्ता अब तक मारे गये थे अब मौत के इतने निकट आ गया था। उसने ओडिन के पैर पकड़ कर प्राणों की भिक्षा माँगी परन्तु ओडिन ने झटके के साथ उसकी गर्दन पर तलवार का भरपूर हाथ मारा और वेफ्थड्नर का सिर कट कर दूर जा गिरा। ओडिन को यह मालूम था कि बाल्डर की मृत्यु में इस दानव का भी भीतरी हाथ था। वह जानता था कि वह दानव लोक और ऐंगर बोडा का खास मिलने वाला था। ओडिन ने अब उसकी आत्मा को पकड़ लिया और अँधेरे टापू पर दुख से भरे हुए समुद्र के बीच और बोडा के बेटे फनरर भेड़िये की बगल में उसे बाँध दिया जहाँ थोड़े दिनों बाद दुष्ट लोक भी बाँधा जाने वाला था।

उसको मार कर विजयी ओडिन जब असगार्ड वापस आया तो देवताओं ने उस पर सफेद और सुगन्धित बाल्डर के फूलों की वर्षा की और उसे जाक की उपाधि से सम्मानित किया।

———

मुद्रक—सरयू प्रसाद पांडेय, नागरी प्रेस, दारागंज, प्रयाग।